।। श्रीगणेशाय नमः ।।

यज्ञदीपिका

हिन्दी व्याख्या सहित

[रंगीन यज्ञवेदिकाचक्र सहित]

सम्पादक :
आचार्य पं० दीपचन्द शास्त्री
साहित्याचार्य
राजास, लछमनगढ, सीकर
राजस्थान

https://upayogibooks.com

श्रीकाशी विश्वनाथ संस्थान, वाराणसी

श्रीकाशी विश्वनाथ संस्थान
सी.के. 32/30 नेपाली खपड़ा, कचौड़ीगली
वाराणसी-221001 (उ.प्र.), मो. : 9415202478

www.bharatiyavidya.com

© सर्वाधिकार प्रकाशक
इस पुस्तक का कोई भी भाग किसी रूप में या किसी भी अर्थ में प्रकाशक की अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

प्रथम संस्करण : 2022
I.S.B.N. : 978-93-92989-18-6

Price : Rs. 351/-

प्रमुख वितरक :

द भारतीय विद्या प्रकाशन
दुकान नं0-86 द्वितीय मंजिल,
धर्म संघ भवन, दुर्गाकुण्ड पेट्रोल पम्प के सामने,
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी - 221010

भारतीय बुक कॉर्पोरेशन
भारतीय विद्या प्रकाशन
प्रथम मंजिल, 1 यू.बी. जवाहर नगर,
बंग्लो रोड, दिल्ली - 110007

न्यू भारतीय बुक कॉर्पोरेशन
208, 2 मंजिल, प्रकाश दीप
बिल्डिंग, अंसारी रोड, 4735/22
दरियागंज, नई दिल्ली - 110002

भारतीय बुक्स
दुकान नं0-84 द्वितीय मंजिल,
धर्म संघ भवन, दुर्गाकुण्ड पेट्रोल पम्प के सामने,
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी - 221010

भारतीय विद्या प्रकाशन
सी.के. 32/30 नेपाली खपड़ा,
कचौड़ीगली, वाराणसी - 221001

भारतीय विद्या संस्थान
सी. 27/65, जगतगंज,
वाराणसी - 221002

मुद्रकः क्रिएटिव ग्राफिक्स, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी. | www.mycgds.com

लेखक परिचय-

आचार्य पं० दीपचन्द शास्त्री
पुत्र श्रीमोतीलाल महर्षि
ग्राम-राजास, तह०-लछमनगढ,
जिला-सीकर
राजस्थान-३३२३१७

दो शब्द

माँ शारदा व परमपूज्य आचार्य श्रीघनश्यामजी शास्त्री की कृपा से **'यज्ञदीपिका'** के इस संस्करण के अन्तर्गत गणपत्यादि देवताओं की वैदिक मन्त्रों के द्वारा सविधि पूजन तथा यज्ञमण्डप सहित सम्पूर्ण यज्ञविधान सामान्य पुरोहित भी सुगमता से सुसम्पन्न करवा सके इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए लेखन व संकलन किया है। आज **'यज्ञदीपिका'** के माध्यम से दशविधस्नान व जलयात्राविधान से प्रारम्भ करके विस्तृत रूप से सम्पूर्ण पूजाविधि शास्त्रीय प्रमाणों सहित गणपत्यादिमण्डलों का पूजन, श्रीलक्ष्मीनारायणपूजन, शिवशक्तिपूजन तथा सविस्तार यज्ञमण्डप व यज्ञ विधान का सम्पादन करके सभी विद्वानों से आशीर्वाद की कामना करता हूँ।

पूज्य गुरुदेव के चरणों की सेवा से जो गुरुजी का आशीर्वाद मिला उसके द्वारा वैदिक परम्परा को जीवन्त रखने का सुअवसर प्राप्त हुआ। विष्णुलोक को प्राप्त दादाजी की इच्छा थी कि विद्वानों का कृपापात्र बनूँ। मन्त्रों का संकलन करने की कई दिनों से प्रबल इच्छा थी वो आप सभी विद्वानों के सहयोग व आशीर्वाद से **'यज्ञदीपिका'** के रूप में पूर्ण हुई है। माँ शारदा की विशेष कृपादृष्टि से आप सभी विद्वानों का विशेष स्नेह प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःख भाग्भवेत्।।

इस शुभाकांक्षा को लेकर यज्ञदीपिका का संकलन शुरू किया था तब से सभी विद्वानों का स्नेह प्राप्त हो रहा है। सभी विद्वानों से करबद्ध विनती है कि **'यज्ञदीपिका'** के संकलन में मन्त्रों को लिपिबद्ध करते समय किसी प्रकार की अशुद्धि रह गई हो तो उसे सुधार कर उच्चारण करते हुये अवगत कराने की कृपा करें। आज हमारी वैदिक परम्परा धीरे-धीरे लुप्त हो रही है जो कि एक बड़ी चिन्ता का विषय है। हम सभी मिलकर इसे पुनः स्थापित करके वैदिककाल से चली आ रही श्रुति परम्परा को सुरक्षित रखने का पूरा प्रयास करना हमारा मुख्य कर्तव्य बनता है। हमारे ऋषियों ने दिन-रात कठोर परिश्रम करके इसे जीवन्त रखा इसी उद्देश्य को लेकर **'यज्ञदीपिका'** में अधिक से अधिक वैदिकमन्त्रों को समावेशित किया है।

तमसो मा ज्योतिर्गमय।

जब सूर्य उदय होता है तो दीपक जलाने की आवश्यकता नहीं होती है उसी प्रकार जब वेदमन्त्रों का उच्चारण होता है तो अन्य स्तुतियों की आवश्यकता ही कहाँ शेष रह जाती है अर्थात् वेदमन्त्रों में सूर्य के समान कोने-कोने से अन्धकार मिटाने की शक्ति विद्यमान रहती है, इसीलिए विद्वानों को ज्यादा से ज्यादा वेदमन्त्रों का उच्चारण करना चाहिए। जिस प्रकार अग्नि की एक चिंगारी रुई के ढेर को नष्ट कर सकती उसी प्रकार शान्त और शद्ध चित्त से वेदमन्त्रों का उच्चारण करने से जो ऊर्जा और

आत्मबल मिलता है उसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

व्यक्ति का स्वास्थ्य मन से जुड़ा हुआ रहता है जब इंसान का मन शुद्ध होता है तो तन स्वतः शुद्ध हो जाता है। जब मन बलवान होता है तो शरीर कमजोर होकर भी बलवान रहता है जैसे हाथी दीर्घाकार शरीर पाकर भी एक छोटे शरीर वाले सिंह से हार को प्राप्त करता है, इसीलिए मन को स्वस्थ व बलिष्ठ बनाने के लिए प्रभु की सेवा बहुत जरूरी है ईश्वर की सेवा से मानसिक विकारों का समन होता है, जिससे मन प्रसन्न व तन स्वस्थ रहता है। संस्कृत भाषा सभी भाषाओं की जननी है और माँ हमेशा सब को प्यारी होती है विश्व में जितनी भी भाषाएँ है उनमें से सबसे मधुर व सरस भाषा संस्कृत है, उसी मधुर भाषा में आपकी **यज्ञदीपिका** को लिपिबद्ध किया गया है। संस्कृत भाषा को देवताओं की भाषा बताया गया है इसलिए देवताओं को प्रसन्न करने व उनकी कृपा प्राप्त करने के लिए देववाणी संस्कृत का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करना चाहिए।

मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्य

जब गुरुकृपा होती है तो व्यक्ति के हृदय में ज्ञानरूपी दीपक प्रज्वलित हो जाता है और व्यक्ति के प्रत्येक शब्द में भगवान की चर्चा होने लगती है और वही अज्ञानी विद्वानों की श्रेणी में आने लगता है। गुरु के मुख से निकला प्रत्येक वाक्य मन्त्र होता है इसलिए गुरु के शब्दों पर संदेह सपने में भी नहीं करना चाहिए। शास्त्रों में कहा कि गुरु पर संदेह करने वाले को नरक में भी जगह नहीं मिलती है।

मोक्षमूलं गुरोः कृप्या

शास्त्रों का ज्ञान अपार समुद्र है जब गुरु की कृपा हो जाती है तो उसे वह क्षणभर में पार कर लेता है। जब गुरु की दृष्टि बेडोल पत्थर पर पड़ती है तो पत्थर पारस बन जाता है अन्त में गुरु की कृपा मोक्ष का कारण बन जाती है।

शेखावाटी अँचल के अग्रगण्य विद्वान् आचार्य श्री विनोद कुमार जी बालरासरिया ने **यज्ञदीपिका** के संकलन कार्य में मेरा विशेष सहयोग किया तथा **'द भारतीय विद्या प्रकाशन'** के स्वामी श्री राकेश जी जैन की सहयोगी संस्था **'श्रीकाशी विश्वनाथ संस्थान'** के श्री रवीश जी जैन, श्री रजत जी जैन के सहयोग से पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है। इन्होंने अपनी मेहनत व परिश्रम से पुस्तक को अच्छा स्वरूप देने का कार्य किया। इसके लिए सभी को मैं अपनी ओर से धन्यवाद ज्ञापन करता हूँ।

बसन्त पंचमी, विक्रम सम्वत् २०७८ **आचार्य पं० दीपचन्द शास्त्री**

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
१. **मङ्गलाचरणम्**	ग
२. **प्रस्तावना**	छ
३. **दशविधस्नानम्**	१
४. **जलयात्राविधानम्**	४
(क) मङ्गलतिलकम्	४
(ख) ग्रन्थिबन्धनम्	५
(ग) शान्तिपाठ	५
(घ) सङ्कल्पम्	७
(ङ) गणपतिपूजनम्	८
(च) जलमातृकापूजनम्	९
(छ) जीवमातृकापूजनम्	११
(ज) स्थलमातृकापूजनम्	१२
(झ) वर्धनीकलशपूजनम्	१३
(ञ) कलशस्य न्यासः	१५
(ट) जलमध्ये आज्यहोमः	१७
(ठ) बलिदानम्	१८
५. **पूजाप्रकरणम्**	१९
(क) पवित्रीकरणम्	१९
(ख) आसनशुद्धिः	२०
(ग) आचमनम्	२०
(घ) शिखाबन्धनम्	२०
(ङ) मङ्गलतिलकम्	२०
(च) ग्रन्थिबन्धनम्	२१
(छ) यज्ञभूमिपूजनम्	२२
(ज) कर्मपात्रपूजनम्	२२
(झ) दीपकपूजनम्	२३
(ञ) शङ्खपूजनम्	२३
(ट) घण्टापूजनम्	२३
(ठ) भैरवनमस्कारम्	२४
(ड) भूतोत्सारणम्	२४
(ढ) शान्तिपाठः (आनोभद्राः)	२४
(ण) शान्तिपाठः (स्वस्तिवाचनम्)	२५
(त) नमस्कारम्	२६
(थ) मङ्गलश्लोकम्	२६
(द) गुरोर्ध्यानम्	२७
(ध) देवपूजाधिकार सङ्कल्पम्	२८
(न) सकामसङ्कल्पम्	२८
६. **अग्न्युतारणम्**	३०
७. **प्राणप्रतिष्ठाः**	३०
८. **(क) पञ्चोपचार (वैदिक)**	३१
(ख) षोडशोपचार (वैदिक)	३२
(ग) कर्पूरार्तिक्यम् (वैदिक)	३६
(घ) पुष्पाञ्जिलम्	३७
(ङ) षोडशोपचार (पौराणिक)	३७
९. **गणपतिपूजनम्**	४१
१०. **मोदादिषडविनायकपूजनम्**	४३
११. **कलशपूजनम्**	४४
१२. **पुण्याहवाचनम्**	४८
१३. **षोडशमातृकापूजनम्**	५६
१४. **सप्तघृतमातृकापूजनम्**	५९
१५. **सूर्यादिनवग्रहपूजनम्**	६२
१६. **अधिदेवतास्थापनम्**	६४

विषय	पृष्ठ संख्या
१७. प्रत्याधिदेवतास्थापनम्	६६
१८. पञ्चलोकपालस्थापनम्	६८
१९. दशदिग्पालस्थापनम्	६९
२०. विश्वकर्मादिस्थापनम्	७१
२१. नक्षत्राधिपतिपूजनम्	७२
२२. दिक्रक्षणम्	७५
२३. रक्षासूत्रबन्धनम्	७७
२४. नान्दीमुखश्राद्धम्	७८
२५. आचार्यादिवरणम्	८३
२६. वास्तुमण्डलपूजनम्	८४
२७. वास्तुशान्ति	९५
२८. चतुःषष्टियोगिनीपूजनम्	९९
२९. एकोनपञ्चाशत्क्षेत्रपालपूजनम्	११०
३०. सर्वतोभद्रमण्डलमपूजनम्	११८
३१. विष्णुपूजनम्	१२७
(क) पुरुषसूक्तम्	१२९
(ख) अङ्गपूजनम्	१३१
(ग) आरती ॐजय जगदीश हरे	१३३
(घ) क्षमा प्रार्थना	१३४
३२. श्रीमहालक्ष्मीपूजनम्	१३४
(क) श्रीसूक्तम्	१३६
(ख) अङ्गपूजनम्	१३९
(ग) श्रीमहाकालीपूजनम् (दवात व क़लम)	१४१
(घ) श्रीमहासरस्वतीपूजनम् (बही)	१४२
(ङ) कुबेरपूजनम् (तिजोरी)	१४३
(च) तुलापूजनम्	१४४
(छ) विश्वकर्मापूजनम् (मशीन व गणकयन्त्र)	१४४

विषय	पृष्ठ संख्या
(ज) दीपमालिकापूजनम्	१४५
(झ) आरती जय लक्ष्मी माता	१४६
३३. एकलिङ्गतोभद्रमण्डलपूजनम्	१४७
३४. चतुलिङ्गतोभद्रमण्डलपूजनम्	१४८
३५. द्वादशलिङ्गतोभद्रमण्डलपूजनम्	१५२
३६. शिवपूजनम्	१५६
(क) रुद्रसूक्तम्	१६०
(ख) अङ्गपूजनम्	१६४
(ग) शिवजी की आरती ॐजय शिव ओंकारा	१६६
(घ) श्रीशंकरजी की आरती शीशङ्ग अर्द्धङ्ग	१६६
३७. गौरीतिलकमण्डलपूजनम्	१६७
३८. दुर्गापूजनम्	१७३
(क) श्रीभैरवपूजनम्	१७४
(ख) सिंहपूजनम्	१७४
(ग) देव्याथर्वशीर्षम्	१७८
(घ) अङ्गपूजनम्	१८२
(ङ) अष्टशक्तिपूजनम्	१८४
(च) चामरछत्रपूजनम्	१८४
(छ) यवाऽकुंरानपूजनम्	१८५
(ज) बटुकपूजनम्	१८५
(झ) कुमारीकापूजनम्	१८५
(ञ) श्रीदुर्गा जी की आरती जय अम्बे गौरी दुर्गाजी	१८६
(ट) श्रीकाली जी की आरती मङ्गल की सेवा	१८७
(ठ) श्री देवीजी की आरती अम्बे तू है जगदम्बे	१८८

विषय	पृष्ठ संख्या
मण्डपपूजनम्	१८९
१. षोडशस्थम्भपूजनम्	१८९
२. तोरणपूजनम्	१९१
३. दिक्पालद्वारशाखाञ्चपूजनम्	१९३
यज्ञप्रकरणम्	१९८
१. **कुण्डपूजनप्रयोगः**	१९८
(क) कुण्डपूजनम्	१९८
(ख) विश्वकर्मापूजनम्	१९८
(ग) मेखलापूजनम्	१९९
(घ) योनिपूजनम्	२००
(ङ) कण्ठपूजनम्	२००
(च) नाभिपूजनम्	२००
(छ) वास्तुपूजनम्	२००
(झ) सप्तजिह्वापूजनम्	२०१
२. **अग्निस्थापनम्**	२०१
(क) पञ्चभूसंस्कारम्	२०१
(ख) अग्निस्थापनम्	२०२
३. **कुशकण्डिकाः**	२०३
(क) ब्रह्मापूजनम्	२०३
(ख) परिस्तरणम्	२०४
(ग) पात्रासादनम्	२०४
(ग) पवित्रच्छेदनम्	२०५
(घ) स्रुवप्रतपनम्	२०६
(ङ) चरुआज्यसंस्कारम्	२०६
४. **ब्रह्मादिवरणम्**	२०६
५. **होमः**	२०७
(क) सङ्कल्पम्	२०७
(ख) महाव्याहृति होमः	२०७
(ग) पञ्चवारुणी होमः	२०८
(घ) गणपति होमः	२०८
(ङ) नवग्रहाणां होमः	२०९
(च) अधिदेवता होमः	२१०
(छ) प्रत्याधिदेवता होमः	२११
(ज) पञ्चलोकपाल होमः	२१२
(झ) दशदिग्पाल होमः	२१२
(ञ) पितामहादीनां होमः	२१४
(ट) मोदादीषड्विनायक होमः	२१५
(ठ) षोडशमातृका होमः	२१५
(ड) सप्तघृतमातृका होमः	२१६
(ढ) वास्तोमण्डल होमः	२१७
(ण) चतुःषष्टियोगिनीमण्डल होमः	२१८
(त) एकोनपञ्चाशत क्षेत्रपाल होमः	२१९
(थ) सर्वतोभद्रमण्डल होमः	२२१
(द) गुगलादि होमः	२२३
(ध) लक्ष्मी होमः	२२४
(न) प्रायश्चित होमः	२२४
(प) स्थापित देवानामुत्तर पूजनम्	२२५
(फ) अग्नि स्विष्टकृद्धोमः	२२६
(ब) महाव्याहृति होमः	२२६
(भ) पञ्चवारुणी होमः	२२७
७.बलिदानम्	२२७
(क) दशदिग्पाल बलिदानम्	२२७
(ख) मण्डलदेवता बलिदानम्	२३०
(ग) क्षेत्रपाल बलिदानम्	२३२
(घ) भूतेभ्यः बलिदानम्	२३२

CC-0. Nanaji Deshmukh

विषय	पृष्ठ संख्या
८. पूर्णाहुति	२३३
९. घृतधाराः	२३५
१०. भस्मवन्दनम्	१३५
११. पूर्णपात्रदानम्	२३६
१२. बर्हिहोमः	२३७
१३. तर्पणमार्जनम्	२३७
१४. ब्राह्मणभोजनम्	२३७
१५. श्रेयोदानम्	२३७
१६. दक्षिणादानम्	२३८
१७. आचार्य पूजनम्	२३९
१८. गोदानम्	२३९
१९. अभिषेकम्	२३९
२०. भूयसीदक्षिणादानम्	२४०
२१. छायापात्रदानम्	२४०
२२. सुवासिनीभिर्नीराजनम्	२४१
२३. आशिर्वचनम्	२४१
२४. क्षमाप्रार्थना	२४२
२५. देवताग्नि विसर्जनम्	२४२
२६. सम्पूर्णतावचनम्	२४३
२७. श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम्	२४३
२८. संक्षिप्तदेवताध्यानम्	२४५
२९. श्रीगणेशजी की आरती	२४८
३०. गायत्रीजी की आरती	२४९
३१. राजा रामजी की आरती	२५०

विषय	पृष्ठ संख्या
पूजन सामग्री	
(क) यज्ञ सामग्री	२५१
(ख) दुर्गा पूजन सामग्री	२५२
(ग) लक्ष्मी पूजन सामग्री	२५६
(घ) रुद्राभिषेक की सामग्री	२५७
(ङ) गृहप्रवेश सामग्री	२५८
परिशिष्ट	
मण्डल चक्र (रंगीन)	
१. गणपतिभद्रमण्डल	२६१
२. सर्वतोभद्रमण्डल	२६१
३. वास्तुमण्डल (६४ कोष्टक)	२६२
४. वास्तुमण्डल (८१ कोष्टक)	२६२
५. ६४ योगिनीमण्डल	३६३
६. क्षेत्रपालमण्डल	२६३
७. एकलिंगतोमण्डल	२६४
८. चतुर्लिंगतोमण्डल	२६४
९. अष्टलिंगतोमण्डल	२६५
१०. द्वादशलिंगतोमण्डल	२६५
११. गौरीतिलकमण्डल	२६६
१२. नवग्रहमण्डल	२६६
१३. यज्ञमण्डप	२६७
१४. नौकुण्डिय यज्ञशाला	२६७
१५. कमलयुक्त सर्वतोभद्रमण्डल	२६८
१६. कमलरहित सर्वतोभद्रमण्डल	२६८

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

यज्ञदीपिका

हिन्दी भाषा सहित

अथ दशविधस्नानम्

कर्ता कर्मदिने प्रातरुत्थाय प्रातः स्मरणं कृत्वा शौच दन्तधावन पूर्वकं स्नात्वा संध्यादिनित्यकर्म निवृति पूर्वकं नदीतडागादिकं गत्वा सुप्रक्षालिततत्तीरे स्नानोपकरणानि संस्थाप्य ततः पाणिपादं प्रक्षाल्य नाभिमात्रं जलं गत्वा कुशपवित्र हस्तौ बद्धशिख आचमेत्।

(यजमान प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में उठकर प्रातः स्मरण चरणवन्दन करके शौचादि-नित्यक्रियाओं से निवृत होकर संध्यादि नित्यकर्म करके गुरु से आशीर्वाद ग्रहण करें तथा सपत्नीक यजमान नदीतड़ागादि जल स्थान पर जाकर दशविध स्नान करें)

पवित्रीकरणम् — (यजमान के हाथों का प्रक्षालन करवायें)

ॐअपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याऽभ्यन्तरः शुचिः।।

इति पठित्वा आत्मानं पूजासामग्रीञ्च प्रोक्षणं कुर्यात् (पूजा सामग्री व स्वयं के जल के छींटे दे)

ततस्त्रिकुशपवित्रीधारणम्—

(यजमान अपनें दोनों हाथों की अनामिका में पवित्री धारण करें)

ॐपवित्रेस्थो व्वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽ उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्यरश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।।

आचमनं प्राणायाम—

ॐकेशवाय नमः, ॐनारायणाय नमः, ॐमाधवाय नमः,
ॐहृषीकेशाय नमः। हस्तौ प्रक्षाल्य (हाथों का प्रक्षालन करें)
त्रिवारं गायत्रीं जपेत् (यजमान आचमन व प्राणायाम करे)

सङ्कल्पम्—(यजमान पत्नी सहित दाहिने हाथ में रोली, चावल, पुष्प, दूर्वा, जल और द्रव्य लेकर संकल्प करें)

यजमानः सपत्नीकः स्वदक्षिणहस्ते गन्धाक्षतपुष्पदुर्वाजलद्रव्यञ्चादाय—

ॐदेशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं मम समस्तपापक्षय पूर्वकं विष्णुप्रीत्यर्थममुककर्माधिकारप्राप्तर्थं कायिकवाचिकमानसिकसांस-र्गिकदोषोपशमनार्थं शरीरशुद्ध्यर्थं च प्रायश्चित्ताङ्गभूतान्यादौ भस्मादि-भिर्दशविधस्नानानि करिष्ये। https://upayogibooks.com

१. भस्मस्नानम्— यजमानः वामहस्तेयज्ञियभस्मं गृहीत्वा पश्चादुदक-मिश्रणानन्तरं दक्षिणहस्तेन संमर्द्य अभिमन्त्रयेत्। यजमान बांयें हाथ में भस्म लें तथा थोड़ा जल मिलाकर दाहिने हाथ से नीचे लिखे मन्त्र द्वारा मर्दन करें।

तत्र मन्त्र— ॐअग्निरिति भस्म। ॐवायुरिति भस्म। ॐजलमिति भस्म। ॐस्थलमिति भस्म। ॐव्योमेति भस्म। ॐसर्व ६ हवा इदं भस्म। ॐमनएतानि चक्षूंषिभस्मानि।। इत्याभिमन्त्रः। अभिमन्त्रित करके सिर, मुख, हृदय, हाथ तथा पैरों के भस्म लेपन करके स्नान करें।

ॐईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्। ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधि-पतिर्ब्रह्माशिवो मे ऽअस्तु सदाशिवोम्।। ॐनमस्ते रुद्रमन्यव ऽउतोतऽइषवे नमः। बाहुभ्यां मुतते नमः।। यथाग्निर्दहते भस्म तृणकाष्ठादि सञ्चयम्। तथामे दह्यतांपापं कुरु भस्मशुचेशुचिम्।।

२. मृत्तिकास्नानम्— ततः यजमानः तीर्थस्थानस्यमृत्तिकामादाय स्नानं कुर्यात्। फिर यजमान तीर्थस्थान की रज लेकर शिखा से नाभि तक तथा नाभि से नख तक मलकर स्नान करें।

ॐइदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ৬ सुरेस्वाहा।।

मृत्तिके ब्रह्मपूतासि काश्पेनाभिवन्दिता।
मृत्तिके देहि मे पुष्टिं त्वयि सर्वं प्रतिष्ठितम्।।

३. गोमयस्नानम्—ततः यजमानः शुद्धगोमयमादाय गोमयस्नानं कुर्यात्। तत्पश्चात् यजमान शुद्धगोमय लेकर शिखा से नाभि तक तथा नाभि से नखतक गोमय मलकर स्नान करें।

ॐमानस्तोके तनये मानऽआयुषि मानो गोषु मानोऽअश्वेषु रीरिषः। मा नो व्वीरान् रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे।।

अग्रमग्रं चरन्तीनामौषधीनां रसं वने।
तासां वृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम्।।

४. पञ्चगव्यस्नानम्— ततः यजमानः पञ्चगव्यमादाय पञ्चगव्यस्नानं कुर्यात्। तत्पश्चात् यजमान पंचगव्य लेकर शिखा से नाभि तक तथा नाभि से नखतक मलकर स्नान करें।

ॐसहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्। स भूमि ६ सर्व्वतस्पृत्त्वा त्त्यतिष्ठ्ठ दृशांगुलम्।।

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधिसर्प्पिः समन्वितम्।
सर्वपापविशुद्ध्यर्थं पञ्चगव्यं पुनातु माम्।।

शास्त्रोक्तञ्च- गोमूत्रं द्विगुणं क्षीरात् क्षीरार्धं दधिकथ्यते।
तदर्धं गोमयं ज्ञेयं गोमयार्धं धृतं भवेत्।। ***(यज्ञमीमांसा)***

५. गोरजःस्नानम्— ततः यजमानः गोरजमादाय गोरजः स्नानं कुर्यात्। तत्पश्चात् यजमान गोरज (गोशाला की मिट्टी) लेकर शिखा से नाभि तक तथा नाभि से पैरों तक मलकर स्नान करके पुनः आचमन करें।

ॐआयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्नमातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः।।

गवां खुरेण निर्द्धूतं यद्रेणु गगने गतम्।
शिरसा तेन संलेपे महापातकनाशनम्।।

६. धान्यस्नानम्— ततः यजमानः धान्यमादाय धान्यः स्नानं कुर्यात्। तत्पश्चात् यजमान धान्य लेकर शिखा से पैरों तक मलकर स्नान करके पुनः आचमन करें।

ॐधान्यमसिधिनुहि देवान्प्राणाय त्त्वोदानाय त्त्वा व्यानाय त्त्वा। दीर्घामनु प्प्रसितिमायुषेधान्देवोवः सविताहिरण्यपाणिः प्प्रतिगृभ्णा त्त्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्त्वा महिनां पयोऽसि।।

धान्यौषधी मनुष्याणां जीवनं परमं स्मृतम्।
तेन स्नानेन देवेश मम पापं व्यपोहतु।।

७. फलस्नानम्— ततः यजमानः फलस्नानं कुर्यात्। तत्पश्चात् यजमान फल लेकर जल में डालकर उस जल से स्नान करके पुनः आचमन करें।

ॐयाः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूता स्तानो मुञ्चन्त्व ꣳ हसः।।

वनस्पतिरसोदिव्यः फलपुष्पवृतः सदा।
तेन स्नानेन मे देव फलं लब्धमनंतकम्।।

८. सर्वौषधीस्नानम्— ततः यजमानः सर्वौषधीमादाय सर्वौषधीः स्नानं कुर्यात्। तत्पश्चात् यजमान सर्वोषधी लेकर शिखा से पैरों तक मलकर स्नान करके पुनः आचमन करें।

ॐओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा। यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त ꣳ राजन्पारयामसि ।।

औषध्यः सर्ववृक्षाणां तृणगुल्मलतास्तु याः।
दूर्वासिर्षपसंयुक्ताः सर्वौषध्यः पुनन्तु माम्।।

९. कुशोदकस्नानम्— ततः यजमानः कुशोदकस्नानं कुर्यात्। तत्पश्चात् यजमान कुशा को जल में डालकर उस जल से स्नान करें

ॐदेवस्यत्त्वासवितुः प्रसवेश्शिवनोब्बाहुभ्यांम्पूष्णणो हस्ताभ्याम्।।

कुशमूलेस्थितोब्रह्मा कुशमध्येजनार्दनः।
कुशाग्रे शङ्करो देवस्तेन नश्यतु पातकम्।।

१०. हिरण्यस्नानम्— ततः यजमानः हिरण्योदकस्नानं कुर्यात्।
तत्पश्चात् यजमान सुवर्ण को जल में डालकर उस जल से स्नान करें।

ॐआकृष्णेन रजसाव्वर्तमानोनिवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवोयाति भुवनानिपश्यन्।।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छमे।।

।। इति दशविधस्नानानि।।

अथजलयात्राविधानम्

तत्रादौ यजमानः सपत्नीकः पुत्रपौत्रबान्धवादियुक्तः सन् वाद्यादिघोषेण नदी तडागादौ गच्छेत्। तत्र त्रयस्थण्डिलं कृत्वा (प्रथमः यजमानस्याग्रे हस्तमिते रक्तवस्त्रमाच्छाद्य अक्षतपुञ्जोपरि गणपतिं, षोडशमातृका स्थापयेत्, द्वितीयः तदग्रे द्विहस्तमिते रक्तवस्त्रमाच्छाद्य धान्यस्याष्टदलोपरि नववर्धनीकलशाः स्थापयेत् तृतीयः द्वितीयादुत्तरतः हस्तमिते रक्तवस्त्रमाच्छाद्य जलमातृका, जीवमातृका, स्थलमातृका स्थापनं कुर्यात्) **सङ्कल्पं कुर्यात्।**

यजमान सपत्नीक परिवार सहित आचार्यादि ब्राह्मणों को लेकर वाद्यादि के वादन तथा जयघोष के साथ नदी, तालाब, जलस्थान व किसी मुख्य देवस्थान पर जायें। वहाँ पर सपत्नीक यजमान पूर्वाभिमुख अपने आसन पर विराजमान होकर पवित्रकरण आचमन प्राणायाम करके तीन स्थण्डिलो पर स्थापित गणपत्यादिदेवताओं की पूजाकरें।
यजमान के सम्मुख तीन स्थण्डिल बनावें—१. यजमान के आगे हाथमात्र तथा उसको लालवस्त्र से आच्छादित करके उसपर अम्बिका व गणपति जी को स्थापित करें। २. उसके आगे दो हाथ के परिमाण का स्थण्डिल बनाकर वस्त्र से आच्छादित करके अष्टदल बनाकर मध्य में प्रधान कलश व शिखर कलश तथा आठों दिशाओं में आठ कलश स्थापित करें। ३. प्रथम या द्वितीय के उत्तर भाग में एक हाथ मात्र स्थण्डिल को लालवस्त्र से आच्छादित करके उसे पर जलमातृका, जीवमातृका तथा स्थलमातृका स्थापित करें।
मङ्गलतिलकम्— (ब्राह्मण यजमान के ललाट पर कुमकुम का तिलक करें)

ॐस्वस्ति नऽइन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषाविश्ववेदाः। स्वस्ति-नस्ताक्ष्योऽअरिष्ट नेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

भद्रमस्तु शिवं चास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु।
रक्षन्तु त्वां सदा देवा सम्पदः सन्तु सर्वदा।।

यजमानस्य पत्नी अपि स्व ललाटे तिलकं कुरु —

श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम्। इष्णन्निषाण मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण।।

ग्रन्थिबन्धनम्— (ग्रन्थि बन्धन करें) यजमानपत्नी यजमानस्य दक्षिणे उपविश्य—

ॐतम्पत्नी भिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुतवा हिरण्यैः नाकम्गृब्भ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽअधिरोचने दिवः।।

गणाधिपं नमस्कृत्य उमालक्ष्मी सरस्वतीम्।
दाम्पत्य रक्षणार्थाय पटग्रन्थिं करोम्यहम्।।

श्रीदेव देव कुरु मङ्गलानि सन्तान वृद्धि कुरु संततञ्च।
धनायु वृद्धि कुरु इष्टदेव मद्ग्रन्थि बन्धे शुभदा भवन्तु।।

स्वस्तिवाचनम् (शान्तिपाठः)— ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति न स्तार्क्ष्योऽअरिष्ट नेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।१।। पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।

तत्रशास्त्रोक्तञ्च— https://upayogibooks.com

शान्तिकं पौष्टिकं चैव जलयात्रां विना बुधः।
कुरुते यदि वै मोहात्कर्म तस्य च निष्फलम्।।१।।
तडागादिप्रतिष्ठासु देवतायतनादिषु।
लक्षहोमे कोटिहोमोऽयुतहोमे तथैव च।।२।।
रुद्रादिपंचरुद्रेषु यज्ञे चाचरिते शुभे।
व्रतोत्सर्गेषु कार्येषु महादाने तथैव च।।३।।
जलयात्रां पुरा कृत्वा श्रेष्ठकर्म समारभेत्।
आथातः संप्रवक्ष्यामि जलयात्राविधिं शुभम्।।४।।
पंचरात्रे तथा तत्र मया प्रोक्ता तु नारद।
यजमानः सपत्नीको बन्धुभिः परिवारितः।।५।।
गजैरश्वैः समायुक्तो नानारथ समन्वित।
संभारास्तत्र संगृह्य कलशान्काञ्चनादिकान्।।६।।
तदभावे तु मृत्कुम्भान्नूतनान्दृढतायुतान्।
बाण सप्तरसगुणान्षष्टिरष्टोत्तरं शतम्।।७।।

पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।२।। विष्णो रराटमसि विष्णोःश्नप्त्रेस्त्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्द्ध्रुवोसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।।३।। अग्निर्देवता व्वातोदेवता सूर्य्योदेवता चन्द्रमादेवता व्वसवो देवता रुद्रादेवतादित्यादेवता मरुतोदेवता व्विश्वेदेवादेवताबृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता व्वरुणोदेवता।।४।। द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ॡ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्व्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ॡ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।५।। व्विश्वानि देव सवितर्द्दुरितानि परासुव। यद्भद्रन्तन्नऽआसुव।।६।। एतन्ते देव सवितुर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पति ब्रह्मणे। तेन यज्ञमवतेन यज्ञपति तेन मामव।।७।। ॐ शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु। सर्वाऽरिष्ट शान्तिर्भवतु ।।

॥ इति शान्तिपाठः॥

नमस्कारम् — (हाथ जोड.कर सभी देवताओं को नमस्कार करें)

यजमानः करौबध्वा देवान् मनसा स्मरतु— ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।। श्रीलक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः।। उमामहेश्वराभ्यां नमः।। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः।। शचीपुरन्दराभ्यां नमः।। मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः।। इष्टदेवताभ्यो नमः।। कुलदेवताभ्यो नमः।। ग्रामदेवताभ्यो नमः।। स्थानदेवताभ्यो नमः।। वास्तुदेवताभ्यो नमः।। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।। सर्वाभ्यः शक्तिभ्यः नमः।। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।। एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः।। ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।।

यजमानः सपत्नीकः हस्तयोः पुष्पाणि आदाय–(यजमान पत्नी सहित हाथों में पुष्प लेकर ध्यान करें)

ॐसुमुखश्चैकदन्तश्च, कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।
विद्यारम्भेविवाहे च प्रवेशेनिर्गमे तथा।
संग्रामे सङ्कटे चैवविघ्नस्तस्य न जायते।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।

अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।
सर्व मङ्गलमाङ्गल्ये! शिवे! सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये! त्र्यम्बके! गौरि नारायणि नमोस्तु ते।।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनो हरिः।।

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं देवबलं तदेव लक्ष्मीपते! तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि।।

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतः तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।
अनन्यांश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।
स्मृते सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्।।
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिंब्रह्मेशानजनार्दनाः।।
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्।।
वक्रतुण्ड ! महाकाय ! कोटि सूर्यसमप्रभः।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

गुरोर्ध्यानम्—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

सङ्कल्पम्—(यजमान पत्नी सहित दाहिने हाथ में रोली, चावल, पुष्प, दूर्वा, जल और द्रव्य लेकर संकल्प करें)

यजमानः सपत्नीकः स्वदक्षिणहस्ते गन्धाक्षतपुष्पदूर्वाजलद्रव्यञ्चादाय—

ॐविष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्यविष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणोऽह्निद्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बुद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गते ब्रह्मावर्ते अमुकपवित्रक्षेत्रे अमुकराज्याऽन्तर्गते अमुकमण्डलान्तर्गते अमुकजनपदे अमुकनगरे वा ग्रामे श्रीगङ्गायमुनयोः अमुकदिक् भागे अमुकनामसंवत्सरे देवब्राह्मणानां सन्निधौ श्रीमन्नृपति वीरविक्रमादित्य समयपरिमिते अमुकविक्रामाब्दे मासानां मासोत्तमे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगौत्रोत्पन्नोऽहं अमुकशर्माऽहं सपत्नीकोऽहं सपरिवारोऽहं सकुटुम्बबन्धु बान्धवोऽहं ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त लोकोक्तपुण्य फलावाप्त्यर्थं अमुकदेवस्य प्रसादात् मम ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं सकलमनैप्सित कामना संसिद्ध्यर्थं सर्वाभीष्टप्राप्ति पूर्वक धर्मार्थकाममोक्षफलाऽवाप्त्यर्थं अमुकदेवप्रीत्यर्थं अमुककर्माङ्गत्वेन जलयात्रा कलशानां जलमातृणां वरुणस्य गणपत्यादिदेवानांपूजनमहं करिष्ये।

अथ श्रीगणेशाम्बिकेपूजनम्

यजमानः दक्षिणहस्ते पुष्पाक्षताञ्चादाय—

आवाहनम् —(यजमान दाहिने हाथ में पुष्प व चावल लेकर आवाहन करें)

ॐगणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम्।।

ॐअम्बेअम्बिके ऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्।।

ॐभूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिके इहागच्छ इहतिष्ठ सिद्धि बुद्धि सहिताय सवाहनाय सायुधाय नमः। आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐमनोजूतीतिमन्त्रस्य प्रतिष्ठा पूर्वकं पुष्पासनादि षोडशोपचारैः सम्पूज्य।

भक्तार्ति नाशन पराय गणेश्वराय,
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय,
भक्त प्रसन्न वरदाय नमो नमस्ते।।

सर्व मङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बिके गौरि नारायणी नमोऽस्तुते।।

अनेन कृतेन पूजनेन श्रीगणेशाम्बिके प्रीयेताम् न मम।

अथ जलमातृकापूजनम्

ऊर्मिर्लक्ष्मीर्जला पाना वारुणी जलवासिनी।
आपगा च क्रमेणैव सप्तैता जलमातरः।।

मतान्तरेण—

(मत्स्यी कूर्मी च वाराही दर्दुरी मकरी तथा।
जलुकी तन्तुकी चैव सप्तैता जल मातृका।।)

यजमानः दक्षिणहस्ते पुष्पाक्षताञ्चादाय—

आवाहनम् —(यजमान दाहिने हाथ में पुष्प व चावल लेकर नववर्द्धनीकलशों पर या उत्तर में अक्षतपुंजो पर जलमातृकाओं का आवाहन करें)

१. ऊर्म्यै(पूर्वकुम्भोपरि)—**ॐवृष्णऊर्मिरसिराष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृष्ण-ऊर्मिरसिराष्ट्रदाराष्ट्रममुष्मै देहि वृषसेनोऽसि राष्ट्रदाराष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृषसेनोऽसि राष्ट्रदाराष्ट्र समुष्मै देहि।।**

महार्णवे समुद्भूतां कल्लोलांदोलवर्द्धिनीम्।
मोहयंतीजगत्सर्वमूर्मिमावाहयाम्यहम् ।।
आगच्छ वरदे देवि यज्ञेऽस्मिन्सन्निधौ भव।।

ॐऊर्म्यै नमः, ऊर्मिमावाहयामि।

२. लक्ष्म्यै(आग्नेयकुम्भोपरि)— **श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणिरूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाण मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण।।**

पद्मासनसमासीनां पद्महस्तां हरिप्रियाम्।
अम्भोधितनयां देवीं लक्ष्मीमावाहयाम्यहम्।।
आगच्छ वरदे देवि यज्ञेऽस्मिन्सन्निधौ भव।।

ॐलक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मीमावाहयामि।

३. जलायै(दक्षिणकुम्भोपरि)— **ॐद्युभिरक्तूभिः परिपातमस्मानरिष्ट-नेभिरश्विना सौभगोभिः। तन्नोमित्रो वरुणोमामहन्तामदितिः पृथिवीऽउतद्यौः।।**

प्रलयांत महाघोरे एकोदधिकृतां महीम्।

अम्बुमूर्तिधरां देवीं जलामावाहयाम्यहम्।।
आगच्छ वरदे देवि यज्ञेऽस्मिन्सन्निधौ भव।।

ॐजलायै नमः, जलामावाहयामि।

४. पानायै(नैर्ऋत्यकुम्भोपरि)— **ॐअन्तरामित्रावरुणाचरन्तीमुखं यज्ञानाम भिसंविदाने। उषासावा ७ सुहिरण्ये सुशिल्पेऽऋतस्यसोनाविहसादयामि।।**

चतुरशीतिसंख्याका जन्तवो योनिसम्भवाः।
मायाधाराः कृतास्तस्मात्पानामावाहयाम्यहम्।।
आगच्छ वरदे देवि यज्ञेऽस्मिन्सन्निधौ भव।।

ॐपानायै नमः, पानामावाहयामि।

५. वारुण्यै (पश्चिमकुम्भोपरि)— **ॐवरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य-स्कम्भ सर्ज्जनीस्त्थो वरुणस्यऽऋतसदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद।।**

वरुणस्य प्रियां देवीं पावनीं भुवनत्रये।
सर्वाभरणशोभाढ्यां वारुणीमावाहयाम्यहम्।।
आगच्छ वरदे देवि यज्ञेऽस्मिन्सन्निधौ भव।।

ॐवारुण्यै नमः, वारुणीमावाहयामि।

६. जलवासिन्यै (वायव्यकुम्भोपरि)— **ॐअर्यमणबृहस्पतिमिन्द्रन्दानाय चोदय वाचंविष्णु ꣸ सरस्वती ७ सवितारञ्च वाजिन ꣸ स्वाहा।।**

जलजन्तून्विना नैवयानि तीर्थानि सर्वतः।
आवाहयामि तां देवीं विशुद्धां जलवासिनीम्।।
आगच्छ वरदे देवि यज्ञेऽस्मिन्सन्निधौ भव।।

ॐजलवासिन्यै नमः, जलवासिनीमावाहयामि।

७. आपगायै (उत्तरकुम्भोपरि)- **ॐअग्नेऽइन्द्रवरुणमित्रदेवाः शर्धः प्रयन्तमारुतोतविष्णो उषनासत्यारुद्रोऽ अधग्नाः पूषाभगः सरस्वतीजुषन्तः।।**

रसातलं च पातालं यया व्याप्तं चराचरम्।
जगदाधारभूतां चापगामावाहयाम्यहम्।।
आगच्छ वरदे देवि यज्ञेऽस्मिन्सन्निधौ भव।।

ॐ आपगायै नमः, आपगामावाहयामि।

८. **शुद्धायै** (ईशानकुम्भोपरि)— **ॐशुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्रायपशुपतये कर्ण्णा यामाऽअवलिप्ता रौद्रानभोरूपाः पार्ज्जन्याः।।**

शुद्धोदधिसमुद्भूतां शुद्धवर्णजलप्रियाम्।
शुद्ध्यर्थे जलकुम्भानां शुद्धामावाहयाम्यहम्।।
आगच्छ वरदे देवि यज्ञेऽस्मिन्सन्निधौ भव।।

ॐशुद्धायै नमः, शुद्धामावाहयामि।

९. **वरुणाय** (मध्यकुम्भोपरि)—**ॐवरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्त्थो वरुणस्यऽऋतसदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद।।**

आगच्छ जलदेवेश जलनाथ ह्यपांपते।
तव पूजां करिष्यामि कुम्भेऽस्मिन्सन्निधौ भव।।

ॐवरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि।

ॐमनोजूतीतिमन्त्रस्य प्रतिष्ठा पूर्वकं पुष्पासनादि षोडशोपचारैः सम्पूज्य।

प्रार्थना—

यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च।
सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय
नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु।।

अनया कृतपूजया जलमातृकाः प्रीयन्ताम् न मम।

अथ जीवमातृकापूजनम्

(गणेशमण्डल के उत्तर में एक हाथमात्र स्थण्डिल बनाकर उसे रक्तवस्त्र से अच्छादित करके अक्षतपुंजो पर जीवमातृका तथा स्थलमातृकाओं का आवाहन करें)

मत्सी कूर्मी जलौकी च दर्दुरी जलगोधिका।
मकरी तन्तुकी चैव सप्तैता जीवमातरः।।

मतान्तरेण–

(कुमारी धनदा नन्दा विमला मङ्गलाऽचला।
पद्माचेति सुविख्याता सप्तैता जीवमातरः।।)

आवाहनम् (यजमानः दक्षिणहस्ते पुष्पाक्षताञ्चादाय)—

।।१।। **ॐभूर्भुवः स्वः मत्स्यै नमः,** मत्सीमावाहयामि स्थापयामि।

।।२।। **ॐभूर्भुवः स्वः कूर्म्यै नमः,** कूर्मीमावाहयामि स्थापयामि।

।।३।। **ॐभूर्भुवः स्वः जलौक्यै नमः,** जलौकीमावाहयामि स्थापयामि।

।।४।। **ॐभूर्भुवः स्वः दर्दुर्यै नमः,** दर्दुरीमावाहयामि स्थापयामि।

।।५।। **ॐभूर्भुवः स्वः जलगोधिकायै नमः,** जलगोधिकामावाहयामि स्थापयामि।

।।६।। **ॐभूर्भुवः स्वः मकर्यै नमः,** मकरीमावाहयामि स्थापयामि।

।।७।। **ॐभूर्भुवः स्वः तन्तुक्यै नमः,** तन्तुकीमावाहयामि स्थापयामि।

ॐमनोजूतीतिमन्त्रस्य प्रतिष्ठा पूर्वकं पुष्पासनादि षोडशोपचारैः सम्पूज्य।

प्रार्थना—

विश्वेश्वरि त्वं परिपासिविश्वं
विश्वात्मिका धारयसीतिविश्वम्।
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः।।

अनया कृतपूजया जीवमातृकाः प्रीयन्ताम् न मम।

अथ स्थलमातृकापूजनम्

उमा लक्ष्मीर्महामाया पानादेवी तथैव च।
वारुणी निर्मला गोधाः सप्तैताः स्थलमातरः।।

मतान्तरेण–

(ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा।
वाराही च तपेन्द्राणी चामुण्डा स्थलमातरः।।)

यजमानः दक्षिणहस्ते पुष्पाक्षताञ्चादाय—

आवाहनम् —(यजमान दाहिने हाथ में पुष्प व चावल लेकर आवाहन करें)

।।१।। **ॐभूर्भुवः स्वः उमायै नमः,** उमामावाहयामि स्थापयामि।

।।२।। **ॐभूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः,** लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि।

।।३।। **ॐभूर्भुवः स्वः महामायायै नमः,** महामायामावाहयामि स्थापयामि।

।।४।। ॐभूर्भुवः स्वः पानादेव्यै नमः, पानादेवीमावाहयामि स्थापयामि।

।।५।। ॐभूर्भुवः स्वः वारुण्यै नमः, वारुणीमावाहयामि स्थापयामि।

।।६।। ॐभूर्भुवः स्वः निर्मलायै नमः, निर्मलामावाहयामि स्थापयामि।

।।७।। ॐभूर्भुवः स्वः गोधायै नमः, गोधामावाहयामि स्थापयामि।

ॐमनोजूतीतिमन्त्रस्य प्रतिष्ठा पूर्वकं पुष्पासनादि षोडशोपचारैः सम्पूज्य।

प्रार्थना—

आधारभूता जगतस्त्वमेका, महीस्वरूपेण यतः स्थितासि।
अपां स्वरूपस्थितया त्वयैतदाप्यायते कृत्स्नमलङ्घ्यवीर्ये।।

अनया कृतपूजया स्थलमातृकाः प्रीयन्ताम् न मम।

अथ वर्धनीकलशपूजनम्

(गणपति आदि देवताओं से आगे की ओर गेंहु या सप्तधान्य से अष्टदल बनाकर उसके ऊपर नववर्धनीकलशों के साथ शिखरकलश स्थापित करके कलशों की पूजा करें)

भूमिस्पर्शः (भूमि का स्पर्श करें)

ॐमही द्यौः पृथिवी च नऽइमं य्यज्ञम्मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः।।

धान्यप्रक्षेपः (नौ जगह भूमि पर सप्त धान्य रखें)

ॐओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा। यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त ꣳ राजन्पारयामसि।।

कलशस्थापनम् (सप्त धान्य पर कलशों को स्थापित करें)—

१. मध्यकलशे— ॐसमुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात्पुना नायन्त्यनि विशमान्त। इन्द्रो या वज्री वृषभोरराद ताऽआपो देवीरिह मामवन्तु।।

२. पूर्वकलशे—ॐया आपो दिव्या उतवास्त्रवन्ति खनित्रिमा उतवायाः स्वयंजा। समुद्रार्थायाः शुचयः याः पावकास्ताऽआपो देवीरिह मामवन्तु।।

३. आग्नेयकलशे— ॐया सा राजा वरुणोयाति मध्येसत्यानुते ऽअव-पश्यं जनाना। मधुश्चुतः शुचयो या पावकास्ताऽआपो देवीरिह मामवन्तु।।

४. दक्षिणकलशे— ॐयासुराजा वरुणोयासु सोमोविश्वेदेवा यासूर्य मदन्ति। वैश्वानरो यास्वग्निः प्रविष्टस्ताऽआपो देवीरिह मामवन्तु।।

५. नैर्ऋत्येकलशे— ॐसमुद्रं गच्छ स्वाहाऽन्तरिक्ष गच्छ स्वाहा देव ꣳ सवितारं गच्छ स्वाहामित्रावरुणौ गच्छ स्वाहाऽहोरात्रे गच्छ स्वाहा छन्दा

ॐ सि गच्छ स्वाहा। द्यावापृथिवी गच्छ स्वाहा यज्ञं गच्छ स्वाहा सोमं गच्छ स्वाहा। दिव्यं नभो गच्छ स्वाहाऽग्निं वैश्वानरङ्गच्छ स्वाहा।। मनो मेहार्द्दियच्छ दिवंते धूमोगच्छतु स्वर्ज्योतिः पृथिवीं भस्मनापृण स्वाहा।।

६. पश्चिमकलशे— ॐसमुद्राय त्वा वाताय स्वाहा सरिताय त्वा वाताय स्वाहा। अनाधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा प्रतिधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा। अवस्यवे त्वा वाताय स्वाहा शिमाद्याय त्वा वाताय स्वाहा।।

७. वायव्यकलशे— ॐसमुद्रोसि नभस्वानार्द्रदानुः शम्भूर्मयो भूरभि मा व्वाहि स्वाहा मारुतोऽसि मारुताङ्गणः शम्भूर्मयो भूरभि मा व्वाहि स्वाहा वस्यूरसि दुवस्वाच्छम्भूर्मयो भूरभि मा व्वाहि स्वाहा।।

८.उत्तरकलशे—ॐइमम्मे वरुणश्रुधी हवमद्या च मृडय त्वामवस्युराचके।।

९. ईशानकलशे— ॐवरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्त्थो वरुणस्यऽऋतसदन्न्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद।।

शिखरकलशे— ॐआजिघ्र कलशं मह्या त्वा व्विशन्त्विन्दवः। पुनररुर्ज्जा निवर्त्तस्व सा नः सहस्रं धुक्क्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्मा विशताद्रयिः।।

जलपूर्णम् (कलशों में जल भरें)—

ॐवरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्त्थो वरुणस्यऽऋतसदन्न्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद।।

गन्धं प्रक्षेपः (कलशों में चन्दन या रोली छोड़े)—

ॐत्वां गन्धर्व्वाऽअखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्प्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा व्विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।।

धान्यं प्रक्षेपः (कलशों में धान्य छोड़ें)—

ॐधान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणायत्त्वोदानायत्त्वा व्यानायत्त्वा। दीर्घामनुप्रसितिमायुषेधान्देवोवः सविताहिरण्य पाणिः प्रतिगृभ्णा त्त्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषेत्त्वा महिनां पयोऽसि।।

सर्वोषधीं प्रक्षेपः (कलशों में सर्वोषधी छोड़े)—

ॐयाऽओषधीः पूर्व्वा जातादेवेब्भ्यस्त्रियुगम्पुरा। मनैनु बब्भ्रूणामह ८ शतं धामानि सप्त च।।

पञ्चपल्लवं प्रक्षेपः (पंचपल्लवों को कलशों के मुख पर सुव्यवस्थित करें)-

ॐअश्वत्थे वो निषदनम्पर्ण्णे वो व्वसतिष्कृता। गोभाजऽइत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्।।

सप्तमृदां प्रक्षेपः (कलशों में सप्त मृदा छोड़ें)-

ॐस्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः।।

पूगीफलं प्रक्षेपः (कलशों में सुपारी छोड़े)-

ॐयाः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्चपुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूता-स्तानो मुन्चन्त्व ६ हसः।।

पञ्चरत्नं प्रक्षेपः (कलशों में पंचरत्न छोड़े)

ॐपरिवाजपतिः कविरग्निर्हव्व्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे।।

मुद्रां प्रक्षेपः (कलशों में मुद्रा छोड़े)-

ॐहिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

रक्तसूत्रेण कलशं वेष्ट्येत् (कलशों के मोली बांधे)-

ॐसुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म व्यरूथमाऽसदत्स्वः। वासोऽअग्ने-व्विश्व रूप ६ सं व्ययस्व विभावसो।।

कलशोपरि पूर्णपात्रं न्यसेत् (चावल से भरे ढक्कन कलशों पर रखें)-

ॐपूर्णादर्व्विपरापत सुपूर्ण्णा पुनरापत। व्वस्नेव व्विक्क्रीणा वहाऽइषमूर्ज्ज ६ शतक्क्रतो।।

श्रीफलं न्यसेत् (कलशों पर लगे ढक्कनों पर नारियल रखें)-

श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणिरूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णान्निषाण मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण।।

ततो मध्यकलशे वरुणस्य विशेषपूजनम् (तत्पश्चात् मध्यकलश पर वरुणदेव का विशेष पूजन करें)-

तत्रादौ मंत्राक्षरन्यासः स्वशरीरे (यजमान अपने शरीर पर अक्षर न्यास करे)—

वं वरुणाय जलाधिपतये नमः, अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

रुं वरुणाय जलाधिपतये नमः, तर्जनीभ्यां नमः।

णां वरुणाय जलाधिपतये नमः, मध्यमाभ्यां नमः।

यं वरुणाय जलाधिपतये नमः, अनामिकाभ्यां नमः।

नं वरुणाय जलाधिपतये नमः, कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

मं वरुणाय जलाधिपतये नमः, करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासं—

ॐशन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः स्वाहा।। वरुणस्य हृदयाय नमः।

ॐस्योना पृथिवी नो भवा नृक्षरा निवेशनी यच्छा नः शर्म सप्रथाः स्वाहा।। वरुणस्य शिरसे स्वाहा।

ॐआपोहिष्ठा मयो भुवस्तान ऽऊर्जेदधातन। महेरणाय चक्षसे स्वाहा।। वरुणस्य शिखायै वषट्।

ॐइमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रिस्तोमं सचतापरुष्ण्या। असिक्न्या मरुद्वृथे वितस्तयार्जीकये शृणुह्या सुषेमयाः।।

वरुणस्य नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐतत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात्।।

वरुणस्य अस्त्राय फट्।

आवाहनम्— यजमानः स्व दक्षिणहस्ते पुष्पगन्धाक्षताञ्चादाय (दाहिने हाथ में पुष्प लेकर आवाहन करें)

ॐतत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानोव्वरुणेह बोद्ध्युरुश ६ समानऽआयुः प्रमोषीः।।

आवाहयामि देवेशं वरुणं जलनायकम्।
यादः पृष्ठसमारूढं पाशहस्तं महाबलम्।।
आगच्छ जलदेवेश कुंभेऽस्मिन् सन्निधौ भव।

मनोजूतीति प्रतिष्ठापूर्वकं पुष्पासनम्, षोडशोपचारैः लब्ध्वोपचारैर्वापूजनं कृत्वा अर्घ्यं दद्यात्। (पूजन के पश्चात् अर्घ्य प्रदान करें)

श्वेताभ्रशिखराकार नव भूतहिते रतः।
गृहाणार्घ्यमिमं देव जलनाथ नमोस्तुते।।१।।
अभ्यर्थितो मया भक्त्या परिवारसमन्वित।
सान्निध्यं भव देवेश मदीये यागमण्डपे।।२।।
गृहाण ब्रह्मणा सेव्य प्रसादं कुरु मे अपः।

Nanaji ...

संपूज्य बहुधा भक्त्या मंत्रमेतमुदीरयेत्।।३।।

अनेन कृतेन पूजनेन वर्धनीवरुणाः प्रीयन्ताम् न मम।

जलमध्ये आज्यहोम:

ततोः जलमध्ये आज्यहोमः। (यजमान जल के समीप जाकर या किसी पात्र में जल लेकर उसमें **''वरुणरूपिवैश्वानराय नमः''** का उच्चारण करके गन्धपुष्पादि से पूजा तथा प्रार्थना के पश्चात् जल में आज्यहोम करें।)

ततो यजमानः स्त्रुवेण जले आज्यहोमं कुर्यात्।

ॐआपोऽअस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेनो घृतप्प्वः पुनन्तु। व्विश्व ँ हिरिप्प्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्भ्यः शुचिरा पूतऽएमि। दीक्षा तपसोस्तनूरसि तान्त्वां शिवा ँ शग्मां परिदधं भद्द्रं व्वर्ण पुष्यन्।।१।।

वरुणाय स्वाहा। इदं वरुणाय न मम।

ॐआपोहिष्ठा मयो भुवस्तान ऽऊर्जेदधातन। महेरणाय चक्षसे।।२।।

वरुणाय स्वाहा। इदं वरुणाय न मम।

ॐवरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्त्थो वरुणस्य-ऽऋृतसदन्यसि वरुणस्यऽऋृतसदनमसि वरुणस्यऽऋृतसदनमासीद।।३।।

वरुणाय स्वाहा। इदं वरुणाय न मम।

ॐइमम्मे वरुणश्रुधी हवमद्या च मृडय त्वामवस्युराचके।।४।।

वरुणाय स्वाहा। इदं वरुणाय न मम।

ॐअग्नये स्वाहा, इदं०॥५॥ **ॐसोमाय स्वाहा,** इदं०॥६॥ **ॐसवित्रे स्वाहा,** इदं०॥७॥ **ॐसरस्वत्यै स्वाहा,** इदं०॥८॥ **ॐपूष्णे स्वाहा,** इदं०॥९॥ **ॐबृहस्पतये स्वाहा,** इदं०॥१०॥ **ॐइन्द्राय स्वाहा,** इदं०॥११॥ **ॐघोषाय स्वाहा,** इदं०॥१२॥ **ॐश्लोकाय स्वाहा,** इदं०॥१३॥ **ॐअंशाय स्वाहा,** इदं०॥१४॥ **ॐअद्भ्यः स्वाहा,** इदं०॥१५॥ **ॐवार्भ्यः स्वाहा,** इदं०॥१६॥ **ॐउदकाय स्वाहा,** इदं०॥१७॥ **ॐतिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा,** इदं०॥१८॥ **ॐस्त्रवन्तीभ्य स्वाहा,** इदं०॥१९॥ **ॐस्यन्दमानाय स्वाहा,** इदं०॥२०॥ **ॐकूप्याय स्वाहा,** इदं०॥२१॥ **ॐसूद्याय स्वाहा,** इदं०॥२२॥ **ॐधार्याभ्यः**

स्वाहा, इदं०॥२३॥ **ॐअर्णवाय स्वाहा,** इदं०॥२४॥ **ॐसमुद्राय स्वाहा,** इदं०॥२५॥ **ॐसरिद्भ्यः स्वाहा,** इदं०॥२६॥

अथ बलिदानम्

(यजमान हाथ में मूंग, चणा, चावल, जौ तथा बलिदान की सामग्री के पात्र को अपने सामने रख कर "**बलिद्रव्याय नमः**" मन्त्र के द्वारा गन्धपुष्पादि से पूजा करके जल में छोड़े तथा हाथ जोड़कर प्रार्थना करें।)

बलिं गृह्णन्तु ते देवा ये केचिज्जलमाश्रिताः।
बुभुक्षितान्नहीनाश्च कृपणा जल वासिनः।।
दस्यवः सिंहशार्दूला अन्ये ये जलमाश्रिताः।
भूतप्रेतपिशाचाश्च ये केचिद्वरुणालयाः।।
तृप्तास्ते मे श्रियं दद्युर्विघ्नान् रक्षन्तु सर्वदा।
बलिं गृह्णंत्विमे देवा आदित्या वसवस्तथा।।
मरुतोऽथाश्विनो रुद्राः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः।
असुरा यातुधानाश्च पिशाचा मातरो नगाः।।
दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः।
शाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः।।
जृम्भकाः सिद्धगंधर्वा माला विद्याधरा नगाः।
जगतां शान्तिकर्त्तारो ब्रह्माद्या च महर्षयः।।
मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परनिंदकाः।
सौम्या भवन्तु तृप्ता च भूताः प्रेताः सुखावहाः।।

(पश्चात् बलिदान से बची हुयी सामग्री को जल में जलचरों को डालकर हाथों का प्रक्षालन करें तथा हाथ जोड़कर तीर्थदेवों व वरुणदेव से प्रार्थना करें।)

ॐसमुद्रं गच्छ स्वाहाऽन्तरिक्षं गच्छ स्वाहा देव ꣳ सवितारं गच्छ स्वाहा मित्रावरुणौ गच्छ स्वाहाऽहोरात्रे गच्छ स्वाहा छन्दा ꣳ सि गच्छ स्वाहा। द्यावा पृथिवी गच्छ स्वाहा यज्ञं गच्छ स्वाहा सोमं गच्छ स्वाहा। दिव्यं नभो गच्छ स्वाहाऽग्निं वैश्वानरङ्गच्छ स्वाहा।। मनो मेहार्द्दियच्छ दिवंते धूमो-गच्छतु स्वर्ज्योतिः पृथिवीं भस्मनापृण स्वाहा।।१।।

ॐसमुद्राय त्वा वाताय स्वाहा सरिताय त्वा वाताय स्वाहा। अना-धृष्याय त्वा वाताय स्वाहा प्रतिधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा। अवस्यवे त्वा वाताय

स्वाहा शिमाद्याय त्वा वाताय स्वाहा।। २।।

ॐसमुद्रोसि नभस्वानार्द्रदानुः शम्भूर्मयो भूरभि मा व्वाहि स्वाहा मारुतोऽसि मारुताङ्गणः शम्भूर्मयो भूरभि मा व्वाहि स्वाहा वस्यूरसि दुवस्वाच्छम्भूर्मयो भूरभि मा व्वाहि स्वाहा।।३।।

ॐपञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः सरस्वती तु पञ्चधा सो देशे भवत्सरित्।।

ततो पूर्वादिदिक्षु इन्द्रादिभ्यः बलिदानं कुर्यात्।(तत्पश्चात् पूर्वादि दशदिशाओं में इन्द्रादिदिक्पालों के लिए बलि प्रदान करके गन्धपुष्पादि से पूजा करें)

ॐयेदेवासो दिव्येका दशस्थपृथिव्यामध्येकादशस्थ अप्सुक्षितोमहिनै-कादशस्थते देवासो यज्ञमिमञ्जुषध्वम्।। इति मन्त्रेण देवेभ्यो बलिं दद्यात्।

तत्पश्चात् कर्मपूर्ति के लिए विष्णु का स्मरण करके आचार्यादि ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर ब्राह्मण भोजन करवायें तथा यजमान शिखरकलश व यजमानपत्नी कलश लें व शेष कलशों को सुवासिनियां लेकर शान्तिसूक्त व पावमानसूक्त का पाठ करते हुये यज्ञशाला के लिए प्रस्थान करें तथा अर्द्धमार्ग में चौराहे पर क्षेत्रपाल को बलि प्रदान करें।

चत्वरे किञ्चिद्भूमिमुपलिप्य दर्भानास्तीर्य पाषाणं तत्र संस्थाप्य—

'ॐक्षेत्रपालाय नमः' इति षोडशोपचारैः सम्पूज्य सदीपमाषमुदग्भक्त-सुगन्धितैल रक्तवस्त्रादियुतं बलिं गृहीत्वा—

नमो भगवते क्षेत्रपालाय भासुरनेत्र ज्वालामुख अवतर कपिल-ऊर्ध्वकेशजिह्वाललन शत्रुँश्छिंधि भिंधि। इति प्रार्थ्य बलिं दत्त्वा प्रत्यागच्छेत्।

हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य आचम्य आचार्यब्राह्मणैः सह मण्डपे आगत्य सर्वान्कुम्भान् स्थापयेत्।

॥ इति जलयात्राविधानम् ॥

अथ पूजाप्रकरणम्

पवित्रीकरणम्—(यजमान के हाथों का प्रक्षालन करवायें)

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

इति पठित्वा आत्मानं पूजासामग्रीञ्च प्रोक्षणं कुर्यात्। (पूजासामग्री व स्वयं

के जल के छींटे दे)

ततस्त्रिकुशपवित्रीधारणम्—

ॐ पवित्रेस्थो व्वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्यरश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।।

आसनशुद्धि—

ॐ पृथ्वीतिमन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मोदेवता आसनपवित्र-करणे विनियोगः। (जल के छींटे देकर आसन की शुद्धि करें)

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

आचमनं प्राणायामः—

ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः,

ॐ हृषीकेशाय नमः । हस्तौ प्रक्षाल्य (हाथों का प्रक्षालन करें)

त्रिवारं गायत्रीं जपेत् वा विष्णुं स्मरेत् (यजमान आचमन व प्राणायाम करें)

शिखाबन्धनम् (यजमान दाहिने हाथ से शिखा बंधन करें) -

ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषि मानो गोषु मानोऽअश्वेषु रीरिषः। मा नो व्वीरान् रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे ।।

चिद्रूपिणी महामाये दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखा मध्ये तेजो वृद्धिं कुरुष्व मे।।

मङ्गल तिलकम् (ब्राह्मण यजमान के ललाट पर कुमकुम का तिलक करें) -

ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो ऽअरिष्ट नेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

भद्रमस्तु शिवं चास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु।
रक्षन्तु त्वां सदा देवा सम्पदः सन्तु सर्वदा।।

यजमानस्य पत्नीऽपि स्व ललाटे तिलकं कुर्यात्—

श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणिरूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाण मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण।।

शास्त्रोक्तञ्च– गोकर्णाकृतिहस्तेन माषामात्रं जलं पिबेत्।
आचमनं च तत्प्रोक्तं सर्व कर्मसु पावनम्।।

स्त्रीचेत्– आचमन स्थाने उदकेन नेत्र स्पर्शमाचरेत्।

बालकस्य तिलक मन्त्र —

यावत् गङ्गा कुरु क्षेत्रे यावत्तिष्ठति मेदिनी।
यावत् राम कथा लोके तावज्जीवतु बालकः।।

कन्यायाः तिलक मन्त्र— ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन। ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्।।

(विधवा स्वललाटे चन्दनस्य तिलकं कुर्यात्)

ॐ तद् विष्णोः परमंपद ँ सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्।। त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाब्भ्यः। अतो धर्माणि धारयन्।।

ग्रन्थिबन्धनम् (ग्रन्थि बन्धन करें) **यजमान पत्नी यजमानस्य दक्षिणे उपविश्य–**

ॐ तम्पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुतवाहिरण्यैः नाकम्गृब्भ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽअधिरोचने दिवः।।

गणाधिपं नमस्कृत्य उमालक्ष्मी सरस्वतीम्।
दाम्पत्य रक्षणार्थाय पटग्रन्थिं करोम्यहम्।।
श्रीदेव देव कुरु मङ्गलानि सन्तान वृद्धि कुरु संततञ्च।
धनायु वृद्धि कुरु इष्टदेव मद्ग्रन्थि बन्धे शुभदा भवन्तु।।

शास्त्रोक्तञ्च–

अनामिक्या च देव ऋषिणां च तथैव च।
पितृणामर्पयेद्गन्धं तर्जन्यां च सदैव च।
तथैव मध्यमांगुल्यां धार्यो गन्ध स्वयं बुधैः॥
तिलकं कुंकुमेनैव सदा मंगलकर्मणि।
कारयित्वा सुमतिमान्न श्वेतचन्दनं मृदा॥ ***(विष्णुधर्मोत्तरे)***

वामे सिन्दूरदाने च वामे चैव द्विरागमने।
वामेऽशनैकशयायां भवेज्जाया प्रियार्थिनी॥
सर्वेषु शुभकार्येषु पत्नी दक्षिणतः शुभा।
अभिषेके विप्रपादप्रक्षालने चैव वामतः॥
वामे पत्नी त्रिषु स्थाने पितृणां पादशौचने।
रथारोहणकाले च ऋतुकाले सदा भवेत्॥
स्त्रीरहितैः विप्रक्षत्रियविट्शुद्रैः क्रमात्।
कुशहेमरौप्यरचिता ताम्रो च धर्माय धार्या॥ ***(संस्कारगणपति)***

यज्ञभूमिपूजनम् (यजमान भूमि को स्पर्श करते हुये यज्ञभूमि की पूजा करें)—

यजमानः स्व दक्षिण हस्ते पुष्पगन्धाक्षताञ्चादाय-

ॐ मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञम्मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः।।

आधार शक्त्यै नमः ।। पञ्चोपचारैः सर्वोपचारैर्वा पूजनं कुर्यात्।

प्रार्थना—

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

कर्मपात्रपूजनम् (कर्मपात्र की पूजा करें)—

यजमान स्व दक्षिण हस्ते पुष्पगन्धाक्षताञ्चादाय-

ॐतत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो व्वरुणेह बोद्ध्युरुश ६ समानऽआयुः प्रमोषीः।।

कर्मपात्रस्थवरुणाय नमः। पञ्चोपचारैः सर्वोपचारैर्वा पूजनं कुर्यात्।

कलशस्य— पूर्वे - **ऋग्वेदाय नमः।** दक्षिणे - **यजुर्वेदाय नमः।**
पश्चिमे- **सामवेदाय नमः।** उत्तरे- **अथर्ववेदाय नमः।**

पवित्र्यालोडनम्—

ॐवरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्त्थो वरुणस्यऽऋत-सदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद।।

पवित्रीकरणम्—

ॐपवित्रेस्थो व्वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।।

तत्र शास्त्रोक्तञ्च—

सुवासितजलैः पूर्ण वामे कुम्भं सुपूजयेत्।
कलशस्येति मन्त्रेण तीर्थान्यावाहयेत्ततः।।
विना तु कर्मपात्रेण पूजाद्रव्यादि शोधनम्।
न भवेत्तेन तत्पूर्वं स्थापयेद्वामके स्वके।।
हेमादि निर्मितं पात्रं तीर्थादि जल संयुतम्।
विधाय तत्र सम्पूज्या वरुणाद्याहि देवता।।

(कर्मप्रदीपसंग्रहे)

दीपकपूजनम् —(दीपक का ध्यान व पूजा करें)

घृतदीपं प्रज्वाल्य अक्षतोपरि निधाय आवाहनार्थं यजमान स्व दक्षिण हस्ते पुष्पगन्धाक्षताञ्चादाय, तत्र मन्त्र—

ॐअग्निज्ज्योतिज्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्य्योज्योतिज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा। अग्निर्वर्च्चोज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा सूर्य्योवर्च्चोज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा।।

कर्मसाक्षिणै दीपाय नमः। पञ्चोपचारैः सर्वोपचारैर्वा पूजनं कुर्यात्।

प्रार्थना—

भो दीप देवरूपस्त्वं अन्धकारनिवारक !।
इमां मया कृतां पूजां गृह्णंस्तेजः प्रवर्धय।।

शङ्खपूजनम् —(देवताओं बाँई ओर शंख का ध्यान व पूजा करें)

यजमानः शङ्खे जलेन पूरयित्वा देवानां वामे, आधारे पुष्पोपरि वा संस्थाप्य— यजमानः स्वदक्षिण हस्ते पुष्पगन्धाक्षताञ्चादाय, तत्र मन्त्र—

ॐ अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः तमीमहेमहागयम्। उपयाम गृहीतोस्यग्नये वाव्वर्चसऽ एषते योनिरग्नये त्त्वाव्वर्चसे।।

शङ्खस्थ देवतायै नमः।। पञ्चोपचारैः सर्वोपचारैर्वा पूजनं कुर्यात्।

प्रार्थना—

ॐ शङ्खं चन्द्रार्क दैवत्यं वरुणं चाधिदेवतम्।
पृष्ठे प्रजापति विद्यादग्रे गङ्गा सरस्वती।।
त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे।
निर्मितः सर्वदेवै च पाञ्चजन्य नमोस्तु ते।।

घण्टापूजनम्(घृतदीपदक्षिणपार्श्वे घण्टां स्थाप्येत्)-

घी के दीपक दक्षिण पार्श्व में यजमान घंटा की पूजा करें

यजमानः स्वदक्षिणहस्ते पुष्पगन्धाक्षताञ्चादाय घण्टां पूजयेत्। तत्र मन्त्र—

ॐसुपर्णोसि गरुत्क्माँस्त्रिवृत्तेशिरोगायत्रञ्च क्षुर्बृहद्रथन्तरेपक्षौ। स्तोम आत्क्मा छन्दा ꣳस्यङ्गानिजू ꣳषिनाम सामतेतनूर्व्वामदेव्व्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छन्धिष्ण्याः शफाः। सुपर्णोसि गरुत्क्मान्दिवङ्गच्छ स्वः पत।।

ॐकुम्भो विनिष्ठुर्जनिता शचीभिर्यस्मिन् ऽग्नेयोन्याङ्गर्भोऽअन्तः। ल्पाशिर्व्यक्तः शतधार उत्सोदुहेन कुम्भी स्वधां पितृभ्यः।।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by

गरुड़स्वरूपायै घण्टायै नमः। पञ्चोपचारैः सर्वोपचारैर्वा पूजनं कुर्यात्।

प्रार्थना—

ॐआगमनार्थन्तु देवानाम् गमनार्थन्तु रक्षसाम्।
कुरु घण्टे वरं नादं देवतास्थानसन्निधौ।।

भैरवनमस्कारम्—

घण्टासमीपे दक्षिणपार्श्वे यज्ञनिर्विघ्नताप्राप्त्यर्थं भैरव आवाहनार्थं यजमानः स्वदक्षिणहस्ते पुष्पचन्दनाक्षतसिन्दूरमादाय भैरवं पूजयेत्। तत्र मन्त्र—

ॐबाहु मे बलमिन्द्रिय ꣳ हस्तौ मेकर्म्मवीर्यम् आत्क्मा क्षत्रमुरोमम्।।

ॐश्रीभैरवाय नमः।

प्रार्थना—

अजारे पिशङ्गिलास्वा वित्कुरु पिशगिलास।
आसकन्द मारेश सत्याहि पंथां विसर्पति।।
दुर्गाऽग्र बटुकाय विद्या बुद्धि विलक्षण।
मण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तु आयुर्बलकराः सदा।।

भूतोत्सारणम् —

यजमानः वामपादपार्ष्णिना त्रिवारं भूमिं ताड़ित्वा भूतान्युत्सार्याणि—

(बाँये पैर के तलवे को भूमि पर तीन बार ताड़ित करें)

ॐ रक्षोहणं बलगहनं वैष्णवीमिदमहन्तं बलगमुत्किरामि। यम्मे-निष्ट्योयममात्यो निचखानेद महन्तम् बलगमुत्किरामि। यम्मे समानो यम समानो निचखानेदमहन्तं बलगमुत्किरामि। यम्मे सबंधुर्यमसबंधुर्निचखानेदमहन्तं बलगमुत्किरामि। यम्मे सजातो यम सजातो निचखानोत्कृत्याङ्किरामि।।

ॐअपसर्पन्तु ते भूताः ये भूताः भूमिसंस्थिताः।
ये भूताः विघ्नकर्तारः नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्।
सर्वेषामविरोधेन शान्तिकर्मसमारभेत्।।

शान्तिपाठः (आनोभद्राः)—यजमान दाहिने हाथ में पुष्प लेकर शान्तिपाठ करें

यजमानः स्वदक्षिणहस्ते पुष्पमादाय आनोभद्राः इति शान्तिपाठं एक स्वरेण पठेत्—

ॐआनोभद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्ध्यासोऽअपरितासऽउद्भिदः देवा

नो यथा सदमिद्वृधेऽअसन्नप्प्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।।१।। देवानां भद्रासुमतिर्ऋृजूयतान्देवाना ᳪ रातिरभिनो निवर्त्तताम्। देवाना ᳪ सख्यमुपसेदिमा व्वयं देवानऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे ।।२।। तान्पूर्व्वया निविदाहूमहे व्वयं भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम्। अर्य्यमणं वरुण ᳪ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्।।३।। तन्नो वातोमयो भुवातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतन्धिष्ण्या युवम्।।४।। तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्प्पतिन्धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्ब्धः स्वस्तये।।५।। स्वस्ति नऽ-इन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्‍र्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।६।। पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं य्यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवाऽअवसाऽऽगमन्निह।।७।। भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ᳪ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।८।। शतमिन्नुशरदो अन्तिदेवा यत्रानश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।।९।। अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वेदेवाऽअदितिः पञ्चजनाऽ अदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम्।।१०।। तम्पत्नीभिरनु गच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुतवाहिरण्यैः। नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीय पृष्ठेअधिरोचने दिवः ।।११।। आयुष्यं वर्च्चस्य ᳪ रायस्पोषमौद्भिदम्। इद ᳪ हिरण्यं वर्च्चस्य ज्जैत्राया विशतादुमाम्।।१२।। द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ᳪ शान्तिः पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ᳪ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।१३।। यतो यतः समीहसे ततो नोऽभयङ्कुरु। शन्नः कुरु प्प्रजाभ्योभयन्नः पशुभ्यः।।१४।।

"वा"

स्वस्तिवाचनम् (शान्तिपाठः) :—

ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषाविश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्‍र्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।१।। पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषुपयो दिव्यन्तरिक्षेपयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम्।।२।। विष्णो रराटमसिविष्णोः श्नप्त्रेस्त्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्द्ध्रुवोसि वैष्णवमसिविष्णवे त्त्वा।।३।। अग्निर्देवता व्वातोदेवता सूर्य्योदेवता चन्द्रमा

देवता व्वसवोदेवता रुद्रादेवतादित्या देवता मरुतोदेवताव्विश्वेदेवादेवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता व्वरुणो देवता।।४।। द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व ꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि-।।५।। व्विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रन्तन्न ऽआसुव।।६।। एतन्ते देव सवितुर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पति ब्रह्मणे। तेन यज्ञमवतेन यज्ञपति तेन मामव।।७।। ॐ शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु। सर्वाऽरिष्ट शान्तिर्भवतु।।

।। इति शान्तिपाठः।।

नमस्कारम् (हाथ जोड़ कर सभी देवताओं को नमस्कार करें)

यजमानः करौबध्वा देवान् मनसा स्मरतु—

ॐश्रीमन्महागणाधिपतये नमः।। श्रीलक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः।। उमा-महेश्वराभ्यां नमः।। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः।। शचीपुरन्दराभ्यां नमः।। मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः।। इष्टदेवताभ्यो नमः।। कुलदेवताभ्यो नमः।। ग्रामदेवताभ्यो नमः।। स्थानदेवताभ्यो नमः।। वास्तुदेवताभ्यो नमः।। सर्वेभ्यो देवेभ्योनमः।। सर्वाभ्यः शक्तिभ्यः नमः।। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।। एतत् कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः।। ॐसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।।

यजमानः सपत्नीकः हस्तयोः पुष्पाणि आदाय (यजमान पत्नी सहित हाथों में पुष्प व चावल लेकर ध्यान करें)—

ॐसुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।

शास्त्रोक्तञ्च— गृहकर्मणि ये मन्त्रा ज्ञेयाः स्वाध्यायपाठतः।
किञ्च मध्यमावृत्या ते न द्रुता न विलम्बिताः।। *(रेणुः)*
आयुः पुमान्यशः कीर्तिं तेजः पुष्टिं श्रियं बलम्।
पशुं सुखं धनं धान्यं प्राप्नुयात्पितृवन्दनात्।।

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।
सर्व मङ्गलमाङ्गल्ये! शिवे! सर्वार्थसाधिके!।
शरण्ये! त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तु ते।।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदयस्थो भगवान् मङ्गलायतनो हरिः।।
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं देवबलं तदेव लक्ष्मीपते! तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि।।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतः तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।
अनन्यांश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।
स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्।।
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिंब्रह्मेशानजनार्दनाः।।
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्।।
वक्रतुण्ड! महाकाय! कोटि सूर्यसमप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

गुरोर्ध्यानम्—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

अथ सङ्कल्पः

देवपूजाअधिकारप्राप्तिसङ्कल्पः —(यजमान पत्नी सहित दाहिने हाथ में रोली, चावल, पुष्प, दूर्वा, जल तथा द्रव्य लेकर संकल्प करें)

यजमानः सपत्नीकः स्वदक्षिणहस्ते गन्धाक्षतपुष्पदूर्वाजलद्रव्यञ्चादाय—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया-प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत-मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बुद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गते ब्रह्मावर्तस्य अमुकपवित्रक्षेत्रे अमुक-राज्याऽन्तर्गत अमुकमण्डलान्तर्गत अमुकजनपदे अमुकनगरे वा ग्रामे श्रीगङ्गायमुनयोः अमुक दिक्‌भागे अमुकनामसंवत्सरे देवब्राह्मणानां सन्निधौ श्रीमन्नृपतिवीर विक्रमादित्य समयपरिमितौ अमुकविक्रामाब्दे मासानां मासोत्तमे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकायने अमुकऋतौ अमुकराशिस्थितेश्रीसूर्ये अमुकस्थितौ देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा यथा स्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणविशेषणविशिष्टायां अमुक-गौत्रोत्पन्नोऽहं अमुकशर्माऽहं करिष्यमाण अमुककर्मणि अधिकारप्राप्त्यर्थं कायिकवाचिकमानसिकसांसर्गिकदोषोपशमनार्थं शरीरशुद्ध्यर्थं च गोनिष्क्रयीभूतं द्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।

सकाम सङ्कल्पः —

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया-प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत-मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बुद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गते ब्रह्मावर्तस्य अमुकपवित्रक्षेत्रे अमुक-राज्याऽन्तर्गत अमुकमण्डलान्तर्गत अमुकजनपदे अमुकनगरे वा ग्रामे श्रीगङ्गायमुनयोः अमुक दिक्‌भागे अमुकनामसंवत्सरे देवब्राह्मणानां सन्निधौ श्रीमन्नृपतिवीर विक्रमादित्य समयपरिमितौ अमुकविक्रामाब्दे मासानां मासोत्तमे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकायने अमुकऋतौ अमुकराशिस्थितेश्रीसूर्ये अमुकस्थितौ देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा यथा स्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणविशेषणविशिष्टायां अमुकगौत्रोत्पन्नोऽहं अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं दासोऽहं गुप्तोऽहं) **सपत्नीकोऽहं**

सपरिवारोऽहं सकुटुम्बबन्धु बान्धवोऽहं ममात्मनः श्रुतिस्मृतिलोकोक्त पुण्य-फलावाप्त्यर्थम् अमुकदेवस्य प्रसादात् मम ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं अप्राप्तलक्ष्मि-प्राप्त्यर्थं प्राप्तलक्ष्म्याः चिरकाल संरक्षणार्थं अष्टलक्ष्म्यः (आद्यलक्ष्मी, विद्यालक्ष्मी,. सौभाग्य लक्ष्मी, अमृतलक्ष्मी, कामलक्ष्मी, सत्यलक्ष्मी, भौगलक्ष्मी, योगलक्ष्मी) **प्राप्त्यर्थं सकलमनैप्सितकामनासंसिद्ध्यर्थं सर्वाभीष्ट** (लोके वा राजसभायां, राजद्वारे वा सर्वत्र यशोविजयसम्मानप्रतिष्ठालाभादि) **प्राप्त्यर्थं मम प्रचलितव्यापारे बहुधनलाभार्थं समस्त भयाधिव्याधिजरापीड़ामृत्यु-परिहारद्वारा आयुरारोग्यैश्वर्याद्यभिवृद्ध्यर्थं तथा च मम जन्मराशेः सकासाद्ये नामराशेः सकासाद्ये वा जन्मकुण्डल्यां**(लग्नकुण्डल्याम्, चन्द्र-कुण्डल्यां) **केचित् विरुद्ध चतुर्थाष्टं द्वादशस्थानस्थिताः क्रूरग्रहाः अनिष्ट-कारकग्रहाणां महादशा** (अन्तर्दशा, प्रत्यन्तरदशा, सूक्ष्मदशा, प्राणदशा मुग्धादशा गोचरदशा, मासदशा, कालसर्पयोग, दुषितयोग वा) **मध्य कस्यांचित् दशायाम् सूचितं सूचयिष्यमाणं जनितं जनिष्यमाणं च यत् सर्वाऽरिष्टं तद्विनाशद्वारा सर्वदा सर्वेग्रहाः तृतीय एकादशस्थानस्थितवत् शुभफलप्राप्त्यर्थं मम गृहे पुत्रपौत्रादिसन्ततेरविच्छिन्नाभिवृद्ध्यर्थं आधिदैविक आधिभौतिक आध्यात्मिकत्रिविधतापोपसमनार्थं कायिकवाचिकमानसिक-सांसर्गिक सर्वविधपापोपसमनार्थं मम गृहे व्यापारे वा प्रारब्धकृत, पथ्यापथ्यदेवमानवकृत, शत्रुभूतप्रेतपिशाचमारिगणडाकिनीशाकिन्यादि कृत, मन्त्र-तन्त्र-यन्त्रादिकृत सर्वेआदिव्याधिशोकभयविघ्नबाधा शमनार्थपूर्वकं धर्मार्थकाममोक्षफलाऽवाप्त्यर्थं अमुकदेवं देवीं वा प्रीत्यर्थं, प्रसन्नतार्थं शान्त्यर्थं वा जपं पूजाञ्च ब्राह्मण** (ब्राह्मणैः) **द्वारा कारयिष्ये। तदङ्गत्वेन निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं आदौ गणपत्यादि देवानां पूजनं करिष्ये।।**

।। इति सङ्कल्पः।।

शास्त्रोक्तञ्च—

संकल्पमूलः कामो वै यज्ञाः संकल्पसम्भवाः।
व्रतानियमधर्माश्च सर्वे संकल्पजाः स्मृता।। *(मनुस्मृति)*
संकल्पेन विनाकर्म यत्किञ्चित्कुरुते नरः।
फलं चाप्यल्पकंतस्य धर्मस्याद्ध क्षयो भवेत्।।
संकीर्त्य मासपक्षादीन् निमित्तानितथैव च।
इदं कर्म करिष्येऽहमिति संकल्पमाचरेत्।। *(संस्कारभास्करे)*

अथ अग्न्युत्तारणम्

सङ्कल्प —

देशकालौ संकीर्त्य अस्याः स्वर्णमय्याः वा रजतमय्याः अमुकदेव-प्रतिमायाः घटनादिदोषपरिहारार्थं देवतासान्निध्यार्थञ्च अग्न्युत्तारणपूर्वकं चलां वा अचलां वा प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये।

अग्न्युतारणम्—मूर्तिं पात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य उपरिदुग्धमिश्रितजलधारां पातयेत्। (मूर्ति को पात्र में लेकर घृत लगाकर उपर दुग्धजल धारा करें)

तत्र मन्त्राः— ॐ समुद्रस्यत्त्वावकयाग्ग्नेपरिव्ययामसि। पावकोऽअस्मभ्य ꣳ शिवो भव।।१।। हिमस्यत्वा जरायुणाग्ग्ने परिव्ययामसि पावकोऽअस्मभ्य ꣳ शिवोभव।।२।। उपज्ज्मनुपवेतसेव्वतरनदीष्वा। अग्नेपित्तमपामसिमण्डूकिता-भिरागहिसेमन्नो यज्ञं पावकवर्ण्णं ꣳ शिवंकृधि।।३।। उपामिदन्न्ययन ꣳ समुद्रस्य निवेशनम्। अन्याँस्तेऽअस्मत्त्पन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्य ꣳ शिवोभव ।।४।। अग्नेपावक रोचिषामन्द्रयादेव जिह्वया। आ देवान् वक्षियक्षिच।।५।। सनः पावक दीदिवोग्रेदेवाँ२ ऽइहाव। उपयज्ञ ꣳ हविश्चनः।।६।। पावक-यायश्चितयन्त्याकृपाक्षामन्नुरुच ऽउषसो नुभानुना। तूर्व्वन्नयामन्नेतशस्यनूरण-ऽआयो घृणेन त्ततृषाणोऽअजरः।।७।। नमस्ते हरसेशोचिषेनमस्तेऽअस्त्त्वर्चिषे। अन्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तुहेतयः पावको अस्मभ्य ꣳ शिवोभव।।८।। येदेवा देवानां यज्ञियायज्ञियाना ꣳ संवत्त्सरीणमुपभागमासते। अहुता दोहविषो यज्ञेऽअस्मिन्त्स्यं पिबन्तु मधुनो घृतस्य।।९।। प्राणदाऽअपानदा व्यानदा व्वर्चोदा व्वरिवोदाः। अन्यास्तेऽअस्मतपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्य ꣳ शिवोभव।।१०।।

।। इत्युग्न्युत्तारणम् ।।

अथ प्राणप्रतिष्ठा

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्माविष्णुमहेश्वराः ऋषयः ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवताः आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकं अस्य अमुकदेवतानूतनमूर्त्तौ प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हों हँसः। अस्य अमुकदेव प्रतिमायाः प्राणा इह प्राणाः।।

ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हों हँसः। अस्य अमुकदेव

प्रतिमायाः जीव इह स्थितः।।

ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हों हँसः। अस्य अमुकदेव प्रतिमायाः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायुपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमम्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ꣳ समिमं दधातु विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामों- ३ प्रतिष्ठ।।

ॐ एषवै प्रतिष्ठानाम यज्ञोयत्रै तेन यज्ञेन यज्ञन्तेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति।। (प्रतिमा के हृदय पर अंगुठा रखते हुये उच्चारण करें)

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाश्चरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

(इसके बाद पन्द्रह बार प्रणव का उच्चारण करे) ततः षोडशोपचारैः पूजनं कुर्यात्।

।। इति प्राण प्रतिष्ठा ।।

अथ पञ्चोपचारैः (वैदिक)

।।१।। गंधम्—

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्वयेश्रियम्।।

।।२।। पुष्पम्—

ॐ ओषधीः प्रतिमोद्दध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः अश्श्वाऽइवसजित्वरी-व्वीरुधः पारयिष्णवः।।

।।३।। धूपम्—

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्वन्तं धूर्व्व तं योऽस्मान् धूर्व्वति तं धूर्व्व यं वयं धूर्वामः। देवानामसि वह्नितम ꣳ सस्निततमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।।

।।४।। दीपम्—

ॐ चंद्रमा मनसो जातश्च्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

शास्त्रोक्तञ्च— गन्धपुष्पे धूपदीपौ नैवेद्य इति पञ्चकम्।
पंचोपचारमाख्यातं पूजने तत्व बुधैः।। (कर्म्मप्रदीपे)

॥५॥ **नैवेद्यं**—

ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्ष ६ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन्॥

अथ षोडशोपचारैः (वैदिक)

प्रतिष्ठापनम्—(प्रष्ठिार्थ पुष्प छोड़े)

ॐमनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमं तन्नो त्वरिष्टं य्यज्ञ ६ समिमं दधातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामों३ प्रतिष्ठ। प्रष्ठिार्थं पुष्पं समर्पयामि।

आसनम्—(आसन के लिए पुष्प छोड़े)

ॐपुरुषऽएवेद ६ सर्वं य्यद्भूतं य्यच्चभाव्यम्। उतामृतत्त्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥ आसन्नार्थं पुष्पं समर्पयामि।

॥१॥ **पाद्यम्**—(पाद्य के लिए जल अर्पण करें)

ॐएतावानस्य महिमातो ज्ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ पाद्यार्थं जलं समर्पयामि।

॥२॥ **अर्घ्यम्**—(चंदन, अक्षत, पुष्प, दुर्वायुक्त जल से अर्घ्यें प्रदान करें)

ॐत्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः। ततो विष्ष्वङ्व्यक्क्रामत्साशनानशनेऽअभि॥ अघ्यार्थं गन्धोदकं समर्पयामि।

॥३॥ **आचमनीयम्**—(आचमन के लिए जल अर्पण करें)

ॐततो विराडजायत व्विराजो ऽधिपूरुषः। स जातोऽअत्यरिच्च्यत-पश्चाद्भूमि मथोपुरः॥ आचमनीयार्थ सुवासितं जलं समर्पयामि।

॥४॥ **स्नानम्**—(स्नान के लिए जल अर्पण करें)

ॐतस्माद्यज्ञात्त्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्तांश्च्चक्क्रे वायव्यानारण्ण्या ग्राम्याश्च्च ये॥ स्नानार्थं जलं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—(स्नान के लिए पंचामृत अर्पण करें)

ॐपञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः सरस्वती तु पञ्चधा सो देशे भवत्सरित्॥ मल्लापहारे पंचामृतस्नानं समर्पयामि।

शास्त्रोक्तञ्च— हस्ताभ्यामञ्जलिं वध्वाऽनामिकामूलपर्वणि।
अंगुष्टौनिक्षिपेन्सेयं मुद्रात्वावाहनीमता।
अधोमुखीत्वियं चैव स्थापनौति निगद्यते॥ ***(प्रयोगपारिजात)***

विशेषस्नानम्—

(क) **पयस्नानम्**—(स्नान के लिए दुग्ध अर्पण करें)

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषुपयो दिव्यंतरिक्षे पयोधाः। पयस्वती प्रदिशः सन्तुमह्यम्।। पयस्नानं समर्पयामि।

(ख) **दधिस्नानम्**—(स्नान के लिए दही अर्पण करें)

ॐ दधिक्राब्णो अकारिषंजिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखा-करत्प्रणआयू ಆ षितारिषत्।। दधिस्नानं समर्पयामि।

(ग) **घृतस्नानम्**—(स्नान के लिए धृत अर्पण करें)

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत व्वसां व्वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽआदिशोविदिशऽउद्दिशो दिग्ग्भ्यः स्वाहा।।
घृतस्नानं समर्पयामि।

(घ) **मधुस्नानम्**—(स्नान के लिए शहद अर्पण करें)

ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ꣳ रजः मधु द्यौरस्तुनः पिता मधुमान्नो-वनस्पतिर्मधुमाँ३अस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः।। मधुस्नानं समर्पयामि।

(ङ) **शर्करास्नानम्**—(स्नान के लिए शर्करा अर्पण करें)

ॐ अपा ಆ रसमुद्वयस ꣳ सूर्ये सन्त ꣳ समाहितं। अपा ಆ रसस्य यो रसस्तंवो गृह्णाम्युत्तमुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।। शर्करास्नानं समपयामि।

(च) **गन्धोदकस्नानम्** —(कुमकुम व चन्दन मिले हुये जल से स्नान करावें)

ॐ अ ꣳ शुना ते अ ꣳ शुः पृच्यतां परुषा परुः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः।। गन्धोदकस्नानं समर्पयामि।

(छ) **शुद्धोदकस्नानम्** — (शुद्ध जल से स्नान करावें)

ॐशुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षो रुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्ण्णा यामाऽअवलिप्ता रौद्रानभोरूपाः पार्ज्जन्याः।।
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

।।५।। **अधोवस्त्रम्** —(वस्त्र अर्पण करें)

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म व्यरूथमाऽसदत्स्वः। वासोऽअग्ने व्विश्वरूप ꣳ सं व्ययस्व विभावसो।। वस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

।।६।। **यज्ञोपवीतम्** —(यज्ञोपवीत अर्पण करें)

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।। यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

यज्ञोपवितान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

उपवस्त्रम् —(कंचुकी वस्त्र अर्पण करें तथा आचमन करवायें)

ॐ युवा सुवासाः परिवीतऽआगात् स उऽश्रेयान् भवति जायमानः। तं धीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाध्यो३ मनसा देवयन्तः।। उपवस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

।।७।। **गन्धम्** —(कुमकुम का तिलक करें)

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्। गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

चन्दनम् —(केसर मिश्रित चन्दन का तिलक करें)

ॐत्वां गन्धर्व्वा अखनस्त्वाँमिन्द्रस्त्वाँ बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा-विद्वान् यक्ष्मादमुच्च्यत।। किंसुकामिश्रितचन्दनं समर्पयामि।

अक्षतम्—(तिलक पर चावल लगायें)

ॐअक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रान-विष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी।। अक्षतान् समर्पयामि।

।।८।। **पुष्पाणिः**—(पुष्प तथा पुष्पमाला अर्पण करें)

ॐओषधीः प्रतिमोदद्ध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वाऽइव सजित्वरी-र्वीरुधः पारयिष्णवः।। पुष्पाणि समर्पयामि।

दूर्वा— (दूर्वा के अंकुर अर्पण करें)

ॐकाण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्प्परि। एवानो दूर्वे प्रतनुसहस्रेण शतेन च।। दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

शास्त्रोक्तञ्च— मध्यमाऽनामिकामध्ये पुष्पं संगृह्य पूजयेत्।
अंगुष्ठतर्जनीभ्यां तु निर्माल्यमपनोदयेत्।। ***(कालिकापुराणे)***

https://upayogibooks.com

बिल्वपत्रम् —(बिल्वपत्र अर्पण करें)

ॐ नमो विल्मिने च कवचिने च नमो व्वर्म्मिणे च बरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्न्याय च नमो धृष्ष्णवे।।

बिल्वपत्रं समर्पयामि।

अबीरगुलालम् —(अबीर और गुलाल अर्पण करें)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहुंयाया हेतिं परिबाधमानः। हस्तग्घ्नो व्विश्वा व्वयुनानि व्विद्वान् पुमान् पुमा ॐ सम्परिपातु व्विश्वतः।।

नानापरिमलद्रव्याणि अबीरं गुलालं च समर्पयामि।

सिन्दूरम्—(सिन्दूर अर्पण करें)

ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वात प्प्रमियः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ट्ठा भिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्न्वमानः।।

सौभाग्यद्रव्याणि (सिन्दूरं) समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यम्—(सुगन्धित अर्पण करें)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनं उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय मामृतात्।। सुगन्धितद्रव्यं समर्पयामि।

।।९।। **धूपम्**—(धूप अर्पण करें)

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्वन्तं धूर्व्वतंयोऽस्स्मान् धूर्व्वति तं धूर्व्व यं वयं धूर्वामः। देवानामसि वह्नित ॐ सस्निनतमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।। धूपं आघ्रापयामि।

।।१०।। **दीपम्**—(दीपक दिखावें तथा हाथों का प्रक्षालन करें)

ॐ चंद्रमा मनसो जातश्च्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत श्रोत्राद्वायुश्श्च प्राणश्श्च मुखा दग्निरजायत। प्रत्यक्षदीपं दर्शयामि। हस्तौ प्रक्षाल्य।

।।११।। **नैवेद्यम्** —(नैवेद्य अर्पण करें तथा ग्रासमुद्रा दिखावें)

ॐ नाब्भ्याऽआसीदन्तरिक्ष ॐ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमि र्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन्।। नैवेद्यं निवेदयामि।

धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य ग्रासमुद्राः प्रदर्शयेत्।

शास्त्रोक्तञ्च—

नैवेद्यं दक्षिणे भागे पुरतो वा न पृष्ठतः।
भक्ष्यं भोज्यं च लेह्यं च पेयं चोष्यं च पंचकम्।। ***(गौतमीये)***
स्नाने वस्त्रे च नैवेद्य दद्यादाचमनं तथा।। ***(संस्कारमयूखे)***

।।१२।। **आचमनीयम्-**(आचमन के लिए सुवासित जल अर्पण करें)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनं उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यो-र्म्मुक्षीयमामृतात्।। ॐ प्राणाय स्वाहा। अपानाय स्वाहा। व्यानाय स्वाहा। उदानाय स्वाहा। समानाय स्वाहा। आचमनीयं समर्पयामि।

करोद्वर्तनकम् —(हाथों का प्रक्षालन के लिए जल अर्पण करें)

ॐ अ ६ शुना ते अ ६ शुः पृच्यतां परुषा परुः। गंधस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः।। करोद्वर्तनं समर्पयामि।

।।१३।। **ऋतुफलम्**—(सामयिक फल अर्पण करें)

ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्व ६ हसः।। अखण्ड ऋतुफलानि समर्पयामि।

ऋतुफलान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

।।१४।। **ताम्बूलम्**—(ताम्बूल अर्पण करें)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। व्वसन्तो ऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।। मुखवासार्थं ताम्बूलं समर्पयामि।

।।१५।। **दक्षिणाद्रव्यम्**—(दक्षिणाद्रव्य अर्पण करें)

ॐ हिरण्यगर्भ्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।। द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

।।१६।। **कर्पूरातिक्यम्**—(आरती दिखावें)

ॐ इद ६ हविः प्रजननम्मेऽअस्तु दशवीर ६ सर्व्वगण ६ स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्न्य भयशनिः अग्निः प्रजाम्बहुलाम्मे करोत्वन्नम्पयोरेतो ऽअस्मासुधत्त।।

ॐ आ रात्रि पार्थिव ६ रजः पितुरप्रायि धामभिः। दिवः सदा ६ सि बृहती वि तिष्ठस ऽआ त्त्वेषं वर्तते तमः।।

ॐभूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय कर्पूरार्तिक्यं प्रदर्शयामि।

शास्त्रोक्तञ्च— पंकजं पंचरात्रं स्याद्दशरात्रं च बिल्वजम्।
एकादशाहं तुलसी नैव पर्य्युषिता भवेत्।। ***(विष्णुधर्मोत्तरे)***

आवाहनमासनं पाद्यमर्घमाचमनीयकम्।
स्नानं वस्त्रोपवीतं गन्धामाल्यान्यनुक्रमात्।।
धूपं दीपं च नैवेद्यं ताम्बूलं च प्रदक्षिणा।
पुष्पाञ्जलिरिति प्रोक्ता उपचारास्तु षोडश।।
फलेन सफलावाप्तिः साङ्गता दक्षिणार्पमिति।। ***(कर्मप्रदीपे जाबालिरपि)***

अथ पुष्पाञ्जलि

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवा स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साध्याः सन्ति देवाः ।। ॐराजाधिराजायप्रसह्य साहिने नमो व्वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।।

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषान्तादापर्धात् पृथिव्यैसमुद्रपर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्त स्यावसन् गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमति संपतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव ऽएकः।।

सेवन्तिकावकुलचम्पकपाटलाब्जैः,
पुन्नागजातिकरवीररसालपुष्पैः ।
बिल्वप्रवालतुलसीदलमञ्जरीभिः,
त्वं पूजयामि जगदीश्वर मे प्रसीद।।

नाना सुगन्धिपुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्ता गृहाण परमेश्वरः।।

॥ इति पुष्पाञ्जलिः॥

अथ षोडशोपचारैः (पौराणिक)

आवाहनम् —

ॐ आगच्छ देव देवेश स्व स्थानात् परमेश्वर।
अहं पूजां करिष्यामि सदा त्वं सम्मुखो भव।।

प्रतिष्ठापनम् —

ॐ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाश्चरन्तु च।
अस्यै देवत्त्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

आसनम् —

ॐनाना रत्न समायुक्तं कार्तस्वरविभूषितम्।
आसनं देव देवेश प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्।।

।।१।। पाद्यम् —

ॐ यदत्र क्लेशसंपर्कात्परमानन्द विग्रहम्।
तस्मैते चरणाब्जाय पाद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

।।२।। अर्घ्यम् —

ॐ तापत्रय हरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम्।
तापत्रय विमोक्षाय तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम्।।

।।३।। आचमनीयम् —

ॐ वेदानामपि वैद्याय देवानामपिदेवात्मने।
आचमनकल्पयामीश शुद्धानां शुद्धि हेतवे।।

।।४।। स्नानम् —

ॐ गङ्गा सरस्वती रेवा पयोष्णी नर्मदा जलैः।
स्नानार्थं च मया देव भक्त्यार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

पंचामृतस्नानम् —

ॐ पयोदधि घृतं चैव शर्करामधुसंयुतम्।
स्नानार्थं च मया देव भक्त्यार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
पञ्चामृतं मयानीतं पयोदधि घृतं मधु।
शर्करया समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

विशेषपञ्चस्नानम् (क) पयस्नानम्—

ॐ कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।।

(ख) दधिस्नानाम्—

ॐ पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभं।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शास्त्रोक्तञ्च— पौष्पं दारुमयं वास्त्रमाक्षतं कौशतेजसम्।
षड्विधं चासनं प्रोक्तं देवताप्रीतिकारकम्।।
द्रव्याभावे प्रदातव्या क्षालितास्तण्डुलाः शुभाः।
उपचारेषु सर्वेषु यत्किञ्चिद्दुर्लभं भवेत्।
तत्सर्व मनसा ध्यात्वा पुष्पक्षेपेण कल्पयेत्।।

https://upayogibooks.com

(ग) घृतस्नानाम्—

ॐ नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोष कारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

(घ) मधुस्नानम्—

ॐ पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

(ङ) शर्करास्नानम्—

ॐइक्षुरससमुद्भूत शर्करापुष्टिकारिका।
मलापहारिकादिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

(च) गंधोदकस्नानम्—

ॐमलयाचलसम्भूतं चन्दनेन विनिःसृतम्।
इदं गंधोदकस्नानं कुंकुमाक्तं च गृह्यताम्।।

(छ) शुद्धोदकस्नानम्—

ॐगङ्गा च यमुना चैव गौदावरी सरस्वती।
जलोत्तमं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

।।५।। वस्त्रम् —

ॐसर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जा निवारणे।
मयोपपादितेतुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्।।

।।६।। यज्ञोपवीतम् —

ॐ नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर!।।

उपवस्त्रम्—

ॐ कौंसुभपट्ट वस्त्रं च उपवस्त्रं धरं प्रभो।
पूजां कुरुष्व मे देव वस्त्रेण प्रतिगृह्यताम्।।

गंधम्—

ॐश्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

अक्षतम्—

ॐअक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ता सुशोभिता।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!।।

पुष्पाणि—

ॐमाल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयानीतानि पुष्पाणि प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्।।
नानासुगन्धसंयुक्तं नानापुष्पसमन्वितम्।
पूजायां कुरु मे देव पुष्पोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

दूर्वा—

ॐदूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान्मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर!।।

बिल्वपत्रम्—

ॐ त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम्।
त्रिजन्मपापसंहारं एकबिल्वं देवार्पणम्।।

कुंकुमम्—

ॐकुंकुमं कामनादिव्यं कामनाकामसम्भवम्।
कुंकुमेनार्चितोदेव! ततः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

सिन्दूरम्—

ॐसिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

अबीरं च गुलालं च—

ॐ अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च।
अबीरेणार्चितोदेव! ततः शान्तिं प्रयच्छ में।।

नानापरिमलद्रव्याणि (सौभाग्यद्रव्याणि)—

ॐश्वेतचूर्णं रक्तचूर्णं हरिद्राकुंकुमान्वितैः।
नानापरिमलद्रव्यैः प्रीयतां परमेश्वरः।।

सुगन्धिद्रव्यम्—

ॐ चम्पकाशोकवकुलमालतीमोगरादिभिः।
वासितं स्निग्धताहेतु तेलं चारु प्रगृह्यताम्।।

धूपम्—

ॐ वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्योगन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयम् प्रतिगृह्यताम्।।

दीपम्—

ॐआंज्यञ्चवर्ति संयुक्तं वह्निनायोजितं मया।
दीपं गृहाणदेवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

नैवेद्यम्—

ॐशर्कराखण्डखाद्यादि दधिक्षीरघृतादिभिः।
आहारैर्भक्ष्यभौज्यैश्च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

आचमनीयम्—

ॐ अतितृप्तिकरं तोयं सुगन्धिं च पिबेच्छया।
त्वयि तृप्तिजगततृप्तिः नित्यतृप्ति च महात्मने।।

अखण्डऋतुफलम्—

ॐ इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ताम्बूलम्—

ॐ पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
ऐलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

द्रव्यं दक्षिणाम्—

ॐ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

कर्पूरार्तिक्यम्—

ॐ कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं च प्रदीपितम्।
आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदोभव।।

॥ इति षोडशोपचारैः ॥

अथ श्रीगणेशाम्बिकेपूजनम्

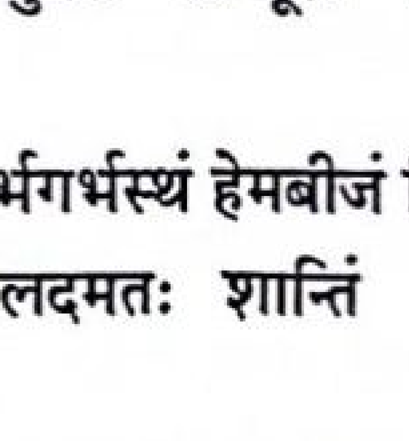

यजमानः दक्षिणहस्ते पुष्पाक्षताञ्चादाय-

आवाहनम् —(यजमान दाहिने हाथ में पुष्प व चावल लेकर आवाहन करें)

CC-0. Nanaji D

ॐ गणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्।।

ॐ अम्बेअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्।।

ध्यानम् —

ॐ श्वेताङ्गं श्वेत वस्त्रं सित कुसुमगणैः पूजितं श्वेत गन्धैः,
क्षीराब्धौ रत्नदीपैः सुरतरु विमलैः रत्न सिंहासनस्थम्।
दोर्भिः पाशाङ्कुशेष्टाभय धृति विशदैः चन्द्र मौलिं त्रिनेत्रम्,
ध्यायेच्छान्त्यर्थमीशं गणपतिममलं श्रीसमेतं प्रसन्नम्।।
ॐहेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्कर प्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं तां त्वां गौरीं ध्यायाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिके! इहागच्छ इहतिष्ठ सिद्धिबुद्धि सहिताय सवाहनाय सायुधाय नमः। आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ मनोजूतीतिमन्त्रस्य प्रतिष्ठापूर्वकं पुष्पासनादि षोडशोपचारैः सम्पूज्य।

विशेषार्घ्यम् —पात्र में जल, गन्ध, अक्षत, सुपारी, पुष्प, द्रव्य, दूर्वा, लेकर अवनीकृत जानुमण्डल से गणपतिजी को विशेषार्घ्य अपर्ण करें।

ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलाक्य रक्षक।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।
द्वैमातुरकृपासिन्धो षाण्मातुराग्रजः प्रभो।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद।।
अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम ।
गणेशाम्बिके विशेषार्घ्यं समर्पयामि।।

प्रार्थना —

गणाधि देवताग्रजं उमामहेश वत्सलम्,
रिद्धि सिद्धि दायिनं अविघ्न रूपकारकम्।
सुमङ्गल प्रदायिनं गजस्य तुण्डमाननम्,
शिवे भवानि वन्दितं गणेश देवतां भजे।।

Digitized by eGang

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय,
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुति यज्ञ विभूषिताय,
गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।
भक्तार्ति नाशन पराय गणेश्वराय,
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय,
भक्त प्रसन्न वरदाय नमो नमस्ते।।
सर्व मङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बिके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते।।

अनेन कृतेन पूजनेन गणेशाम्बिके प्रीयेताम् न मम।

॥ इति श्रीगणेशाम्बिकेपूजनम् ॥

अथ श्रीमोदादिषडविनायकपूजनम्

यजमानः स्वहस्ते पुष्पाक्षताञ्चादाय(यजमान अपने हाथ में पुष्पाक्षत लेकर आवाहन करें)—

॥१॥ **मोदाय—**

ॐ भूर्भुवः स्वः मोद! इहागच्छ इह तिष्ठ मोदाय नमः मोदमावाह्यामि स्थापयामि।

शास्त्रोक्तञ्च— देवतादौ यदा मोहाद्गणेशो न च पूज्यते।
तदा पूजाफलं हन्ति विघ्नराजो गणधिपः॥ ***(भविष्यपुराणे)***
आदौ विनायकः पूज्य चान्ते तु कुलदेवता। ***(संस्कारभास्करे)***
नाक्षतैरर्चयेद्विष्णुं न तुलस्या गणाधिपम्।
न दूर्वया यजेद्देवीं बिल्वपत्रैर्न भास्करम्॥
उन्मत्तमर्कपुष्पं च विष्णोर्वर्ज्यें सदा बुधैः।
फलं च कृमिसंयुक्तं प्रयत्नात्तद्विवर्जयेत्॥ ***(ज्ञानमालायाम्)***
अक्षतैर्नार्चयेद् विष्णुं न तुलस्या विनायकम्।
न दूर्वया यज्जेद् दुर्गां बिल्वपत्रै दिवाकरम्॥ ***(भट्टी)***

https://upayogibooks.com

॥२॥ प्रमोदाय—

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रमोद! इहागच्छ इह तिष्ठ प्रमोदाय नमः प्रमोदमावाह्यामि स्थापयामि।

॥३॥ सुमुखाय—

ॐ भूर्भुवः स्वः सुमुख! इहागच्छ इह तिष्ठ सुमुखाय नमः सुमुखमावाह्यामि स्थापयामि।

॥४॥ दुर्मुखाय—

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्मुख! इहागच्छ इह तिष्ठ दुर्मुखाय नमः दुर्मुखमावाह्यामि स्थापयामि।

॥५॥ अविघ्नै—

ॐ भूर्भुवः स्वः अविघ्न! इहागच्छ इह तिष्ठ अविघ्नै नमः अविघ्नमावाह्यामि स्थापयामि।

॥६॥ विघ्नहर्त्रै—

ॐ भूर्भुवः स्वः विघ्नहर्ता! इहागच्छ इह तिष्ठ विघ्नहर्त्रै नमः विघ्नहर्ता आवाह्यामि स्थापयामि।

मौदश्च प्रमोदश्च सुमुखो दुर्मुखस्तथा।
अविघ्नो विघ्नहर्ता च षडेतेविघ्ननायकाः।।

पुष्पासनादिषोडशोपचारैः पूजनं कुर्यात्।

प्रार्थना— लम्बोदरं परम सुन्दरमेक दन्तम्,
पीताम्बरं त्रिनयनं परमं पवित्रम्।
उद्यद्दिवाकर निभोज्ज्वल कान्तिकान्तम्,
विघ्नेश्वरं सकल विघ्नहरं नमामि।।

कृतेन अनेन पूजनेन मोदादिषड्विनायकाः प्रीयन्ताम् न मम।

॥ इति श्रीमोदादिषडविनायकपूजनम् ॥

अथ कलशपूजनम्

(गणपति आदि देवताओं के दाहिने ओर गेंहु या सप्तधान्य से अष्टदल बनाकर उसके ऊपर कलश स्थापित करके कलश की पूजा करें।)

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digiti-

भूमिस्पर्श (भूमि का स्पर्श करें)—

ॐमही द्यौः पृथिवी च नऽइमं यज्ञम्मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः।।

धान्यप्रक्षेपः (भूमि पर सप्तधान्य रखें)—

ॐओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा। यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त ꣳ राजन्पारयामसि।।

कलशस्थापनम् (सप्तधान्य पर कलश स्थापित करें)—

ॐआजिघ्र कलशम्मह्या त्त्वा व्विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्ज्जा निवर्त्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्मा विशताद्रयिः।।

कलशे जलपूर्णम् (कलश में जल भरें)—

ॐवरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्थो वरुणस्यऽ ऋतसदन्यसि वरुणस्यऽ ऋतसदनमसि वरुणस्यऽ ऋतसदनमासीद।।

गन्धं प्रक्षेपः (कलश में चन्दन या रोली छोड़े)—

ॐत्वां गन्धर्व्वाऽअखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा व्विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।।

धान्यं प्रक्षेपः (कलश में धान्य छोड़ें)—

ॐधान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणाय त्त्वोदानाय त्त्वा व्यानाय त्त्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषेधान्देवोवः सविताहिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णा त्त्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्त्वा महिनां पयोऽसि।।

सर्वौषधीं प्रक्षेपः (कलश में सर्वौषधी छोड़े)—

ॐयाऽओषधीः पूर्व्वाजातादेवेब्भ्यस्त्रियुगम्पुरा। मनैनु बब्भ्रूणामह ꣳ शतन्धामानि सप्त च।।

दूर्वाप्रक्षेपः (कलश में दूर्वा छोड़े)—

ॐकाण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवानो दूर्वे प्रतनुसहस्त्रेण शतेन च।।

पञ्चपल्लवं प्रक्षेपः (पंचपल्लव कलश के मुख पर सुव्यवस्थित करें)—

ॐअश्वत्थे वो निषदनम्पर्णे वो व्वसतिष्कृता। गोभाजऽइत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ।।

सप्तमृदां प्रक्षेपः (कलश में सप्तमृदा छोड़ें)—

ॐस्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः।।

पूगीफलं प्रक्षेपः (कलश में सुपारी छोड़े)—

ॐया: फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूता स्तानो मुञ्चन्त्व ᳪ हसः।।

पञ्चरत्नं प्रक्षेपः (कलश में पंचरत्न छोड़े)—

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे।।

मुद्रां प्रक्षेपः (कलश में मुद्रा छोड़े)—

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

रक्तसूत्रेण कण्ठं वेष्ट्येत्(कलश के कण्ठ पर मोली बांधे)—

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म व्यरूथमा ऽसदत्स्वः। वासोऽअग्ने व्विश्वरूप ᳪ सं व्ययस्वविभावसो।।

कलशोपरिपूर्णपात्रं न्यसेत्(चावल से भरा ढक्कन कलश पर रखें)—

ॐ पूर्णादर्व्वि परापत सुपूर्ण्णा पुनरापत। व्वस्नेव व्विक्क्रीणा वहा ऽ इषमूर्ज्ज ᳪ शतक्क्रतो।।

श्रीफलं न्यसेत्(ढक्कन पर नारियल रखें)—

श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणिरूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णान्निषाण मुम्मऽ इषाण सर्वलोकम्मऽ इषाण।।

आवाहनम्(दाहिने हाथ में पुष्प लेकर आवाहन करें)—

यजमानः दक्षिणहस्ते पुष्पगन्धाक्षताञ्चादाय—

ॐतत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो-व्वरुणेह बोद्ध्युरुश ᳪ समानऽआयुः प्रमोषीः।।

रुद्रकलशस्यावाहनम्—

ॐअसंख्याता स्त्रहस्त्राणि ये रुद्राऽअधिभूम्याम्। तेषा ᳪ सहस्त्र-योजनेवधन्वानि तन्मसि।।

अस्मिन् कलशे वरुणं सांङ्ग सशक्तिं सपरिवारं सायुधमावाहयामि स्थापयामि।

ॐअपाम्पत्तये वरुणाय नमः।

ध्यानम्—(यजमान हाथ जोड़कर कलश का ध्यान करें)

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्यस्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृता।।

...mu. Digitized by eGa...

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरित क्षय कारकाः।
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरित क्षय कारकाः।।

मनोजूतीति मन्त्रस्य प्रतिष्ठापूर्वकं पुष्पासनं, षोडशोपचारैः लब्ध्वोपचारैर्वा पूजनं कृत्वा प्रार्थयेत्।

प्रार्थना (हाथ जोड़कर प्रार्थना करें)—

देवदानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।।
त्वत्तोये सर्व तीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव।
सांनिध्यं कुरुमे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ।।

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।।

प्राणिनामाधारभूतज्जगत् वृक्षस्य य ज्जीवनम्,
तीर्थानाममृतस्वरूपहृदयं लोकस्य शङ्कारकम्।
दैत्य देव मथेनयोऽब्धिमध्ये कुम्भेन प्रत्युद्भवः,
सोऽयं शंवितनोतु देववरुणो आगम्य पुण्य मखे।।

अनेन कृतेन पूजनेन वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तां न मम।

॥ इति वरुणपूजनम् ॥

तत्र शास्त्रोक्तञ्च— सर्वत्र पावनी गंगा त्रिषु स्थानेषु दुष्यति।
म्लेच्छस्पर्शे, सुराभाण्डे कूपादिजलमिश्रणे।। ***(आचारभूषणे)***

अथ पुण्याहवाचनम्

वरुणप्रार्थना (यजमान हाथ जोड़कर कलश से प्रार्थना करें)—

ॐ पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक।
पुण्याहवाचनं यावत्तावत्त्वं सुस्थिरो भव।।

गुरुप्रार्थना (यजमान हाथ जोड़कर ब्राह्मणों से प्रार्थना करें)—

ॐ गुरुमूलमिदं शास्त्रं गुरुमूलमिदं जगत्।
गुरुरेवपरं ब्रह्म गुरुरेव शिवः स्वयं।।
ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम्।
मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा।।

यजमानः अवनिकृतजानुमण्डलः कमलमुकुलसदृशमञ्जलि शिरस्याधाय अनन्तरं दक्षिणबाहु, बामबाहौ, हृदयानन्तरं भूमि स्थापयेत्। (यजमान कलश को हाथों में लेकर क्रमशः मस्तक, दक्षिण बाहु, बाम बाहु, हृदय व भूमि के स्पर्श करें)

तत्र मन्त्र—

ॐ त्रीणिपदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन्।। तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।।

ब्राह्मणाः—ॐ अस्तु दीर्घमायुः।

यजमानः—ॐ दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च।
तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।।

इति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मणाः—ॐ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु-३।।

ततः यजमानः कलशं यथास्थाने स्थापयित्वा, पुनर्गृहीत्वा एतेन मन्त्रेण प्रयोगः क्रियायाः त्रिवारं कुर्यात् । (यह प्रक्रिया तीन बार दोहराये)

ततः कर्तोदङ्मुखानां युग्मब्राह्मणानां हस्ते(यजमान ब्राह्मणों के हाथों में नीचे बतायी गई सामग्री दें)—

शास्त्रोक्तञ्च— पुण्यऽहनि च संप्राप्ते विवाहे चौलके तथा।
व्रतबन्धे च यज्ञादौ तथा च दानकर्मणि।।
गृहारम्भे धनप्राप्तौ तीर्थाभिगमने तथा।
नवग्रहमखे शान्तावद्भुतेषु तथैव च।
अन्यस्मिन्नपि सर्वस्मिंछुभे कर्मणि चोदिता।। ***(विधानरत्नमाला)***

Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

यजमानः—सुप्रोक्षितमस्तु।

ब्राह्मणाः—अस्तु सुप्रोक्षितम्।

यजमानः—ॐअपां मध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम्।
ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः शिवा आपो भवन्तु नः।।

शिवा आपः सन्तु। (जल देवें)

विप्राः—सन्तु शिवा आपः।

यजमानः—ॐ लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे।
सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं सदास्तु मे।।

सौमनस्यमस्तु। (पुष्प देवें)

विप्राः—अस्तु सौमनस्यम्।

यजमानः— ॐअक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम्।
यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम।।

अक्षतं चारिष्टं चास्तु। (चावल देवें)

विप्राः—अस्त्वक्षतमरिष्टं च।।

यजमानः—गन्धाः पान्तु। (चन्दन देवें)

विप्राः—सौमाङ्गल्यं चास्तु।।

यजमानः—अक्षताः पान्तु। (चावल देवें)

विप्राः—आयुष्यमस्तु।।

यजमानः—पुष्पाणि पान्तु। (पुष्प देवें)

विप्राः—सौश्रियमस्तु।।

यजमानः—सफलताम्बूलानि पान्तु। (सुपारी सहित पान देवें)

विप्राः—ऐश्वर्यमस्तु।।

यजमानः—दक्षिणाः पान्तु। (दक्षिणा देवें)

विप्राः—बहु देयं चास्तु।।

यजमानः—पुनरत्रापः पान्तु। (पुनः जल देवें)

विप्राः—स्वर्चितमस्तु।।

ततो यजमानः आचार्यादीनां विप्राणां समक्षे करौबद्ध्वा प्रार्थयेत्—
(यजमान ब्राह्मणो से हाथ जोड़कर प्रार्थना करें)

यजमानः—दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिः तुष्टिः श्रीर्यशोविद्याविनयोवित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चायुष्यं चास्तु।

(ब्राह्मण, पत्नी सहित यजमान के मस्तक पर जल के छींटें देते हुये बोले)

विप्राः–**दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिः तुष्टि चास्तु ।।**

ततो यजमानः अक्षतान् गृहीत्वा—

यजमानः—**यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकरणकर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते, तमहमोंकारमदिं कृत्वा ऋग्यजुःसामाथर्वाशीर्वचनं बहुऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।**

विप्राः—**वाच्यताम्- ३**

आशीर्वचनं मन्त्राः—

ॐ भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः। स्थिरैरङ्गै स्तुष्टुवा ꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं य्यदायुः।। देवानां भद्रासुमतिर्ऋजूयतान्देवाना ꣳ रातिरभिनो निवर्तताम्। देवाना ꣳ सख्यमुपसेदिमा व्वयं देवानऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे।। उच्चादिविदक्षिणावन्तोऽअस्थुर्येऽ अश्वदाः सहते सूर्येण हिरण्यदाऽ अमृतत्वं भजन्ते वासोदाः सोम प्रतिरन्तु आयुः।।

यजमानः पुनरक्षतान् गृहीत्वा—

यजमानः—व्रतजपनियमतपः स्वाध्यायक्रतुदयादमदानविशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्।

विप्राः—समाहितमनसः स्मः-३

यजमानः—प्रसीदन्तु भवन्तः।

विप्राः—प्रसन्नाः स्मः।।

ततः यजमानस्य सम्मुखे द्वे पात्रे संस्थाप्य(यजमान के सामने दो पात्र रखें और उसमें जल छोड़ते जाये)—

प्रथमपात्रे—

ॐशान्तिरस्तु।। विप्राः - अस्तु।। **ॐपुष्टिरस्तु।। ॐ तुष्टिरस्तु।। ॐ वृद्धिरस्तु।। ॐअविघ्नमस्तु।। ॐआयुष्यमस्तु।। ॐआरोग्यमस्तु।। ॐ शिवमस्तु।। ॐशिवं कर्मारस्तु।। ॐकर्मसमृद्धिरस्तु।। ॐवेदसमृद्धिरस्तु।। ॐशास्त्रसमृद्धिरस्तु।। ॐधनधान्यसमृद्धिरस्तु।। ॐपुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु।। ॐइष्टसम्पदस्तु।।**

द्वितीयपात्रे—ॐअरिष्टनिरसनमस्तु।। ॐयत्पापं यद्रोगमशुभमकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।।

पुनः प्रथमपात्रे— ॐयच्छ्रेयस्तदस्तु।। ॐउत्तरे कर्मणिनिर्विघ्नमस्तु।। ॐउत्तरोत्तरा महरभिवृद्धिरस्तु।। ॐउत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्।। ॐतिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नसम्पदस्तु।। ॐतिथिकरण-मुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नाधि देवताः प्रीयन्ताम्।।ॐतिथिकरणे समुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयताम्।।ॐदुर्गापाञ्चाल्यौ प्रीयेताम्।। ॐअग्निपुरोगा-विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्।। ॐइन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्।। ॐवसिष्ठ-पुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्।। ॐब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्।। ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्।। ॐऋषयश्छन्दांस्याचार्या वेदा देवा यज्ञाश्च प्रीयन्ताम्।। ॐब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्।। ॐश्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम्।। ॐश्रद्धामेधे प्रीयेताम्।। ॐभगवती कात्यायनी प्रीयताम्।। ॐभगवती माहेश्वरी प्रीयताम्।। ॐभगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्।। ॐभगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्।। ॐभगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्।। ॐभगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्।। ॐभगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्।। ॐसर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्।। ॐसर्वाः ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्।। ॐसर्वाः इष्टदेवताः प्रीयन्ताम्।।

द्वितीयपात्रे—ॐहताश्च ब्रह्मद्विषः।। ॐहताश्च परिपन्थिनः।। ॐहताश्च कर्मणो विघ्नकर्तारः।। ॐशत्रवः पराभवं यान्तु।। ॐशाम्यन्तु घोराणि।। ॐशाम्यन्तु पापानि।। ॐशाम्यन्त्वीतयः।। ॐशाम्यन्तूपद्रवाः।।

पुनः प्रथमपात्रे— ॐशुभानि वर्धन्ताम्।। ॐशिवा आपः सन्तु।। ॐशिवा ऋतवः सन्तु।। ॐशिवा ओषधयः सन्तु।। ॐशिवा वनस्पतयः सन्तु।। ॐशिवा अतिथयः सन्तु।। ॐशिवा अग्नयः सन्तु ।। ॐशिवा आहुतयः सन्तु ।।ॐअहोरात्रे शिवे स्याताम्।।

ॐनिकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।। ॐशुक्राङ्गारकबुधबृहस्पतिशनिश्चरराहुकेतुसोम-सहिता आदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्।। ॐभगवान् नारायणः प्रीयताम्।। ॐभगवान् पर्जन्यः प्रीयताम्।। ॐभगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम्।। ॐपुरोऽनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु।। ॐयाज्यया यत्पुण्यं तदस्तु।। ॐवषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु।। ॐप्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।।

ततः—(द्वितीय पात्र को नापित या अन्य किसी व्यक्ति से बाहर फिंकवा दें व

प्रथम पात्र को यजमान के मस्तकाऽभिषेक के लिए सुरक्षित रखें)

ततः यजमानो ब्राह्मणान् साञ्जलि प्रार्थयेत्(फिर यजमान हाथ जोड़कर ब्राह्मणों से प्रार्थना करे)—

यजमानः—एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यं पुण्यकालान् वाचयिष्ये।

विप्राः—ॐवाच्यताम्।

ततः पुनर्यजमानो ब्राह्मणान् साञ्जलि प्रार्थयेत्—

यजमानः—

ॐब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्।
वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुक-कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

विप्राः—ॐपुण्याहम्-३

ॐपुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।

यजमानः— ॐपृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुरा कृतम्।
ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

विप्राः—ॐकल्याणम्-३

ॐयथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्या ँ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यतामुपमादो नमतु।।

यजमानः— ॐसागरस्य यथा ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तामृद्धिञ्च ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

विप्राः—ॐऋद्ध्यताम्-३

ॐसत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता अभूम। दिवं पृथिव्या अध्याऽ

रुहामाविदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः।।

यजमानः— ॐस्वस्तिस्तु याऽविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा।
विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः स्वस्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु ।

विप्राः -ॐआयुष्मते स्वस्ति-३

ॐस्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।।

यजमानः— ॐसमुद्रमथनाज्जाता जगदानन्द कारिका।
हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः।।

अन्याश्च— शिवगौरी विवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे।
धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं सास्तु सद्मनि।।

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुक-कर्मणः श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु ।

विप्राः -ॐअस्तु श्रीः-३

श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौव्यात्तम्। इष्णन्निषाण मुम्मऽइषाण सर्व लोकम्मऽइषाण।।

ॐमनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूना छं रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।

यजमानः— ॐप्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट्।
भगवांछाश्वतो नित्यं नो वै रक्षतु सर्वतः।।

विप्राः— ॐप्रजापति न त्वदेतान्यन्यो विश्वारूपाणि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय ङ स्याम पतयो रयीणाम्।।

यजमानः— ॐआयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे।
श्रिये दत्ताशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः।।
देवेन्द्रस्य यथास्वस्ति यथास्वस्ति गुरोर्गृहे।
एकलिङ्गे यथास्वस्ति तथास्वस्ति सदा मम।।

विप्राः—आयुष्मते स्वस्ति।

ॐप्रति पन्थामपद्महि स्वस्तिगामनेहसम्।
येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु।।

पुण्याह वाचनसमृद्धिरस्तु।

ततः यजमानः पुनः कलशं गृहीत्वा प्रथमपात्रे जलं पातयेत्(यजमान पुनः ताम्रकलश को लेकर प्रथम पात्र में जल छोड़े)—

यजमानः—भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्- ३

यजमानः (साञ्जलि) - **अस्मिन् पुण्याह वाचनेन न्यूनातिरिक्तो यो विधि-रुपविष्ट ब्राह्मणानां वचनात् श्रीमहागणपतिप्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु।**

विप्राः—**अस्तु परिपूर्णः।**

अथाऽभिषेक—

एकस्मिन् ताम्रपात्रे प्रथमपात्रे जलं गृहीत्वाऽविधुरा चत्वारो ब्राह्मणा आम्रदूर्वापल्लवेन् यजमानमभिषिञ्चेयुः।(प्रथमपात्र के जल को लेकर आम के पत्ते या दूर्वा से यजमान का सपत्नीक व सपरिवार मस्तकाभिषेक करें)

अभिषेक मन्त्राः—

ॐपयः पृथिव्यां पयऽओषधीषुपयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वती प्रदिशः सन्तुमह्यम्।।

ॐपञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः सरस्वती तु पञ्चधा सो देशे भवत्सरित्।।

ॐवरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्त्थो वरुणस्यऽ

शास्त्रोक्तञ्च— न तत्र कुनखी काणो हीनांगो विकलस्तथा।
क्षयरोगी च कुष्ठी च भयावदन्तोऽभिशापकः।।
वन्ध्यश्च विधुरो वापि क्रूरस्तुखलसेवकः।
बकवृत्तिश्च दम्भीच हेतुकोज्ञान दुर्बलः।।
सहोपपतिरुन्मत्तो व्यसनी सोम विक्रयी।
कन्या गोविक्रयी चैव पिशुनश्चानृतः खलः।।
लोकदुष्टः पराधीनो राजद्रोह परायणः।
वर्ज्या चैतादृशा विप्राः स्वस्ति वाचके सदा।। ***(विप्रवर्ज्या)***

तत्र शास्त्रोक्तञ्च— सर्वेषु शुभकार्येषु पत्नी दक्षिणतः शुभा।
अभिषेके विप्रपादप्रक्षालने चैव वामतः।। ***(संस्कारगणपति)***

ऋतसदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद ।।

ॐपुनन्तु मादेवजनाः पुनन्तु मनसाधियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।

ॐदेवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ।।

ॐदेवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि।।

ॐदेवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। अश्विनो-भैंषज्येन तेजसे ब्रह्म वर्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्या-याभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि।।

ॐविश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रंतन्न आसुव।।

ॐआपोहिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे।। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते हनः। उशतीरिव मातरः।। तस्माअरङ्गमा-मवोयस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जन यथाचनः।।

ॐद्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि। यतो यतः समीहसे ततो नो अभयङ्कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।।

ॐसरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु सर्व कामार्थ सिद्धये।।

ॐशान्तिः पुष्टिस्तुष्टि चास्तु। ॐसुशान्तिर्भवतु। ॐअमृताऽभिषेकोऽस्तु।।

दक्षिणादानम्—

ॐअद्य . . . . कृतैतत्पुण्याहवाचनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफल प्राप्त्यर्थं च पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो इमां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।

अनेन कृतेन पुण्याहवाचनेन प्रजापति प्रीयताम् न मम।

॥ इति पुण्याहवाचनम् ॥

अथ गौर्यादिषोडशमातृकापूजनम्

गौर्यादिषोडशमातृका मण्डल प्रारूप

आत्मनकुलदेवता	लोकमातरः	देवसेना	मेधा
तुष्टिः	मातरः	जया	शची
पुष्टिः	स्वाहा	विजया	पद्मा
धृतिः	स्वधा	सावित्री	गौरी+गणेश

यजमानसपत्नीकः रक्तपुष्पाक्षताञ्चादाय आवाहनं कुर्यात्। तत्र मन्त्र—

।।१।। गौर्यै—

ॐआयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्नमातरं पुरः। पितरञ्च प्रयन्त्स्वः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि स्थापयामि ।।

।।२।।पद्मायै—

ॐहिरण्यरूपाऽउषसो व्विरोकऽउभाविन्द्राऽउदिथः सूर्यश्च। आरोहतंव्वरुण मित्र गर्तं ततश्च क्षाथामदितिन्दितिञ्च मित्रोऽसि व्वरुणोऽसि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायै नमः, पद्मामावाहयामि स्थापयामि।।

।।३।। शच्यै—

ॐनिवेशनः सङ्गमनो व्वसूनां व्विश्वा रूपाभिचष्टे शचीभिः। देवऽइव सविता सत्य धर्मेन्द्रो न तस्त्थो समरे पथीनाम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शच्यै नमः, शचीमावाहयामि स्थापयामि।।

।।४।। मेधायै—

ॐमेधां मे व्वरुणो ददातु मेधामग्निः प्प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्च-व्वायुश्चमेधां धाता ददातु मे स्वाहा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः, मेधामावाहयामि स्थापयामि।।

।।५।। सावित्र्यै—

ॐ सविता त्त्वा सवाना छं सुवतामग्निर्गृहपतीना छं सोमोव्वनस्पतीनाम्। बृहस्पतिर्व्वाचऽइन्द्रो ज्ज्यैष्ठ्य्याय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो धर्म्म पत्तीनाम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्र्यै नमः, सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि ।।

।।६।। विजयायै—

ॐ विज्ज्यन्धनुः कपर्दिनो व्विशल्यो बाणवाँ२ उत। अनेशन्नस्य याऽ इषव ऽआभुरस्य निषङ्गधिः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विजयायै नमः, विजयामावाहयामि स्थापयामि ।।

।।७।। जयायै—

ॐ बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चा कृणोति समना बगत्य। इषुधि सङ्काः पृतनाश्च्च सर्वाः पृष्ठ्ठेनिनिद्धो जयति प्प्रसूतः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः जयायै नमः,'जयामावाहयामि स्थापयामि।।

।।८।। देवसेनायै—

ॐइन्द्रऽआसां नेता बृहस्पतिर्द्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः। देवसेना-नामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः देवसेनायै नमः, देवसेनामावाहयामि स्थापयामि।

।।९।। स्वधायै—

ॐपिंतृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेब्भ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्प्रपितामहेब्भ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्तं पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धदृध्वम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः, स्वधामावाहयामि स्थापयामि ।।

।।१०।। स्वाहायै—

ॐ स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेब्भ्यः पृथिव्व्यै स्वाहाऽग्नये स्वाहा-न्तरिक्षाय स्वाहा व्वायवे स्वाहा। दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः, स्वाहामावाहयामि स्थापयामि।।

।।११।। मातृभ्यः—

ॐ आपोऽअस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेनोघृतप्व्वः पुनन्तु। व्विश्व ँ हिरिप्प्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाब्भ्यः शुचिरा पूतऽएमि। दीक्षा तपसोस्तनूरसि तान्त्वां शिवा ँ शग्मां परिदधं भद्द्रं व्वर्ण पुष्यन्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मातृभ्यः नमः, मातृकामावाहयामि स्थापयामि।।

।।१२।। लोकमातृभ्यः—

ॐ रयिश्च मे रायश्च मे पुष्टञ्च मे पुष्टिश्च मे व्विभु च मे प्रभु च मेपूर्ण्णञ्च मे पूर्णतरञ्च मे कुयवञ्च मे ऽक्षितञ्च मे ऽन्नञ्च मे ऽक्षुच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः लोकमातृभ्यः नमः, लोकमातृकामावाहयामि स्थापयामि।।

।।१३।। धृत्यै—

ॐ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च्चयज्ज्योतिरन्तरमृतं प्प्रजासु। यस्मान्नऽऋते किञ्चन कर्म्म क्रियते तन्मे मनः शिव सङ्कल्पमस्तु।।

ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि स्थापयामि ।।

।।१४।। पुष्ट्यै—

ॐ अङ्गान्यात्मन्भिषजा तदश्विनात्मानमङ्गैः समधात्सरस्वती। इन्द्रस्य रूप ६ शत मानमायुश्चन्द्रेण ज्योतिरमृतं दधानाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्ट्यै नमः, पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि ।।

।।१५।। तुष्ट्यै—

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स न्नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरित्याग्निः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः तुष्ट्यै नमः, तुष्टिमावाहयामि स्थापयामि ।।

।।१६।। आत्मनः कुलदेवतायै—

ॐ प्राणाय स्वाहा ऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा। चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा व्वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः आत्मनः कुलदेवतायै नमः, आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि स्थापयामि।

ॐ मनोजूतीति प्रतिष्ठा पूर्वकं षोडशोपचारैः पूजनं कुर्यात्।

(षोडशोपचार से या उपलब्ध सामग्री से पूजा करें)

श्रीफलार्पणम्—

यजमानपत्नीहस्तौ अखण्डश्रीफलसौभाग्यद्रव्यञ्चादाय-

ॐरूपं देहि जयं देहि भाग्यं भगवती देहि मे।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामान् प्रयच्छ मे।।

(सिन्दूरादि सौभाग्य द्रव्य सहित नारियल अर्पण करें)

प्रार्थना—

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः।।

धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टि आत्मनः कुलदेवताः।
गणेशेनाधिकाह्येता वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश।।
मुखे ते ताम्बूलं नयन युगले कज्जलकला,
ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिक लता।
स्फुरत्काँची शाटी पृथुकटि तटी हाटक मयी,
भजामित्वां गौरी नगपति किशोरीमवितरम्।।

अनया कृतया पूजया गौर्यादिषोडशमातरः प्रीयन्ताम् न मम।

।। इति षोडशमातृकापूजनम् ।।

अथ सप्तघृतमातृकापूजनम्

किसी पट्टीनुमा लकड़ी सफेद वस्त्र से आच्छादित करें तथा उस पर घुले हुये सिन्दूर से दिये गये प्रारूप के अनुसार सप्तघृतमातृका अङ्कित करें व सातों बिन्दुओं पर घृतधारा सहित गुड़ चढावें।

सप्तघृतमातृका मण्डल प्रारूप

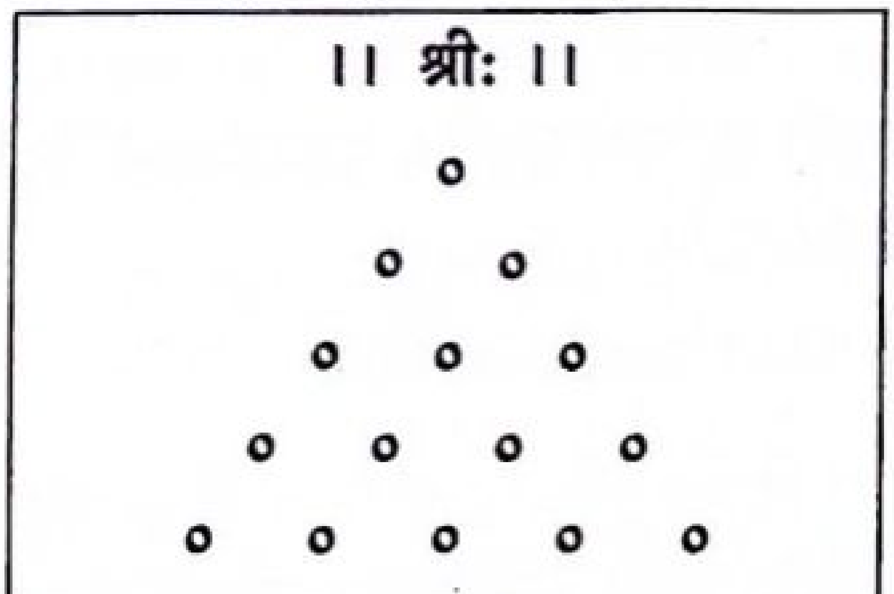

वसोधाराकर्त्तव्याः—

वसोः पवित्रमसि शतधारं व्वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।।

आवाहनम्—

वामहस्ते रक्तपुष्पाक्षताञ्चादाय(यजमान हाथ में लालपुष्प तथा चावल लेकर

श्रीयादि सभी बिन्दुओं पर क्रमशः मातृकाओं आवाहन करें)

१. श्रीययै—

ॐमनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूना ᳫं रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।

ॐ श्रीययै नमः, श्रीमावाहयामि स्थापयामि।

२. लक्ष्म्यै—

श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणिरूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाण मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण।।

ॐ लक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि।

३. धृत्यै—

ॐभद्रङ्कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः। स्थिरैरङ्गै स्तुष्टुवा ᳫं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं य्यदायुः।।

ॐ धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि स्थापयामि।

४. मेधायै—

ॐमेधां मे व्वरुणो ददातु मेधामग्निः प्प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्च व्वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा।।

ॐ मेधायै नमः, मेधामावाहयामि स्थापयामि।

५. स्वाहायै—

ॐस्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेब्भ्यः पृथिव्यै स्वाहाऽग्नये स्वाहा ऽन्तरिक्षाय स्वाहा व्वायवे स्वाहा। दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा।।

ॐ स्वाहायै नमः, स्वाहामावाहयामि स्थापयामि।

६. प्रज्ञायै—

ॐआयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्नमातरं पुरः। पितरञ्च प्रयन्त्स्वः।।

ॐ प्रज्ञायै नमः, प्रज्ञामावाहयामि स्थापयामि।

७. सरस्वत्यै—

ॐपावका नः सरस्वती व्वाजेभिर्व्वाजिनीवती। यज्ञं व्वष्टुधियावसुः।।

ॐ सरस्वत्यै नमः, सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि।

श्रीर्लक्ष्मीधृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती।
माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः।।

ॐ मनोजूतीतिमन्त्रस्य प्रतिष्ठा पूर्वकं षोडशोपचारैः पूजनं कुर्यात्।

(षोडशोपचार से या उपलब्ध सामग्री से पूजा करें)

श्रीफलार्पणम्—

यजमानपत्नीहस्तौ अखण्डश्रीफलसौभाग्यद्रव्यांश्चादाय(सिन्दूरादि सौभाग्य द्रव्य सहित नारियल अर्पण करें) —

ॐरूपं देहि जयं देहि भाग्यं भगवति देहि मे।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामान् प्रयच्छ मे।।

प्रार्थना —

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्व लक्ष्मीः,
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुल जन प्रभवस्य लज्जा,
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।।

अनया कृतया पूजया सप्तघृतमातरः प्रीयन्ताम् न मम।

।। इति सप्तघृतमातृकापूजनम् ।।

जलमातृका—

मत्स्यी कूर्मी च वाराही दर्दुरी मकरी तथा।
जलुकी तन्तुकी चैव सप्तैता जल मातृकाः।।

स्थलमातृका—

ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा।
वाराही च तथेन्द्राणी चामुण्डा स्थल मातरः।।

जीवमातृका—

कुमारी धनदा नन्दा विमला मङ्गला ऽचला।
पद्माचेति सुविख्याता सप्तैता जीव मातरः।।

अथ सूर्यादिनवग्रहपूजनम्

नवग्रहमण्डल प्रारूप

पूर्व

विष्णु बुध (हरित) विष्णु बाणाकारे	**इन्द्र शुक्र** (श्वेत) इन्द्राणि ताराकारे	**उमा चन्द्र** (श्वेत) अद्भ्य अर्द्धचन्द्राकारे
ब्रह्मा गुरु (पीत) इन्द्र आयताकारे	**वायु** **ईश्वर सूर्य** (रक्त) अग्नि सरश्मिवर्तुलाकारे	**स्कन्द मंगल** (रक्त) पृथ्वी त्रिकोणाकारे
अश्विभ्यां **चित्रगुप्त केतु** (कृष्ण) ब्रह्मा ध्वजाकारे	**दुर्गा** **यम शनि** (कृष्ण) प्रजापति धनुषाकारे	**गणपति आकाश** **काल राहु**(कृष्ण) सर्प सूर्पाकारे

पश्चिम

यजमानः हस्तेपुष्पाक्षताञ्चादाय सूर्यादिनवग्रहाऽऽवाहनं कुर्यात्।

(यजमान हाथ में चावल व पुष्प लेकर सूर्यादि नवग्रहों का अलग - अलग या एक साथ आवाहन करें तथा सूर्यादि नवग्रहों के दक्षिणपार्श्वे अधिदेवताओं का व वामपार्श्वे प्रत्याधि देवताओं का आवाहन करें।)

।।१।। सूर्यः (मण्डलमध्ये)—**(वर्तुलाकृतिं सूर्यरक्तपुष्पाक्षतैरावाह्येत्)**

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य ! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ सूर्याय नमः। सूर्यमावाहयामि स्थापयामि।।

।।२।। चन्द्रः (अग्निकोणे)—**(श्वेतपुष्पाक्षतैरर्धचन्द्राकृति)**

ॐ इमं देवा असपत्न ᳪ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ᳪ राजा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम ! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ सोमाय नमः। सोममावाहयामि स्थापयामि।।

।।३।। भौमः (दक्षिणे)—**(रक्तपुष्पाक्षतै त्रिकोणाकृति भौमः)**

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा ᳪ रेता सि ᳪ

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

जिन्वति।।

ॐ भूर्भुव: स्व: अवन्तिदेशोद्भव भारद्वाजसगोत्र रक्तवर्ण भो भौम ! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ भौमाय नम:। भौममावाहयामि स्थापयामि।।

।।४।। **बुधः** (ईशानकोणे)—**(बाणाकारे चतुरङ्गुले पीत वा हरितवर्णे बुधैः)**

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ꣳ सृजेथामयञ्च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।।

ॐ भूर्भुव: स्व: मगधदेशोद्भव आत्रेयसगोत्र हरितवर्ण भो बुध ! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ बुधाय नम:। बुधमावाहयामि स्थापयामि।।

।। ५।। **बृहस्पतिः** (उत्तरे)—**(दीर्घचतुष्कोणेराकारः पीतवर्णे गुरुः)**

ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छ वस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।

ॐ भूर्भुव: स्व: सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो गुरो ! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ बृहस्पतये नम:। बृहस्पतिमावाहयामि स्थापयामि।।

।।६।। **शुक्रः** (पूर्वे)—**(पञ्चकोणे नवाङ्गुले श्वेते शुक्रः)**

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ꣳ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।।

ॐ भूर्भुव: स्व: भोजकटदेशोद्भव भार्गवसगोत्र पीतवर्ण भो शुक्र! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ शुक्राय नम:। शुक्रमावाहयामि स्थापयामि।।

।।७।। **शनिः** (पश्चिमे)—**(धनुषाकारे द्वयङ्गुले कृष्णे शनिः)**

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः।।

ॐ भूर्भुव: स्व: सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपसगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ शनैश्चराय नम:। शनैश्चरमावाहयामि स्थापयामि।।

।।८।। **राहो** (नैऋत्यकोणे)—**(सूर्पाकारे द्वादशङ्गुले कृष्णे राहु)**

ॐकया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।।

ॐ भूर्भुव: स्व: राठिनपुरोद्भव पैठीनसगोत्र कृष्णवर्ण भो राहो ! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ राहवे नम:। राहुमावाहयामि स्थापयामि।।

।।९।। **केतु** (वायव्यकोणे)—**(ध्वजाकारे षडाङ्गुले धूम्रे केतु)**

ॐ केतु कृण्वन्न केतवे पेशोमर्य्याऽअपेशसे। समुषद्भि रजायथाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिशसमुद्भव जैमिनिसगोत्र धुम्रवर्ण भो केतो ! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ केतवे नमः। केतुमावाहयामि स्थापयामि।।

ग्रहमण्डलदेवताध्यानम्—

ॐ ग्रहाऽऊर्ज्जाहुतयो व्यन्तो व्विप्प्रायमतिम्। तेषां व्विशिप्प्रियाणां व्वोहमिषमूर्ज्ज ꣳ समग्ग्रभमुपयाम ग्रहीतो सीन्द्राय त्त्वाजुष्टं गृह्णाम्म्येषते योनिरिन्द्राय त्त्वा जुष्टतमम्।।

ॐ मनोजूतीति मन्त्रस्य प्रतिष्ठापूर्वकं षोडशोपचारैः पूजनं कुर्यात्।

(षोडशोपचार से या उपलब्ध सामग्री से पूजा करें)

प्रार्थना—

आयुश्च वित्तञ्च तथा सुखञ्च, धर्मार्थ लाभौ बहु पुत्रताञ्च।
शत्रु क्षयं राजसु पूजताञ्च, तुष्टा ग्रहाः क्षेमकरा भवन्तु।।
सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्च पदवीं सन्मङ्गलं मङ्गलः,
सद्बुद्धिञ्च बुधोगुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः।
राहुर्बाहु बलं करोतु सततं केतुः कुलस्योन्नतिं,
नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहाः।।
रविर्तेजश्चन्द्रः यशकुज शुभं शं वितरतु,
गुणोपेतः सौम्यः सुमति वितनोतु बुध ग्रहो।
गुरुर्पीड़ाऽशाम्यन् भृगुसुतसुखं शान्ति तु शनिः,
सदाऽऽरोग्यं राहुर्बल धृति करं केतु सततम्।।

अनेन कृतेन पूजनेन आदित्यादि नवग्रहाः प्रीयन्ताम् न मम।

।। इति सूर्यादिनवग्रहाः पूजनम् ।।

अथाधिदेवतास्थापनम्

यजमानः स्वहस्ते पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा अधिदेवतानामावाहनम् कुर्यात्।

शास्त्रोक्तञ्च—

केतूनां बहुत्वेऽपि गणत्वेन देवतात्वात् पूजादानेकवचनमेव।।
शिवः शिवा गुहो विष्णुर्ब्रह्मेन्द्र यमकालकाः।
चित्रगुप्तोऽथ भान्वादि दक्षिणे चाधिदेवताः।।
अग्निरापो धरा विष्णुः शक्रेन्द्राणिपितामहः।
पन्नगार्कक्रमाद्वामे ग्रह प्रत्याधिदेवताः।।

(स्कन्दपुराणे)

(ग्रहाधि देवताओं की स्थापना व पूजा ग्रहों के साथ ही करें)

१. ईश्वर (सूर्यदक्षिणपार्श्वे)—

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यो-र्मुक्षीय मामृतात्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वर! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ ईश्वराय नमः। ईश्वरमावाहयामि स्थापयामि।

२. उमा (सोमदक्षिणपार्श्वे)—

श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणिरूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाण मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण।।

ॐ भूर्भुवः स्वः उमे! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ उमायै नमः। उमा आवाहयामि स्थापयामि।

३. स्कन्द(भौमदक्षिणपार्श्वे)—

ॐ यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्द! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ स्कन्दाय नमः। स्कन्द-मावाहयामि स्थापयामि।

४. विष्णु (बुधदक्षिणपार्श्वे)—

ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवो-ऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ विष्णवे नमः। विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

५. ब्रह्मा (गुरुदक्षिणपार्श्वे)—

ॐ आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर ऽइषव्यो ऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषाजिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मा! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ ब्रह्मणे नमः। ब्रह्मा आवाहयामि स्थापयामि।

६. इन्द्र (शुक्रदक्षिणपार्श्वे)—

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣳ हवे हवे सुहव ꣳ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ इन्द्राय नमः। इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

७.यम (शनिदक्षिणपार्श्वे)—

ॐयमाय त्वा ऽङ्गिरस्वतेपितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यम! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ यमाय नमः। यममावाहयामि स्थापयामि।

८.काल (राहुदक्षिणपार्श्वे)—

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि। समापो ऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः काल! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ कालाय नमः। कालमावाहयामि स्थापयामि।

९. चित्रगुप्त (केतुदक्षिणपार्श्वे)—

ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्त! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ चित्रगुप्ताय नमः। चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि।

प्रार्थना—

ॐईश्वरश्च उमाचैव स्कन्धो विष्णुस्थैव च।
ब्रह्मेन्द्रो यमकालश्च चित्रगुप्तस्तथैव च।।

।। इति अधिदेवतास्थापनम् ।।

अथ प्रत्याधिदेवता स्थापनम्

नवग्रहामण्डलोपरि ग्रहाणां वामपार्श्वे—

१. अग्नि (सूर्यवामपार्श्वे)—

ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ २ आ सादयादिह।।

शास्त्रोक्तञ्च– ग्रहस्य दक्षिणे भागे स्थापयेदधिदेवताः।
ग्रहस्य वामपार्श्वे तु स्थाप्याः प्रत्याधिदेवताः।।(मदनरत्ने)

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नि! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ अग्नये नमः। अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

२. **अप्** (सोमवामपार्श्वे)—

ॐ आपोहिष्ठा मयो भुवस्तान ऽऊर्जेदधातन। महेरणाय चक्षसे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अप! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ अदभ्यो नमः। अप आवाहयामि स्थापयामि।

३. **पृथ्वी** (भौमवामपार्श्वे)—

ॐ स्योना पृथिवी नो भवा नृक्षरा निवेशनी यच्छा नः शर्म सप्रथाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिवी! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ पृथिव्यै नमः। पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि।

४. **विष्णु** (बुधवामपार्श्वे)—

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ꣳ सुरेस्वाहा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ विष्णवे नमः। विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

५. **इन्द्र** (गुरुवामपार्श्वे)—

ॐ इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ इन्द्राय नमः। इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।।

६. **इन्द्राणि** (शुक्रवामपार्श्वे)—

ॐ आदित्यै रास्ना ऽसीन्द्राण्या उष्णीषः। पूषाऽसि घर्मायदीष्व।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राणि! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ इन्द्राण्यै नमः। इन्द्राणिमावाहयामि स्थापयामि।।

७. **प्रजापति** (शनिवामपार्श्वे)—

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय ꣸ स्याम पतयो रयीणाम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजापति! इहागच्छ इहतिष्ठ, ॐ प्रजापतये नमः। प्रजापतिमावाहयामि स्थापयामि।

८. **सर्प (राहुवामपार्श्वे)**—

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो येके च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्प! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ सर्पेभ्यो नमः। सर्पमावाहयामि स्थापयामि।।

९. **ब्रह्मा** (केतुवामपार्श्वे)—

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन्निहागच्छ इह तिष्ठ ॐ ब्रह्मणे नमः। ब्रह्मा आवाहयामि स्थापयामि।।

प्रार्थना–

अग्निरापः क्षिति विष्णुरिन्द्र ऐन्द्री च दैवताः।
प्रजापतिश्च सर्पाश्च ब्रह्मा प्रत्याधिदेवताः।।

।। इति प्रत्याधिदेवता स्थापनम् ।।

पञ्चलोकपाल स्थापनम्

नवग्रहाः मण्डलोपरि आवाहयेत्—

१. **गणपति** (राहोरुत्तरतः)—

ॐ गणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपति! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ गणपतये नमः। गणपति-मावाहयामि स्थापयामि।

२. **दुर्गा** (शनेरुत्तरतः)—

ॐ अम्बेअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गा! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ दुर्गायै नमः। दुर्गामावाहयामि स्थापयामि।

३. **वायु** (रवेरुत्तरतः)—

ॐ व्वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि नियुत्वान्त्सोमपीतये।।

ॐ भूर्भुव: स्व: वायु! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ वायव्ये नम:। वायुमावाहयामि स्थापयामि।

४. आकाश (राहोर्दक्षिणे)—

ॐ घृतं घृत पावानः पिबत व्वसाम्व्वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽआदिशो विदिश ऽउद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा।।

ॐ भूर्भुव: स्व: आकाश! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ आकाशाय नम:। आकाशमावाहयामि स्थापयामि।

५. अश्विनीभ्यां (केतोर्दक्षिणे)—

ॐ यावां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षताम्।।

ॐ भूर्भुव: स्व: अश्विनीकुमार! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ अश्विनीभ्यां नम:। अश्विनीमावाहयामि स्थापयामि।

प्रार्थना—

ॐ विनायकं तथा दुर्गा वायुमाकाशमेव च।
आवाहये व्याहृतिभिः तथैवाश्विकुमारकौ।।

॥ इति पञ्चलोकपालपूजनम् ॥

अथ दशदिक्पालस्थापनम्

नवग्रहामण्डलोपरि रक्तपरिधौ दिक्पालानामावाहयेत्—

१. इन्द्र (पूर्वे)—

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣳ हवे हवे सुहव ꣳ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ꣳ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः।।

ॐ भूर्भुव: स्व: इन्द्र! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ इन्द्राय नम:। इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

२. अग्नि (आग्नेयाम्)—

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ २ आ सादयादिह।।

ॐ भूर्भुव: स्व: अग्नि! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ अग्नये नम:। अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

३. यम (दक्षिणे)—

ॐयमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्मः पित्रे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यम! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ यमाय नमः। यममावाहयामि स्थापयामि।

४. निर्ऋति (नैर्ऋत्याम्)—

ॐअसुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छसात इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।।

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋति! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।

५. वरुण (पश्चिमे)—

ॐतत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो व्वरुणेह बोद्ध्युरुश ꣳ समानऽआयुः प्रमोषीः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ वरुणाय नमः। वरुणमावाहयामि स्थापयामि।

६. वायु (वायव्याम्)—

ॐआ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ꣳ सहस्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायु! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ वायव्ये नमः। वायुमावाहयामि स्थापयामि।

७. कुबेराय (उत्तरे)—

ॐव्वय ꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कुबेर! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ कुबेराय नमः। कुबेरमावाहयामि स्थापयामि।

८. ईशानाय (ऐशान्याम्)—

ॐतमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिंधियञ्जिन्व मवसे हूमहे व्वयम् । पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्ध्धः स्वस्तये।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशान! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ ईशानाय नमः। ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

९. ब्रह्मणे (ईशानपूर्वमध्ये)—

ॐअस्मे रुद्द्रा मेहना पर्व्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः श ꣳ

सते स्तुवते धायिपज्ज्र ऽइन्द्र ज्येष्ठा ऽअस्म्माँ२ ऽअवन्तु देवाः।।

ॐ भूर्भुव: स्व: ब्रह्मा! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ ब्रह्मणे नम:। ब्रह्मा आवाहयामि स्थापयामि।

१०. अनन्ताय (नैऋत्यपश्चिममध्ये)—

ॐस्योना पृथिवी नो भवा नृक्षरानिवेशनी। यच्छा नः शर्म्म सप्प्रथाः।।

ॐ भूर्भुव: स्व: अनन्त! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ अनन्ताय नम:। अनन्तमावाहयामि स्थापयामि।

प्रार्थना—

ॐ इन्द्रो वह्नि पितृपति नैऋतो वरुणो मरुत्।
कुबेर ईशो ब्रह्माश्च अनन्तो दश दिक्पतिः।।

॥ इति दशदिक्पाल पूजनम् ॥

अन्यश्च **(क) वास्तोष्पति** (गुरोरुत्तरे)—

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वा वेशोऽअनमीवो भवानः। यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्वशन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।

ॐ भूर्भुव: स्व: वास्तोष्पतिमिहागच्छ इह तिष्ठ ॐ वास्तोष्पतये नम:। वास्तोपतिमावाहयामि स्थापयामि।।

(ख) क्षेत्राधिपति (गुरोरुत्तरे)—

ॐन हि स्पशमविदन्नन्यमस्माद् वैश्वानरात्पुर ऽएतारमग्नेः एमेनम वृधन्नमृता ऽअमृर्त्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः।।

ॐ भूर्भुव: स्व: क्षेत्राधिपति! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ क्षेत्राधिपतये नम:। क्षेत्राधिपतिमावाहयामि स्थापयामि।।

(ग) विश्वकर्मा (मण्डलमध्य कलशोपरि) -

ॐविश्वकर्मन्हविषा व्वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्यम्। तस्मै व्विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्व्यो यथा सत्।।

ॐ भूर्भुव: स्व: विश्वकर्मा! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ विश्वकर्मणे नम:। विश्वकर्मामावाहयामि स्थापयामि।।

अनेन कृतेन पूजनेन अधिदेवताप्रत्याधिदेवतापञ्चलोकदशदिक्पाल वास्तोक्षेत्राधिपतिविश्वकर्मा च प्रीयन्ताम् न मम।

अथ नक्षत्राधिपति पूजनम्

१. **अश्विनी** (अश्विनी कुमारौ)—

ॐअश्विना तेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वती व्वीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्।।

२. **भरणी** (यम)—

ॐयमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहाघर्मः पित्रे।।

३. **कृत्तिका** (अग्नि)—

ॐअयंमग्निः सहस्त्रिणो वाजस्य शतिनस्पतिः। मूर्द्धा कवीरयीणाम्।।

४. **रोहिण्याः** (प्रजापति)—

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय ꣳ स्याम पतयो रयीणाम्।।

५. **मृगशिरा** (सोम)—

ॐ सोमो धेनु ꣳ सोमो ऽअर्वन्तमाशु ꣳ सोमो वीरंकर्म्मण्यं ददाति। सादन्यं विदर्थ्य सभेयं पितृ श्रवणं योददाश दस्मै।।

६. **आर्द्रा** (रुद्र)—

ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव ऽउतोत ऽइषवे नमः। बाहुभ्यां मुतते नमः।।

७. **पुनर्वसु** (अदिति)—

ॐ अदिति र्द्यौरदितिरंतरिक्षमदितिर्माता सपिता सपुत्रः। विश्वेदेवा-ऽअदितिः पञ्च जना ऽअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्।।

८. **पुष्य** (अङ्गिरा)—

ॐ वाचस्पतये पवस्व विष्णो ऽअ पशुभ्याङ्गभस्ति पूतः। देवो देवेभ्य पवस्वयेषाम्भगोसि।।

९. **आश्लेषा** (सर्प)—

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः।।

१०. **मघा** (पितरः)—

ॐपितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेब्भ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेब्भ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽ मीमदन्तं

पितरोतीतृपन्त पितरः पितरः शुंधध्वम्।।

१ १. पूर्वाफाल्गुनी (भग)—

ॐ भग प्प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवाददन्नः। भगप्प्रणो जनय गोभिर वैब्भर्ग प्रन्नृभिर्नृवन्तः स्याम।।

१ २. उत्तराफाल्गुनी (अर्यमा)—

ॐ दैव्यावध्वर्य्यू ऽआगत ꣳ रथेन सूर्य्य त्वचा। मध्वायज्ञ ꣳ समञ्जाथे तम्प्रत्क्नथा यं व्वेनश्चित्रन्देवानाम्।।

१ ३. हस्त (सूर्य)—

ॐ व्विभ्राड्बृहत्पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम्। व्वातजूतोयो ऽअभि रक्षतित्क्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा व्विराजति।।

१ ४. चित्रा (त्वष्टा)—

ॐ त्वष्टातुरीपोऽअद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्धूर्दना। द्विपदाच्छन्दऽइन्द्रिय-मुक्षा गौर्नवयोदधुः।।

१ ५. स्वाति (वायु)—

ॐ पीवो ऽअन्नारयिवृधः सुमेधा श्वेतः सिषक्ति नियुतामभि श्रीः। ते वायवे सुमनसो व्वितस्त्थुर्व्विश्वेनरः स्वपत्यानि चक्रुः।।

१ ६. विशाखा (इन्द्राग्नि)—

ॐइन्द्राग्नि ऽआगत ꣳ सुतंगीभिर्न्नभो वरेण्यम्। अस्य पातंधियेषिता।।

१ ७. अनुराधा (मित्र)—

ॐ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महादेवाय तदृत सपर्यत। दूरे दृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्यायश ꣳ सत।।

१ ८. ज्येष्ठा (इन्द्र)—

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣳ हवे हवे सुहव ꣳ शूरमिन्द्रम्। ह्वायामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।।

१ ९. मूल (निर्ऋति)—

ॐ मातेव पुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्नि ꣳ स्वेतयोना वभारुषा। तां विश्वेर्देवै ऋर्तुभिः यंविदानः प्रजापति विश्वकर्मा विमुञ्चतु।।

२ ०. पूर्वाषाढा (जल)—

ॐ अपाघमप किल्विषमप कृत्यमपोरपः। अपामार्ग त्वमस्मदप दुःस्वप्न्य ꣬ सुव।।

२१. उत्तराषाढा (विश्वेदेवा)—

ॐ विश्वे ऽअद्यमरुतो विश्वऊतो विश्वे भन्त्वग्नयः समिधाः। विश्वे नो देवा ऽअवसागमन्तु विश्वमस्तु द्रविणं वाजो अस्मे।।

२२. अभिजित् (विधि)—

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो योनः प्रचोदयात्।।

२३. श्रवण (विष्णु)—

ॐइदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ꣳ सुरे स्वाहा।।

२४. धनिष्ठा (वसु)—

ॐ व्वसोः पवित्रमसि शतधारं व्वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शत धारेण सुप्वा कामधुक्षः।।

२५. शतभिषा (वरुण)—

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भ सर्ज्जनीस्थो वरुणस्यऽ ऋतसदन्यसि वरुणस्यऽ ऋतसदनमसि वरुणस्यऽ ऋतसदनमासीद।।

२६. पूर्वाषाढा (अजैकपद्)—

ॐ उतनो ऽहिर्बुध्न्यः श्रृणोत्वज ऽएकपात् पृथिवी समुद्रः। विश्वेदेवा ऋता वृधोहुवानास्तुता मन्त्राः कविशस्ता ऽअवन्तु।।

२७. उत्तराषाढा (अहिर्बुध्न्य)—

ॐ शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते ऽअस्तु मा माहि ꣬ सीः। निवर्त्तयाम्यायुषेनाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय।।

२८. रेवती (पूषा)—

ॐ पूषन्तवव्रते वयन्नरिष्येम कदाचन्। स्तोतारस्त ऽइहस्मसि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः नक्षत्राधिदेवेभ्यो इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ नक्षत्राधिपतये नमः, आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ मनोजूतीति प्रतिष्ठा पूर्वकं शोडशोपचारैः पूजनं कुर्यात्।

(षोडशोपचार से या उपलब्ध सामग्री से पजा करें)

प्रार्थना-(नक्षत्रा)—

ॐअश्विनी भरणी चैव कृतिका रोहिणी मृगः।
आर्द्रा पुनर्वसुः पुष्यस्ततो ऽश्लेषामघा तथा।।
पूर्वाफाल्गुनीका तस्मादुत्तरा फाल्गुनी ततः।
हस्ताश्चित्रा तथा स्वातिर्विशाखा तदनन्तरम्।।
अनुराधा ततो ज्येष्ठा ततो मूलं निगद्यते।
धनिष्ठा शतताराख्या पूर्वा भाद्रपदा ततः ।
उत्तरा भाद्रपदेच्चै रेवत्येतानि भानि च ।।

(नक्षत्रेशा)—

ॐदस्रो यमोऽतलो धाता चन्द्रो रुद्रोऽदितिगुरुः।
भुजङ्गमध्व पितरो भगोऽर्यव दिवाकरौ ।।
त्वष्टा वायुश्च शक्राग्नि मित्रः शक्रश्च नैर्ऋतिः।
जलं विश्वे विधिर्विष्णुर्वासवो वरुणस्तथा ।।
अजैकपादहिर्बुध्न्यः पूषेति कथितौ बुधैः।
अष्टाविंशति सख्यानां नक्षत्राणामधीश्वराः ।।

अनेन कृतेन पूजनेन नक्षत्रानक्षत्राधीश्वराश्च प्रीयन्ताम् न मम।

।। इति नक्षत्रपूजनम् ।।

अथ दिग्रक्षणम्

यजमान स्व वाम हस्ते गौरसर्षपान् लाजाऽअक्षतमिश्रितान् त्रिगुणितं रक्तसूत्रं किञ्चित् द्रव्याञ्चादाय दक्षिण हस्तेनाच्छाद्य ।

(यजमान बाँये हाथ में पीलीसरसों, चावल, लाजा, मोली (कलावा) व द्रव्य लेकर दाहिने हाथ से आच्छादित करें व उच्चारण करें)

तत्र मन्त्र—(वैदिक)

ॐरक्षोहणं बलगहनं वैष्णवीमिदमहन्तं बलगमुत्किरामि। यम्मेनिष्ट्-योयममात्यो निचखानेद महन्तम् बलगमुत्किरामि। यम्मे समानो यम समानो निचखानेदमहन्तं बलगमुत्किरामि। यम्मे सबंधुर्यम सबंधुर्निचखानेद महन्तं बलगमुत्किरामि। यम्मे सजातो यम सजातो निचखानोत्कृत्याङ्किरामि।।

(पौराणिक)—

ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम्।
विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्देभक्त्या सरस्वतीम्।।१।।
स्थानाधिपं नमस्कृत्य ग्रहनाथं निशाकरम्।
धरणीगर्भ सम्भूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम्।।२।।
दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम्।
राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः।।३।।
शक्राद्या देवताः सर्वाः मुनींश्चैव तपोधनान्।
गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम्।।४।।
व्वशिष्ठं मुनिं शार्दूलं विश्वामित्रं तथैव च।
व्यासं मुनिं नमस्कृत्य सर्वशास्त्र विशारदम्।।५।।
विद्याधिका ये मुनयः आचार्याश्च तपोधनाः।
तान् सर्वान् प्रणमाम्येवं यज्ञरक्षाकरान् सदा।।६।।

गौरसर्षपान् लाजाऽअक्षतमिश्रितान् सर्वासु दिक्षु मण्डपान्तरे विकीर्य।

(दाहिने हाथ से दशों दिशाओं में सरसों, चावल व लाजा बिखेर दें)

तत्र मन्त्र—

ॐ पूर्वेरक्षतु गोविन्दः आग्नेयां गरुड़ध्वज।
याम्यां रक्षतु वाराह्वे नारसिहंस्तु नैर्ऋत्ये।।१।।
वारुण्यां केशवो रक्षेद्वायव्यां मधुसूदनः।
उत्तरे श्रीधरो रक्षेदीशाने तु गदाधरः।।२।।
ऊर्ध्वो गोवर्धनो रक्षेदधस्ताच्च त्रिविक्रमः।
एवं दश दिशो रक्षेद्वासुदेवो जनार्दनः।।३।।
यज्ञाग्रे पातु मां शङ्खः पृष्ठे रक्षतु पद्मन्तु।
वामपार्श्वे गदा रक्षेद्दक्षिणे च सुदर्शनः ।।४।।
उपेन्द्रः पातु ब्राह्मणमाचार्यं पातुमधोक्षजः।
यजमान सपत्नीकं पुण्डरीक विलोचनः।।५।।
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं रक्षत्वीशोकममाद्रिधृक्।
यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।।६।।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्रगच्छतु।
अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः

Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by

ये भूता विघ्नकर्तास्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।७।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्।
सर्वेषामविरोधेन यज्ञ कर्म समारभेत्।।८।।

ततः त्रिगुणित रक्तसूत्रं श्रीगणपतिरपयेत् पुनर्गृहीत्वा गणपत्यादि देवानां रक्षासूत्रं समर्पयेत्।

इसके बाद मोली गणेश जी सम्मुख अर्पण करके पुनः लेकर गणपति आदि सभी देवताओं को रक्षासूत्र अर्पण करें और यजमान, आचार्यादि सभी ब्राह्मणो को मौली बान्धे व ब्राह्मण, यजमान सपत्नीक रक्षासूत्र बान्धे।

रक्षासूत्र बन्धनम्—

(क) ब्राह्मणस्य रक्षाबन्धनम्—

यजमान आचार्यादि विप्राणामव्यस्त दक्षिण हस्ते रक्षासूत्र बन्धनं कुर्यात्। (यजमान ब्राह्मणो के दाहिने हाथ के मौली बान्धे)

तत्र मन्त्र—

ॐव्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।

(ख) यजमानस्य रक्षाबन्धनम्—

ततः आचार्योपि यजमानस्य व्यस्त दक्षिणहस्ते पत्न्या च व्यस्त वामहस्ते रक्षासूत्र बन्धनं कुर्यात् ।(ब्राह्मण पत्नी सहित यजमान के रक्षासूत्र बान्धे)

तत्र मन्त्र—

ॐ यदाबध्नं दाक्षायणा हिरण्य ꣳ शतानीकाय सुमनस्य मानाः। तन्म ऽआबध्नामि शत शारदायायुष्मान् जरदष्टिर्य्यथासम्।।

ॐ येन बद्धो बलीराजा दानवेद्रो महाबलः।
तेनत्वामनुबध्नामि रक्षेमाचलमाचलः।।

(उपरोक्त मन्त्रों व रक्षोघ्न सूक्त का उच्चारण करें)

।। इति रक्षाबन्धनम् ।।

तत्र शास्त्रोक्तञ्च—पादांगुष्ठं समारभ्य केशान्तं च नरर्षभ।
रक्षासूत्रं प्रकर्तव्यं सर्वत्र शुभकर्मणि।।
पत्नीवामकरे सूत्रं बद्धं सौख्यधनागमम्।
बहुसम्पत्तिमारोग्यं रक्षार्थे कंकणं शुभम्।।*(संस्कार दीपके)*

shmukh Librar

अथ आभ्युदयिकनान्दीमुखश्राद्धम्

नान्दीमुख श्राद्ध षोडशमातृका के समक्ष करें। पूर्व या उत्तराभिमुख सव्य रहकर ही देवताओं की पूजा की तरह विश्वेदेवा व पितरों की पूजा करें। पूर्व दिशा की ओर सत्यवसु नामक विश्वदेव के दो आसन लगायें। माताऽऽदि के तीन आसन लगायें। और उनकी पूजा करें।

नान्दीमुखश्राद्ध प्रारूप

उत्तर

४. सपत्नीक; मातामह, प्रमातामह, वृद्धप्रमातामह

- १ --- २ --- ३ -

३. पिता, पितामह, प्रपितामह

-१ --- २ --- ३ -

२. माता, पितामही, प्रपितामही

- १ --- २ --- ३ -

१ विश्वदेवा २

दक्षिण

(यजामान अपने दाहिने हाथ में यव, पुष्प तथा चन्दन लेकर संकल्प करें)

सङ्कल्पम्—

अद्येहेत्यादि देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्राणां मातृ, पितामही, प्रपितामहीनां अमुकदेवीनां गायत्रीसावित्रीसरस्वतीस्वरूपाणां नान्दीमुखीनां तथा अमुकगोत्राणां पितृ, पितामह, प्रपितामहानां अमुकदेवानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां नान्दीमुखानां तथा अमुकगोत्राणां सपत्नीकः मातामह, प्रमातामह, वृद्धप्रमातामहानां अमुकदेवानां अग्निवरुणप्रजापतिस्वरूपाणां नान्दीमुखानां प्रीतये अमुककर्मणा निमितकं सत्यवसुसंज्ञका विश्वदेवा पूर्वकं संक्षिप्त रूपेण नान्दीमुखश्राद्धमहं करिष्ये।

शास्त्रोक्तञ्च—

रजोदोषजननाशौचादिसम्भावनायां नान्दीश्राद्धस्यापकृष्यानुष्ठाने दिनावधिः एकविंशत्यहर्यज्ञे विवाहे दशवासराः त्रिषट् चौलोपनयने नान्दीश्राद्धं विधीयते। (कर्मठगुरौ)

d by eGangc

पादप्रक्षालनम्—(पादप्रक्षलन के लिए आसनों पर जल छोड़े)

ॐसत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूभुर्वः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः।

ॐमातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूभुर्वः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः।

ॐपितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूभुर्वः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः।

ॐमातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूभुर्वः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः।

आसनदानम्—(कुशादि का आसन देवें)

ॐसत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूभुर्वः स्वः इदं आसनं सुखासनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः, नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियतां तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवावः।

ॐमातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूभुर्वः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः, नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियतां तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवावः।

ॐपितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूभुर्वः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः, नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियतां तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवावः।

ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूभुर्वः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः, नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियतां तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवावः।

शास्त्रोक्तञ्च—

जीवत्पितृकस्तु पितामहादिभ्यो वृद्धौदद्यात्।
जीवत्मातृकः मातामह्यादिभ्यो वृद्धौ दद्यात्।
मातामहे जीवति तत्पित्रादिभ्यो दद्यात्।
वृद्धौ तीर्थे च सन्यस्ते तथा च पतिते सति।।
येभ्य एव पिता दद्यात्तेभ्यो दद्यात् स्वयं सुतः।।

(कर्मठगुरौकारिकायाम्)

गन्धादिदानम्—(आसनों पर जल, वस्त्र, यज्ञोपवीत, चन्दन, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ऋतुफल व ताम्बुल आदि अर्पण करें)

ॐसत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐभूभुर्वः स्वः इदं गंधाद्यार्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः।

ॐमातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐभूभुर्वः स्वः इदं गंधाद्यार्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः।

ॐपितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐभूभुर्वः स्वः इदं गंधाद्यार्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः।

ॐमातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूभुर्वः स्वः इदं गंधाद्यार्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः।

भोजननिष्क्रयदानम्—(भोजन निष्क्रय निमित्त दक्षिणा दें)

ॐ सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूभुर्वः स्वः इदं युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तमन्नं निष्क्रयीभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः।

ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूभुर्वः स्वः इदं युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तमन्नं निष्क्रयीभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः।

ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूभुर्वः स्वः इदं युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तमन्नं निष्क्रयीभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः।

ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूभुर्वः स्वः इदं युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तमन्नं निष्क्रयीभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः।

क्षीरयवमुदकदानम्—(जल में दूध व जौ मिलाकर अर्पण करें)

ॐसत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।

ॐमातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम्।

ॐपितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।

ॐमातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।

शास्त्रोक्तञ्च—

कुशास्थाने तु दूर्वाः स्युर्मंगस्याभिवृद्धये।
नात्रापसव्यकरणं न पित्र्यं तीर्थमिष्यते॥

(हेमाद्रौब्रह्माण्डे)

जलयवपुष्पदानम्— (सभी आसनों पर एक साथ जल, पुष्प और यव छोड़ें)

शिवा आप सन्तु, इति जलम्।

सौमनस्यमस्तु, इति पुष्पम्।

अक्षतं चारिष्टं चास्तु, इति यवम्।

जलधारादानम्— (पितरों को अंगूठे की ओर से जल धारा दें)

अघोराः पितरः सन्तु। इति पूर्वाग्रां जल धारां दद्यात् ।

आशीर्वचनम्— यजमान कृताञ्जलि प्रार्थयेत् ।

(हाथ जोड़कर प्रार्थना करें व पितरों की ओर से ब्राह्मण प्रति वचन बोले)

यजमान—गोत्रं नो वर्धताम्।

ब्राह्मण—वर्धताम् वो गोत्रम्।

यजमान— दातारो नोऽभि वर्धन्ताम् । - अभिवर्धतां वो दातारः।
वेदाश्च नोऽभिवर्धन्ताम्। - अभि वर्धन्तां वो वेदाः।
सन्ततिः नो वर्द्धताम्। - अभिवर्धतां वः संतति।
श्रद्धां च नो माव्यगमत्। - माव्यगमद्वः श्रद्धा ।
बहुदेयं च नो अस्तु। - अस्तु वो बहु देयम्।
अन्नं च नो बहु भवेत्। - भवतु वो बहवन्नम्।
अतिथीश्च लभेमहि। - लभतां वो अतिथयः।
याचितारश्च नः सन्तु। - सन्तु वो याचितारः।
एताऽआशिषाः सत्याः सन्तु। - सन्त्वेताः सत्याशिषाः।

दक्षिणादानम्—

(मुन्नका, आँवला, अदरक, आदि दक्षिणा सहित अलग-अलग अर्पण करें)

ॐसत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐभूभुर्वः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूलदक्षिणां निष्क्रय दातुमहमुत्सृजे सम्पद्यताम् वृद्धिः।

शास्त्रोक्तञ्च— न स्वधा शर्म वर्मेति पितृनाम नचोच्चरेत्।
न कर्म पितृतीर्थेन न कुशा द्विगुणी कृताः।।
न तिलैर्नापसव्येन पित्र्यमन्त्र विवर्जितम्।
अस्मच्छद्धं कुर्वीत श्राद्धे नान्दीमुखे क्वचित्।।

(पुराणसमुच्चये)

ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूभुर्वः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक यवमूल दक्षिणां निष्क्रय दातुमहमुत्सृजे सम्पद्यताम् वृद्धिः।

ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूभुर्वः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक यवमूल दक्षिणां निष्क्रय दातुमहमुत्सृजे सम्पद्यताम् वृद्धिः।

ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूभुर्वः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक यवमूल दक्षिणां निष्क्रय दातुमहमुत्सृजे सम्पद्यताम् वृद्धिः।

यजमानवदेत् , तत्रमन्त्र—

ॐ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ२ इयक्षते। ॐ इडामग्ने पुरुद ঌ स ঌ सनिं गोः शश्वत्तम ঌ हव मानाय साध। स्यान्मः सूनुस्तनयो विजानाग्ने सा ते सुमति भूँ त्वस्मे।।

यजमान–अनेन नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम्।

ब्राह्मणाः—सुसम्पन्नम्।

विसर्जनम्—(इस मन्त्र से विसर्जन करें)

ॐ व्वाजे वाजेऽवत व्वाजिनो नो धनेषु विप्राऽअमृताऽऋतजाः। अस्य मद्ध्वः पिबत मादयद्ध्वं तृप्ता यात पथिभिर्द्देवयानेः।। ॐ आ मा व्वाजस्य प्रसवो जगम्म्या देमे द्यावापृथिवी विश्वेरूपे। आ मा गन्तां पितरा मातराश्चा मा सोमो ऽमृतत्वेन गम्म्यात्।।

विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। इति मन्त्रेण विसृज्य।

यजमान–

मयाऽऽचरिते साङ्कल्पिक नान्दीश्राद्धेन्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्ट ब्राह्मणानां वचनाच्छ्रीगणेश प्रसादात्परिपूर्णोऽस्तु।

ब्राह्मणाः—अस्तु परिपूर्णः।

॥ इति नान्दीश्राद्धम् ॥

अथाचार्यादिवरणम्

आचार्यवरणम्—

(आचार्य को आसन पर विराजमान करें तथा पैर धोकर गन्धाक्षतपुष्प से पूजा करें)

उदङ्मुखं आचार्यमुपवेश्य पाद प्रक्षालन पूर्वकं गन्धपुष्पाक्षतादिभिः सम्पूज्य।

द्रव्यजलाक्षतान्यादाय—

ॐतत्सत्० देशकालौं संकीर्त्य० अमुकगोत्रोत्पन्नः शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत वाजसायनीय शाखाध्यायिनममुकशर्मणः मम गृहे अस्मिन् कर्त्तव्ये अमुक-कर्मणः दास्यमानैः एभिः वरणद्रव्यैः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे।

आचार्य—वृतोऽस्मि।

यजमान—(करौ बध्वा प्रार्थयेत्)

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिनाचार्यो भव सुव्रत ।।

ब्रह्मावरणम्—(यजमान, आचार्य की तरह ब्रह्मा की भी पूजा करके वरण करें)

पूर्ववत् वरणसामग्रीमादाय— देशकालौ संकीर्त्य० अमुक गोत्रोत्पन्नो-हमऽमुक शर्माहमऽमुकगोत्रोत्पन्न अमुकशर्माणं ब्राह्मणं मम गृहे अमुककर्मणः कृताऽकृता वेक्षणरूप ब्रह्मकर्म कर्तुम् एभिः वरणद्रव्यैः त्वामहं वृणे।

ब्रह्मा:—वृतोऽस्मि।

यजमान—(करौ बध्वा प्रार्थयेत्)

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्वलोक पितामहः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भवद्विजोत्तमः।।

ऋत्विग्वरणम्—(यजमान सभी ऋत्विजों को आसन करके गन्धादि से पूजा करें तथा वरण करें)

गन्धपुष्पद्रव्यादी आदाय—

देशकालौ संकीर्त्य० अमुकगोत्रोत्पन्नोहमऽमुक शर्माहमऽमुक गोत्रोत्पन्न अमुकशर्माणं ब्राह्मणं मम गृहे अमुककर्मणि दास्यैमानैः एभिः वरणद्रव्यैः ऋत्विक्त्वेन त्वामहं वृणे।

ऋत्विक्— वृतोऽस्मि।

यजमान—भगवन् सर्व धर्मज्ञ ! सर्व धर्म परायण।
वितते मम यज्ञेऽस्मिनृत्विक् त्वं मे मखे भव।।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।

प्रार्थना—(यजमान हाथ जोड़कर सभी ब्राह्मणो से प्रार्थना करें)

अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः।
ग्रह ध्यानरताः नित्यं प्रसन्न मनसः सदा।।
अदुष्ट भाषणाः सन्तु मा सन्तु परनिन्दकाः।
ममाऽपि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि।।
ऋत्विजश्च यथापूर्व शक्रादीनां मखेऽभवन्।
यूयं तथा मे भवत ऋत्विजो द्विजसत्तमाः।।
अस्मिन् कर्मणि येविप्राः वृता गुरुमुखादयः।
सावधानाः प्रकुर्वन्तुं स्वं स्वं कर्मयथोदितम्।।
अस्ययागस्य निष्पतौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया।
सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं कर्मदम् विधि पूर्वकम्।।

यथा विहितं कर्म कुरु (कुरुत)

विप्राः—यथा ज्ञानं करवाणि (करवाम)

।। इति ब्राह्मण वरणम् ।।

अथ वास्तुमण्डलपूजनम्

पञ्चगव्यादिनां गृहं वा पूजास्थानं शुंद्ध विधाय। नैऋत्यां वास्तु पीठं विधाय वास्तुशान्तिः कुर्यात्।

(प्रचलित मत के अनुसार घर व प्रतिष्ठान् में ८१ पद वास्तु मण्डल तथा देवप्रतिष्ठा, देव स्थान, राजभवन व प्रासाद में शांति के लिए ६४ पद वास्तुमण्डल का आवाहन व प्रतिस्थापन करें। श्वेत वस्त्र पर यथोक्त वास्तु मण्डल का निर्माण करके मण्डल को त्रिसुत्री से वेष्टित करें तथा आग्नेय कोण से प्रारम्भ करके चारों कोणों पर लोहशंकु रोपण करें) **यजमानः सपत्नीकः वास्तुवेदिकायां पश्चिमत उपविश्य आचम्य प्राणायाम्य सङ्कल्पं कुर्यात्।**

सङ्कल्पम्—

ॐ अद्येत्यादौदेशकालौ संकीर्त्य अस्य वास्तो शुभतां सिद्ध्ये वास्तु मण्डलस्थानां देवानां स्थापनं स्वर्णमयि वा रजतमयी वा वास्तोमूर्तेः स्थापनं पूजनं च करिष्ये।

शङ्कु चतुष्ट्य रोपणम्— ईशानादिप्रदक्षिणा क्रमेण शङ्कु लोहकीलं रोपयेत्, त्रिसूत्री वेष्टनंकुर्यात्। शङ्कु समीपे सदीपदधिमाषभक्त बलिं दद्यात्।

तत्र मन्त्र— विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च भूतले।
मण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तु आयुर्बलकराः सदा।।

इति मन्त्रेण क्रमशः शङ्कुरोपणं कुर्यात्। शङ्कु समीपे बलिं द्ध्यात्—

॥१॥ आग्नेयाम्—

ॐ अग्निभ्योऽप्यथ सर्पेभ्यो येचान्ये तान्समाश्रिताः।
बलिं तेभ्य प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्।।

।।२।। नैर्ऋत्याम्—

ॐ नैर्ऋत्याधिपतिश्चैव नैर्ऋत्यां ये च राक्षसाः।
बलिं तेभ्य प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्।।

।।३।। वायव्याम्—

ॐ वायव्याधिपतिश्चैव वायव्यां ये च राक्षसाः।
बलिं तेभ्य प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्।।

।।४।। ऐशान्याम्—

ॐ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चान्ये तत्समाश्रिताः।
बलिं तेभ्य प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्।।

बलिदान पश्चात् गन्धपुष्पाक्षतान् सम्पूज्य।

अनेन पूजनेन बलि दानेन च शंकुदेवताः प्रीयन्ताम्, न मम।

रेखाकरणम्—ततो वास्तु पीठोपरि कुंकुमादिनां हेमरुप्याशलाकया वा पश्चिमादारभ्य प्रागताः, दक्षिणादारंभा उत्तरे रेखाकरणं कुर्यात्।

(वास्तु पीठ पर रोली लगाकर सोने का सिक्का या स्वर्णशलाका से पश्चिम से पूर्व पर्यन्त और दक्षिण से उत्तर पर्यन्त दश-दश रेखायें खिचें) तद्‌यथा—

पश्चिमत पूर्व पर्यन्तं—	दक्षिणत उत्तर पर्यन्तं—
१. ॐ शान्तायै नमः।	१. ॐ हिरण्यायै नमः।
२. ॐ यशोवत्यै नमः।	२. ॐ सुव्रतायै नमः।
३. ॐ कान्तायै नमः।	३. ॐ लक्ष्म्यै नमः।
४. ॐ विशालायै नमः।	४. ॐ विभूत्यै नमः।
५. ॐ प्राणवाहिन्यै नमः।	५. ॐ विमलायै नमः।
६. ॐ शत्यै नमः।	६. ॐ प्रियायै नमः।
७. ॐ सुमनायै नमः।	७. ॐ जयायै नमः।
८. ॐ नन्दायै नमः।	८. ॐ ज्वालायै नमः।
९. ॐ सुभद्रायै नमः।	९. ॐ विशोकायै नमः।
१०. ॐ सुरथायै नमः।	१०. ॐ विशदायै नमः।

'रेखादेवताभ्यो नमः' गन्धाक्षतपुष्प द्रव्याणि सहिता सम्पूज्य।

अनेन पूजनेन रेखादेवताः प्रीयन्ताम् न मम।

यजमान पुष्पाक्षताञ्चादाय ईशानकोणपदात् आरभ्य प्रदक्षिणाक्रमेण तण्डुलपुञ्जोपरि शिख्यादिपं च चत्वारिशत् देवता आवाह्यप्रतिष्ठापनं कुर्यात्।

(यजमान पुष्पाक्षत लेकर ईशान कोणपद से प्रारम्भ करके प्रदक्षिणा क्रम में चावल पुंजो पर चावल व पुष्प छोड़ते हुये आवाहन तथा प्रतिस्थापन करें)

यथा—

।।१।। शिखिने—(ईशानकोणे, वास्तो शिरः स्थाने रक्तवर्णे)

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्व मवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्भ्धः स्वस्तये।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शिखिनी! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ शिखिन्ये नमः। शिखिन-मावाहयामि स्थापयामि।।

।।२।। पर्जन्याय—(तद्दक्षिणे दक्षिणनेत्रे पीतवर्णे)

ॐमहाँ२ इन्द्रो वज्रहस्तः षोडशीशर्म्म यच्छतु हन्तु पाप्मानं योस्मान्द्वेष्टि। उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्रो यत्वैषते योनिर्महेन्द्रायत्वा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पर्जन्य! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ पर्जन्याय नमः।

।।३।। जयंताय—(तद्दक्षिणपदे श्रोत्रद्विपदं पीतवर्णे)

ॐधन्वनागा धन्वाजिजयेम धन्वनातीव्राः समदोजयेम। धनुः शत्रोरपकामं क्रणोति धन्वना सर्वाः प्रदिशो जयेम।।

ॐ भूर्भुवः स्वः जयन्त! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ जयन्ताय नमः।

।।४।। कुलिशायुधाय—(तद्दक्षिण द्विपदे अंसे पीत वर्णे)

ॐ इन्द्रश्चसम्राड् व्वरुणश्च राजातौ ते भक्षं चक्रतुरग्र एतम्। तयो रहमनु भक्षंयामिवाग्देवी जुषाणा सोमस्य तृप्यतु सह प्राणेन स्वाहा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कुलिशायुध! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ कुलिशायुधाय नमः।

।।५।। सूर्याय—(तद्दक्षिणपदद्वये दक्षिणबाहौ रक्तवर्णे)

ॐ सूर्य रश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात् सविता ज्ज्योति रुदयाँऽऽअजस्त्रम्। तस्य पूषा प्रसवे याति विद्वान् सम्पश्यन् विश्वाभुवनानि गोपाः ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्य! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ सूर्याय नमः।

।।६।। सत्याय—(तद्दक्षिणपदद्वये दक्षिणबाहौ शुक्लवर्णे)

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized

ॐव्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणां श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।

ॐभूर्भुवः स्वः सत्य! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ सत्याय नमः।

।।७।। भृशाय—(तद्दक्षिणपदद्वये दक्षिणकूर्परे कृष्णवर्णे)

ॐ भद्रङ्कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रम्मपश्ये माक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गै-स्तुष्टुवा ᳪ सस्तनूभिर्व्य शेमहि देव हितं यदायुः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भृश! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ भृशाय नमः।

।।८।। आकाशाय—(तद्दक्षिणैक बाहौ एकपदे कृष्णवर्णे)

ॐ घृतं घृत पावानः पिबत व्वसाम्व्वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हवि-रसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽआदिशो विदिश ऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।।

ॐ भूभुर्वः स्वः आकाशमिहागच्छ इह तिष्ठ ॐ आकाशाय नमः।

।।९।। वायो—(तद्दक्षिण आग्नेयकोणे धुम्रवर्णे)

ॐ व्वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि नियुत्वान्त्सोमपीतये।।

ॐ भूभुर्वः स्वः वायुमिहागच्छ इह तिष्ठ ॐ वायव्ये नमः।

।।१०।। पूषणे—(तद्दक्षिण पश्चिमैकपदे दक्षिण मणिबन्धे रक्तवर्णे)

ॐ पूषन्तवव्रते वयन्नरिष्येम कदाचन। स्तोतारस्त ऽइहस्मसि।।

ॐभूभुर्वः स्वः पूषन्तमिहागच्छ इह तिष्ठ ॐ पूषणे नमः।

।।११।। वितथाय—(तदधः दक्षिणपार्श्वे द्विपदे शुक्लवर्णे)

ॐसविता प्रथमे ऽहन्नग्निर्द्वितीये वायुस्तृतीय ऽआदित्य चतुर्थे चन्द्रमाः पञ्चमऋतुः षष्ठे मरुतः सप्तमे बृहस्पतिरष्टमे। मित्रो नवमे वरुणो दशम इन्द्र एकादशे विश्वेदेवा द्वादशे।।

ॐ भूभुर्वः स्वः वितथमिहागच्छ इह तिष्ठ ॐ वितथाय नमः।

।।१२।। गृहक्षताय—(तत्पश्चिम पदद्वये दक्षिणपार्श्वे पीतवर्णे)

ॐगृहमाविभतमावे यध्वमृर्जे बिभ्रत एमसि। ऊर्जे बिभ्रद्वः सुमनाः सुमेधा गृहानैमिमनसा मोदमानः ।।

ॐ भूभुर्वः स्वः गृहक्षतमिहागच्छ इह तिष्ठ ॐ गृहक्षताय नमः।

।।१३।। यमाय—(तदधः पदद्वय दक्षिणोरौ कृष्णवर्णे)

ॐयमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे।।

ॐभूभुर्वः स्वः यममिहागच्छ इह तिष्ठ ॐ यमाय नमः।

।।१४।। गंधर्वाय—(तत्पश्चिमे पदद्वये दक्षिणजानुप्रदेशे रक्तवर्णे)

ॐ ऋताषाड् ऋतधामाग्निर्गंधर्वस्तस्यौषधयोप्सरसोमुदोनाम्। स न ऽइदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा व्वाट् ताभ्यः स्वाहा।।

ॐभूर्भुव: स्व: गन्धर्व! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ गन्धर्वाय नम:।

।।१५।। भृङ्गराजाय—(तत्पश्चिम पदद्वये दक्षिणजङ्घायां कृष्णवर्णे)

ॐसुपर्णः पार्जन्य ऽआतिर्वाह सोदर्विदाते वायवे बृहस्पतये वाचस्पतयें पैङ्गराजोऽलज आन्तरिक्षः प्लवोद्गुर्मत्स्यस्ते नदीपतय द्यावापृथिवीयः कूर्मः।।

ॐ भूर्भुव: स्व: भृङ्गराज! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ भृङ्गराजाय नम:।

।।१६।। मृगाय—(तदधः एकपद दक्षिणस्फिचि पीतवर्णे)

ॐतद् विष्णोः परमंपद ꣳ सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीय चक्षुराततम्।। त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाब्भ्यः। अतो धर्माणि धारयन्।।

ॐ भूर्भुव: स्व: मृग! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ मृगाय नम:।

।।१७।। पितृभ्य—(तदधः नैर्ऋत्यकोणेकपदे पादयोः रक्तवर्णे)

ॐपितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेब्भ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्पितामहेब्भ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽ मीमदन्तं-पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धद्ध्वम्।।

ॐ भूर्भुव: स्व: पितर! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ पितृभ्यो नम:।

।।१८।। दौवारिकाय—(तदुत्तरैकपदे वामस्फिचि रक्तवर्णे)

ॐ द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्रतिष्ठत नेष्ट्रा दृतुभिरष्यत।।

ॐ भूर्भुव: स्व: दौवारिक! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ दौवारिकाय नम:।

।।१९।। सुग्रीवाय—(तदुत्तरपदोर्ध्वं पदे वामजङ्घायां शुक्लवर्णे)

ॐसुषुम्णः सूर्य रश्मि चन्द्रमा गंधर्वस्तस्य नक्षत्राण्यऽप्सरसो भेकुरयो ना। स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा व्वाट् ताभ्यः स्वाहा।।

ॐ भूर्भुव: स्व: सुग्रीव! इहागच्छ इह तिष्ठ, ॐ सुग्रीवाय नम:।

।।२०।। पुष्पदन्ताय—(तदुत्तरे पदद्वये वामजानुप्रदेशे रक्तवर्णे)

ॐओषधीः प्रतिमोद्दधव्वं पुष्पवती प्रसूवरीः अश्वाऽइवसजित्वरीर्व्वी-रुधः पारयिष्णवः।।

ॐ भूर्भुव: स्व: पुष्पदन्त! इहागच्छ इह तिष्ठ, ॐ पुष्पदन्ताय नम:।

।।२१।। वरुणाय—(तदुत्तरे पदद्वये वामूरौ शुक्लवर्णे)

ॐतत्वायामि ब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो व्वरुणेह बोद्ध्युरुश ६ समानऽआयुः प्रमोषीः।।

ॐभूर्भुवः स्वः वरुण! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ वरुणाय नमः।

।।२२।। असुराय—(तदुत्तरे पदद्वये वामपार्श्वे पीतवर्णे)

ॐये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधयाचरंति। परापुरोनि पुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकान्प्रणुदात्य स्मात्।।

ॐभूर्भुवः स्वः असुर! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ असुराय नमः।

।।२३।। शेषाय—(तदुत्तरे पदद्वये वामपार्श्वे कृष्णवर्णे)

ॐ या इषवोनां येवा वनस्पति ६ रनु। येवावटेषु शेरतेतेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

ॐभूर्भुवः स्वः शेष! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ शेषाय नमः।

।।२४।। पापाय—(तदुत्तरे वायव्यकोणैकपदे वाममणिबन्धे पीतवर्णे)

ॐ सूर्य रश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात् सविता ज्ज्योति रुदयाँऽऽअजस्रम्। तस्य पूषा प्रसवे याति विद्वान् सम्पश्यन् विश्वाभुवनानि गोपाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पाप! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ पापाय नमः।

।।२५।। रोगाय—(तदुत्तरे वायव्यकोणैकपदे वामप्रवाहो रक्तवर्णे)

ॐशिरोमे श्रीर्यशो मुखंत्विपिः केशाश्च श्मश्रूणि राजामे प्राणो अमृत ६ सम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम्।।

ॐभूर्भुवः स्वः रोग! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ रोगाय नमः।

।।२६।। अहये—(तत्प्रागेकपदे वामप्रवाहौ रक्तवर्णे)

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। येऽअन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अहये! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ अहये नमः।

।।२७।। मुख्याय—(तदूर्ध्व पदद्वये वामकूर्परे रक्तवर्णे)

ॐअवतत्य धनुष्ट्व ६ सहस्राक्षशतेषुधे। निशीर्यशल्यानां मुखाशिवो-नः सुमना भवः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मुख्य! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ मुख्याय नमः।

।।२८।। भल्लाटाय—(तत्प्राक्पदद्वये वामबाहौ कृष्णवर्णे)

ॐबण्महाँ२।। असि सूर्य बडादित्य महाँ२।।असि महस्ते सतोमहिमा पनस्यतेद्धादेव महाँ२।। असि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भल्लाट! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ भल्लाटाय नमः।

।।२९।। **सोमाय—(तत्प्राक्पदद्वये वामबाहौ कृष्णवर्णे)**

ॐ सोमो धेनु ꣳ सोमो ऽअर्वन्तमाशु ꣳ सोमो वीरंकर्म्मण्यं ददाति। सादन्यं विदर्थ्य ꣳ सभेयं पितृ श्रवणं योददाश दस्मै।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सोम! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ सोमाय नमः।

।।३०।। **सर्पाय—(तत्प्राक्पदद्वये वामांसे कृष्णवर्णे)**

ॐउदुत्यं जात वेदसंदेवं वंहन्ति केतवः। दृषेव्विश्वाय सूर्य ꣳ स्वाहा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्प! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ सर्पाय नमः।

।।३१।। **अदितये—(तत्प्राक्पदद्वये वामश्रोत्रे पीतवर्णे)**

ॐ अदिति द्यौरदितिरंतरिक्षमदितिर्माता सपिता सपुत्रः। विश्वेदेवा-ऽअदितिः पञ्च जनाऽअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्।।

ॐभूर्भुवः स्वः अदिति! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ अदितये नमः।

।।३२।। **दितये—(तत्प्राक्पदद्वये वामनेत्रे पीतवर्णे)**

ॐ उतनो ऽहिर्बुध्न्यः श्रृणोत्वज ऽएकपात् पृथिवी समुद्रः। विश्वेदेवा ऋता वृधोहुवानास्तुता मन्त्राः कविशस्ताऽअवन्तु।।

ॐभूर्भुवः स्वः दिति! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ दितये नमः।

।।३३।। **अदभ्यो—(शिखिपदाधः मुखे शुक्लवर्णे)**

ॐ आपोऽ अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु धृतेनो धृतप्प्वः पुनन्तु। व्विश्व ꣳ हिरिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरा पूतऽएमि। दीक्षा तपसोस्तनूरसितान्त्वां शिवा ꣳ शग्मां परिदधं भद्द्रं व्वर्ण पुष्यन्।।

ॐभूर्भुवः स्वः आप! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ अदभ्यो नमः।

।।३४।। **सावित्राय—(आग्नेयपदाधः कोणे दक्षिणहस्ते शुक्लवर्णे)**

ॐ उपयाम गृहीतोऽसि सावित्रोऽसि च नोधाश्च नोधाऽअसि च नो मयिधेहि। जिन्वयज्ञं जिन्वयज्ञपतिं भगायदेवाय त्वा सवित्रे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्र! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ सावित्राय नमः।

।।३५।। **जयाय—(नैऋत्यां पितृपदाधः कोणे शुक्लवर्णे)**

ॐमर्म्माणि ते वर्मणाच्छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानुवस्ताम्। उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानु देवामदन्तु।।

ॐ भूर्भुवः स्वः जया! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ जयाय नमः।

।।३६।। रुद्राय—(वायव्यां कोणे रोगपदाधः वामहस्ते रक्तवर्णे)

ॐ याते रुद्र शिवातनूर घोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ता भिचाकशीहि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्र! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ रुद्राय नमः।

।।३७।। अर्यम्णे—(ततो मध्यसलग्नो परिस्थित पदत्रय दक्षिणस्तने कृष्णवर्णे)

ॐ अर्य्यमणं बृहस्पतिमिन्द्रं दानाय चोदय। वाचं विष्णु ꣳ सरस्वती ꣳ सवितारं च वाजिन ꣳ स्वाहा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अर्यम्ण! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ अर्यम्णे नमः।

।।३८।। सवित्रे—(तद्दक्षिणाग्नेयकोणे पदे दक्षिणहस्ते रक्तवर्णे)

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सवित्र! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ सवित्रे नमः।

।।३९।। विवस्वते—(तदधः पश्चिमपदत्रये जठरदक्षिणभागे शुक्लवर्णे)

ॐ विवस्वन्नादित्यैषत सोम पीथस्तस्मिन् मत्स्व श्रदस्मैनरोव्वचसे दधातन यदाशीर्दादंपतीव्वानमम श्रुतः। पुमान्पुत्रो जायतेव्विदते व्वस्वधा व्विश्वाहारपऽ एधते गृहे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विवस्वत! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ विवस्वते नमः।

।।४०।। विबुधाधिपाय—(तत्पश्चिमनैर्ऋत्यकोणपदे वृषणयो रक्तवर्णे)

ॐ इन्द्रऽ आसां नेता बृहस्पतिर्द्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः। देवसेनाना मभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्।।

ॐभूर्भुवः स्वः विबुधाधिप! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐविबुधाधिपाय नमः।

।।४१।। मित्राय—(तदुत्तरे पदत्रये जठरवामभागे श्वेतवर्णे)

ॐ तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्योरूपं कृणुते द्यौ रूपस्थे। अनन्त मन्य द्रुशदस्यपाजः कृष्णमन्य द्धरितः संभरंति।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मित्र! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ मित्राय नमः।

।।४२।। राजयक्ष्मणे—(तदुत्तरैकपदे वामहस्ते रक्तवर्णे)

ॐअभिगोत्राणि सहसा गाहमानो ऽदयो वीरः शतमन्युरिन्द्रः दुश्च्यवनः पृतना षाडयुध्यो ऽस्माक ꣳ सेनाअवतु प्रयुत्सु।।

ॐ भूर्भुवः स्वः राजयक्ष्मण! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ राजयक्ष्मणे नमः।

।।४३।। पृथ्वीधराय—(तत्प्राक्पदत्रये वामहस्ते रक्तवर्णे)

ॐ स्योना पृथिवी नो भवा नृक्षरा निवेशनी यच्छा नः शर्म सप्रथाः।।

ॐ भूर्भुव: स्व: पृथ्वीधरमिहागच्छ इहतिष्ठ ॐ पृथ्वीधराय नम:।

।।४४।। आपवत्साय—(तत्प्राक् ईशानकोणपदे उरसि शुक्लवर्णे)

ॐ आतेवत्सोमनो यमत्परमाच्चित् सधस्थात् अग्ने त्वां कामयागिरा।।

ॐ भूर्भुव: स्व: आपवत्स! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ आपवत्साय नम:।

।।४५।। ब्रह्मणे—(मध्ये नवपदे वास्तोहृदय पीतवर्णे)

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।।

ॐ भूर्भुव: स्व: ब्रह्मा! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ ब्रह्मणे नम:।

।।४६।। चरक्यै—(मण्डलाद्बहि ईशानकोणेषु धुम्रवर्णे)

ॐभावास्यमिद ꣳ सर्वं यत्किञ्चजगत्यां जगत्। तेनत्यक्तेन भुञ्जीथामा-गृधः कस्यस्विद्धनम्।।

ॐ भूर्भुव: स्व: चरक! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ चरक्यै नम:।

।।४७।। विदार्यै—(मण्डलाद्बहिराग्नेयकोणेषु रक्तवर्णे)

ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२ आ सादयादिह।।

ॐभूर्भुव: स्व: विदारी! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ विदार्यै नम:।

।।४८।। पूतनायै—(ततो नैर्ऋत्यां पीतहरितवर्णे)

ॐ नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः कुल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय वैशन्ताय च ।।

ॐ भूर्भुव: स्व: पूतना! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ पूतनायै नम:।

।।४९।। पापराक्षस्यै—(ततो वायव्यां कोणे कृष्णवर्णे)

ॐ वायव्यैर्वायव्यान्याप्नोति सतेन द्रोण कलशं कुम्भीभ्यामम्भृणौ सूते स्थालीभिः स्थालीराप्नोति।।

ॐ भूर्भुव: स्व: पापराक्षस! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ पापराक्षस्यै नम:।

।।५०।। स्कंदाय—(ततः मण्डलाद्बहिर्पूर्वे रक्तवर्णे)

ॐयत्र बाणाः संपतंति कुमाराविशिखाऽ इव तन्नऽइन्द्रो बृहस्पति रदितिः शर्म्म यच्छतु विश्वाहा शर्म्म यच्छतु।।

ॐ भूर्भुव: स्व: स्कंद! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ स्कंदाय नम:।

।।५१।। अर्यम्णे—(तद्दक्षिणे कृष्णवर्णे)

ॐ अर्यमणं बृहस्पतिमिन्द्रं दानायचोदय वाचं विष्णु ꣳ सरस्वती ꣳ सवितारञ्च ꣳ वाजिन स्वाहा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अर्यमा! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ अर्यम्णे नमः।

।।५२।। जृम्भकाय—(तत् पश्चिमे रक्तवर्णे)

ॐ सरोभ्यो धैवरमुपस्था वराभ्यो दा शं वैशन्ताभ्यो वैन्दं नड्वलाभ्यः शौष्कलं पारायमार्गारिभवारायकैवर्ते आन्दं विषमेभ्यो मैनाल स्वनेस्यः पर्णकं गुहाभ्यः किरात ꣳ सानुभ्यो जृम्भकं पर्वतेभ्यः किम्पूरुषम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः जृम्भक! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ जृम्भकाय नमः।

।।५३।। पिलिपिच्छाय—(तदुत्तरे पीतवर्णे)

ॐ कास्विदासीत्पूर्व्वचितिः कि ꣳ स्विदासी बृहद्वयः कास्विदासीत् पिलिप्पिला कास्विदासीत्पिशङ्गिला।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पिलिपिच्छ! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ पिलिपिच्छाय नमः।

।।५४।। गणेशाय—(पुनः पूर्वे)

ॐगणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपति! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ गणपतये नमः।

।।५५।। दुर्गायै—(ततः दक्षिणे)

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। सन्नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गा! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ दुर्गायै नमः।

।।५६।। वायव्ये—(ततः पश्चिमे)

ॐ व्वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि नियुत्वान्त्सोमपीतये।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायु! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ वायव्ये नमः।

।।५७।। विभत्साय—(ततः उत्तरे)

ॐअमी वहा वास्तोष्पते विश्वरूपाण्याविशन् सखा सुशेव एधिः नः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विभत्स! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ विभत्साय नमः।

।।५८।। उग्रसेनाय—(पुनः पूर्वे)

ॐअभित्वा गौत्तमा ऽङ्गिरा जात वेदो विचर्षणे। द्युम्नैरभि प्रणोनुमः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः उग्रसेन! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ वायव्ये नमः।

।।५९।। डामराय—(ततो दक्षिणे)

ॐसि ꣳ ह्यसि स्वाहा सि ꣳ ह्यस्यादित्य व निः स्वाहा ꣳ ह्यसि ब्रह्मवनिः क्षत्रवनिः स्वाहा सि ꣳ ह्ययसि सुप्रजावनी रायस्पोषवनिः स्वाहा सि ꣳ ह्यस्यावह देवान् यजमानाय स्वाहा भूतेभ्यस्त्वा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः डामर! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ डामराय नमः।

।।६०।। महाकालाय—(ततः पश्चिमे)

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि। समापो ऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः काल! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ कालाय नमः।

।।६१।। अश्विभ्याम्—(ततः उत्तरे)

ॐ यावां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विनीकुमार! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ अश्विभ्यां नमः।

।।६२।। इन्द्राय—(पूर्वे)

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣳ हवे हवे सुहव शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ इन्द्राय नमः।

।।६३।। अग्नये—(आग्नेयाम्)

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२ आ सादयादिह।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नि! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ अग्नये नमः।

।।६४।। यमाय—(दक्षिणे)

ॐयमाय त्वा ऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यम! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ यमाय नमः।

।।६५।। निर्ऋतये—(नैर्ऋत्याम्)

ॐअसुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छसात इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।।

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋति! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ निर्ऋतये नमः।

।।६६।। **वरुणाय—(पश्चिमे)**

ॐतत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो व्वरुणेह बोद्ध्युरुश ६ समानऽआयुः प्रमोषीः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ वरुणाय नमः।

।।६७।। **वायो—(वायव्याम्)**

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ६ सहस्त्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायु! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ वायव्ये नमः।

।।६८।। **कुबेराय—(उत्तरे)**

ॐ व्वय ६ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कुबेर! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ कुबेराय नमः।

।।६९।। **ईशानाय—(ऐशान्याम्)**

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिंधियञ्जिन्व मवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्भ्धः स्वस्तये।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशान! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ ईशानाय नमः।

।।७०।। **रुद्रेभ्यो—(ईशान पूर्व मध्ये)**

ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव ऽउतोत ऽइषवे नमः। बहुभ्यां मुतते नमः।।

ॐभूभुर्वः स्वः एकादशरुद्रः इहागच्छत इहतिष्ठत ॐएकादशरुद्रेभ्यो नमः।

।।७१।। **अनन्ताय—(नैर्ऋत्य पश्चिम मध्ये)**

ॐस्योना पृथिवी नो भवा नृक्षरानिवेशनी। यच्छा नः शर्म्म सप्प्रथाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्त! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ अनन्ताय नमः।

इत्थं शिख्यादीनावाह्य षोडशोपचारैः सम्पूज्य ।

वास्तुशान्ति पूजनम् (सुवर्ण प्रतिमायां)

मण्डलमध्ये कलशं संस्थाप्य तदुपरि सुवर्णवास्तुप्रतिमां कृकलासरूपां संस्थाप्य। वास्तुमूर्तौ अग्न्युतारणपूर्वकं प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्।

(वास्तु मण्डल के मध्ये ताम्रकलश संस्थापित करके उसके ऊपर सोने की कृकंल स्वरूप वास्तुमूर्ति स्थापित करके, अग्न्यतारण पर्वक चलप्राणप्रतिष्ठा करें)

CC-0. Nanaji Deshmukh Library

आवाहनम्— ॐवास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वा वेशोऽअनमीवो भवानः। यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्वशन्नो भवद्विपदे शं चतुष्पदे।।

(उपरोक्त मन्त्र से वास्तुदेव का आवाहन करें)

ॐ आगच्छ भगवन् वास्तो सर्वै देवैरभिष्ठित।
भगंवन् कुरु कल्याणं गृहेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोष्पतिमिहागच्छ इह तिष्ठ ॐ वास्तोष्पतये नमः। वास्तोष्पतिमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ मनोजूतीतिमन्त्रस्य प्रतिष्ठापूर्वकं षोडशोपचारैः पूजनं कुर्यात्।

(षोडशोपचार से या उपलब्ध सामग्री से पूजा करें)

अर्घ्यदानम्—

ॐ पूज्योऽसि त्रिषु लोकेषु गृहे रक्षार्थं वैप्रभो।
त्वद् विना न च सिद्ध्यन्ति यज्ञदानानि सर्वशः।।
अयोने भगवन् भर्ग ललाट स्वेद संभव।
गृहाणार्घ्यं मयादत्तं वास्तु स्वामिन् नमोस्तुते।।

विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

करौबध्वा प्रार्थयेत्—

वास्तोष्पते नमस्तुभ्यं भूशय्याभिरत प्रभो।
मद्गृहं धन धान्यादि समृद्धं कुरु सर्वदा।।

अनेन पुजनेन वास्तोमण्डलस्थदेवानां पीठोपरि प्रतिष्ठित वरुणः वास्तुपुरुष च प्रीयेताम् न मम।

पताकास्थापनं पूजनञ्च— (भवनोपरि संस्थाप्येत्)

।।१।। पूर्व-**बृहद् पञ्चरंगी व पीतध्वजा।**

।।२।। अग्नेयां-**रक्ता।** ।।३।। दक्षिणे-**कृष्णा।**

।।४।। नैऋत्यां-**नीला।** ।।५।। पश्चिमे-**श्वेता।**

।।६।। वायव्यां-**धुम्रा।** ।।७।। उत्तरे-**श्वेता।**

।।८।। ऐशान्यां-**रक्ता।** ।।९।। ईशान पूर्व मध्य-**रक्ता।**

।।१०।। नैऋत्य पश्चिम मध्ये-**रक्त पताका स्थाप्येत् ।**

पञ्चोपचारैः लब्ध्योपचारैर्वा सम्पूजयेत्।

अनेन पूजनेन पताका देवाः प्रीयन्ताम् न मम ।

त्रिसुत्रीवेष्टनं जलधारां प्रपातनं च कुर्यात्। सर्षपलाजाविकर्णं कुर्यात्।

(जल व दूध की धारा देकर लाजा तथा पीली सरसों बिखेरें)

वास्तुखनन व प्रतिष्ठापनम्—

अग्नेकोणे आकाशपदे जानु परिमितं गर्तं खनित्वा तत्र काष्ठपेटिका मध्ये मृणमय कलशेषु वास्तुमूर्तौ, शैवाल, सप्तधान्य, लाजा, पीतसर्षप, दधि, दूर्वा, पुष्पं च संस्थाप्य तद् गर्ते निधाय जलदुग्धेन गर्तं पूरयेत् खनितया मृत्तिकया गर्तं परिपूर्य गोमयोदकेन उपलिप्य अष्टदलं विधाय सम्पूज्य श्रीफलं सदक्षिणाकं संस्थाप्य करौबध्वा प्रार्थयेत्—

ॐ खशैल सागरां भूमिं यथा वहसि मूर्धनि।
तथा मां वह कल्याणं सम्पत् संततिभिः सह।।

गृहप्रवेश—

नूतन भवनेषु प्रवेशः शुभवेलायां प्राक्तन निवासस्थाने गणपत्यादि पूजनं कृत्वा दधिदूर्वा सहितं कलश श्रीफल युक्तं यजमानः हस्तौ धृत्वा सपत्नीकः सपरिवारः कृत वितान (चन्दवा) वाद्यादि सहित मङ्गलगीतयुक्तः नूतनभवनद्वार समीपे आगत्य गणेश दक्षिण वाम द्वारशाखा पूजनं व द्वारदेहली पूजनं कृत्वा दक्षिण चरणनिधाय पूर्वकं गृहे प्रविशेत्। हस्तगत कलश धान्यराश्युपरि निधाय कुलदेवता पूजनं कुर्यात्।

प्रकोष्ठाधिदेवतापूजनम्

।।१।। स्थम्भपूजनम्—

ॐवास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणां सन्नं सौम्यानां द्रप्सोभत्तापुरां शाश्वती ना मिक्षे मुनीनां सखा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्थम्भ! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ स्थम्भाय नमः।

पञ्चोपचारैः लब्धोपचारैर्वा सम्पूजयेत्।

अनेन पूजनेन स्थम्भः प्रीयताम् न मम।

।।२।। दीपकपूजनम्—

ॐचन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः दीप! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ दीपाय नमः।

पञ्चोपचारैः लब्धोपचारैर्वा सम्पूजयेत् ।

अनेन पूजनेन दीपदेवताः प्रीयताम् न मम।

।।३।। **चुल्ही** (अग्निगंधर्वाभ्याम्) **पूजनम्** —

ॐ त्वन्नो अग्ने व्वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो ऽअवया सिसीष्ठाः यजिष्ठोतमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ꣳ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नि! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ अग्नये नमः।

पञ्चोपचारैः लब्धोपचारैर्वा सम्पूजयेत्।

अनेन पूजनेन अग्निगंधर्वाः प्रीयेताम् न मम।

।।४।। **भण्डारगृहे** (कुबेराय) **पूजनम्**—

ॐ व्वय ꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कुबेर! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ कुबेराय नमः।

(हल्दी, मजीठ, साबूतधनिया व कमलगट्टा लेकर कुबेर सहित महालक्ष्मी का पूजन करें)

पञ्चोपचारैः लब्धोपचारैर्वा सम्पूजयेत् ।

प्रार्थना—

धनाध्यक्षाय देवाय नरयानोपवेशिने।
नमस्ते राजराजाय कुबेराय महात्मने।।

अनेन पूजनेन कुबेरः प्रीयताम् न मम।

।।५।। **जलस्थाने** (वरुणाय) **पूजनम्**—

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेड-मानो व्वरुणेह बोद्ध्युरुश ꣳ समानऽआयुः प्रमोषीः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ वरुणाय नमः।

पञ्चोपचारैः लब्धोपचारैर्वा सम्पूजयेत्।

अनेन पूजनेन वरुणः प्रीयताम् न मम।

।।६।। **उखलमूसल** (रौद्रपीठाय) **पूजनम्**—

ॐयमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे।।

ॐ भूभुर्वः स्वः रौद्रपीठ! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ रौद्रपीठाय नमः।

पञ्चोपचारैः लब्धोपचारैर्वा सम्पूजयेत् ।

अनेन पूजनेन रौद्रपीठः प्रीयताम् न मम।

।।७।। **शयनकक्षे** (कामदेवाय) **पूजनम्—**

ॐ इड ऽएह्यादित ऽएहि काम्या ऽएत। मयि वः कामधरणं भूयात्।

ॐ भूर्भुव: स्व: कामदेव! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ कामदेवाय नम:। **पञ्चोपचारैः लब्धोपचारैर्वा सम्पूजयेत्।**

अनेन पूजनेन कामदेव: प्रीयताम् न मम ।

।।८।। **छत्रे** (पुन्नागाय) **पूजनम्—**

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्प्येभ्यो नमः।।

ॐ भूर्भुव: स्व: पुन्नाग! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ पुन्नागाय नम:।

पञ्चोपचारैः लब्धोपचारैर्वा सम्पूजयेत्।

अनेन पूजनेन पुन्नाग: प्रीयताम् न मम।

।।९।। **गृहाङ्गणे** (क्षेत्रपालाय) **पूजनम्—**

ॐ न हि स्पशमविदन्नन्यमस्माद् वैश्वानरात्पुर ऽएतारमग्नेः एमेनम वृधन्नमृता ऽअमृर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्र जित्याय देवाः।।

ॐ भूर्भुव: स्व: क्षेत्रपाल! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ क्षेत्रपालाय नम:।

पञ्चोपचारैः लब्धोपचारैर्वा सम्पूजयेत्।

अनेन पूजनेन क्षेत्रपाल: प्रीयताम् न मम।

।। इति वास्तोप्रतिष्ठा ।।

अथ चतुःषष्टियोगिनीपूजनम्

मण्डलप्रारूपानुसारेण रक्तवस्त्रोपरि चतुःषष्ठकोष्ठकानि कृत्वा तदुपरि रक्त-पीत-हरित वा अष्टदलं कृत्वा पूर्वादि क्रमेण आवाहनं कुर्यात्।

(साधारणतया अगर मण्डल न बनावें तो षोडशमातृकामण्डल पर भी आवाहन कर सकते हैं, योगिनीयों के साथ महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती का आवाहन करें। मण्डल के मध्य में ताम्रकलश की स्थापना व पूजा करें।)

ततः यजमान हस्ते रक्तपुष्पाक्षताञ्चादाय—

तत्र मन्त्र—

।।क।। **महाकाल्यै** (मण्डलमध्य कलशोपरि)—

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu

ॐ खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः,
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकाम्,
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाकाल्यै नमः महाकालिमावाहयामि स्थापयामि।

।।ख।। महालक्ष्म्यै (मण्डल मध्य कलशोपरि)—

ॐ घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसलेचक्रं धनुः सायकं,
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनु भजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः महालक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि।

।।ग।। महासरस्वत्यै (मण्डल मध्य कलशोपरि)—

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां,
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः महासरस्वत्यै नमः महासरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि।

।।१।। गजाननायै—

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्ध्यः स्वस्तये।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गजाननायै नमः गजाननामावाहयामि स्थापयामि।

।।२।। सिंहमुख्यै—

ॐआब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर ऽइषव्व्यो ऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वःसिंहमुख्यैनमः सिंहमुखीमावाहयामि स्थापयामि।

।।३।। गृध्रास्यायै—

ॐ महाँ ऽइन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टि माँ ऽइव। स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे। उपयाम गृहीतो ऽसि महेन्द्रायत्वेषतेयानिर्महेन्द्राय त्वा।।

ॐ भूर्भुव: स्व: गृध्रास्यायैनम: गृध्रास्यामावाहयामि स्थापयामि।

।।४।। काकतुण्डिकायै—

ॐ सद्योजातो व्यमिमीत यज्ञमग्निर्देवानाम भवत्पुरोगाः। अस्य होतुः प्रदिश्य तस्य वाचि स्वाहा कृत हविरदन्तु देवाः।।

ॐ भूर्भुव: स्व: काकतुण्डिकायै नम: काकतुण्डिकामावाहयामि स्थापयामि।

।।५।। उष्ट्रग्रीवायै—

ॐ आदित्यं गर्भं पयसा समङ्ग्धि सहस्रस्य प्रतिमां विश्वरूपम्। परि-वृङ्धि हरसा माभिम ८ स्थाः शतायुषं कृणुहि चीयमानः।।

ॐ भूर्भुव: स्व: उष्ट्रग्रीवायै नम: उष्ट्रग्रीवामावाहयामि स्थापयामि।

।।६।। हयग्रीवायै—

ॐ स्वर्ण घर्म्मः स्वाहा स्वर्णार्कः स्वाहा स्वर्ण शुक्रः स्वाहा स्वर्ण ज्योतिः स्वाहा स्वर्ण सूर्य्यः स्वाहा।।

ॐ भूर्भुव: स्व: हयग्रीवायै नम: हयग्रीवामावाहयामि स्थापयामि।

।।७।। वाराह्यै—

ॐसत्यञ्च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनञ्च मे विश्वञ्च मे महश्च मे क्रीड़ा च मे मोदश्च मे जातञ्च मे जनिष्यमाणञ्च मे सूक्तञ्च मे सुकृतञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।

ॐ भूर्भुव: स्व: वाराह्यै नम: वाराहिमावाहयामि स्थापयामि।

।।८।। शरभाननायै—

ॐभायै दार्वाहारं प्रभाया अग्न्येधं ब्रध्नस्य विष्टपायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं देवलोकाय पेशितारं मनुष्यलोकाय प्रकरितार ८ सर्वेभ्यो लोकेभ्यः उपसेक्तारं व ऋत्यै वधायोपमन्थितारं मेधाय वासः पल्पूलीं प्रकामाय रजयित्रीम्।।

ॐ भूर्भुव: स्व: शरभाननायै नम: शरभाननामावाहयामि स्थापयामि ।

।।९।। उलूकिकायै—

ॐ जिह्वा मे भद्रं वाङ्महोमनोमन्युः स्वराड् भामः मोदाः प्रमोदा ऽ अङ्गुलीरङ्गानि मित्रं मे सहः।।

ॐ भूर्भुव: स्व: उलूकिकायै नम: उलूकिकामावाहयामि स्थापयामि।

।।१०।। शिवारावायै—

ॐहिङ्काराय स्वाहा हिंकृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा वक्रन्दाय स्वाहा

प्रोथते स्वाहा प्रपोथाय स्वाहा गंधाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहा सीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा स ꣳ हानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहायनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शिवारावायै नमः शिवारावामावाहयामि स्थापयामि।

।।११।। मयूर्यै—

ॐ अग्निश्च मे घर्म्मश्च मे ऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मे ऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मे ऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मे ऽङ्गुलयः शक्क्वरयोदिशश्च मे यज्ञेनकल्पन्ताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मयूर्यै नमः मयूरिमावाहयामि स्थापयामि।

।।१२।। विकटाननायै—

ॐ पूषन्तवव्रते वयन्नरिष्येम कदाचन। स्तोतारस्त ऽइहस्मसि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विकटाननायै नमः विकटाननामावाहयामि स्थापयामि।

।।१३।। अष्टवक्त्रायै—

ॐवैद्यावेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम्। यूपेन यूप आप्यते प्रणीतो अग्निरग्निना ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवक्त्रायै नमः अष्टवक्त्रामावाहयामि स्थापयामि।

।।१४।। कोटराक्ष्यै—

ॐअयमग्निः सहस्त्रिणो वाजस्य शतिनस्पतिः। मूर्धा कवी रयीणाम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कोटराक्ष्यै नमः कोटराक्षसीमावाहयामि स्थापयामि।

।।१५।। कुब्जायै—

ॐ इयं मे वरुण श्रुधी हवमधा च मृडय। त्वामवस्युराचके।।

ॐ भूर्भुवः स्वःकुब्जायै नमः कुब्जामावाहयामि स्थापयामि।।

।।१६।। विकटलोचनायै—

ॐयमाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः स ꣳ स्पृशस्पहि। अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विकटलोचनायै नमः विकटलोचनामावाहयामि स्थापयामि।

।।१७।। शुष्कोदर्यै—

ॐ यमेम दत्तं त्रित एनमायुनमिन्द्र एणं प्रथम अध्यतिष्ठत्। गंधर्वो अस्य रशनाम गृब्भणात्सूराद वं वसवो निरतष्ठ।।

ॐ भूर्भुव: स्व: शुष्कोदर्यै नम: शुष्कोदरीमावाहयामि स्थापयामि।

।।१८।। लल्लजिह्वायै—

ॐ मित्रस्य चर्षणी धृतोऽवो देवस्य सानसि। द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम्।।

ॐ भूर्भुव: स्व: लल्लजिह्वायै नम: लल्लजिह्वामावाहयामि स्थापयामि।

।। १९।। अश्वदंष्ट्रायै—

ॐ अग्ने ब्रह्मगृभ्ण्णीस्व धरुणमस्तरिक्षं दृ छं ह ब्रह्मवनि त्वा क्षवनि सजात वन्युपदघामि भ्रातृव्यस्य वधाय। विश्वाम्यस्त्वाशाभ्य ऽउपदधामि चित्तस्थोर्ध्वचितो भृगूणामङ्गिरसां तपसा तप्यद्ध्वम्।।

ॐ भूर्भुव: स्व: अश्वदंष्ट्रायै नम: अश्वदंष्ट्रामावाहयामि स्थापयामि।

।।२०।। वानराननायै—

ॐ भग प्प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवाददन्नः। भगप्रणो जनय गोभिरश्वैब्भर्ग प्रन्नृभिर्नृवन्तः स्याम।।

ॐ भूर्भुव: स्व: वानराननामिहागच्छ इह तिष्ठ ॐवानराननायै नम:।

।।२१।। ऋक्षाक्ष्यै—

ॐ सुपर्णोऽसि गुरुत्मान् पृष्ठे पृथिव्याः सीद। भासान्तरिक्षमापृण ज्योतिषा दिवमुत्तमान तेजसा दिश उद्दृ छं ह।।

ॐ भूर्भुव: स्व: ऋक्षाक्ष्यै नम: ऋक्षाक्षीमावाहयामि स्थापयामि।

।।२२।। केकराक्ष्यै—

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेब्भ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्प्रपितामहेब्भ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्तं पितरो तीतृपन्त पितरः पितरशुंधध्वम्।।

ॐ भूर्भुव: स्व: केकराक्ष्यै नम: केकराक्षीमावाहयामि स्थापयामि।

।।२३।। बृहतुण्डायै—

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा ऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गरिशन्ता भिचाकशीहि।।

ॐ भूर्भुव: स्व: बृहतुण्डायै नम: बृहतुण्डामावाहयामि स्थापयामि।

।।२४।। सुराप्रियायै—

ॐवरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः। करतान्न सुराषधसः।।

ॐ भूर्भुव: स्व: सुराप्रियायै नम: सुराप्रियामावाहयामि स्थापयामि।

।।२५।। कपालहस्तायै—

ॐह ६ सः सुचिषद्वसुरन्तरिक्ष सद्होता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्व रस दृत सद्व्योम सदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कपालहस्तायै नमः कपालहस्तामावाहयामि स्थापयामि।

।।२६।। रक्ताक्ष्यै—

ॐ सुसन्दृशं त्वा वयं मघवन्वन्दिषी महि। प्रनूनं पूर्णबन्धुरस्तुतो यासिवशां ऽअनु योजान्विद्रते हरि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः रक्ताक्ष्यै नमः रक्ताक्षीमावाहयामि स्थापयामि।

।।२७।। शुक्यै—

ॐ देवीरापो अपान्नपाद्यो ऊमिर्हविष्य इन्द्रियावान्मदिन्तमः। तं देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो येषां भागस्थ स्वाहा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्यै नमः शुकीमावाहयामि स्थापयामि।

।।२८।। श्येन्यै—

ॐ प्रतिपदसि प्रतिपदे त्वानुपदस्यनुपदे त्वा संपदे त्वा तेजोऽसि तेजसे त्वा त्रिवृदसि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्येन्यै नमः श्यैनिमावाहयामि स्थापयामि।

।।२९।। कपोतिकायै—

ॐद्वारो देवीरन्वस्य विश्वेव्रता ददन्ते अग्नेः। तुरु व्यचसो धाम्ना पत्यमानाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कपोतिकायै नमः कपोतिकामावाहयामि स्थापयामि।

।।३०।। पाशहस्तायै—

ॐदेवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां। आददे नारिरसि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पाशहस्तायै नमः पाशहस्तामावाहयामि स्थापयामि।

।।३१।। दण्डहस्तायै—

ॐ भुयो यज्ञस्य रजसश्च नेता यत्रा नियुद्भिः सचसे शिवोभिः। दिवि मूर्द्धानं दधिषे स्वर्षा जिह्वामग्ने च कृषे हव्यवाहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः दण्डहस्तायै नमः दण्डहस्तामावाहयामि स्थापयामि।

।।३२।। प्रचण्डायै—

ॐ कदाचन स्तरीरसि नेन्द स चसि दाशुषे। उपोपेन्नु मघवन्भूयः इन्नुते दानन्देवस्य पृच्यत आदित्येब्भ्यस्त्वा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रचण्डायै नमः प्रचण्डामावाहयामि स्थापयामि।

।।३३।। चण्डविक्रमायै—

ॐ भद्रङ्कर्णेभिः श्रृणुयामदेवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः। स्थिरैरङ्गै स्तुष्टुवा ꣳ सस्तनूभिर्व्व्यशेमहि देवहितं य्यदायुः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः चण्डविक्रमायै नमः चण्डविक्रमामावाहयामि स्थापयामि।

।।३४।। शिशुघ्न्यै–

ॐइषे त्वोर्जे त्वा वायवस्थं देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजवतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघ श ꣳ सो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौस्यात् बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शिशुघ्न्यै नमः शिशुघ्नीमावाहयामि स्थापयामि।

।।३५।। पापहन्त्रै—

ॐदेवी द्यावा पृथिवी मखस्य वामद्यशिरो राध्यासं देवयजने पृथिव्याः। मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे।।

ॐ भूभुर्वः स्वः पापहन्त्रै नमः पापहन्त्रीमावाहयामि स्थापयामि।।

।।३६।। काल्यै—

ॐ व्विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रन्तन्नऽआसुव।।

ॐ भूर्भुवः स्वः काल्यै नमः कालिमावाहयामि स्थापयामि।।

।।३७।। रुधिरपायिन्यै—

ॐअसुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्म-दिच्छसात इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।।

ॐ भूर्भुवः स्वः रुधिरपान्यै नमः रुधिरपायिनिमावाहयामि स्थापयामि।

।।३८।। वशाधयायै—

ॐ अग्निश्च मे घर्म्मश्च मे ऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मे ऽश्वमेघश्च मे पृथिवीच मे ऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मे ऽङ्गुलयः शक्क्वरयो दिशश्च मे यज्ञेनकल्पन्ताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वशाधयायै नमः वशाधामावाहयामि स्थापयामि।।

।।३९।। गर्भभक्षायै—

ॐबह्वीनां पिताबहुरस्य पुत्रश्चिश्चा कृणोति समनाबगत्य। इषुधि सङ्काः पृतनाश्च्च सर्वाः पृष्ठ्ठे निनिद्धो जयति प्प्रसूतः।।

ॐ भूर्भुव: स्व: गर्भभक्षायै नम: गर्भभक्षामावाहयामि स्थापयामि।

।।४०।। शवहस्तायै—

ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव ऽउतोत ऽइषवे नमः। बाहुभ्यां मुतते नमः।।

ॐ भूर्भुव: स्व: शवहस्तायै नम: शवहस्तामावाहयामि स्थापयामि।

।।४१।। आन्त्रमालिन्यै—

ॐऋतञ्च मे ऽमृतञ्च मे यक्ष्मञ्च मे नामयच्च्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वञ्च मे नमित्रञ्च मे भयञ्च मे सुखञ्च मे शयनञ्च मे सूषाश्च मे सुदिनञ्च मे यज्ञेनकल्पन्ताम्।।

ॐ भूर्भुव: स्व: आन्त्रमालिन्यै नम: आन्त्रमालिनीमावाहयामि स्थापयामि।

।।४२।। स्थूलकेश्यै—

ॐते आचरन्ती समनेव योषा मातेव पुत्रं बिभृतामुपस्थे। अप शत्रून्विध्यता ꣳ सविदाने आर्त्नी इमे विस्फुरन्ती अमित्रान्।।

ॐ भूर्भुव: स्व: स्थूलकेश्यै नम: स्थूलकेशीमावाहयामि स्थापयामि।

।।४३।। बृहत्कुक्ष्यै—

ॐवेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रयम्। यूपेन यूप आप्यते प्रणीतो अग्निरग्निना।।

ॐ भूर्भुव: स्व: बृहत्कुक्ष्यै नम: बृहत्कुक्षीमावाहयामि स्थापयामि।

।।४४।। शर्पास्यायै—

ॐपावका नः सरस्वती व्वाजेभिर्व्वाजिनीवती। यज्ञं व्वष्टुधियावसुः।।

ॐ भूर्भुव: स्व: शर्पास्यायै नम: शर्पास्यामावाहयामि स्थापयामि।

।।४५।। प्रेतवाहिन्यै—

ॐ अस्कन्नमद्य देवभ्यः आज्य ꣳ संभ्रिया समङ्घ्रिणा विष्णो मा त्वावक्रमिष वसुमतीमग्ने तेच्छायामुपस्थेषां विष्णोः इस्थानमासीत इन्द्रो वीर्यमकृणोदूर्ध्वो ऽध्वरास्त्थात्।।

ॐ भर्भुव: स्व: प्रेतवाहिन्यै नम: प्रेतवाहिनीमावाहयामि स्थापयामि।

।।४६।। दन्तशूककरायै—

ॐ ते आचरन्ती समनेव योषा मातेव पुत्रं बिभृतामुपस्थे। अप शत्रून्विध्यता छं सविदाने आर्त्नी इमे विस्फुरन्ती अमित्रान्।।

ॐ भूर्भुव: स्व: दन्तशूककरायै नम: दन्तशूककरामावाहयामि स्थापयामि।

।।४७।। क्रौंच्यै—

ॐमही द्यौः पृथिवी च नऽइमं य्यज्ञम्मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः।।

ॐ भूर्भुव: स्व: क्रौंच्यै नम: क्रौंचीमावाहयामि स्थापयामि।।

।।४८।। मृगशीर्षायै—

ॐ उपयाम गृहीतोऽसि सावित्रोऽअसि च नो मयिथेहि। जिन्वयज्ञपतिं भगायदेवाय त्वा सवित्रे।।

ॐ भूर्भुव: स्व: मृगशीर्षायै नम: मृगशीर्षामावाहयामि स्थापयामि।।

।।४९।। वृषाननायै—

ॐआप्यायस्व समेतुते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे।।

ॐ भूर्भुव: स्व: वृषाननायै नम: वृषाननामावाहयामि स्थापयामि।

।।५०।। व्याप्तास्यायै—

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि। समापो ऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः।।

ॐ भूर्भुव: स्व: व्याप्तास्यायै नम: व्याप्तास्यामावाहयामि स्थापयामि।

।।५१।। धूमनिश्वासायै—

ॐत्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

ॐ भूर्भुव: स्व: धूमनिश्वासायै नम: धूमनिश्वासामावाहयामि स्थापयामि।

।।५२।। व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे—

श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणिरूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाण मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण।।

ॐ भूर्भुव: स्व: व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे नम: व्योमैकचरणोर्ध्वदृशीमावाहयामि स्थापयामि।

।।५३।। तापिन्यै—

ॐविष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।।

ॐ भूर्भुव: स्व: तापिन्यै नम: तापिनीमावाहयामि स्थापयामि।।

।।५४।। शोषणीदृष्ट्यै—

ॐ ब्राह्मणमद्य विदेयं पितृमन्तं पैतृमत्यमृषि मार्षेय ꣳ सुधातु दक्षिणम्। अस्मद्राता देवत्रागच्छत प्रदातारमाविशत्।।

ॐ भूर्भुव: स्व: शोषणीदृष्ट्यै नम: शोषणीदृष्टिमावाहयामि स्थापयामि।

।।५५।। कोटर्यै—

ॐआनोभद्रा: क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्ध्यासोऽअपरितासऽउद्भिद: देवा नो यथा सदमिद्वृधेऽअसन्नप्रयुवो रक्षितारो दिवे दिवे।।

ॐ भूर्भुव: स्व: कोटर्यै नम: कोटरिमावाहयामि स्थापयामि।

।।५६।। स्थूलनासिकायै—

ॐ नाभिं यज्ञाना सदनं रयीणां महामाहावममिसं नवन्तं। वैश्वानरं रथ्यमध्वराणां यज्ञस्य केतुं जनयन्त देवा: ।।

ॐ भूर्भुव: स्व: स्थूलनासिकायै नम: स्थूलनासिकामावाहयामि स्थापयामि।

।।५७।। विद्युत्प्रभायै—

ॐ ब्रह्माणिमे मतय: श ꣳ सुतास: शुष्म इयर्ति प्रभृतो मे अद्रि:। आशासते प्रतिहर्यन्त्युक्थेमा हरोवहतस्ता नो अच्छ।।

ॐ भूर्भुव: स्व: विद्युत्प्रभायै नम: विद्युत्प्रभामावाहयामि स्थापयामि।

।।५८।। बलाकास्यायै—

ॐ असंख्याता सहस्त्रणि ये रुद्रा अधिभूम्याम्। तेषा ꣳ सहस्त्र योजनेऽवधन्वानि तन्मसि।।

ॐ भूर्भुव: स्व: बलाकास्यायै नम: बलाकास्यामावाहयामि स्थापयामि।

।।५९।। मार्जार्यै—

ॐ सुपर्णोऽसि गुरुत्यांस्त्रिवृत्ते शिगायत्रं चक्षु बृहथन्तरे पक्षै। स्तोम आत्मा छन्दा ꣳ स्यङ्गानि यजू ꣳ षिनाम्। सामतो तनूर्वाम देव्यं यज्ञा: यज्ञियं पुच्छंधिष्ण्या: सफा सुपर्णो गुरुत्मान्दिवं गच्छ स्व: पत।।

ॐ भूर्भुव: स्व: मार्जार्यै नम: मार्जारिमावाहयामि स्थापयामि।

।।६०।। कटपूतनायै—

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ता भिंचाकशीहि।।

ॐ भूर्भुव: स्व: कटपूतनायै नम: कटपूतनामावाहयामि स्थापयामि।

।।६१।। अट्टाटहासायै—

ॐ देवी द्यावा पृथिवी मखस्य वामद्यशिरो राध्या सं देव यजने पृथिव्याः। मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अट्टाटहासयै नमः अट्टाटहासामावाहयामि स्थापयामि।

।।६२।। कामाक्ष्यै—

ॐइदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ᳪ सुरे स्वाहा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कामाक्ष्यै नमः कामाक्षीमावाहयामि स्थापयामि।

।।६३।। मृगाक्ष्यै—

ॐवृष्ण ऊर्मिरसि राष्ट्रदाराष्ट्रं मे स्वाहा वृष्ण ऊर्मिरसि राष्ट्रदाराष्ट्र ममुष्यै देहि वृषसेनोसि राष्ट्रदाराष्ट्रम्मे देहि स्वाहा। वृषसे नोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्यै।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मृगाक्ष्यै नमः मृगाक्षीमावाहयामि स्थापयामि।

।।६४।। मृगलोचनायै—

ॐभायै दार्वाहारं प्रभाया अग्न्येधं व्रधनस्य विष्टपायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिष्टारं देवलोकाय पेशितारं मनुष्य लोकाय प्रकरितार सर्वेभ्यो लोकेभ्यो उपसेक्तारमव ऋत्यै वधायोपमन्थितारं मेधाय वासः पल्पूली प्रकामाय रजयित्रीम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मृगलोचनायै नमः मृगलोचनामावाहयामि स्थापयामि।

आवाहनम्— ॐजातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। सन्नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः।।

प्रतिष्ठापनम्—ॐमनोजूतीतिमन्त्रस्य प्रतिष्ठापूर्वकं पुष्पासनं समर्पयामि। षोडशोपचारैः पूजनञ्च बलिदानं कुर्यात्।

ततः पीठोपरि वरुणपूजनं कुर्यात्।(षोडशोपचार से या उपलब्ध सामग्री से पूजा करें)

श्रीफलअर्पणम् (यजमानपत्नी हस्तौ अखण्डश्रीफलसौभाग्यद्रव्यञ्चादाय)—

ॐ रूपं देहि जयं देहि भाग्यं भगवति देहि मे।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामान् प्रयच्छ मे।।

(सिन्दूरादि सौभाग्य द्रव्य सहित नारियल अर्पण करें)

प्रार्थना—

दिव्यादि सर्व योगिन्यां दुर्गा रूपाश्च ताः स्मृताः।
पूजया बलिदानेन सन्तुष्टा सन्तु मे सदा।।

रोगानशेषान पहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।।

अनेन पूजनेन चतु:षष्टियोगिन्य: प्रीयन्ताम् न मम।

।। इति चतु:षष्टियोगिनीपूजनम् ।।

अथ एकोनपञ्चाशत्क्षेत्रपालपूजनम्

मण्डलप्रारूपानुसारेण श्वेत वा कृष्णवस्त्रोपरि एकोनपञ्चाशत कोष्ठकानि कृत्वा तद्दुपरि कृष्ण-पीत-हरित-श्वेताक्षता कोष्ठका पूरित पूर्वादिक्रमेण आवाहनं कुर्यात्। ततः यजमान हस्ते पुष्पाक्षताञ्चादाय—

तत्र मन्त्र—

।।क।। क्षेत्रपालाय (मण्डल मध्य कलशोपरि)—

ॐ क्षां क्षीं क्षौं क्षं क्षः क्षेत्रपालाय नमः ॐ क्षेत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि मात्वाहि ऽ सीन्मा हि ऽ सीः।।

ॐ भूर्भुव: स्व: क्षेत्रपालाय नम: क्षेत्रपालमावाहयामिस्थापयामि।

।।१।। अजराय—

ॐ इमौ ते पक्षा वजरौपतत्रिणौ याभ्या ᳬ रक्षा ᳬ स्यपह ऽ स्यग्ने। ताभ्यां पतेम सुकृतामुलोकं यत्रऋषयो जग्मुः प्रथमजाः पुराणाः।।

ॐ भूर्भुव: स्व: अजराय नम: अजरमावाहयामिस्थापयामि।

।।२।। व्यापकाय—

ॐ प्रथमावा ᳬ सारथिना सुवर्णौ देवौ पश्यन्तौ भुवनानि विश्वा। अपि प्रयंचोदना वामिमाना होतारा ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता।।

ॐ भूर्भुव: स्व: व्यापकाय नम: व्यापकमावाहयामिस्थापयामि।

।।३।। इन्द्रचौराय—

ॐ इद्रस्यवज्राऽसि वाजसास्त्वयायं वाज ऽ सेत्। वाजस्यनु प्रसवे मातरम्महि मदितिन्नाम वचसा करामहे। यस्यामिदं विश्वम्भुवनमाविवेशतस्यानो देवः सविता धर्म साविषत्।।

ॐ भूर्भुव: स्व: इन्द्रचौराय नम: इन्द्रचौरमावाहयामिस्थापयामि।

।।४।। इन्द्रमूर्तये—

ॐ एवेदिन्द्रम् वृषणं वज्र बाहुं वसिष्ठासो ऽअभ्यर्चन्त्यर्कैः। सनस्तुतो वीर वद्धातु गोमद्यूयम्पात स्वस्तिभिः सदानः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रमूर्तये नमः इन्द्रमूर्तिमावाहयामिस्थापयामि।

।।५।। उक्ष्णे—

ॐ उक्षा समुद्रो अरुणः सुपर्णः पूर्वस्य योनिं पितुरा विवेश। मद्धये दिवो निहितः पृश्निरश्मा विचक्रमे रजसस्पात्यन्तौ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः उक्ष्णे नमः उक्ष्णमावाहयामिस्थापयामि।

।।६।। कूष्माण्डाय—

ॐयद्देवाः देवहेडनन्देवा सश्च कृमावयम्। अग्निर्मातस्मादेन सोविश्वान् मुञ्चत्व ६ हसः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कूष्माण्डाय नमः कूष्माण्डमावाहयामिस्थापयामि।

।।७।। वरुणाय—

ॐ स न इन्द्रायज्ज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः। वरिवोवित्परिस्त्रव।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः वरुणमावाहयामिस्थापयामि।

।।८।। बटुकाय—

ॐ बाहु मे बलमिन्द्रिय ६ हस्तौ मे कर्म्मवीर्यम्। आत्क्माक्षत्रमुरोमम।।

ॐ भूर्भुवः स्वः बटुकाय नमः बटुकमावाहयामिस्थापयामि।

।।९।। विमुक्ताय—

ॐमुञ्चन्तु मा शपत्थ्यदथो वरुण्यादुत। अथोयमस्य पड्वी शात्सर्वस्माद्देव किल्विषात्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विमुक्ताय नमः विमुक्तमावाहयामिस्थापयामि।

।।१०।। लिप्तकाय—

ॐ कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत ६ समाः। एवन्त्वयिनान्यथेतोस्तिन कर्मलिप्यतेनरे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः लिप्तकाय नमः लिप्तकमावाहयामिस्थापयामि।

।।११।। नीललोकाय—

ॐ सन्नः सिन्धुरवभृथायोद्यतः समुद्रोभ्य वह्नियमाणः सलिलः प्रप्लुतोय योरोजसास्कभितारजा ७ सिवीर्ये भिर्वीरतमा शविष्ठा। या पत्येते अप्रतीता सहोभिर्विष्णू ऽअगन्वरुणा पूर्वहूतौ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः नीललोकाय नमः नीललोकमावाहयामिस्थापयामि।

।।१२।। एकदंष्ट्राय—

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्चवो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्चवो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्चवो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः एकदंष्ट्राय नमः एकदंष्ट्रमावाहयामिस्थापयामि।

।।१३।। ऐरावताय—

ॐ अर्मेभ्यो हस्ति पंजवाया वपं पुष्ट्यै गोपालं वीर्यायाविपालं तेजसे जपालमिरायैकीना शङ्कीलालाय सुराकारं भद्राय गृहप ४ श्रेयसे वित्तध माद्ध्यक्षा यानुक्षत्तारम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ऐरावताय नमः ऐरावतमावाहयामिस्थापयामि।

।।१४।। औषधीघ्नाय—

ॐओषधीः प्रतिमोदद्ध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वा ऽइव सजित्वरी-र्वीरुधः पारयिष्णवः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः औषधीघ्नाय नमः औषधीघ्नमावाहयामिस्थापयामि।

।।१५।। बन्धनाय—

ॐत्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनं उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः बन्धनाय नमः बन्धनमावाहयामिस्थापयामि।

।।१६।। दिव्यकराय—

ॐदेवसवितरेषते सोमस्त ४ रक्षस्वमात्वादभन्। एतत्वन्देव सोमदेवो देवाँ २ उपागा इदमहं मनुष्यांत्सहरायस्पोषेण स्वाहा निर्वरुणस्य पाशान्मुञ्च्ये।।

ॐ भूर्भुवः स्वः दिव्यकराय नमः दिव्यकरमावाहयामिस्थापयामि।

।।१७।। कम्बलाय—

ॐ सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिण ऊर्णासूत्रेण कवयो वयन्ति। अश्विना यज्ञ ४ सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपवरुणोभिषज्यन्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कम्बलाय नमः कम्बलमावाहयामिस्थापयामि।

।।१८।। भीषणाय—

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनो निमिष एकवीर शत ४ सेना अजयत्साकमिन्द्रः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भीषणाय नमः भीषणमावाहयामिस्थापयामि।।

।।१९।। गवयाय—

ॐ इम सहस्र ꣳ शतधारमुत्संव्यच्यमान ꣳ सरिरस्यमध्ये। घृतन्दुहानामदितिञ्जना याग्नेमाहि ꣳ सीः परमे व्योमन्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गवयाय नमः गवयमावाहयामिस्थापयामि।

।।२०।। घण्टाय—

ॐ कुम्भोविनिष्ठुर्जनिता शचीभिर्यस्मिन् ऽग्नेयोन्याङ्गर्भोऽअंतः। ल्पाशिर्व्यक्तः शतधार उत्सोदुहेन कंभी स्वधां पितृभ्यः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टाय नमः घण्टमावाहयामिस्थापयामि।

।।२१।। व्यालाय—

ॐ आक्रन्दय बलमोजोन आधानिष्ठ निहि दुरिता बाधमानः। अपप्रोथ दुन्दुभे दुच्छुना इत इन्द्रस्य मुष्टिरसि वीडयस्व।।

ॐ भूर्भुवः स्वः व्यालाय नमः व्यालमावाहयामिस्थापयामि।

।।२२।। अंशवे—

ॐइन्द्रा याहि चित्रभानो सुता ऽइमेत्वायवः। अण्वीभिस्तना पूतासः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अंशवे नमः अंशवमावाहयामिस्थापयामि।

।।२३।। चन्द्रवारुणाय—

ॐचन्द्रमा अप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि। रयिं पिशंगम्बहुलं पुरुस्पृह ꣳ हरिरेति कनिक्रदत्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रवारुणाय नमः चन्द्रवारुणमावाहयामिस्थापयामि।

।।२४।। घटाटोपाय—

ॐगणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः घटाटोपाय नमः घटाटोपमावाहयामिस्थापयामि।

।।२५।। जटिलाय—

ॐ उग्रं लोहितेन मित्र ꣳ सौव्रत्येन रुद्रन्दौव्रत्येनेन्द्रं प्रक्क्रीड़ेन मरुतो बलेन साद्ध्यान् प्रमुदा। भवस्य कण्ठ्य ꣳ रुद्रस्यान्तः पार्श्र्वमहादेवस्य य कृच्छर्व्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः जटिलाय नमः जटिलमावाहयामिस्थापयामि।

।।२६।। क्रतवे-

CC-0. Nanaji Deshi

ॐ पवित्रेण पुनीहिमा शुक्रेण देव दीद्यत्। अग्ने कृत्वा क्रतूँरनू।।

ॐ भूर्भुव: स्व: क्रतवे नम: क्रतवमावाहयामिस्थापयामि।

।।२७।। घण्टेश्वराय—

ॐआजिघ्र कलशं मह्या त्त्वा व्विशन्त्विन्दवः। पुनररुर्ज्जा निवर्त्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्क्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्मा विशताद्रयिः।।

ॐ भूर्भुव: स्व: घण्टेश्वराय नम: घण्टेश्वरमावाहयामिस्थापयामि।

।।२८।। विकटाय—

ॐ वायोशुक्रो अयामिते मद्धो अग्रदिष्टिषु। आयाहि सोमपीतये स्पार्हो देवनियुत्वता।।

ॐ भूर्भुव: स्व: विकटाय नम: विकटमावाहयामिस्थापयामि।

।।२९।। मणिमानाय—

ॐ देव्या होतारा भिषजेन्द्रण सयुजायुजा। जगतीच्छन्द इन्द्रिय मनड्वां गौर्वयोदधुः।।

ॐ भूर्भुव: स्व: मणिमानाय नम: मणिमानमावाहयामिस्थापयामि।

।।३०।। गणबन्धनाय—

ॐत्रीणि त आहुः दिविबन्धनानि त्रीण्यप्सु त्रीण्यन्तः समुद्रे। उतवमे वरुणच्छन्त्स्यर्वन्य त्रातआहुः परमं जनित्रम्।।

ॐ भूर्भुव: स्व: गणबन्धनाय नम: गणबन्धनमावाहयामिस्थापयामि।

।।३१।। मुण्डाय—

ॐ सि ꣳ ह्यासि स्वाहा सि ꣳ ह्यस्यादित्यवनिः स्वाहा सि ꣳ हयसि ब्रह्मवनिः क्षत्रवनिः स्वाहा सि ꣳ ह्यसि सुप्रजावनी रायस्पोषवनिः स्वाहा सि ꣳ ह्यस्यावह देवान्यजमानाय स्वाहा भूतेभ्यस्त्वा।।

ॐ भूर्भुव: स्व: मुण्डाय नम: मुण्डमावाहयामिस्थापयामि।

।।३२।। ढुण्ढिकरणाय—

ॐ भद्रङ्कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः। स्थिरैरङ्गै स्तुष्टुवा ꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं य्यदायुः।।

ॐ भूर्भुव: स्व: ढुण्ढिकरणाय नम: ढुण्ढिकरणमावाहयामिस्थापयामि।

।।३३।। स्थविराय—

CC-0. Nanaji

ॐ अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्त्तयः विश्वायद जयस्पृधः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्थविराय नमः स्थविरमावाहयामिस्थापयामि।

।।३४।। वैनाय—

ॐ सुपर्णो वस्ते मृगोअस्यादन्तोगोभिः सन्नद्धा पततिप्रसूता। यत्रानरः संचविचद्र वन्तितत्रास्मभ्यमिषवः शर्मय ꣳ सन्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वैनाय नमः वैनमावाहयामिस्थापयामि।

।।३५।। धनदाय—

ॐ इद ꣳ हविः प्प्रजननम्मे ऽअस्तु दशवीर ꣳ सर्व्वगण ꣳ स्वस्तये। आत्मसनि प्प्रजासनि पशुसनि लोकसन्य भयशनिः अग्निः प्रजाम्बहुलम्मे करोत्वन्नम्पयोरेतो ऽ अस्मासुधत्त।।

ॐ भूर्भुवः स्वः धनदाय नमः धनदमावाहयामिस्थापयामि।

।।३६।। नागकर्णाय—

ॐ खड्गौ विश्वदेवः श्श्वाकृष्णः कर्ण्णोगर्द्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसामिन्द्राय सूकरः सि ꣳ होमारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः नागकर्णाय नमः नागकर्णमावाहयामिस्थापयामि।

।।३७।। महाबलाय—

ॐमृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत ऽआजगन्था परस्याः। सृक ꣳ स शाय पविमिन्द्र तिग्मं शत्रून ताड्ढिविमृधो नूदस्व।।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाबलाय नमः महाबलमावाहयामिस्थापयामि।

।।३८।। फेत्काराय—

ॐ इन्दुर्दक्षः श्यनऽऋता वाहिरण्य पक्षः शकुनो भुरण्यः। महांत्सध-स्थेद्धुव आनिषतो नमस्ते अस्तु मा माहि ꣳ सीः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः फेत्काराय नमः फेत्कारमावाहयामिस्थापयामि।

।।३९।। चित्काराय—

ॐ चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुः मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्राद्यावा पृथिवी अंतरिक्ष ꣳ सूर्य आत्क्माजगतस्तस्त्थुषश्चः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः चित्काराय नमः चित्कारमावाहयामिस्थापयामि।

।।४०।। सिंहाय—

ॐ तीव्रान्घोषान् कृण्वते वृषपाणयो वारथेभिः सहवाजयन्तः अवक्रामन्तः प्रपदैरमित्रान् क्षिणन्ति शत्रूँरनपव्ययन्तः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिंहाय नमः सिंहमावाहयामिस्थापयामि।

।।४१।। मृगाय—

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२ आ सादयादिह।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मृगाय नमः मृगमावाहयामिस्थापयामि।

।।४२।। यक्षाय—

ॐ आदित्यास्त्वा मूर्द्धन्नाजिघर्भि देवयजने पृथिव्या इडायास्पदमसि घृतवत् स्वाहा। अस्मेरमस्वास्मेते बन्धु स्त्वरायोमेरायो मावायः रायस्पोषेण वियौष्मतो तोरायः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यक्षाय नमः यक्षमावाहयामिस्थापयामि।

।।४३।। मेघवाहनाय—

ॐ द्यौस्तेपृथिवीं अन्तरिक्षं वायुः छिद्रं पृणातुते। सूर्यस्ते नक्षत्रैः सहलोकं-कृणोतु साधुया।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मेघवाहनाय नमः मेघवाहनमावाहयामिस्थापयामि।

।।४४।। तिक्षणाय—

ॐ सबर्हिरग्निः पूषण्वान्त्स्तीर्ण बर्हिरमर्त्यः। बृहतीच्छन्दद इन्द्रियन्त्रि वत्सो गौर्वयोदधुः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः तिक्षणाय नमः तिक्षणमावाहयामिस्थापयामि।

।।४५।। अनलाय—

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम। अपा ꣳ रेता ꣳ सिजिन्वति।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अनलाय नमः अनलमावाहयामिस्थापयामि।

।।४६।। शुक्लतुण्डाय—

ॐ अभ्यर्षत सुष्टटुतिङ्ग व्यमाजिमस्मा सुभद्रां द्रविणानिधत्त। इमं यज्ञ-न्नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्लतुण्डाय नमः शुक्लतुण्डमावाहयामिस्थापयामि।

।।४७।। सुधापाय—

ॐ वनस्पते वीड्वङ्गोहिभूया अस्मत्सखा प्रतरणः सुवीरः। गोभिः सनद्धो असिवीडयस्वास्थाता तेजयत जेत्वानि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सुधापाय नमः सुधापामावाहयामिस्थापयामि।

।।४८।। बर्बूकराय—

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्ण्णा यामाऽअवलिप्ता रौद्रानभोरूपाः पार्ज्जन्याः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः बर्बूकराय नमः बर्बूकरमावाहयामिस्थापयामि।

।।४९।। पवनाय—

ॐ अग्ने ऽअच्छावदेहनः प्रतिनः सुमनाभव। प्रनोयच्छ सहस्र जित्व ᳕ हि धनदाऽअसि स्वाहा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पवनाय नमः पवनमावाहयामिस्थापयामि।

आवाहनम्—

ॐअजारे पिशङ्गिला स्वा वित्कुरु पिशङ्गिला स।
आस्कन्द मारेश सत्याहि पन्थां विसर्पति।।

ॐ मनोजूतीतिमन्त्रस्य प्रतिष्ठा पूर्वकं षोडशोपचारैः पूजनं कुर्यात्।

(षोडशोपचार से या उपलब्ध सामग्री से पूजा करें)

बलिदानम्(मण्डलस्थ देवानां दधिमाषभक्त बलिं दधात्।)

प्रार्थना—

ॐकर कलित कपालः कुण्डली दण्डपाणि,
तरुण तिमिर नीलो व्याल यज्ञोपवीतिः।
क्रतु समय सपर्यात् विघ्नविच्छेद हेतु,
जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्।।

क्षेत्रपालान् नमस्यामि सर्वाऽरिष्ट निसूदनान्।
अस्य यागस्य सिद्ध्यर्थं पूजयाराधितन्मया।।

अनेन कृतेन पूजनेन एकोनपञ्चाशत्क्षेत्रपालाः प्रीयन्ताम् न मम।

।। इति एकोनपञ्चाशत्क्षेत्रपाल पूजनम् ।।

https://upayogibooks.com

अथ सर्वतोभद्रमण्डलपूजनम्

सङ्कल्पम्—(यजमान पत्नी सहित दाहिने हाथ में रोली, चावल, पुष्प, दुर्वा, जल और द्रव्य लेकर संकल्प करें)

यजमानसपत्नीक स्वदक्षिणहस्ते गन्धाक्षतपुष्पदुर्वाजलद्रव्याञ्चादाय—

देशकालौ संकीर्त्य० अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं करिष्यमाण अमुककर्मणि एतत् सर्वतोभद्रमण्डले नाम वा वेदमन्त्रैः ब्रह्मादि षट्पञ्चाशत् देवताऽऽवाहनं प्रतिष्ठापूजाञ्च करिष्ये।

पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा ब्रह्मादि देवतानां आवाहनं कुर्यात्—(बाँये हाथ में पुष्प व चावल लेकर दाहिने हाथ से सर्वतोभद्र मण्डल के ऊपर निर्धारित आसन पर छोड़े)

।।१।। ब्रह्मणे(मण्डल मध्ये)—

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मा! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ ब्रह्मणे नमः। ब्रह्मामावाहयामि स्थापयामि।।

(उत्तर से प्रदक्षिणा क्रम में परिधि के समीप सफेद कोष्ठो में आवाहन करें)

।।२।। सोमाय(उत्तरे)—

ॐ व्वय ꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।।

ॐभूभुर्वः स्वः कुबेर! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐकुबेराय नमः। कुबेरमावाहयामि स्थापयामि।।

।।३।। ईशानाय(ऐशान्याम्)—

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्व मवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।

ॐभूभुर्वः स्वः ईशान! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐईशानाय नमः। ईशानमावाहयामि स्थापयामि।।

।।४।।इन्द्राय(पूर्वे)—

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣳ हवे हवे सुहव ꣳ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ इन्द्राय नमः। इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।।

।।५।। अग्नये (आग्नेयाम्)—

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२ आ सादयादिह।।

ॐभूर्भुवः स्वः अग्नि! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐअग्नये नमः। अग्निमावाहयामि स्थापयामि।।

।।६।। यमाय (दक्षिणे)—

ॐयमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे।।

ॐभूर्भुवः स्वः यम! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ यमाय नमः। यममावाहयामि स्थापयामि।।

।।७।। निर्ऋतये (नैर्ऋत्याम्)—

ॐअसुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ-सात इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।।

ॐभूर्भुवः स्वः निर्ऋति! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐनिर्ऋतये नमः। निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।।

।।८।। वरुणाय (पश्चिमे)—

ॐतत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो व्वरुणेह बोद्ध्युरुश ꣸ समानऽआयुः प्रमोषीः।।

ॐभूर्भुवः स्वः वरुण! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐवरुणाय नमः। वरुणमावाहयामि स्थापयामि।।

।।९।। वायव्ये (वायव्याम्)—

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ꣸ सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।

ॐभूर्भुवः स्वः व्रायु! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐवायव्ये नमः। वायुमावाहयामि स्थापयामि।।

।।१०।। अष्टवसुभ्यो (वायुसोम मध्ये)—

ॐव्वसोः पवित्रमसि शतधारं व्वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देव-स्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शत धारेण सुप्वा कामधुक्षः।।

ॐभूर्भुवः स्वः अष्टवसु! इहागच्छत इहतिष्ठत ॐ अष्टवसुभ्यो नमः। अष्टवसुमा-वाहयामि स्थापयामि।।

।।११।। एकादशरुद्रेभ्यो (सोम ईशान मध्ये)—

ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव ऽउतोत ऽइषवे नमः। बाहुभ्यां मुतते नमः।।

ॐभूर्भुवः स्वः एकादशरुद्राः इहागच्छत इहतिष्ठत ॐएकादशरुद्रेभ्यो नमः। एकादशरुद्रमावाहयामि स्थापयामि।।

।।१२।। द्वादशादित्येभ्यो (ईशान पूर्व मध्ये)—

ॐ अदिति द्यौरदितिरंतरिक्षमदितिर्माता सपिता सपुत्रः। विश्वेदेवा ऽअदितिः पञ्चजना ऽअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः द्वादशादित्याः इहागच्छत इहतिष्ठत ॐद्वादशादित्येभ्यो नमः। द्वादशादित्यमावाहयामि स्थापयामि।।

।। १३।। अश्विभ्यां (पूर्वाग्नये मध्ये)—

ॐ यावां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विनौ इहागच्छतम् इहतिष्ठतम् ॐ अश्विभ्यां नमः। अश्विनीमावाहयामि स्थापयामि।।

।।१४।। विश्वेभ्यो देवेभ्यो (आग्नये दक्षिण मध्ये)—

ॐ विश्वेदेवा स आगत शृणुताम इम ꣳ हवम् इदं बर्हिर्न्निषीदत।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वेदेवा इहागच्छत इहतिष्ठत ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। विश्वेदेवामावाहयामि स्थापयामि।।

।।१५।। पितृभ्यो (आग्नये दक्षिण मध्ये)—

ॐ आयन्तु नः पितरः सोम्यासोग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः। अस्मिन्य्यज्ञे स्वधया मदन्तो ऽधिब्रुवन्तु ते ऽवन्त्वस्मान्।।

ॐभूर्भुवः स्वः पितरः इहागच्छत इहतिष्ठत ॐपितृभ्यो नमः। पितृन् आवाहयामि स्थापयामि।।

।।१६।। सप्तयक्षेभ्यो (दक्षिण नैऋत्योर्मध्ये)—

ॐ अभित्यं देव ꣳ सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्य वस ꣳ रत्न धामभिः प्रियम्मतिं कविंम्। ऊर्ध्वायस्यामतिर्मा अद्दियुतसविमनि हिरण्यपाणिरमिमीतसुक्रतुः कृपास्वः।।

ॐभूर्भुवः स्वः सप्तयक्षाः इहागच्छत इहतिष्ठत ॐ सप्तयक्षेभ्यो नमः। सप्तयक्षमावाहयामि स्थापयामि।।

।।१७।। भूतेभ्यो (नैऋत्योर्पश्चिम मध्ये)—

ॐभूतायत्वा नारातयेस्वरभि विक्ख्येषन्दृ ꣳ हन्तादुर्य्याः पृथिव्यामुर्व्वन्तरिक्षमन्वेमि पृथिव्यास्त्वा नाभौ सादयाम्यदित्या उपस्थेग्ग्नेहव्य ꣳ रक्ष।।

ॐभूर्भुवः स्वः भूतानि इहागच्छ इहतिष्ठ ॐभूतेभ्यो नमः। भूतमावाहयामि स्थापयामि।।

।।१८।। सर्पेभ्यो (नैऋत्योर्पश्चिम मध्ये)—

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः।।

ॐभूर्भुवः स्वः सर्प! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ सर्पाय नमः। सर्पमावाहयामि स्थापयामि।।

।।१९।। गन्धर्वाऽप्सरोभ्यो (पश्चिम वायव्ये मध्ये)—

ॐ ऋताषाड् ऋतधामाग्निर्गंधर्वस्तस्यौषधयोप्सरसोमुदोनाम्। स न

ऽइदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा व्वाट् ताभ्यः स्वाहा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वाऽप्सरौ इहागच्छत इहतिष्ठत ॐ गन्धर्वाऽप्सरोभ्यो नमः। गन्धर्वाऽप्सरामावाहयामि स्थापयामि।।

।।२०।। स्कन्दाय(ब्रह्मासोमयो मध्ये)—

ॐ यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्।।

ॐभूर्भुवः स्वः स्कन्द! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐस्कन्दाय नमः। मावाहयामि स्थापयामि।।

।।२१।। नन्दीश्वराय(स्कदायुत्तरे)—

ॐ आशुः शिशाना व्वृषभो न भीमोघनाघनः क्षोभण चर्षणीनाम्। सङ्क्रन्दनो निमिषऽएक व्वीरः शत ६ सेना ऽअजयत्साकमिन्द्रः।।

ॐभूर्भुवः स्वः नन्दीश्वर! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐनन्दीश्वराय नमः। नन्दीश्वरमावाहयामि स्थापयामि।।

।।२२।। शूलमहाकालाय(स्कदायुत्तरे)—

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि। समापोऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शूलमहाकाल! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ शूलमहाकालाय नमः। शूलमहाकालमावाहयामि स्थापयामि।।

।।२३।। प्रजापतिभ्यो(ब्रह्मा ईशान मध्ये)—

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय ६ स्याम पतयो रयीणाम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजापति! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ प्रजापतये नमः। प्रजापतिमावाहयामि स्थापयामि।।

।।२४।। दुर्गायै (ब्रह्मा इन्द्र मध्ये)—

ॐ अम्बेअम्बिके ऽम्बालिके न मा नयति कश्चन्। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्।।

ॐभूर्भुवः स्वः दुर्गा! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ दुर्गायै नमः। दुर्गामावाहयामि स्थापयामि।।

।। २५।। विष्णावे (दुर्गा पूर्वे)—

ॐइदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ६ सुरेस्वाहा।।

ॐभूर्भुवः स्वः विष्णो! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐविष्णावे नमः। विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।।

।।२६।। पितृभ्यः (ब्रह्माग्न्यो मध्ये)—

ॐ उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुंय ईयुर व्वृकात्रृतज्ञास्ते नो ऽवन्तु पितरो हवेषु।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधादि पितरः इहागच्छत इहतिष्ठतॐ पितृभ्यो नमः। मावाहयामि स्थापयामि।।

।।२७।। मृत्युरोगेभ्यो (ब्रह्मायम मध्ये)—

ॐ परं मृत्योऽअनुपरेहि पन्थां यस्तेऽअन्यऽइतरो देवयानात्। चक्षुष्मते ते शृण्वते ते ब्रवीमि मानः प्रजा छं रीरिषोमोतव्वीरान्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मृत्युरोगा इहागच्छत इह तिष्ठत ॐ मृत्युरोगेभ्यो नमः। मृत्युरोग-मावाहयामि स्थापयामि।।

।।२८।। गणपतये (ब्रह्मा नैऋत्ये मध्ये)—

ॐ गणानां त्वा गणपति छ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति छ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति छ हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्।।

ॐभूर्भुवः स्वः गणपति! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐगणपतये नमः। गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।।

।।२९।। अद्भ्योः (ब्रह्मा पश्चिम मध्ये)—

ॐ आपोहिष्ठा मयो भुवस्तान ऽऊर्जेदधातन। महेरणाय चक्षसे।।

ॐभूर्भुवः स्वः आप! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐअद्भ्योः नमः। अद्भ्यमावाहयामि स्थापयामि।।

।।३०।। मरुद्भ्योः (ब्रह्मा वायव्ये मध्ये)—

ॐ बृहद्रिन्द्राय गायत मरुतो वृत्रहन्तमं येनज्ज्योतिरजयन् नृतावृधो देवं देवाय जागृवि।।

ॐभूर्भुवः स्वः मरुत्! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐमरुद्भ्योः नमः। मरुतमावाहयामि स्थापयामि।।

।।३१।। पृथिव्यै (ब्रह्मा पादमूले)—

ॐमही द्यौः पृथिवी च नऽइमं य्यज्ञम्मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिवी! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐपृथिव्यै नमः। मावाहयामि स्थापयामि।।

।।३२।। गङ्गादिनदीभ्यो (ब्रह्मा पादमूले)—

ॐइमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रिस्तोमं सचतापरुष्ण्या। असिकन्या मरुद्वृधे वितस्तयार्जीकये शृणुह्या सुषेमयाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गङ्गादिनद्य! इहागच्छत इह तिष्ठत ॐ गङ्गादिनदीभ्यो नमः। गङ्गादिनदीमावाहयामि स्थापयामि।।

।।३३।। सप्तसागरेभ्यो(ब्रह्मापादमूले)—

ॐमापोमौषधीर्हि ६ सीर्धाम्नो धाम्नो राजंस्तेतो वरुण नो मुञ्च। यदाहुरध्न्या इति वरुणेति शपामहे ततो वरुण नो मुञ्च।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागरा! इहागच्छत इहतिष्ठत ॐ सप्तसागरेभ्यो नमः। सप्तसागरमावाहयामि स्थापयामि।।

।।३४।। मेरवे (ब्रह्मोपरि)—

ॐप्रपर्व्वतस्य व्वृषभस्य पृष्ठान्ना वश्चरन्ति स्वसिचऽइयानाः। ताऽआव वृत्रन्नधरागुदक्ताऽअहिर्ब्भुध्न्यमनुरीयमाणाः। विष्णोर्विक्रमणमसि व्विष्णोर्विक्रान्तमसि विष्णोः क्रान्तमसि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मेरो! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ मेरवे नमः। मेरुमावाहयामि स्थापयामि।।

मण्डलाद्वहिः परिधि समीपे सोमादि सन्निधौ क्रमेण(मण्डल के बाह्य भाग में परिधि के समीप सोम के उत्तर में क्रमशः आयुधों का आवाहन करें)

।।३५।। गदायै (उत्तरे)—

ॐ गणानां त्वा गणपति ६ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ६ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ६ हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्।।

ॐभूर्भुवः स्वः गदा! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ गदायै नमः। गदामावाहयामि स्थापयामि।।

।।३६।। त्रिशूलाय (ऐशान्याम्)—

ॐत्रि ६ शद्धाम विराजति व्वाक्पतङ्गाय धीयते प्रति वस्तोरह द्युभिः।।

ॐभूर्भुवः स्वः त्रिशूल! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐत्रिशूलाय नमः। त्रिशूलमावाहयामि स्थापयामि।।

।।३७।। वज्राय (पूर्वे)—

ॐ महाँ२ ऽइन्द्रो व्वज्रहस्तः षोडशी शर्म्म यच्छतु। हन्तु पाप्मानं य्योऽस्मान् द्वेष्टि। उपयाम गृहीतोऽसि महेन्द्राय त्त्वां एषते योनिर्म्महेन्द्राय त्त्वा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वज्र! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ वज्राय नमः। वज्रमावाहयामि स्थापयामि।।

।।३८।। शक्तये (आग्नेयाम्)—

ॐ व्वसुच मे व्वसतिश्च मे कर्म्मच मे शक्तिश्च मे ऽर्त्थश्चम ऽएमश्च मऽइत्याश्च मे गतिश्चमे यज्ञेन कल्प्यन्ताम्।।

ॐभूर्भुवः स्वः शक्ति! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐशक्तये नमः। शक्तिमावाहयामि स्थापयामि।।

।।३९।। दण्डाय (दक्षिणे)—

ॐ इडऽएह्यादितऽएहि काम्याऽएत। मयि वः कामधरणं भूयात्।।

ॐभूर्भुवः स्वः दण्ड! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐदण्डाय नमः। दण्डमावाहयामि स्थापयामि।।

।।४०।। खड्गाय (नैऋत्याम्)—

ॐखड्गौ विश्वदेवः श्श्वाकृष्णः कण्र्णोगर्द्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसामिन्द्राय सूकरः सि ꣳ होमारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः।।

ॐभूर्भुवः स्वः खड्ग! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐखड्गाय नमः। खड्गमावाहयामि स्थापयामि।।

।।४१।। पाशाय (पश्चिमे)—

ॐ उदुत्तमं व्वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम ꣳ श्रथाय। अथावय-मादित्य व्रते तवानागसोऽदितये स्याम स्वाहा।।

ॐभूर्भुवः स्वः पाश! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐपाशाय नमः। पाशमावाहयामि स्थापयामि।।

।।४२।। अङ्कुशाय(वायव्याम्)—

ॐ अ ꣳ शुश्चमे रयिश्चमेऽदाब्भ्यचमेऽधिपतिश्चम उपा ꣳ शुश्च मेन्तर्य्यामश्चम ऐन्द्रव्वायवश्चमे मैत्रावरुणश्चमऽआश्विनश्चमे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्रश्चमे मन्थीश्चमे यज्ञेन कल्प्यन्ताम्।।

ॐभूर्भुवः स्वः अंकुश! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐअंकुशाय नमः। अंकुशमावाहयामि स्थापयामि।।

तद्बाह्ये परिधौपरि(मण्डल के बाह्य भाग में परिधि के ऊपर आवाहन करें)

।।४३।। गौतमाय (उत्तरे)—

ॐ अभित्वा गोत्तमोऽङ्गिरा जातवेदो विचर्षणे। द्युम्नैरभि प्रणोनुम।।

ॐभूर्भुवः स्वः गौतम! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐगौतमाय नमः। गौतममावाहयामि स्थापयामि।।

।।४४।। भरद्वाजाय (ऐशान्याम्)—

ॐएवानः स्पृधः समजा समत्विन्द्ररारंध्रिमिथतीरदेवीः। विद्यामवस्तोर व्वसा गृणंतो भारद्वाजा उतत इन्द्र नूनम्।।

ॐभूर्भुवः स्वः भरद्वाज! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐभरद्वाजाय नमः। भरद्वाजमावाहयामि स्थापयामि।।

।।४५।। विश्वामित्राय(पूर्वे)—

ॐ प्रसूतो भक्षमकरं च रावपिस्तोयंचेमं प्रथमः सूरिरून्मृंजे। सुते सातेन यद्यागमंवागप्रति विश्वामित्र जमदग्नीदये।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वामित्र! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ विश्वामित्राय नमः। विश्वामित्रमा-वाहयामि स्थापयामि।।

।।४६।। कश्यपाय (आग्नेयाम्)—

ॐ ऋये मन्त्रकृतां स्तोयै कश्यपोद्वर्धयन् गिर सौमनमस्य राजानं यो ज्जज्ञे वारूधांपतिरिन्द्रायेन्दो परिस्रव।।

ॐभूर्भुवः स्वः कश्यपं इहागच्छ इहतिष्ठ ॐकश्यपाय नमः। कश्यपमावाहयामि स्थापयामि।।

।।४७।। जमदग्नये (दक्षिणे)—

ॐ गणाना जमदग्निना योना सीदतं। पातं सोममृता वृधा।।

ॐभूर्भुवः स्वः जमदग्नि! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐजमदग्नये नमः। जमदग्निमावाहयामि स्थापयामि।।

।।४८।। वशिष्ठाय (नैऋत्याम्)—

ॐ उतासि मैत्रा वरुणो वशिष्ठोर्वश्या ब्रह्मन् मनसोधिजातः। द्रप्सं स्कन्नं ब्रह्मणा दैव्येन विश्वेदेवाः पुष्करे त्वा ददन्ता।।

ॐभूर्भुवः स्वः वशिष्ठ! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐवशिष्ठाय नमः। वशिष्ठमावाहयामि स्थापयामि।।

।।४९।। अत्रये (पश्चिमे)—

ॐ अत्रिर्यद्वाभवरोहन्नवीत सम जोहवीन्नधमानेवयोषा। श्श्येमस्य चिज्जन सा नूतने नागच्छतमश्विना शतमेन।।

ॐभूर्भुवः स्वः अत्रि! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ अत्रये नमः। अत्रिमावाहयामि स्थापयामि।।

।।५०।। अरुन्धत्ये (वायव्याम्)—

ॐ तम्पत्नीभिंरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुतवा हिरण्यैः नाकम्गृब्भ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीय पृष्ठेऽअधिरोचने दिवः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धति! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ अरुन्धतये नमः। अरुन्धतिमावाहयामि स्थापयामि।।

तद्वाह्ये पूर्वादिक्रमेण—

।।५१।। एन्द्र्यै (पूर्वे)—

ॐ आदित्यै रास्ना ऽसीन्द्राण्या उष्णीषः । पूषाऽसि घर्मायदीष्व।।

ॐभूर्भुवः स्वः एन्द्री! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐएन्द्र्यै नमः। एन्द्रीमावाहयामि स्थापयामि।।

।।५२।। कौमार्यै (आग्नेयाम्)—

ॐ अम्बेअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्श्चन्। ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्।।

ॐभूर्भुवः स्वः कौमारी! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐकौमार्यै नमः। कौमारीमावाहयामि स्थापयामि।।

।।५३।। **ब्राह्मयै (दक्षिणे)—**

ॐ इन्द्रायाहि धियेषितो व्विप्रजूतः सुतावतः उप ब्रह्माणि व्वग्घतः।।

ॐभूर्भुवः स्वः ब्राह्मी! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐब्राह्मयै नमः। ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि।।

।।५४।। **वाराह्यै (नैर्ऋत्याम्)-**

ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीद सदन्मातरं पुरः पितरञ्च प्रयन्त्स्वः।।

ॐभूर्भुवः स्वः वाराही! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐवाराह्यै नमः। वाराहीमावाहयामि स्थापयामि।।

।।५५।। **चामुण्डायै (पश्चिमे)—**

ॐ व्विश्वानि देव सवितदुर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रन्तन्नऽआसुव।।

ॐभूर्भुवः स्वः चामुण्डा! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐचामुण्डायै नमः। चामुण्डामावाहयामि स्थापयामि।।

।।५६।। **वैष्णव्यै (वायव्ये)—**

ॐ आ प्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमव्वृष्ण्यम्। भवाव्वाजस्य सङ्गथे।।

ॐभूर्भुवः स्वः वैष्णवी! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐवैष्णव्यै नमः। वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि।।

।।५७।। **माहेश्वर्यै (उत्तरे)—**

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूर घोराऽपापकाशिनी। तयानस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ता भिचाकशीहि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः माहेश्वरी! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ माहेश्वर्यै नमः। माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि।।

।।५८।। **वैनायक्यै (ऐशान्याम्)—**

ॐसमख्ये देव्या धिया सन्दक्षिणयोरूचक्षसा। मा म ऽआयुः प्रमोषी-र्म्मा अहं तवव्वीरं व्विदेय तव देवि सन्दृशि।।

ॐभूर्भुवः स्वः वैनायकी!इहागच्छ इहतिष्ठ ॐवैनायक्यै नमः। वैनायकीमावाहयामि स्थापयामि।।

प्रतिष्ठापनम् (षट्पञ्चाशत् देवानां आवाहनं स्थापनम्)—

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमं तन्नो त्वरिष्टं य्यज्ञ ६ समिमं दधातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामों३ प्रतिष्ठ।। (प्रष्ठिार्थ पुष्प छोड़े)

षोडशोपचारैः लब्ध्वोपचारैर्वा पूजनं कृत्वा प्रार्थयेत्।

प्रार्थना—करौबध्वा (हाथ जोड़कर प्रार्थना करें)

प्रतिष्ठा सर्व देवानां मित्रावरुणनिर्मिता।
नमस्कारं करोम्यत्वं मण्डले दैवतैः सह।।

अनेन कृतेन पूजनेन सर्वतोभद्रमण्डलस्थ देवाः प्रीयन्ताम् न मम।

।। इति सर्वतोभद्रमण्डलपूजनम् ।।

अथ श्रीविष्णुपूजनम्

सङ्कल्पम्-(यजमान पत्नी सहित दाहिने हाथ में रोली, चावल, पुष्प, दुर्वा, जल तथा द्रव्य लेकर संकल्प करें)

यजमानसपत्नीक स्वदक्षिणहस्ते गन्धाक्षतपुष्पदुर्वाजलद्रव्यञ्चादाय—

ॐदेशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं करिष्यमाण अमुक-कर्मणि एतत् विष्णु वा (शालग्राम) **वा पाषाण वा स्वर्ण मूर्तौ अग्न्युतारण प्राणप्रतिष्ठा पूर्वकं आवाहनं पूजनं च करिष्ये।**

पुष्पाणि गृहीत्वा ध्यानं कुर्यात्(यजमान हाथ में पुष्प लेकर निर्धारित आसन पर छोड़े)

ध्यानम्— ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ꣳ सुरेस्वाहा।। ॐ त्रीणि पदाविचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाब्भ्यः। अतो धर्माणि धारयन्।। तद्विष्णोः परमंपद ꣳ सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्।।

आवाहनम्—

सशङ्ख चक्रं सकिरीट कुण्डलं,
सपीतवस्त्रं सरसी रुहेक्षणम्।
सहार वक्षः स्थल कौस्तुभ श्रियं,
नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्।।
अशेष संसार विहारहीन मादित्यगं पूर्ण सुखाभिरामम्।
समस्त साक्षिं तमसः परस्तान्नारायणं विष्णुमहं भजामि।।

अग्न्युतारणं —

मूर्तिपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य उपरिदुग्धजलधारां कुर्यात्। (मूर्ति को पात्र में लेकर घृत लगाकर उपर दुग्धजल धारा करें)**तत्र मन्त्रा—**

ॐ समुद्रस्य त्वाव कयाग्ने परिव्ययामसि। पावकोऽअस्मभ्य ꣳ शिवोभव।।१।। हिमस्यत्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि पावकोऽअस्मभ्य ꣳ शिवोभव।।२।। (**नोट**-सम्पूर्ण अग्न्युतारण मन्त्रो के लिए पृ०स०३०देखें)

प्राण प्रतिष्ठा—

विनियोगः— **ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्माविष्णुमहेश्वराः ऋषयः ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवताः आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रौ कीलकं अस्यां विष्णु नूतन मूर्त्तौ प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।**

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमम्तनो त्वरिष्टंयज्ञ समिमं दधातु विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामों- ३ प्रतिष्ठ।।

ॐ एषवै प्रतिष्ठानाम यज्ञोयत्रै तेन यज्ञेन यज्ञन्तेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति।।(नोट—सम्पूर्ण प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रो के लिए पृ०स०३०देखें।)

(प्रतिमा के हृदय पर अंगुठा रखते हुये उच्चारण करें)

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाश्चरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

(इसके बाद पन्द्रह बार प्रणव का उच्चारण करें)**ततः षोडशोपचारै पूजनं कुर्यात् ।।**

।।१।। **पुष्पासनम्** —(आसन के लिए पुष्प छोड़े)

ॐ पुरुषऽएवेद ꣳ सर्वं य्यद्भूतं य्यच्चभाव्यम्। उतामृत त्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।। ॐ महाविष्णावे पुष्पासनं समर्पयामि।

।।२।। **पाद्यम्**—(पाद्य के लिए जल अर्पण करें)

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोस्यविश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।। पाद्यार्थं जलं समर्पयामि।

।।३।। **अर्घ्यम्**—(चंदन, पुष्प, दुर्वायुक्त जल से अर्घ्य प्रदान करें)

ॐत्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः। ततोविष्ष्वंङ् व्यक्राम-त्साशनानशनेऽअभि।। अर्घ्यार्थं गन्धोदकं समर्पयामि।

।।४।। **आचमनीयम्**— (आचमन के लिए जल अर्पण करें)

ॐ ततो विराडजायत व्विराजोऽधिपूरुषः। स जातोऽअत्यरिच्च्यत पश्चाद्भूमि मथोपुरः।। आचमनीयार्थं सुवासित जलं समर्पयामि।

।।५।। **स्नानम्**—(स्नान के लिए जल अर्पण करें)

ॐ तस्माद्यज्ञात्त्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्तांश्च्चक्क्रे वायव्या नारण्ण्या ग्राम्याश्च्च ये।। स्नानार्थं जलं समर्पयामि।

(क)**पञ्चामृतस्नानम्**—

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः सरस्वती तु पञ्चधा सो देशे भवत्सरित्।। मल्लापहारे पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

(ख)**अभिषेकस्नानम्** (पुरुष सूक्त)—

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमि ꣳ सर्व्वतस्प्पृत्त्वा त्यतिष्ठ द्दशाङ्गुलम्।।१।। पुरुषऽएवेद ꣳ सर्वय्यद्भूतं य्यच्चभाव्यम्। उतामृतत्वस्ये शानो यदन्नेनातिरोहति।।२।। एतावानस्य महिमातो ज्ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।३।। त्रिपादूर्ध्व ऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः। ततो विष्ष्वंङ् व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि।।४।। ततो विराडजायत व्विराजोऽधिपूरुषः। स जातोऽअत्यरिच्च्यतपश्चाद्भूमिमथोपुरः।।५।। तस्माद्यज्ञात्त्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्तांश्च्चक्क्रे वायव्यानारण्ण्याग्राम्याश्च्च ये।।६।। तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दा ꣳसि जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्मादजायत।।७।। तस्मादश्श्वा ऽअजायन्त ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताअजावयः।।८।। तं य्यज्ञं बर्हिषिप्प्रोक्षन्नपुरुषञ्जातमग्ग्रतः। तेन देवा ऽअयजन्त साध्या ऽऋषयश्च ये।।९।। यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधाव्यकल्प्पयन्। मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहू किमूरु पादाऽउच्च्येते।।१०।। ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः। ऊरुतदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ꣳ शूद्रोऽअजायत।।११।। चंद्रमा मनसो जातश्च्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायतः श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।१२।। नाब्भ्याऽआसीदन्तरिक्ष ꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत। पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशः श्रोत्रा त्तथा लोकाँ२।। अकल्प्पयन्।।१३।। यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। व्वसन्तो ऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।१४।। सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः। देवा यद्यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषं पशुम्।।१५।। यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्प्रथमान्यासन्। तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।१६।।

महाविष्णवे अभिषेकस्नानं समर्पयामि ।

(ग) **शुद्धोदकस्नानम् —**

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्ण्णा यामाऽअवलिप्ता रौद्रानभोरूपाः पार्ज्जन्याः।।

महाविष्णवे शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

॥६॥ **युग्मवस्त्रम् —**

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दा ᳪ सि जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्मादजायत।। महाविष्णवे युग्मवस्त्रंसमर्पयामि।

युग्मवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

॥७॥ **यज्ञोपवीतम्—**

ॐ तस्मादश्श्वा ऽअजायन्त ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताअजावयः।। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

॥८॥ **चन्दनम् —**

ॐ तं य्यज्ञं बर्हिषि प्प्रोक्षन्पुरुषञ्जातमग्ग्रतः। तेनदेवाऽअयजन्त साध्याऽऋषयश्च ये।। महाविष्णवे चन्दनं समर्पयामि।

॥९॥ **तुलसीपत्राणि-**

तुलसी हेमरूपां च रत्नरूपां च मञ्जरी।
भवमोक्ष प्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम्।।

महाविष्णवे तुलसी पत्राणि समर्पयामि।

॥१०॥ **पुष्पाणि —**

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधाव्य कल्प्पयन्। मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहू किमूरु पादाऽउच्च्येते।। महाविष्णवे पुष्पाणि समर्पयामि।

॥११॥ **सिन्दूरं गुलालम् —**

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ᳪ संपरिपातु विश्वतः।।

महाविष्णवे नाना परिमल द्रव्याणि अबीरं गुलालं च समर्पयामि।

तत्र शास्त्रोक्तश्च—

विष्णवे तुलसी शिवाय बिल्वपत्रं गणेशाय दूर्वांकुरान्।
देव्यै सुरभि पुष्पाणि सूर्य्याय अर्क पुष्पाणि चार्पयेत्।।

॥१२॥ **सुगन्धिद्रव्यम्—**

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनं उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यो-र्मुक्षीय मामृतात्।। महाविष्णवे सुगन्धित द्रव्यम् समर्पयामि।

अथ अङ्गपूजा—

ॐअनन्ताय नमः, पादौ पूजयामि॥१॥ **ॐसंकर्षणाय नमः,** गुल्फौ पूजयामि॥२॥ **ॐपद्मनाभाय नमः,** जंघे पूजयामि॥३॥ **ॐविश्वरूपाय नमः,** जानुनी पूजयामि॥४॥ **ॐकेशवाय नमः,** उरुं पूजयामि॥५॥ **ॐ विश्वाय नमः,** कटिं पूजयामि॥६॥ **ॐप्रद्युम्नाय नमः,** नाभिं पूजयामि॥७॥ **ॐपरमात्मने नमः,** हृदयं पूजयामि॥८॥ **ॐवैकुण्ठाय नमः,** कण्ठं पूजयामि॥९॥ **ॐशस्त्रधारिण्ये नमः,** बाहुं पूजयामि॥१०॥ **ॐवाचस्पतये नमः,**मुखं पूजयामि॥११॥ **ॐसहस्राक्षाय नमः,** नेत्रं पूजयामि॥१२॥ **ॐमधुसूदनाय नमः,**ललाटं पूजयामि ॥१३॥ **ॐसर्वात्मने नमः,** शिरः पूजयामि॥१४॥ **ॐसर्वेश्वराय नमः,** सर्वाङ्गं पूजयामि॥१५॥

॥ इति अङ्गपूजनम् ॥

॥१४॥ **धूपम्—**

ॐब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः। ऊरुतदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ꣳ शूद्रोऽअजायत।। धूपं आघ्रापयामि।

॥१५॥ **दीपम्—**

ॐ चंद्रमा मनसो जातश्च्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायतः श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।। प्रत्यक्ष दीपं दर्शयामि।

॥१६॥ **नैवेद्यम्—**

ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्ष ꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत। पद्भ्यां भूमि-र्दिशः श्रोत्रा त्तथा लोकाँ२ अकल्पयन्।।

नैवेद्यं निवेदयामि। धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य ग्रासमुद्राः प्रदर्शयेत्।

॥१२॥ **आचमनीयम्—**

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनं उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यो-र्मुक्षीयमामृतात्।। ॐ प्राणाय स्वाहा। अपानाय स्वाहा। व्यानाय स्वाहा। उदानाय स्वाहा। समानाय स्वाहा। आचमनीयं समर्पयामि।

॥१७॥ **अखण्ड ऋतुफलम्—**

ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति

प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्व ६ हसः।।

अखण्ड ऋतुफलानि समर्पयामि। ऋतुफलान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

॥१८॥**करोद्वर्तनम्—**

ॐ अ ६ शुना ते अ ६ शुः पृच्यतां परुषा परुः। गंधस्ते सोममवतु मदाय रसोऽअच्युतः।। करोद्वर्तनम् समर्पयामि।

॥१९॥**ताम्बूलम्—**

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। व्वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।। मुखवासार्थे ताम्बुलं समर्पयामि।

॥२०॥**द्रव्यदक्षिणाम्—**

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमाम् कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

महाविष्णवे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

॥२१॥ **कपूरार्तिक्यम् —**

ॐ इद ६ हविः प्प्रजननम्मेऽअस्तु दशवीर ६ सर्व्वगण ६ स्वस्तये। आत्मसनि प्प्रजासनि पशुसनि लोकसन्न्य भयसनि अग्निः प्रजाम्बहुलाम्मे करोत्वन्नम्पयोरेतोऽअस्मासुधत्त।।

ॐ आ रात्रि पार्थिव ६ रजः पितुरप्रायि धामभिः। दिवः सदा ꣳसि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः।। ॐ महाविष्णवे कर्पूरार्तिक्यं प्रदर्शयामि।

प्रार्थना—

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं,
वन्दे विष्णुं भवभय हरं सर्व लोकेकनाथम्।।

अनेन कृतेन पूजनेन महाविष्णवे प्रीयतां न मम।

विशेष (पञ्चनिराजनम्)—

पञ्च निराजनं कुर्य्यात् प्रथमं दीपमालया।
द्वितीय सोदकाब्जेन तृतीयं धौत वाससा।।
आस्त्रश्चूताश्वत्थादि पत्रै च चतुर्थं तरिकीर्तितम्।
पञ्चमं प्रणिपातेन साष्टाङ्गेन यथा विधि।। ***(कालोत्तरे तंत्रे)***

अथ आरती

ॐजय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे।।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करें।।टेक।।
जो ध्यावै फल पावै, दुःख विनसे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवै, कष्ट मिटै तनका।।१।।
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहुँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करुँ जिसकी।।२।।
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।।३।
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्त्ता।
मैं मूरख खल कामी, कृप्पा करो भर्त्ता।।४।।
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति।
किस विध मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति।।५।।
दीन बन्धु दुःखहर्त्ता, तुम ठाकुर मेरे।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे।।६।।
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा-भक्ति बढाओ, सन्तन की सेवा।।७।।
तन-मन-धन और जीवन, सब कुछ है तेरा।
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा।।८।।
विष्णु जी की आरति, जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावे।।९।।

पुष्पाञ्जलिं —

सेवन्तिकावकुलचम्पकपाटलाब्जैः,
पुन्नागजातिकरवीररसालपुष्पैः ।
बिल्वप्रवालतुलसीदलमञ्जरीभिः,
त्वां पूजयामि जगदीश्वर मे प्रसीद।।
नानासुगन्धि पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्ता गृहाण परमेश्वरः।।

प्रदक्षिणा— ॐ ये तीर्त्थानि प्रचरन्ति सृका हस्ता निषङ्गिणः। तेषा ಁ सहस्त्र योजनेऽव धन्नवानि तन्मसि।।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे।।

प्रार्थना-

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्व मम देव देवः।।

पापोऽहं पाप कर्माऽहं पापात्मा पाप संभव।
त्राहि मां पुण्डरीकाक्षः सर्व पाप हरो भव।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरः।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्ण तद्स्तु मे।।

।। इति विष्णुपूजनम् ।।

अथ श्रीमहालक्ष्मी पूजनम्

गृहाभ्यन्तरे शुद्धासने उपविश्य पूर्वोक्तप्रकारेण आचमनं पवित्रकरणं शिखाबन्धनमासनशुद्ध्यादिकं यथाशक्तिविधाय स्वस्तिवाचनं मङ्गलश्लोकाश्च पठित्वा सङ्कल्पं कुर्यात्।

सङ्कल्पं —(यजमान पत्नी सहित दाहिने हाथ में रोली, चावल, पुष्प, दुर्वा, जल व द्रव्य लेकर संकल्प करें)

शास्त्रोक्तञ्च (साष्टाङ्ग प्रणाम प्रदक्षिणां च)—

(उरसा शिरसा दृष्ट्या मनसा वचसा तथा।
पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यां प्रणामोऽष्टाङ्ग उच्चते।।
एक चण्ड्या रवेः सप्त तिस्त्रः कार्य्या विनायके।
हरे चतस्त्रः कर्त्तव्याः शिवस्यार्द्धा प्रदक्षिणा।। ***(सोमसूत्राणि)***

यजमानः सपत्नीकस्वदक्षिणहस्ते गन्धाक्षतपुष्पदुर्वाजलद्रव्यञ्चादाय—

ॐ देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं करिष्यमाण अमुक कर्मणि एतत् अमुकनाम मम व्यापारप्रतिष्ठानस्य नूतनवसनापूजनकर्मणः अस्यां रजतमयी महालक्ष्मीमूर्तौ महासरस्वती, महाकालि, लेखनी, मशीपात्र, कुबेरेन्द्रादीनां पूजनं च करिष्ये।

(सर्व प्रथम महालक्ष्मी जी को शुद्धासन पर विराजमान करके माता जी के सामने थाली में अष्टदल बनाकर पुष्प बिछाकर उस पर द्रव्य(मुद्रा) को स्थापित करके द्रव्य के साथ माताजी की पूजा करें)

ध्यानं —(हाथ जोड़कर महालक्ष्मी जी का ध्यान करें)

या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटि पद्मपत्रायताक्षी,
गम्भीरावर्तनाभिः स्तनभरनमिता शुभ्र वस्त्रोत्तरीया।
या लक्ष्मीर्दिव्यरूपैर्मणि गणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भैः,
सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्व माङ्गल्ययुक्ता।।

ॐ हिरण्य वर्णां हरिणीं सुवर्ण रजत स्त्रजाम्। चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।

आवाहनम् —(आवाहन के लिए अक्षत छोड़े)

सर्व लोकस्य जननीं सर्व सौख्य प्रदायिनीम्।
सर्व देव मयीमीशां देवीमावाहयाम्यहम्।।

ॐतां मआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।

आसनम् —(आसन के लिए पुष्प छोड़े)

तप्तकाञ्चन वर्णाभं मुक्तामणि विराजिताम्।
अमलं कमलं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीमदिवीर्जुषताम्।।

पाद्यम् —(पाद्यार्थ जल अर्पण करें)

गंगादितीर्थ सम्भूतं गन्ध पुष्पादिभिर्युतम्।
पाद्यं ददाम्यहं देवी गृहाणाशु नमोऽस्तु ते।।

ॐ कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलतीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।

अर्घ्यम् —(गन्ध व पुष्प मिले जल से अर्घ्य देवें)

सर्व गन्धसमायुक्तं पात्रे सम्पादितं मया।
अर्घ्यं गृहाण मद्दत्तं महालक्ष्मिनमोस्तु ते।।
चन्द्रां प्रशसां यशसा ज्वलन्तीं, श्रियं लोके देव जुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमीं शरणमहं प्रपद्ये, अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।।

आचमनीयम् —(आचमन के लिए जल अर्पण करें)

सर्व लोकस्य या शक्तिर्ब्रह्मविष्णवादिभिः स्तुता।
ददाम्याचमनं दिव्यं महालक्ष्म्यै नमोस्तु ते।।
आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो, वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु, या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।

स्नानम् —(जल से स्नान करावें)

ॐगङ्गा सरस्वती रेवा पयोष्णी नर्मदा जलैः।
स्नानार्थं च मया देवी भक्त्यार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

पञ्चामृतस्नानम् —(पंचामृत से स्नान करावें)

ॐ पयोदधि घृतं चैव शर्करा मधु संयुतम्।
स्नानार्थं च मया देवी भक्त्यार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
पञ्चामृतं मयानीतं पयोदधि घृतं मधु।
शर्करया समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

गंधोदकस्नानम्—(गन्धादि सुगन्धिद्रव्य मिले जल से स्नान करावें)

ॐअ ६ शुना ते अ ६ शुः पृच्यातां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽअच्युतः।।
ॐ मलयाचलसम्भूत चन्दनेन विनिःसृतम्।
इदं गंधोदकस्नानं कुंकुमाक्तं च गृह्यताम्।।

अभिषेक स्नानं (श्रीसूक्तम्)—(दुग्ध मिश्रित जल से अभिषेक स्नान करावें)

ॐ हिरण्य वर्णां हरिणीं सुवर्ण रजत स्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।१।।
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।२।।
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्ति नाद प्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीमर्दिवीर्जुषताम्।।३।।

कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलतीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।४।।
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं, श्रियं लोके देव जुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमीं शरणमहं प्रपद्ये, अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ।।५।।
आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो, वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु, या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।६।।

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिनां सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मिन् राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।७।।
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वा न्निर्णुद मे गृहात।।८।।
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।९।।
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूना रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।१०।।
कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।११।।
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ।।१२।।
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जात वेदो मऽआवह।।१३।।
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जात वेदो म आवह।।१४।।

तां मऽआवह जात वेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम्।।१५।।

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुदाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।१६।।

शुद्धोदक स्नानम् — (शुद्ध जल से स्नान करावें)

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्व पापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं तुभ्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

वस्त्रम् —(वस्त्र अर्पण करें)

दिव्याम्बरं नूतनं हि क्षौमं त्वतिमनोहरम्।
दीयमानं मया देवि गृहाण परमेश्वरि।।
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिनां सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मिन् राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।

उपवस्त्रम् —(उपवस्त्र अर्पण करें)

कञ्चुकीमुपवस्त्रं च नाना रत्नैः समन्वितम्।
गृहाण मया दत्तं मङ्गले जगदीश्वरी।।

मधुपर्कम् —(मधुपर्क अर्पण करें)

कापिलं दधि कुन्देन्दु धवलं मधु संयुतम्।
स्वर्णपात्र स्थितं देवि मधुपर्कं गृहाण भो।।

आभूषणम् —(आभूषण अर्पण करें)

रक्त कङ्कण वैदूर्यं मुक्ताहार युतानि च।
सुप्रसन्नेन मनसा दत्तानि स्वीकुरुष्व मे।।
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वा न्निर्णुद मे गृहात।।

रक्त चन्दनं (गन्धं)—(कुमकुम व चन्दन का तिलक करें)

रक्त चन्दनसंमिश्रं परिजात समुद्भवम्।
मया दत्तं गृहाणाशु चन्दनं गन्ध सयुतम्।।
गन्ध द्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरी सर्व भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।

अक्षतम्—(अक्षत अर्पण करें)

ॐअक्षताश्च सुरश्रेष्ठे कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वरि।।

पुष्पाणि—(पुष्प अर्पण करें)

नाना सुगन्ध संयुक्तं नाना पुष्प समन्वितम्।
पूजायां कुरु मे देवि पुष्पोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

बिल्वपत्रम् —(बिल्वपत्र अर्पण करें)

त्रिदलानि अखण्डानि बिल्वपत्राणि सुन्दरि।
गृहाण परया भक्त्या महालक्ष्मी नमोस्तु ते।।

nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

सिन्दूरम् —(सिन्दूर अर्पण करें)

सिन्दूरं रक्त वर्णं च सिन्दूर तिलक प्रिये।
भक्त्या दत्तं मया देवि सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

अबीरगुलालम्—(अबीरगुलाल अर्पण करें)

ॐ अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दन मेव च।
अबीरेणार्चिते देवि ततः शान्ति प्रयच्छमे।।

नानापरिमलद्रव्याणि (सौभाग्य द्रव्याणि)—(सौभाग्य द्रव्य अर्पण करें)

ॐ श्वेत चूर्णं रक्त चूर्णं हरिद्रा कुंकुमान्वितैः।
नानापरिमल द्रव्यैः प्रीयतां परमेश्वरिः।।

सुगन्धिद्रव्यम्—(सुगन्धि द्रव्य अर्पण करें)

ॐ चम्पकाशोक वकुल मालती मोगरादिभिः।
वासितं स्निग्धता हेतु तेलं चारु गृह्यताम्।।

अथ अङ्गपूजनम्

(महालक्ष्मी जी के सभी अंगो पर गन्ध, चावल व पुष्प छोड़े)

ॐचपलायै नमः, पादौ पूजयामि।।१।। **ॐचञ्चलायै नमः**, जानुनी पूजयामि।।२।। **ॐकमलायै नमः**, कटिं पूजयामि।।३।। **ॐकात्यायन्यै नमः**, नाभिं पूजयामि।।४।। **ॐजगन्मात्रे नमः** जठरं पूजयामि।।५।। **ॐविश्ववल्लभायै नमः**,वक्षःस्थलं पूजयामि।।६।। **ॐकमलवासिन्यै नमः**, हस्तौ पूजयामि।।७।। **ॐपद्मायै नमः**, मुखं पूजयामि।।८।। **ॐकमलपत्राक्ष्यै नमः**, नैत्रं पूजयामि।।९।। **ॐश्रियै नमः**, शिरः पूजयामि।।१०।। **ॐसर्वेश्वर्यै नमः**, सर्वाङ्गं पूजयामि।।११।।

।।इति अङ्गपूजनम्।।

अथ अष्टसिद्धिपूजनम्

(महालक्ष्मी जी के चारों ओर पूर्वादि क्रम से अष्टसिद्धियों की पूजा करें)

ॐ अणिम्ने नमः।।१।। ॐमहिम्ने नमः।।२।। ॐ गरिम्ने नमः।।३।।
ॐ लघिम्ने नमः।।४।। ॐप्राप्त्यै नमः ।।५।। ॐप्राकाम्यायै नमः।।६।।
ॐ ईशितायै नमः।।७।। ॐ वशितायै नमः।।८।।

।। इति अष्टसिद्धिपूजनम् ।।

अथ अष्टलक्ष्म्यै पूजनम्

ॐआद्यलक्ष्म्यै नमः।।१।। ॐविद्यालक्ष्म्यै नमः।।२।। ॐसौभाग्यलक्ष्म्यै नमः।।३।।

ॐअमृतलक्ष्म्यै नमः।।४।। ॐकामलक्ष्म्यै नमः।।५।। ॐसत्यलक्ष्म्यै नमः।।६।। ॐभोगलक्ष्म्यै नमः।।७।। ॐयोगलक्ष्म्यै नमः।।८।।

।। इति अष्टलक्ष्मीपूजनम् ।।

धूपम्—

ॐवनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्योगन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयम् प्रतिगृह्यताम्।।
कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।

दीपम्—

ॐ आज्यञ्च वर्ति संयुक्तं वह्निनायोजितं मया।
दीपं गृहाण देवैशि त्रैलोक्य तिमिरापहम्।।
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।

नैवेद्यम्—(प्रसाद अर्पण करें)

ॐशर्करा खण्ड खाद्यादि दधि क्षीर घृतादिभिः।
आहारैर्भक्ष्य भौज्यैश्च नैवेद्यं प्रति गृह्यताम्।।
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जात वेदो मऽआवह।।

आचमनीयम्—(आचमन करावें)

ॐअति तृप्ति करं तोयं सुगन्धिं च पिबेच्छया।
त्वयि तृप्ति जगत्तृप्ति नित्य तृप्ते च महात्मनि।।

अखण्डऋतुफलम्—(सामयिक फल व इक्षु अर्पण करें)

ॐ इदं फलं मया देवि स्थापितं पुरस्तस्तव।
तेन मे सफला वाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ताम्बुलम्—(पान सुपारी अर्पण करें)

ॐ पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्।
ऐलादि चूर्ण संयुक्तं ताम्बुलं प्रतिगृह्यताम्।।
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जात वेदो म आवह।।

द्रव्यदक्षिणाम्—

ॐहिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्त पुण्य फलदमतः शान्ति प्रयच्छमे।।
तां मऽआवह जात वेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम्।।

श्रीफलार्पणम्—(सिन्दूरादि सौभाग्य द्रव्य सहित नारियल अर्पण करें)

यजमानपत्नी हस्तौ अखण्डश्रीफलसौभाग्यद्रव्यञ्चादाय—

ॐरूपं देहि जयं देहि भाग्यं भगवती देहि मे।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामान् प्रयच्छ मे।।

कर्पूरार्तिक्यम्—

ॐ कदली गर्भ सम्भूतं कर्पूरं च प्रदीपितम्।
आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।

प्रार्थना—

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्व लक्ष्मीः,
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धि।
श्रद्धा सतां कुलजन प्रभवस्य लज्जा,
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।।

अनेन कृतेन पूजनेन महालक्ष्मी प्रीयताम् न मम।

॥ इति महालक्ष्मी पूजनम् ॥

श्रीमहाकाली पूजनम्

(दवात व कलम को पूजा स्थान पर रखकर हाथ में पुष्पाक्षत लेकर महाकाली की पूजा करें)

ध्यानम् —

ॐखडग़ं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः,
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकाम्,
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्।।
मशी त्वं लेखनीयुक्ता चित्रगुप्त शयस्थिता।
सदक्षराणां पत्रेषु लेख्यं कुरु सदा मम।।

ॐ महाकाल्यै नमः, ॐ लेखन्यै नमः।

ॐ मनोजूतीति मन्त्रस्य प्रतिष्ठा पूर्वकं षोडशोपचारैः पूजनं कुर्यात्।

(षोडशोपचार से या उपलब्ध सामग्री से पूजा करें)तत हस्ते गन्धपुष्पाक्षताञ्चादाय—

आवरण पूजनम् —

ॐ काल्यै नमः।।१।। ॐ कपालिन्यै नमः।।२।। ॐ पुल्लायै नमः।।३।।
ॐकुरुकुलायै नमः।।४।। ॐविराधिन्यै नमः।।५।। ॐविप्रचित्तायै नमः।।६।।
ॐ दत्तायै नमः।।७।। ॐ दिव्यायै नमः।।८।। ॐ नीलायै नमः।।९।।
ॐ धनायै नमः।।१०।। ॐ बलाकायै नमः।।११।। ॐ मात्रै नमः।।१२।।
ॐ मुद्रायै नमः।।१३।। ॐ लेखन्यै नमः।।१४।।

।। इति आवरणपूजा ।।

प्रार्थना—

या कालिका रोगहरा सुवंद्या, भक्तैः समस्तैर्व्यवहार दक्षैः।
जनैर्जनानां भय हारिणी च, सा लोकमाता मम सौख्यदाऽस्तु।।
कृष्णानने द्विजिह्वे च चित्रगुप्त कर स्थिते।
सदक्षराणां पत्रेषु लेख्यं कुरु सदा मम।।

अनेन कृतेन पूजनेन महाकाली प्रीयताम् न मम।

।। इति महाकालि पूजनम् ।।

महासरस्वती पूजनम्

(बही **'बसना'** को चौकी पर विराजमान करके उस पर पान का पत्ता रखकर महासरस्वती का पुष्पाक्षत लेकर ध्यान व पूजा करें)

ध्यानम्—

शुक्लां ब्रह्म विचार सार परमामाद्यां जगद्व्यापिनीं,
वीणा पुस्तक धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां,
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।।

ॐ महासरस्वत्यै नमः, ध्यानं समर्पयामि।

ॐ मनोजूतीति मन्त्रस्य प्रतिष्ठा पूर्वकं षोडशोपचारैः पूजनं कुर्यात्।

(षोडशोपचार से या उपलब्ध सामग्री से पूजा करें)

आवरण पूजनम् (तत हस्ते गन्धपुष्पाक्षताञ्चादाय)—

ॐ सरस्वत्यै नमः।।१।। ॐ ब्रह्माण्यै नमः।।२।। ॐ भारत्यै नमः।।३।। ॐ गिरे नमः।।४।। ॐ वाचै नमः।।५।। ॐ हंसगमनायै नमः।।६।। ॐ पद्महस्तायै नमः।।७।। ॐ शारदायै नमः।।८।।

।। इति आवरणपूजा ।।

प्रार्थना—

या कुन्देन्दु तुषारहार धवला या शुभ्र वस्त्रा वृता,
या वीणा वर दण्ड मण्डित करा या श्वेत पद्मासना।
या ब्रह्माच्युत शङ्कर प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष जाड्यापहा।।

अनेन कृतेन पूजनेन महासरस्वती प्रीयताम् न मम।

।। इति महासरस्वती पूजनम् ।।

कुबेर पूजनम्

तिजोरी या बक्सा में घृत, सिन्दूर या कुमकुम से स्वस्तिक चिह्न बनावें तथा नागर पान, साबुत हल्दी, साबूतधनिया, कमलगट्टा, मजीठ, चावल, दूर्वा, पुष्प व द्रव्य 'मुद्रा' लालवस्त्र में बाँध कर गल्ले या तिजोरी में रखें तथा दाहिने हाथ में पुष्पाक्षत लेकर कुबेर जी का ध्यान करें

ध्यानम्—

आवाहयामि देव त्वामिहायाहि कृपां कुरु।
कोशं वर्द्धय नित्यं त्वं परिरक्ष सुरेश्वर।।

ॐ कुबेराय नमः, ध्यानं समर्पयामि।

ॐ मनोजूतीति मन्त्रस्य प्रतिष्ठा पूर्वकं षोडशोपचारैः पूजनं कुर्यात्।

(षोडशोपचार से या उपलब्ध सामग्री से पूजा करें)

प्रार्थना—

धनाध्यक्षाय देवाय नर यानोपवेशिने।
नमस्ते राजराजाय कुबेराय महात्मने।।

अनेन पूजनेन कुबेरः प्रीयताम् न मम।

।। इति कुबेरपूजनम् ।।

तुलापूजनम्

तुला के सिन्दूर से स्वस्तिक चिन्ह बनायें व मोली (कलावा) बाँधे और दाहिने हाथ में पुष्पाक्षत लेकर तुलाधिदेवता का ध्यान करें।

ध्यानम्—

नमस्ते सर्व देवानां साक्षित्वे तत्समाश्रिता।
साक्षि भूता जगद्धात्री निर्मिता विश्वयोनिना।।

ॐतुला देव्यै नमः। ॐमनोजूतीति मन्त्रस्य प्रतिष्ठा पूर्वकं षोडशोपचारैः पूजनं कुर्यात्। (षोडशोपचार से या उपलब्ध सामग्री से पूजा करें)

अनेन पूजनेन तुलाः प्रीयताम्, न मम।

॥ इति तुलापूजनम् ॥

विश्वकर्मापूजनम्

गणकयन्त्र व मशीनों के स्वस्तिक चिन्ह बनायें तथा मोली (कलावा) बाँधे और दाहिने हाथ में पुष्पाक्षत लेकर विश्वकर्मा जी का ध्यान करें।

ध्यानम्—

ॐविश्वकर्मन्हविषा व्वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्यम्। तस्मै व्विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्व्यो यथा सत्।।

आवाहयामि देवेशं विश्वकर्माणमीश्वरम्।
मूर्त्ताऽमूर्त्तकरं देवं सर्व कर्त्तारमद्भुतम्।।

ॐविश्वकर्मणे नमः। विश्वकर्मामावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ मनोजूतीतिमन्त्रस्य प्रतिष्ठा पूर्वकं षोडशोपचारैः पूजनं कुर्यात्।

(षोडशोपचार से या उपलब्ध सामग्री से पूजा करें)

प्रार्थना—

देव शिल्पिन् महाभाग देवानां कार्य साधक।
विश्वकर्मन्! नमस्तुभ्यं सर्वाऽभीष्ट प्रदायक।।
नमामि विश्वकर्माणं द्विभुजं विश्व वन्दितम्।
गृहवास्तु विधातारं महाबल पराक्रमम्।।

अनेन कृतेन पूजनेन विश्वकर्मा प्रीयताम् न मम।

॥ इति विश्वकर्मापूजनम् ॥

दीपमालिकापूजनम्

एक थाल में ग्यारह, इक्कीस या अपनी सामाजिक परम्परा के अनुसार बीच में एक बड़ा दीपक छोटे दीपकों के साथ प्रज्वलित करके दाहिने हाथ में पुष्पाक्षत लेकर दीपवृक्ष का ध्यान करें।

ध्यानम्—

ॐ अग्निर्ज्ज्योति ज्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्य्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा। अग्निर्वर्च्चोज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा सूर्य्योवर्च्चोज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा।।

भो दीप ब्रह्मरूपस्त्वं ह्यन्धकार निवारक।
इमां मया कृतां पूजां गृहाण तेजः प्रवर्धय।।

पंचोपचारैः सर्वोपचारैर्वा पूजनं कुर्यात्।

प्रार्थना—

शुभं करोतु कल्याणमारोग्यं सुख सम्पदाम्।
मम बुद्धि प्रकाशं च दीप ज्योतिर्नमोऽतु ते।।
शुभं करोतु कल्याणमारोग्यं पुष्टि वर्धनम्।
आत्म तत्व प्रबोधाय दीप ज्योतिर्नमोऽतु ते।।
दीपावलि मया दत्तां गृहाणस्त्वं सुरेश्वरि।
अनेन दीप दानेन ज्ञान दृष्टि प्रदा भव।।

अनेन दीपदानेन महालक्ष्मी प्रीयताम्, न मम।

https://upayogibooks.com

लक्ष्मीजी की आरती

जय लक्ष्मी माता, (मैया) जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशदिन सेवत, हर-विष्णु-विधाता॥टेक॥
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग माता।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता।।१।।
दुर्गा रूपनिरंजनि, सुख सम्पत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता।।२।।
तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभ दाता।
कर्म प्रभाव प्रकासिनि, भव निधि की त्राता।।३।।
जिस घर तुम हो रहती, तहँ सब गुण आता।
सब संभव हो जाता, मन नहिं घबराता।।४।।
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता।
खान पान का वैभव, सब तुम से आता।।५।।
शुभ गुण मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि जाता।
रत्न चतुर्दश तुमबिन, कोई नहीं पाता।।६।।
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई नर गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता।।७।।

पुष्पाञ्जलिं —

सेवन्तिका वकुल चम्पक पाटलाब्जैः,
पुन्नागजाति करवीर रसाल पुष्पैः।
बिल्वप्रवाल तुलसी दल मञ्जरीभिः,
त्वां पूजयामि जगदीश्वरि मे प्रसीद।।
नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलि मया दत्ता गृहाण परमेश्वरिः।।

॥ इति महालक्ष्मीपूजनम् ॥

अथ एकलिङ्गतोभद्रमण्डलपूजनम्

सङ्कल्पम्—

(यजमान पत्नी सहित दाहिने हाथ में रोली, चावल, पुष्प, दूर्वा, जल और द्रव्य लेकर संकल्प करें)

यजमानसपत्नीकः स्वदक्षिणहस्ते गन्धाक्षतपुष्पदूर्वाजलद्रव्यञ्चादाय—

ॐ देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं करिष्यमाण अमुक-कर्मणि एतत् एकलिङ्गतोभद्रमण्डल देवानामाऽऽवाहनम् प्रतिष्ठापूजाञ्च करिष्ये।

पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा रुद्रादिदेवानामावाहनं कुर्यात्—(बाँये हाथ में पुष्प व चावल लेकर दाहिने हाथ से सर्वतोभद्रमण्डलस्थ देवताओं के पश्चात् मण्डल के बाह्य भाग में ३२ भैरवों 'रुद्रों' का पूर्वादि क्रम से आवाहन करें)

बाह्य पूर्वादि क्रमेण—

ॐअसिताङ्ग भैरवाय नमः।।१।। ॐरूरू भैरवाय नमः।।२।।
ॐचण्ड भैरवाय नमः।।३।। ॐक्रौध भैरवाय नमः।।४।।
ॐउन्मत्त भैरवाय नमः।।५।। ॐकपाल भैरवाय नमः।।६।।
ॐभीषण भैरवाय नमः।।७।। ॐसंहार भैरवाय नमः।।८।।

तद्बाह्य पूर्वादि क्रमेण—

ॐभवाय नमः।।१।। ॐशर्वाय नमः।।२।। ॐपशुपतये नमः।।३।।
ॐईशानाय नमः।।४।। ॐरुद्राय नमः।।५।। ॐउग्राय नमः।।६।।
ॐभीमाय नमः।।७।। ॐमहते नमः।।८।।

तद्बाह्य पूर्वादि क्रमेण—

ॐअनन्ताय नमः।।१।। ॐवासुकये नमः।।२।। ॐतक्षकाय नमः।।३।।
ॐकुलिशाय नमः।।४।। ॐकर्कोटकाय नमः।।५।। ॐशंखपालाय नमः।।६।।
ॐकम्बलाय नमः।।७।। ॐअंतराय नमः।।८।।

ईशानपूर्वादिमध्ये —

ॐशूलपाणये नमः।।१।। ॐचन्द्रमौलिन्ये नमः।।२।। ॐचन्द्रमसे नमः।।३।। ॐवृषध्वजाय नमः।।४।। ॐत्रिलोचनाय नमः।।५।। ॐशक्तिधराय नमः।।६।। ॐमहेश्वराय नमः।।७।। ॐशूलाय नमः।।८।।

रुद्राय(मण्डलमध्य कलशोपरि)—

ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव ऽउतोत ऽइषवे नमः। बाहुभ्यां मुतते नमः।।

ॐ भूभुर्व: स्व: रुद्र! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ रुद्राय नम:। रुद्रमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ मनोजूतीतिमन्त्रस्य प्रतिष्ठापूर्वकं षोडशोपचारैः पूजनं कुर्यात्।

(षोडशोपचार से या उपलब्ध सामग्री से पूजा करें)

प्रार्थना—

नमस्ते नमस्ते विभो विश्वमूर्ते,
नमस्ते नमस्ते चिदानन्द मूर्ते।
नमस्ते नमस्ते तपो योग गम्य,
नमस्ते नमस्ते श्रुति ज्ञान गम्य।।

अनेन पूजनेन एकलिङ्गतोभद्रमण्डलदेवा: प्रीयन्ताम् न मम।

।। इति एकलिङ्गतोभद्रमण्डलपूजनम् ।।

अथ चतुर्लिङ्गतोभद्रमण्डलपूजनम्

सङ्कल्पम्—यजमान पत्नी सहित दाहिने हाथ में रोली, चावल, पुष्प, दूर्वा, जल व द्रव्य लेकर संकल्प करें

यजमानसपत्नीकः स्वदक्षिणहस्ते गन्धाक्षतपुष्पदूर्वाजलद्रव्याञ्चादाय—

ॐ देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं करिष्यमाण अमुककर्मणि एतत् चतुर्लिङ्गतोभद्रमण्डल देवानामाऽऽवाहनम् प्रतिष्ठापूजाञ्च करिष्ये।

पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा वीरभद्रादिदेवानां आवाहनं कुर्यात्—(बाँये हाथ में पुष्प व चावल लेकर दाहिने हाथ से सर्वतोभद्रमण्डलस्थ देवताओं के पश्चात् मण्डल पर वीरभद्रादि देवोका पूर्वादि क्रम से आवाहन करें)

लिङ्गोपरि(पूर्वादि क्रमेण)**त्रय-त्रय देवानामावाहनम् —**

ॐवीरभद्राय नमः॥१॥ ॐशंभवे नमः॥२॥ ॐअजैकपदे नमः॥३॥ ॐअहिर्बुध्न्याय नमः॥४॥ ॐपिनाकिने नमः॥५॥ ॐशूलपाणये नमः॥६॥ ॐभुवनाधीश्वराय नमः॥७॥ ॐकपालिने नमः॥८॥ ॐदिक्पतये नमः॥९॥ ॐरुद्राय नमः॥१०॥ॐशिवाय नमः॥११॥ ॐमहेश्वराय नमः॥१२॥

हरितखण्डे(ऐशान्यादि क्रमेण)—

ॐअसिताङ्ग भैरवाय नमः॥१३॥ ॐरूरू भैरवाय नमः॥१४॥

ॐचण्ड भैरवाय नमः॥१५॥ ॐक्रौध भैरवाय नमः॥१६॥

ॐउन्मत्त भैरवाय नमः॥१७॥ ॐकपाल भैरवाय नमः॥१८॥

ॐभीषण भैरवाय नमः॥१९॥ ॐसंहार भैरवाय नमः॥२०॥

तद्बाह्य (पूर्वादि क्रमेण)—

ॐभवाय नमः॥२१॥ ॐशर्वाय नमः॥२२॥ ॐरुद्राय नमः॥२३॥ ॐपशुपतये नमः॥२४॥ ॐमहते नमः॥२५॥ ॐभीमाय नमः॥२६॥ ॐईशानाय नमः॥२७॥ ॐअनन्ताय नमः॥२८॥ ॐतक्षकाय नमः॥२९॥ ॐवासुकये नमः॥३०॥ ॐकुलिशाय नमः॥३१॥ ॐकर्कोटकाय नमः॥३२॥ ॐशंखपालाय नमः॥३३॥ ॐकम्बलाय नमः॥३४॥ ॐअंतराय नमः॥३५॥ ॐशूलिने नमः॥३६॥ ॐचन्द्रमौलिन्यै नमः॥३७॥ ॐचन्द्रमसे नमः॥३८॥ ॐवृषभध्वजायनमः॥३९॥ ॐत्रिलोचनायनमः॥४०॥ ॐशक्तिधराय नमः॥४१॥ ॐमहेश्वराय नमः॥४२॥ ॐशूलपाणये नमः॥४३॥ ॐस्थाणवे नमः॥४४॥

मध्यकर्णिका (उत्तरादि क्रमेण)—

उत्तरे-**ब्रह्मणे नमः॥४५॥** उत्तरे-**सोमाय नमः॥४६॥** ईशाने-**ईशानाय नमः॥४७॥** पूर्वे-**इन्द्राय नमः॥ ४८॥** आग्नये-**अग्नये नमः॥४९॥** दक्षिणे-**यमाय नमः॥५०॥** नैऋत्ये-**निर्ऋतये नमः॥५१॥**पश्चिमे-**वरुणाय नमः॥५२॥**वायव्ये-**वायवे नमः॥५३॥**

रक्तखण्डे (वायवेसोमादिमध्य क्रमेण)—

ॐअष्टवसुभ्यो नमः॥५४॥ ॐएकादशरुद्रेभ्योनमः॥५५॥ ॐद्वादशादित्येभ्यो नमः॥५६॥ ॐअश्विभ्यां नमः॥५७॥ ॐविश्वेभ्योदेवेभ्यो नमः॥५८॥ ॐसप्त-यक्षेभ्यो नमः॥५९॥ ॐभूतनागेभ्यो नमः॥६०॥ ॐगन्धर्वाप्सरेभ्यो नमः॥६१॥

उत्तरलिङ्गस्याध —

ॐस्कन्दाय नमः॥६२॥ **ॐनन्दीश्वराय नमः॥६३॥**

ॐशूलमहाकालाय नमः॥६४॥

ब्रह्मेशानयोरमध्ये पूर्वलिङ्गस्याधः (श्रृखलायाम्)—

ॐदक्षादिसप्तकाय नमः॥६५॥ **ॐदुर्गायै नमः॥६६॥**

ॐविष्णवे नमः॥६७॥

ब्रह्माग्नयोरमध्ये (श्रृखलायां क्रमेण)—

ॐस्वधायै नमः॥६८॥ ॐमृत्युरोगाभ्यां नमः॥६९॥ ॐगणपतये नमः॥७०॥ ॐअद्भ्यो नमः॥७१॥ ॐमरुद्भ्यो नमः॥७२॥

ब्रह्मसमीपे (कर्णिकायाम्)—

ॐपृथिव्यै नमः॥७३॥ ॐगङ्गादिनदीभ्यो नमः॥७४॥

ॐसप्त सागरेभ्यो नमः॥७५॥ ॐमेरवे नमः॥७६॥

लिंगोपरि (उदिच्यादि क्रमेण)—

ॐसद्योजाताय नमः॥७७॥ ॐवामदेवाय नमः॥७८॥ ॐअघोराय नमः॥७९॥ ॐतत्पुरुषाय नमः॥८०॥ ॐईशानाय नमः॥८१॥

लिङ्गोपरि(परिधि पमीपे)—

ॐपरिधये नमः॥८२॥ ॐचतुःपुरीभ्यो नमः॥८३॥ ॐऋग्वेदाय नमः॥८४॥ ॐयजुर्वेदाय नमः॥८५॥ ॐसामवेदाय नमः॥८६॥ ॐअथर्वेदाय नमः॥८७॥

उत्तरलिङ्गस्य दक्षिणवापी–

ॐभवाय नमः॥८८॥ ॐशर्वाय नमः॥८९॥ ॐपशुपतये नमः॥९९॥ ॐईशानाय नमः॥९१॥ ॐरुद्राय नमः॥९२॥ ॐ उग्राय नमः॥९३॥ ॐभीमाय नमः॥९४॥ ॐमहते नमः॥९५॥

तत्त वापी समीपे—

ॐभवान्यै नमः॥९६॥ ॐशर्वाण्यै नमः॥९७॥ ॐपशुपत्यै नमः॥९८॥ ॐईशान्यै नमः॥९९॥ ॐउग्रायै नमः॥१००॥ ॐरुद्राण्यै नमः॥१०१॥ ॐभीमायै नमः॥१०२॥ ॐमहत्यै नमः॥१०३॥

परिधि समीपे (पूर्वादि क्रमेण)—

ॐपृथ्वीतत्वाय नमः॥१०४॥ ॐजलतत्वाय नमः॥१०५॥

ॐतेजतत्वाय नमः॥१०६॥ ॐवायुतत्वाय नमः॥१०७॥

(मध्य)**ॐआकाश तत्वाय नमः॥१०८॥**

श्वेत परिधौ (उत्तरत: क्रमेण)—

ॐगदायै नमः॥१०९॥ ॐत्रिशूलाय नमः॥११०॥ ॐवज्राय नमः॥१११॥ ॐशक्तये नमः॥११२॥ ॐदण्डाय नमः॥११३॥ ॐखड्गाय नमः॥११४॥ ॐपाशाय नमः॥११५॥ ॐअंकुशाय नमः॥११६॥

रक्त परिधौ (उत्तरत: क्रमेण)—

ॐगौतमाय नमः॥११७॥ ॐभरद्वाजाय नमः॥११८॥ ॐविश्वमित्राय नमः॥११९॥ ॐकश्यपाय नमः॥१२०॥ ॐजमदग्नये नमः॥१२१॥ ॐवशिष्ठाय नमः॥१२२॥ ॐअत्रये नमः॥१२३॥ ॐअरुन्धत्यै नमः॥१२४॥

श्वेत परिधौ (उत्तरत: क्रमेण)—

ॐऐन्द्र्यै नमः॥१२५॥ ॐकौमार्यै नमः॥१२६॥ ॐब्राह्म्यै नमः॥१२७॥ ॐवाराह्यै नमः॥१२८॥ ॐचामुण्डायै नमः॥१२९॥ ॐवैष्णव्यै नमः॥१३०॥ ॐमाहेश्वर्यै नमः॥१३१॥ ॐवैनायक्यै नमः॥१३२॥

शिवाय (मण्डलमध्ये ताम्रकलशोपरि)—

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।

ॐ भूर्भुव: स्व: शिव! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ शिवाय नम:। शिवमावाहयामि पूजयामि।

ॐ मनोजूतीतिमन्त्रस्य प्रतिष्ठा पूर्वकं षोडशोपचारैः पूजनं कुर्यात्।

(षोडशोपचार से या उपलब्ध सामग्री से पूजा करें)

प्रार्थना—

वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणम्,
वन्दे पन्नग भूषणं मृगधरं वन्दे पशूनाम्पतिम्।
वन्दे सूर्य शशाङ्क वह्नि नयनं वन्दे मुकुन्दप्रियम्,
वन्दे भक्त जनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्।।

अनेन पूजनेन चतुर्लिङ्गतोभद्रमण्डलस्थ देवा: प्रियन्ताम् न मम।

॥ इति चतुर्लिंगतोभद्रमण्डलपूजनम् ॥

अथ द्वादशलिङ्गतोभद्रमण्डलपूजनम्

आचम्यप्राणायाम्य आसनशुद्ध्यादि पूर्वक—

संकल्पम्—(यजमान पत्नी सहित दाहिने हाथ में रोली, चावल, पुष्प, दूर्वा, जल तथा द्रव्य लेकर संकल्प करें)

यजमानसपत्नीक स्वदक्षिणहस्ते गन्धाक्षतपुष्पदूर्वाजलद्रव्यञ्चादाय—

ॐ देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं करिष्यमाण अमुक कर्मणि एतत् द्वादशलिङ्गतोभद्रमण्डल देवानामाऽऽवाहनम् प्रतिष्ठापूजाञ्च करिष्ये।

पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा द्वादशलिङ्गतोभद्रमण्डलदेवानां आवाहनं कुर्यात्— बाँये हाथ में पुष्प व चावल लेकर दाहिने हाथ से मण्डल पर देवताओंका पूर्वादि क्रम से आवाहन करें

मण्डलाद्बहिः(ऐशान्यादि क्रमेण)—

ॐ गुरवे नमः॥१॥ ॐ गणपतये नमः॥२॥ ॐ दुर्गायै नमः॥३॥ ॐ क्षेत्रपालाय नमः॥४॥

ततो मण्डल मध्ये— **ॐ शिवाय नमः॥५॥**

ततो मण्डलमध्ये अष्टदलेषु **(पूर्वे)**—

ॐकालाग्निरुद्राय नमः॥६॥ ॐकूर्माय नमः॥७॥ ॐमण्डूकाय नमः॥८॥

आग्नेयाम्— **ॐवाराहाय नमः॥९॥ ॐअनन्ताय नमः॥१०॥**

दक्षिणे—

ॐपृथिव्यै नमः॥११॥ ॐस्कन्दाय नमः॥१२॥ॐअंकुशाय नमः॥१३॥

नैऋत्याम्— **ॐनलाय नमः॥१४॥ ॐपद्माय नमः॥१५॥**

पश्चिमे—

ॐपत्रेभ्यो नमः॥१६॥ ॐकेशरेभ्यो नमः॥१७॥ ॐकर्णिकाय नमः॥१८॥

वायव्याम्— **ॐसिंहाय नमः॥१९॥ ॐपद्मासनाय नमः॥२०॥**

उत्तरे—

ॐधर्माय नमः॥२१॥ ॐज्ञानाय नमः॥२२॥ ॐवैराग्याय नमः॥२३॥

ऐशान्याम्— **ॐऐश्वर्याय नमः॥२४॥ ॐचिदाकाशाय नमः॥२५॥**

ततो पद्ममध्ये— **ॐयोगपीठात्मने नमः॥२६॥**

कर्णिकोपरि(पूर्वादिक्रमेण)—

ॐपृथिव्यै नमः॥२७॥ ॐकपालाय नमः॥२८॥ ॐसरिद्भ्यो नमः॥२९॥ ॐवामदेवाय नमः॥३०॥

तत समीपे कृष्णकोष्ठेषु—

ॐभगवत्यै नमः॥३१॥ ॐउमायै नमः॥३२॥ ॐशङ्करप्रियायै नमः॥३३॥ ॐपार्वत्यै नमः॥३४॥ ॐगौर्यै नमः॥३५॥ ॐकाल्यै नमः॥३६॥ ॐकौमार्यै नमः॥३७॥ ॐविश्वम्भर्यै नमः॥३८॥

ततः कृष्णाभद्राण्याधः रक्तभद्राणि (ऐशान्यादि क्रमेण)—

ॐनन्दिन्यै नमः॥३९॥ ॐमहाकालाय नमः॥४०॥ ॐवृषभाय नमः॥४१॥ ॐभृङ्गकिरीटने नमः॥४२॥ ॐस्कन्दाय नमः॥४३॥ ॐउमापतये नमः॥४४॥ ॐचण्डेश्वराय नमः॥४५॥ ॐसोमसूत्राय नमः॥४६॥

लिङ्गोपरि चत्वारि श्वेतभद्राणि (पूर्वादि क्रमेण)—

ॐधात्रे नमः॥४७॥ ॐमित्राय नमः॥४८॥ ॐयमाय नमः॥४९॥ ॐरुद्राय नमः॥५०॥

ततः तत्समीपे पीतभद्राणि (ऐशान्यादि क्रमेण)—

ॐवरुणाय नमः॥५१॥ ॐसूर्याय नमः॥५२॥ ॐभगाय नमः॥५३॥ ॐविवस्वते नमः॥५४॥ ॐपुरुषोत्तमाय नमः॥५५॥ ॐसवित्रे नमः॥५६॥ ॐत्वष्ट्रे नमः॥५७॥ ॐविष्णवे नमः॥५८॥

ततः द्वादशलिङ्गतो स्थापनम् (पूर्वादि क्रमेण)—

पूर्वे—

ॐशिवाय नमः॥५९॥ ॐएकनेत्राय नमः॥६०॥ ॐएकरुद्राय नमः॥६१॥

दक्षिणे—

ॐत्रिमूर्त्तये नमः॥६२॥ ॐश्रीकण्ठाय नमः॥६३॥ ॐवामदेवाय नमः॥६४॥

पश्चिमे—

ॐज्येष्ठाय नमः।।६५।। ॐश्रेष्ठाय नमः।।६६।। ॐरुद्राय नमः।।६७।।

उत्तरे—

ॐकालाय नमः।।६८।। ॐकलविकरणाय नमः।।६९।। ॐबलविकरणाय नमः।।७०।।

श्वेत षोडशवापीषु (ऐशान्यादि क्रमेण)–

ॐअणिमायै नमः।।७१।। ॐमहिमायै नमः।।७२।। ॐलघिमायै नमः।।७३।।
ॐगरिमायै नमः।।७४।। ॐप्राप्त्यै नमः।।७५।। ॐप्राकाम्यै नमः।।७६।।
ॐईशितायै नमः।।७७।। ॐवशितायै नमः।।७८।। ॐब्रह्माण्यै नमः।।७९।।
ॐमाहेश्वर्यै नमः।।८१।। ॐकौमार्यै नमः।।८१।। ॐवैष्णव्यै नमः।।८२।।
ॐवाराह्यै नमः।।८३।। ॐइद्राण्यै नमः।।८४।। ॐचामुण्डायै नमः।।८५।।
ॐचण्डिकायै नमः।।८६।।

ततः वापीसमीपे रक्तभद्राणि (ऐशान्यादि क्रमेण)—

ॐअसिताङ्गभैरवाय नमः।।८७।। ॐरूरूभैरवाय नमः।।८८।।
ॐचण्ड भैरवाय नमः।।८९।। ॐक्रोध भैरवाय नमः।।९०।।
ॐउन्मत्त भैरवाय नमः।।९१।। ॐकपाल भैरवाय नमः।।९२।।
ॐभीषण भैरवाय नमः।।९३।। ॐसंहार भैरवाय नमः।।९४।।

अष्टवल्ली (ऐशान्यादि क्रमेण)—

ॐघृताच्यै नमः।।९५।। ॐमेनकायै नमः।।९६।। ॐरम्भयै नमः।।९७।।
ॐउर्वश्यै नमः।।९८।। ॐतिलोत्तमायै नमः।।९९।। ॐसुकेशायै नमः।।१००।।
ॐमञ्जुघोषायै नमः।।१०१।। ॐअप्सरोभ्यो नमः।।१०२।।

ततो परिधि समीपे (आग्नेयाम्)—

ॐभवाय नमः।।१०३।। ॐशिवाय नमः।।१०४।। ॐरुद्राय नमः।।१०५।।
ॐपशुपतये नमः।।१०६।। ॐउग्राय नमः।।१०७।। ॐभीमाय नमः।।१०८।।
ॐमहादेवाय नमः।।१०९।। ॐईशानाय नमः।।११०।। ॐअनन्ताय नमः।।१११।।
ॐवासुकये नमः।।११२।।

नैर्ऋत्याम्–

ॐतक्षकाय नमः।।११३।। ॐकुलीरकाय नमः।।११४।। ॐकर्कोटकाय नमः।।११५।। ॐशङ्खपालाय नमः।।११६।। ॐकम्बलाय नमः।।११७।।

ॐअश्वतराय नमः॥११८॥ ॐवैन्याय नमः॥११९॥ ॐअङ्गाय नमः॥१२०॥ ॐहैहयाय नमः॥१२१॥ ॐअर्जुनाय नमः॥१२२॥

वायव्याम्–

ॐशाकुन्तलाय नमः॥१२३॥ ॐभरताय नमः॥१२४॥ ॐनलाय नमः॥१२५॥ ॐरामाय नमः॥१२६॥ ॐसार्वभौमाय नमः॥१२७॥ ॐनिषाधाय नमः॥१२८॥ ॐविन्ध्याचलाय नमः॥१२९॥ ॐमाल्यवते नमः॥१३०॥ ॐपरियात्राय नमः॥१३१॥ ॐसह्याय नमः॥१३२॥

ऐशान्याम्–

ॐहेमकूटाय नमः॥१३३॥ ॐगन्धमादनाय नमः॥१३४॥ ॐकुलाचलाय नमः॥१३५॥ ॐहिमवते नमः॥१३६॥ ॐरैवताय नमः॥१३७॥ ॐदेवगिरये नमः॥१३८॥ ॐमलयाचलाय नमः॥१३९॥ ॐकनकाचलाय नमः॥१४०॥ ॐपृथिव्यै नमः॥१४१॥ ॐअनन्ताय नमः॥१४२॥

चतुर्दिक्षु खण्डेषु (ऐशान्यादि क्रमेण)—

ॐअश्विनीकुमाराभ्यां नमः॥१४३॥ ॐविश्वेभ्योदेवेभ्यो नमः॥१४४॥ ॐपितृभ्यो नमः॥१४५॥ ॐनागेभ्यो नमः॥१४६॥

मण्डलाद्बहिः श्वेतपरिधौ (पूर्वादि क्रमेण)—

ॐइन्द्राय नमः॥१४७॥ ॐअग्नये नमः॥१४८॥ ॐयमाय नमः॥१४९॥ ॐनिर्ऋतये नमः॥१५०॥ ॐवरुणाय नमः॥१५१॥ ॐवायवे नमः॥१५२॥ ॐकुबेराय नमः॥१५३॥ ॐईश्वराय नमः॥१५४॥ ॐब्रह्मणे नमः॥१५५॥ ॐअनन्ताय नमः॥१५६॥

मण्डलाद्बहिः रक्तपरिधौ (पूर्वादि क्रमेण)—

ॐगदायै नमः॥१५७॥ ॐत्रिशूलाय नमः॥१५८॥ ॐवज्राय नमः ॥१५९॥ ॐशक्तये नमः॥१६०॥ ॐदण्डाय नमः॥१६१॥ ॐखड्गाय नमः॥१६२॥ ॐपाशाय नमः॥१६३॥ ॐअंकुशाय नमः॥१६४॥

मण्डलाद्बहिः कृष्णपरिधौ (पूर्वादि क्रमेण)—

ॐगौतमाय नमः॥१६५॥ ॐभरद्वाजाय नमः॥१६६॥ ॐविश्वमित्राय नमः॥१६७॥ ॐकश्यपाय नमः॥१६८॥ ॐजमदग्नये नमः॥१६९॥ ॐ वशिष्ठाय नमः॥१७०॥ ॐअत्रये नमः॥१७१॥ ॐअरुन्धत्यै नमः॥१७२॥

ततः चतुर्दिक्षु (पूर्वादि क्रमेण)—

ॐऋग्वेदाय नमः।।१७३।। **ॐयजुर्वेदाय नमः।।१७४।।**

ॐसामवेदाय नमः।।१७५।। **ॐअथर्ववेदाय नमः।।१७६।।**

साम्बसदा शिवाय(मण्डलमध्ये ताम्रकलशोपरि)—

ॐ नमोस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो येऽअस्य सत्वानो-हन्तेभ्यो करन्नमः।।

ॐभूर्भुवः स्वः शिव! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐशिवाय नमः। शिवमावाहयामि पूजयामि।

ॐमनोजूतीतिमन्त्रस्य प्रतिष्ठा पूर्वकं षोडशोपचारैः पूजनं कुर्यात्।

(षोडशोपचार से या उपलब्ध सामग्री से पूजा करें)

प्रार्थना—

यस्याङ्के च विभाति भूधर सुता देवा पगा मस्तके,
भाले बाल विधुर्गले च गरलं यस्योऽरसि व्यालराट्।
सोऽयं भूति विभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा,
सर्वः सर्वगतः शिव शशिनिभः श्रीशङ्करः पातुमाम्।।

अनेन पूजनेन द्वादशलिङ्गतो भद्रमण्डलस्थ देवाः प्रीयन्ताम् न मम।

।। इति द्वादशलिङ्गतोभद्रमण्डलपूजनम् ।।

अथ शिवार्चनम्

गृहाभ्यान्तरे शुद्धासने उपविश्य पूर्वोक्त प्रकारेण आचमनं पवित्रकरणं-शिखाबन्धनमासनशुद्ध्यादिकं यथाशक्तिविधाय स्वस्तिवाचनं मङ्गलश्लोकांश्च पठित्वा सङ्कल्पं कुर्यात्।

सङ्कल्पम् —(यजमान पत्नी सहित दाहिने हाथ में रोली, चावल, पुष्प, दूर्वा, जल व द्रव्य लेकर संकल्प करें)

यजमानसपत्नीकः स्वदक्षिणहस्ते गन्धाक्षतपुष्पदूर्वाजलद्रव्यञ्चादाय—

ॐदेशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं अस्य नर्मदेश्वर वा प्राणप्रतिष्ठित शिवपरिवारपूजनं करिष्ये।

ध्यानम् —(यजमान दाहिने हाथ में पुष्प व चावल लेकर ध्यान करें)

यजमानः दक्षिणहस्ते पुष्पाक्षताञ्चादाय-

गणपतये —

ॐगणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्।। गणपतये नमः।

पार्वत्यै —

ॐमुखे ते ताम्बूलं नयन युगले कज्जलकला,
ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिक लता।
स्फुरत्काँची शाटी पृथुकटि तटे हाटक मयी,
भजामित्वां गौरी नगपति किशोरीमवितरम्।।

पार्वत्यै नमः।

प्रार्थना- ॐहेमाद्रितनयां देवीं वरदां शंकर प्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं पार्वतीं प्रणमाम्यऽहम्।।

नन्दीश्वराय—

ॐ आशुः शिशानो व्वृषभो न भीमोघनाघनः क्षोभण चर्षणीनाम्। सङ्क्रन्दनो निमिषऽएक व्वीरः शत ꣳ सेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः।।

नन्दीश्वराय नमः।

प्रार्थना— ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्नमातरं पुरः। पितरञ्च प्रयन्त्स्वः।।

स्वामी कार्तिकेयाय—

ॐ यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमानऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्।। स्वामी कार्तिकेयाय नमः।

प्रार्थना— ॐयत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखाऽइव। तन्न इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म्म यच्छतु विश्वाहा शर्म्म यच्छतु।।

वीरभद्राय —

ॐभद्रङ्कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः। स्थिरैरङ्गै स्तुष्टुवा ꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं य्यदायुः।। वीरभद्राय नमः।

कुबेराय—

ॐकुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनु पूर्वं वियूय। इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति।। कुबेराय नमः।

प्रार्थना— ॐव्वय ꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।।

कीर्तिमुखाय —

ॐओजश्च मे सहश्च म आत्क्माश्च मे तनूश्च मे शर्म्म च मे वर्म्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थीनि च मे परू ꣳ षि च मे शरीराणि च मऽआयुश्च मे जराश्च मे यज्ञेन कल्पताम् ।। कीर्तिमुखाय नमः।

सर्पेभ्यो—

ॐनमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः। सर्पेभ्यो नमः।

हनुमते —

मनोजवं मारुत तुल्य वेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानर यूथ मुख्यं श्रीराम दूतं शरणं प्रपद्ये।।

हनुमते नमः।

शिव ध्यानं-

ॐनमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिव तराय च।।

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारु चन्द्रावतंसं,
रत्ना कल्पोज्ज्वलाङ्गं परशु मृगवरा भीति हस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्र कृतिं वसानं,
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिल भय हरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

ॐभगवते साम्ब सदाशिवाय नमः, ध्यानं समर्पयामि।

पाद्यं—

ॐनमोस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो येऽअस्यसत्वानो हन्तेभ्योऽकरन्नमः।। ॐसाम्ब सदाशिवाय सपरिवाराय पादयो पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—

ॐगायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पंड्क्त्या सह। बृहत्युष्णिहा ककुप्सूचीभिः शम्यन्तु त्वा।। ॐसाम्ब सदाशिवाय सपरिवाराय हस्तयो अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्—

ॐत्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनं उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।। ॐसाम्ब सदाशिवाय सपरिवारायआचमनीयं समर्पयामि।

स्नानम्—

ॐवरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्त्थो वरुणस्यऽऋतसदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद।।

ॐसाम्ब सदाशिवाय सपरिवारायस्नानं समर्पयामि।

मधुपर्क—

ॐमधुवाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ꣳ रजः मधुद्यौरस्तुनः पिता मधु मानोवनस्पति मधुमाँऽअस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः।। ॐसाम्ब सदाशिवाय मधुपर्कं समर्पयामि।

विशेषस्नानम्-(क) पयः स्नानम्—

ॐपयः पृथिव्यां पयऽओषधीषुपयो दिव्यंतरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम्।। ॐसाम्ब सदाशिवाय सपरिवाराय पयस्नानं समर्पयामि।

(ख) दधिस्नानम्—

ॐदधिक्राव्णो अकारिषंजिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखाकरत्प्रणआयू ꣳ षितारिषत्।। ॐसाम्ब सदाशिवाय सपरिवाराय दधिस्नानं समर्पयामि।

(ग) धृतस्नानम्—

ॐघृतं घृतपावानः पिबत व्वसां व्वसा पावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।।

ॐसाम्ब सदाशिवाय सपरिवाराय धृत स्नानं समर्पयामि।

(घ) मधुस्नानम्—

ॐमधुवाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ꣳ रजः मधु द्यौरस्तुनः पिता मधु मानोवनस्पति मधुमाँऽअस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।

ॐसाम्ब सदाशिवाय सपरिवाराय मधु स्नानं समपयामि।

(ङ) शर्करास्नानम्—

ॐअपा ꣳ रसमुद्वयस सूर्ये सन्त ꣳ समाहितं। अपा ꣳ रसस्ययो रसस्तंवो गृह्णाम्युत्तमुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।। ॐसाम्ब सदाशिवाय सपरिवाराय शर्करा स्नानं समपयामि।

पंचामृतस्नानम्—

ॐपञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेभवत्सरित।। ॐसाम्ब सदाशिवाय सपरिवाराय मल्लापहारे पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

(च) गन्धोदकस्नानम् —

ॐअ ꣳ शुना ते अ ꣳ शुः पृच्यतां परुषा परुः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽअच्युतः।। ॐसाम्ब सदाशिवाय सपरिवारायगन्धोदक स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—

ॐशुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्रायपशुपतये कर्ण्णा यामाऽअवलिप्ता रौद्रानभोरूपाः पार्ज्जन्याः।।

ॐसाम्ब सदाशिवाय सपरिवारायशुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

कुशोदकस्नानम्—

ॐशरासः कुशारासो दर्भासः सूर्याउत। ओजाअदृष्टा वैरिणा सर्वेसाकंन्यलिप्सत।। ॐसाम्ब सदाशिवाय कुशोदकस्नानं समर्पयामि।

फलोदकस्नानम्—

ॐखर्जूर जम्बू कदली पनसाम्रपक्व पूगी कपित्थ बदरी जमुदुंबराणी।
धात्रीफलानि रुचिराणि मनोहराणि भक्त्या निरन्तरमहं स्नपयामि शम्भो।।
ॐसाम्ब सदाशिवायफलोदकस्नानं समर्पयामि।

अभिषेकस्नानं—(रुद्रसूक्तम्)

ॐनमस्ते रुद्रमन्यव ऽउतोत ऽइषवे नमः। बाहुभ्यां मुतते नमः।।१।। याते रुद्रशिवा तनूरघोराऽपाप काशिनी। तयानस्तन्वा शन्तमया गिरि शन्ताभिचाकशीहि।।२।। यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरु माहि ꣳ सीः पुरुषञ्जगत्।।३।। शिवेन वचसात्त्वागिरिशाच्छा वदामसि। यथानः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्म ꣳ सुमनाऽअसत्।।४।। अद्ध्यवोच दधिवक्ता प्रथमो दैव्योभिषक्। अहीश्चँ सर्व्वाजम्भयन्त्सर्व्वाश्च यातु धान्यो ऽधराचीः परासुव।।५।। असौ यस्ताम्रोऽअरुणऽउत बब्भ्रुः सुमङ्गलः। ये चैन ꣳ रुद्रा

ऽअभितो दिक्षुश्रिताः सहस्त्रशोऽवैषा हेडऽईमहे।।६।। असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो व्विलोहितः उतैनङ्गोपाऽअदृशन्नदृशनु दहार्यः सदृष्टोमृडयाति नः।।७।। नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे। अथो येऽअस्य सत्त्वानोऽहन्तेब्भ्यो ऽकरन्नमः।।८।। प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयो रार्त्न्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो व्वप।।९।। विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२ उत। अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः।।१०।। याते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयाऽस्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज।।११।।परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्नि धेहितम्।।१२।। अवतत्य धनुष्ट्व ꣳ सहस्त्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव।।१३।। नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने।।१४।। मानो महान्तमुत मानो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नो व्वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः।।१५।। मानस्तोके तनये मानऽआयुषि मानो गोषु मानोऽअश्वेषु रीरिषः। मा नो व्वीरान् रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे।।१६।।

ॐसाम्ब सदाशिवाय महाभिषेकस्नानं समर्पयामि।

तीर्थोदकस्नानम्—

ॐइमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रिस्तोमं सचतापरुष्ण्या। असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयार्जीकये श्रृणुह्या सुषेमयाः।।

ॐसाम्ब सदाशिवाय तीर्थोदक स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम् —

ॐशुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽ आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणास्ते रुद्राय पशुपतये कर्ण्णा यामाऽअवलिप्ता रौद्रानभोरूपाः पार्ज्जन्याः।। ॐसाम्ब सदाशिवाय सपरिवाराय शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

कोपिनवस्त्रम्—

ॐप्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयो रार्त्न्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो व्वप।। ॐसाम्ब सदाशिवाय सपरिवाराय वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्—

ॐब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेनऽआवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।।

ॐसाम्ब सदाशिवाय सपरिवाराय यज्ञोपवितं समर्पयामि। यज्ञोपवितान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

गन्धम्—

ॐनमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्चवो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च नमः कपर्दिने।।

ॐसाम्ब सदाशिवाय सपरिवाराय चन्दनं समर्पयामि।

अक्षतान्—

ॐनमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिव तराय च।। ॐसाम्ब सदाशिवाय सपरिवाराय अक्षतं समर्पयामि।

पुष्पाणि—

ॐनमः पार्य्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च।।

ॐसाम्ब सदाशिवाय सपरिवाराय पुष्पं समर्पयामि।

बिल्वपत्रम्—

ॐनमो विल्मिने च कवचिने च नमो व्वर्मिणे च बरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च नमो धृष्ष्णवे।।

काशीवास निवासं च, काल भैरव पूजनम्।
प्रयागे माघ मासे च, बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।
दर्शनं बिल्वपत्रस्य, स्पर्शनं पाप नाशनम्।
अघोर पाप संहारं, बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।
त्रिदलं त्रिगुणाकारं, त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम्।
त्रिजन्म पाप संहारं, बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।
अखण्डैर्बिल्व पत्रैश्च, पूजये शिवङ्करम्।
कोटिकन्या महादानं, बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।

ॐसाम्ब सदाशिवाय सपरिवाराय बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

दूर्वा—

ॐकाण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्प्परि एवानो दूर्वे प्रतनुसहस्त्रेण शतेन च।। ॐसाम्ब सदाशिवाय सपरिवाराय दूर्वांकुरान् समर्पयामि।

https://upayogibooks.com

शमीपत्रम्—

ॐअमङ्गलानां शमनीं शमनीं दुष्कृतस्य च।
दुःस्वप्न नाशिनी धन्यां प्रपद्येऽहं शमीं शुभाम्।।

ॐसाम्ब सदाशिवाय सपरिवाराय शमीपत्राणि समर्पयामि।

तुलसीमञ्जरी—

ॐशिवोभव प्प्रजाभ्यो मानुषीभ्यस्त्वमङ्गिरः माद्यावापृथिवी अभिशोचीर्म्मान्तरिक्षम्मा व्वनस्पतीन्।।ॐसाम्ब सदाशिवाय सपरिवाराय तुलसीमञ्जरीं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यम्—

ॐत्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनं उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीयमामृतात्।। ॐसाम्ब सदाशिवाय सपरिवाराय सुगन्धितद्रव्यम् समर्पयामि।

धूपम्—

ॐनमः कपर्दिने च व्युप्त केशाय च नमः सहस्त्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च।।

ॐसाम्ब सदाशिवाय सपरिवाराय धूपं आघ्रापयामि।

दीपम्—

ॐनम ऽआशवे चाजिराय च नमः शीघ्रयाय च शीब्भ्याय च नम ऽऊर्म्म्याय चावस्वन्याय च नमो नादेयाय द्वीप्याय च।।

ॐसाम्ब सदाशिवाय सपरिवाराय प्रत्यक्षदीपं दर्शयामि।

नैवेद्यम्—

ॐनमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजायचापरजाय च नमो मध्यमाय चापगल्भ्याय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च।।

ॐसाम्ब सदाशिवाय सपरिवाराय नैवेद्यं निवेदयामि।

ऋतुफलम्—

ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्व ꣳ हसः।। ॐसाम्ब सदाशिवाय सपरिवाराय ऋतुफलानि समर्पयामि।

ताम्बूलम्—

ॐइम्मा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षय द्वीराय प्रभरामहेमतीः। यथा शमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम्।।

ॐसाम्ब सदाशिवाय सपरिवारायमुखवासार्थे ताम्बुलं समर्पयामि।

द्रव्यदक्षिणाम्—

ॐहिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

ॐसाम्ब सदाशिवाय सपरिवाराय द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

विशेषार्घ्यम् (पात्र में जल, गन्ध, अक्षत, सुपारी, पुष्प, द्रव्य, दूर्वा, लेकर अवनीकृत जानुमण्डल पूर्वक)-

ॐरक्ष रक्ष महादेव, रक्ष त्रैलाक्य रक्षक।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद।
अनेन सफलार्घ्येण फलदो ऽस्तु सदामम।।

ॐसाम्बसदा शिवाय विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

अङ्गपूजनम्

वामहस्ते आर्द्रचन्दनरञ्जित अक्षतान् गृहीत्वा अङ्ग पूजनं कुर्यात्।(बाँये हाथ में चंदन लगे गीले चावल लेकर दाहिने हाथ से अंग पूजन करें)

ॐईशानाय नमः, पादौ पूजयामि।।१।। **ॐशङ्कराय नमः**, जंङ्घे पूजयामि।।२।।
ॐशिवाय नमः, जानुनी पूजयामि।।३।। **ॐशूलपाणये नमः**, गुल्फो पूजयामि।।४।।
ॐशम्भवे नमः, कटिं पूजयामि ।।५।। **ॐ स्वयंभुवे नमः**, गुह्यं पूजयामि।।६।।
ॐमहादेवाय नमः, नाभिं पूजयामि ।।७।। **ॐविश्वकर्त्रे नमः**, उदरं पूजयामि।।८।।
ॐसर्वतोमुखाय नमः, पार्श्वे पूजयामि।।९।। **ॐस्थाणवे नमः**, स्तनौ पूजयामि।।१०।।
ॐनीलकण्ठाय नमः, कण्ठं पूजयामि।।११।। **ॐशिवात्मने नमः**, मुखं पूजयामि ।।१२।।
ॐत्रिनेत्राय नमः, नेत्रत्रयं पूजयामि।।१३।। **ॐनागभूषणाय नमः**, शिरःपूजयामि।।१४।।
ॐदेवाधिदेवाय नमः, सर्वाङ्गं पूजयामि।।।१५।।

एकादशरुद्रपूजनम्

(तत् वामहस्ते आर्द्रचन्दनरञ्जित अक्षतान् गृहीत्वा एकादश रुद्र पूजनं कुर्यात्।)

ॐअघोराय नमः।।१।। ॐपशुपतये नमः।।२।। ॐशिवाय नमः।।३।।
ॐविरूपाय नमः।।४।। ॐविश्वरूपाय नमः।।५।। ॐ भैरवाय नमः।।६।।
ॐत्र्यम्बकाय नमः।।७।। ॐशूलपाणये नमः।।८।। ॐकपर्दिने नमः।।९।।
ॐईशानाय नमः।।१०।। ॐमहेशाय नमः।।११।।

एकादशशक्तिपूजनम्

ॐभगवत्यै नमः।।१।। ॐउमादैव्यै नमः।।२।। ॐ शङ्करप्रियायै नमः।।३।। ॐपार्वत्यै नमः।।४।। ॐगौर्यै नमः।।५।। ॐकालिन्द्यै नमः।।६।। ॐकाटिब्यै नमः।।७।। ॐविश्वधारिण्यै नमः।।८।। ॐविश्वेश्वर्यै नमः।।९।। ॐविश्वमात्रे नमः।।१०।। ॐशिवायै नमः।।११।।

अष्टमूर्तिपूजनम्

।।१।। ॐशिवाय क्षितिमूर्तये नमः—प्राच्याम्।

।।२।। ॐभवाय जलमूर्तये नमः—ऐशान्याम्।

।।३।। ॐरुद्रायाग्निमूर्तये नमः—उदीच्याम्।

।।४।। ॐउग्राय वायुमूर्तये नमः—वायव्याम्।

।।५।। ॐभीमायाकाशमूर्तये नमः—प्रतीच्याम्।

।।६।। ॐपशुपतये यजमानमूर्तये नमः—नैऋत्याम्।

।।७।। ॐमहादेवाय सोममूर्तये नमः—दक्षिणस्याम्।

।।८।। ॐईशानाय सूर्यमूर्तये नमः—आग्नेयाम्।

तर्पणम्—(साक्षत जलेन तर्पणं कुर्यात्)

ॐभवं देवं तर्पयामि। ॐशर्वं देवं तर्पयामि।
ॐईशानं देवं तर्पयामि। ॐपशुपतिं देवं तर्पयामि।
ॐउग्रं देवं तर्पयामि। ॐरुद्रं देवं तर्पयामि।
ॐभीमं देवं तर्पयामि। ॐमहान्तं देवं तर्पयामि।

ॐभवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐशर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि।
ॐईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐपशुपति देवस्य पत्नीं तर्पयामि।
ॐउग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐरुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि।
ॐभीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐमहतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि।

प्रार्थना—

वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणम्,
वन्दे पन्नग भूषणं मृगधरं वन्दे पशूनाम्पतिम्।
वन्दे सूर्य शशाङ्क वह्नि नयनं वन्दे मुकुन्दप्रियम्,
वन्दे भक्त जनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्।।

अनेन पूजनेन साम्ब सदाशिव प्रीयताम् न मम।

शिवजी की आरती

ॐजय शिव ओंकारा, प्रभु जय शिव ओंकारा।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्द्धंगी धारा ।।टेक।।ॐहर हर हर महादेव।।

एकानन चतुरानन, पंचानन राजै।
हंसासन गरुड़ासन, वृष वाहन साजै।।१।।ॐहर हर. . .
दोय भुज चार चतुर्भुज, दशभुज अति सोहे।
तीनो रूप निरखता, त्रिभुवनजन मोहे।।२।।ॐहर हर. . .
अक्षमाला वनमाला, रुंडमाला धारी।
चन्दन मृगमद चन्दा, भाले शुभकारी।।३।।ॐहर हर. . .
श्वेताम्बर पीताम्बर, बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक प्रभुतादिक, भूतादिक संगे।।४।।ॐहर हर. . .
कर मध्येसु कमण्डलु, चक्र त्रिशूल धर्ता।
जगकर्त्ता जग भर्ता, जगपालन कर्त्ता।।५।।ॐहर हर. . .
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्ये, ये तीनो एका।।६।।ॐहर हर. . .
काशी में विश्वनाथ विराजत, नन्दो ब्रह्मचारी।
नित उठ भोग लगावत, महिमा अति भारी।।७।।ॐहर हर. . .
त्रिगुणा स्वामि जी की आरती, जो कोई नर गावै।
कहत शिवानन्द स्वामी, मनवांच्छित फल पावै।।८।।ॐहर हर. . .

आरती श्रीशंकर जी की

शीश गंग अर्द्धंग पार्वती, सदा विराजत कैलासी।
नन्दी भृंगी नृत्य करत है, गुण भक्तन शिव के गासी।।१।।
शीतल मन्द सुगन्ध पवन बहै, जँहा बैठे है शिव अविनासी।
करत गान गन्धर्व सप्त सुर, राग रागिनी अति गासी।।२।।
यक्ष रक्ष भैरव जँहा डोलत, बोलत है बन के बासी।
कोयल शब्द सुनावत सुन्दर, भ्रमर करत है गुन्जासी।।३।।
कल्पद्रुम अरु पारिजात तरु, लाग रहे है लक्षासी।
कामधेनु कोटिक जहाँ डोलत, करत फिरत है भिक्षासी।।४।।
सूर्यकान्त सम पर्वत सोभित, चन्द्रकान्त भव हिमरासी।
छहों ऋतु नित फलत रहत है, पुष्प चढत है वर्षासी।।५।।
देव मुनिजन की भीड़ पड़त है, निगम रहत जो नित गासी।
ब्रह्मा, विष्णु, हर को ध्यान धरत है, कछु शिव हमको फरमासी।।६।।

ऋद्धि सिद्धि के दाता शंकर, सदा आनन्दित सुखराशी।
जिनको सुमिरण सेवा करता, टूट जाय यम की फांसी।।७।।
त्रिशूल धर जी को ध्यान निरंतर, मना लगाकर जो गासी।
दूर करो विपदा शिव तन की, जन्म-२ शिव पद पासी।।८।।
कैलासी काशी के बासी, अविनासी मेरी सुध लीज्यो।
सेवक जान सदा चरणन को, अपनो जान कृपा कीज्यो।।९।।
आप तो प्रभु जी सदा सयाने, अवगुण मेरो सब ढकियो।
सब अपराध क्षमा कर शंकर, किंकर की विनती सुनियो।।१०।।
अभय दान दीज्यो प्रभ मोरे, सकल सृष्टि के हितकारी।
भोले नाथ बाबा भक्त निरंजन, भय-भंजन भव शुभकारी।।११।।
काल हरो हर कष्ट हरो हर, दुःख हरो दारिद्र हरो।
नमामि शंकर भजामि भोले बाबा, हर हर शंकर आप शरणम्।। १२।।

पुष्पाञ्जलिम्—

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथा कालोद्भावानि च।
पुष्पांजलि मया दत्ता गृहाण शिवशङ्करः।।

प्रदक्षिणा—

ॐये तीर्त्थानि प्रचरन्ति सृका हस्तानिषङ्गिणः। तेषा ꣳ सहस्र योजने ऽव धन्वानि तन्मसि।।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि सर्वाणि प्रनश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे।।

॥ इति शिवपूजनम् ॥

अथ गौरीतिलकमण्डलपूजनम्

आचम्यप्राणायाम्य आसनशुद्धयादि पूर्वक—

संकल्पम्-(यजमान पत्नी सहित दाहिने हाथ में रोली, चावल, पुष्प, दूर्वा, जल व द्रव्य लेकर संकल्प करें)-

यजमानसपत्नीक स्वदक्षिणहस्ते गन्धाक्षतपुष्पदूर्वाजलद्रव्यञ्चादाय—

ॐदेशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं करिष्यमाण अध्याऽऽमुकानुष्ठान कर्मणि एतत् गौरीतिलकमण्डले नाममन्त्रैः देवानामाऽऽवाहनं प्रतिष्ठां पूजाञ्च करिष्ये।

पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा गौरीतिलकमण्डलस्थ देवानां आवाहनं कुर्यात्—
(बाँये हाथ में पुष्प व चावल लेकर दाहिने हाथ से मण्डल पर देवताओंका आवाहन करें)

गौर्यै (मण्डल मध्य ताम्रकलशोपरि स्वर्णमयि देवी प्रतिमाया)—

मेधासि देवि विदिताखिल शास्त्र सारा, दुर्गासि दुर्ग भव सागरनौरसङ्गा।
श्रीः कैटभारि हृदयैककृताधिवासा, गौरी त्वमेव शशिमौलिकृत प्रतिष्ठा।।

ॐगौर्यै नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

मण्डलमध्येपीतवर्णे (ऐशान्यादि क्रमेण)—

ॐमहाविष्णावे नमः।।१।। ॐमहालक्ष्म्यै नमः।।२।। ॐमहेश्वराय नमः।।३।। ॐमहामायायै नमः।।४।।

ततो मण्डलमध्ये श्वेतकोष्ठे (पूर्वादिक्रमेण)—

ॐऋग्वेदाय नमः।।५।। ॐयजुर्वेदाय नमः।।६।। ॐसामवेदाय नमः।।७।। ॐअथर्ववेदाय नमः।।८।।

परिधि समीपे श्वेतकोष्ठे (पूर्वादिक्रमेण)—

ॐअद्भ्यो नमः।।९।। ॐजलोद्भ्यो नमः।।१०।। ॐब्रह्मणे नमः।।११।। ॐप्रजापतये नमः।।१२।। ॐशिवाय नमः।।१३।।

आग्नेय कोणे (श्वेतकोष्ठे)—

ॐअनन्ताय नमः।।१४।। ॐपरमेष्ठिने नमः।।१५।। ॐधात्रे नमः।।१६।। ॐविधात्रे नमः।।१७।। ॐअर्य्यम्णे नमः।।१८।। ॐमित्राय नमः।।१९।।

दक्षिणे (श्वेतकोष्ठे)—

ॐवरुणाय नमः।।२०।। ॐअंशुमते नमः।।२१।। ॐभगाय नमः।।२२।। ॐइन्द्राय नमः।।२३।। ॐविवश्वते नमः।।२४।।

नैऋत्य कोणे (श्वेतकोष्ठे)—

ॐपूष्णे नमः।।२५।। ॐपर्ज्जन्याय नमः।।२६।। ॐत्वष्ट्रे नमः।।२७।। ॐदक्षयज्ञाय नमः।।२८।। ॐदेववसवे नमः।।२९।। ॐमहासुताय नमः।।३०।।

पश्चिमे (श्वेतकोष्ठे)—

ॐसुधर्मणे नमः।।३१।। ॐशङ्खपदे नमः।।३२।। ॐमहाबाहवे नमः।।३३।। ॐवपुष्मते नमः।।३४।। ॐअनन्ताय नमः।।३५।।

वायव्य कोणे (श्वेतकोष्ठे)—

ॐमहेरणाय नमः॥३६॥ ॐविश्वावसवे नमः॥३७॥ ॐसुपर्वणे नमः॥३८॥ ॐविष्टराय नमः॥३९॥ ॐरुद्रदेवाय नमः॥४०॥ ॐध्रुवाय नमः॥४१॥

उत्तरे (श्वेत कोष्ठे)—

ॐधरायै नमः॥४२॥ ॐसोमाय नमः॥४३॥ ॐआपवत्साय नमः॥४४॥ ॐअनलाय नमः॥४५॥ ॐअनिलाय नमः॥४६॥

ईशान कोणे (श्वेतकोष्ठे)—

ॐआवर्त्ताय नमः॥४७॥ ॐसावर्ताय नमः॥४८॥ ॐद्रोणाय नमः॥४९॥ ॐपुष्कराय नमः॥५०॥ ॐप्रत्यूषाय नमः॥५१॥ ॐप्रभासनाय नमः॥५२॥

ईशान कोणे (हरितकोष्ठे)—

ॐह्रींकार्यै नमः॥५३॥ ॐह्रीयै नमः॥५४॥ ॐकात्यायन्यै नमः॥५५॥ ॐचामुण्डायै नमः॥५६॥ ॐमहादिव्यायै नमः॥५७॥ ॐमहाशब्दायै नमः॥५८॥ ॐसिद्धिदायै नमः॥५९॥ ॐओंकार्यै नमः॥६०॥ ॐऐंकार्यै नमः॥६१॥ ॐक्लींकार्यै नमः॥६२॥

ईशान कोणे (पीतकोष्ठे)—

ॐश्रियै नमः॥६३॥ ॐलक्ष्म्यै नमः॥६४॥ ॐधृत्यै नमः॥६५॥ ॐमेधायै नमः॥६६॥ ॐस्वाहायै नमः॥६७॥ ॐप्रज्ञायै नमः॥६८॥ ॐसरस्वत्यै नमः॥६९॥ ॐऐंकार्यै नमः॥७०॥

अग्नि कोणे (हरितकोष्ठे)—

ॐगौर्यै नमः॥७१॥ ॐपद्मायै नमः॥७२॥ ॐशच्यै नमः॥७३॥ ॐमेधायै नमः॥७४॥ ॐसावित्र्यै नमः॥७५॥ ॐविजयायै नमः॥७६॥ ॐजयायै नमः॥७७॥ ॐदेवसेनायै नमः॥७८॥ ॐस्वाहायै नमः॥७९॥ ॐस्वधायै नमः॥८०॥ ॐमातृभ्यो नमः॥८१॥

अग्नि कोणे (पीत कोष्ठे)—

ॐलोकमात्रे नमः॥८२॥ ॐगायत्र्यै नमः॥८३॥ ॐधृत्यै नमः॥८४॥ ॐपुष्ट्यै नमः॥८५॥ ॐतुष्ट्यै नमः॥८६॥ ॐआत्मनकुलदेवतायै नम॥८७॥ ॐगणेश्वर्यै नमः॥८८॥ ॐशान्तायै नमः॥८९॥

उत्तरात् अग्निकोण पर्यन्त (पीतकोष्ठे)—

ॐजयन्तायै नमः॥९०॥ ॐमङ्गलायै नमः॥९१॥ ॐकाल्यै नमः॥९२॥ ॐभद्रकाल्यै नमः॥९३॥ ॐकपालिन्यै नमः॥९४॥ ॐदुर्गायै नमः॥९५॥ ॐक्षमायै नमः॥९६॥ ॐशिवायै नमः॥९७॥ ॐधात्र्यै नमः॥९८॥

ॐस्वाहास्वधाभ्यां नमः।।९९।।

नैर्ऋत्ये कोणे (हरितकोष्ठे)—

ॐदीप्यमानायै नमः।।१००।। ॐदीप्तायै नमः।।१०१।। ॐसूक्ष्मायै नमः।।१०२।। ॐविभूत्यै नमः।।१०३।। ॐविमलायै नमः।।१०४।। ॐपरायै नमः।।१०५।। ॐअमोघायै नमः।।१०६।। ॐविद्युत्यायै नमः।।१०७।। ॐसर्वतोमुखायै नमः।।१०८।। ॐआनन्दायै नमः।।१०९।। ॐनन्दिन्यै नमः।।११०।।

नैर्ऋत्ये कोणे (पीतकोष्ठे)—

ॐशक्त्यै नमः।।१११।। ॐमहासूक्ष्मायै नमः।।११२।। ॐकरालिन्यै नमः।।११३।। ॐभारत्यै नमः।।११४।। ॐज्योतिष्मत्यै नमः।।११५।। ॐब्राह्म्यै नमः।।११६।। ॐमाहेश्वर्यै नमः।।११७।। ॐकौमार्यै नमः।।११८।।

वायव्ये कोणे (हरितकोष्ठे)—

ॐवैष्णव्यै नमः।।११९।। ॐवाराह्यै नमः।।१२०।। ॐइन्द्राय नमः।।१२१।। ॐचण्डिकायै नमः।।१२२।। ॐबुद्ध्यै नमः।।१२३।। ॐलज्जायै नमः।।१२४।। ॐवपुष्मत्यै नमः।।१२५।। ॐशान्त्यै नमः।।१२६।। ॐकान्त्यै नमः।।१२७।। ॐरत्यै नमः।।१२८।। ॐ प्रीत्यै नमः।।१२९।।

वायव्ये कोणे (पीत कोष्ठे)—

ॐकीर्त्यै नमः।।१३०।। ॐप्रभायै नमः।।१३१।। ॐकाम्यायै नमः।।१३२।। ॐकान्त्यायैनमः।।१३३।। ॐऋद्ध्यै नमः।।१३४।। ॐदयायै नमः।।१३५।। ॐशिवदूत्यै नमः।।१३६।। ॐश्रद्धायै नमः।।१३७।।

दक्षिणात् वायव्य पर्यन्तं (पीतकोष्ठे)—

ॐक्षमायै नमः।।१३८।। ॐक्रियायै नमः।।१३९।। ॐविद्यायै नमः।।१४०।। ॐमोहिन्यै नमः।।१४१।। ॐयशोवत्यै नमः।।१४२।। ॐकृपावत्यै नमः।।१४३।। ॐसलीलायै नमः।।१४४।। ॐसुशीलायै नमः।।१४५।। ॐईश्वरायै नमः।।१४६।। ॐसिद्धेश्वर्यै नमः।।१४७।।

परिधि समिपे (रक्तकोष्ठे)—

पूर्वे-ॐद्वैपायनाय नमः।।१४८।। ॐभारद्वाजाय नमः।।१४९।।

दक्षिणे-ॐगौतमाय नमः।।१५०।। ॐसुमन्तवे नमः।।१५१।।

पश्चिमे-ॐदेवलाय नमः।।१५२।। ॐव्यासाय नमः।।१५३।।

उत्तरे-ॐवसिष्ठाय नमः।।१५४।। ॐच्यवनाय नमः।।१५५।।

परिधि समिपे (कृष्णकोष्ठे)—

ईशाने-ॐ**कण्वाय नमः।।१५६।।** अग्नये-ॐ**मैत्रेयाय नमः।।१५७।।**
नैर्ऋत्ये-ॐ**कवये नमः।।१५८।।** वायव्ये-ॐ**विश्वामित्राय नमः।।१५९।।**

मण्डल मध्ये (पीतकोष्ठे)—

ॐवामदेवाय नमः।।१६०।। ॐसुमन्ताय नमः।।१६१।। ॐजैमिन्यै नमः।।१६२।। ॐक्रतवे नमः।।१६३।। ॐपिप्पलादाय नमः।।१६४।। ॐपाराशराय नमः।।१६५।। ॐगर्गाय नमः।।१६६।। ॐवैशम्पायनाय नमः।।१६७।।

मण्डल मध्ये (कृष्ण कोष्ठे)—

ॐदक्षाय नमः।।१६८।। ॐमार्कण्डेयाय नमः।।१६९।। ॐमृकण्डाय नमः।।१७०।। ॐलोमशाय नमः।।१७१।। ॐपुलहाय नमः।।१७२।। ॐपुलस्त्ये नमः।।१७३।। ॐबृहस्पतये नमः।।१७४।। ॐजमदग्न्ये नमः।।१७५।। ॐजामदग्न्याय नमः।।१७६।। ॐदलभ्याय नमः।।१७७।। ॐशिलोच्छनाय नमः।।१७८।। ॐगालवाय नमः।।१७९।।

मण्डल मध्ये (हरित कोष्ठे)—

ॐयाज्ञवल्क्ये नमः।।१८०।। ॐदुर्वाससे नमः।।१८१।। ॐसौरभाय नमः।।१८२।। ॐजाबालये नमः।।१८३।। ॐवाल्मीकये नमः।।१८४।। ॐबह्वचाय नमः।।१८५।। ॐइन्द्रप्रमितये नमः।।१८६।। ॐदेवमित्राय नमः।।१८७।। ॐजाजलये नमः।।१८८।। ॐशाकल्याय नमः।।१८९।। ॐमुद्गलाय नमः।।१९०।। ॐजातुकर्णाय नमः।।१९१।। ॐबलाकाय नमः।।१९२।। ॐकृप्पाचायार्य नमः।।१९३।। ॐसुकर्मणे नमः।।१९४।। ॐकौशल्याय नमः।।१९५।।

ईशान कोणे (रक्त कोष्ठे)—

ॐब्रह्माग्नये नमः।।१९६।। ॐगार्हपत्याय नमः।।१९७।। ॐईश्वराग्नये नमः।।१९८।। ॐदक्षिणायग्नये नमः।।१९९।। ॐवैष्णवाग्नये नमः।।२००।। ॐआहवानीयाग्नये नमः।।२०१।। ॐसन्तजिह्वाग्नये नमः।।२०२।। ॐइध्मजिह्वाग्नये नमः।।२०३।। ॐप्रवर्ग्याग्नये नमः।।२०४।। ॐबडवाग्नये नमः।।२०५।। ॐजठराग्नये नमः।।२०६।। ॐलोकिकाग्नये नमः।।२०७।।

अग्नि कोणे (रक्त कोष्ठे)—

ॐसूर्याय नमः।।२०७।। ॐवेदाङ्गाय नमः।।२०९।। ॐभानवे नमः।।२१०।। ॐइन्द्राय नमः।।२११।। ॐखगाय नमः।।२१२।। ॐगभस्तिने नमः।।२१३।। ॐयमाय नमः।।२१४।। ॐअशुमते नमः।।२१५।। ॐहिरण्येरेतसे नमः।।२१६।। ॐदिवाकराय नमः।।२१७।। ॐमित्राय नमः।।२१८।। ॐविष्णवे नमः।।२१९।।

नैर्ऋत्य कोणे (रक्त कोष्ठे)—

ॐशम्भवे नमः।।२२०।। ॐगिरिशयाय नमः।।२२१।। ॐअजेकवदे नमः।।२२२।। ॐअहिर्बुध्न्याय नमः।।२२३।। ॐपिनाकपाणये नमः।।२२४।। ॐअपराजिताय नमः।।२२५।। ॐभुवनाधीश्वराय नमः।।२२६।। ॐकपालिने नमः।।२२७।। ॐविशाम्पतये नमः।।२२८।। ॐरुद्राय नमः।।२२९।। ॐवीरभद्राय नमः।।२३०।। ॐअश्विनीकुमाराभ्यां नमः।।२३१।।

वायव्य कोणे (रक्त कोष्ठे)—

ॐआवाहनाय नमः।।२३२।। ॐप्रवाहाय नमः।।२३३।। ॐउद्वाहनाय नमः।।२३४।। ॐसम्वहाय नमः।।२३५।। ॐविवहाय नमः।।२३६।। ॐपरिवहाय नमः।।२३७।। ॐपरिवाहनाय नमः।।२३८।। ॐधरायै नमः।।२३९।। ॐअद्भ्यो नमः।।२४०।। ॐअग्नये नमः।।२४१।। ॐवायवे नमः।।२४२।। ॐआकाशाय नमः।।२४३।।

पूर्वे (कृष्ण कोष्ठे)—

ॐहिरण्यनाभाय नमः।।२४४।। ॐपुष्पञ्जयाय नमः।।२४५।। ॐद्रोणाय नमः।।२४६।। ॐशृङ्गिणे नमः।।२४७।। ॐवादरायणाय नमः।।२४८।। ॐअगस्त्याय नमः।।२४९।। ॐमनवे नमः।।२५०।। ॐकश्यपाय नमः।।२५१।। ॐधौम्याय नमः।।२५२।। ॐभृगवे नमः।।२५३।। ॐवीतिहोत्राय नमः।।२५४।।

दक्षिणे (कृष्ण कोष्ठे)—

ॐमधुछन्दसे नमः।।२५५।। ॐवीरसेनाय नमः।।२५६।। ॐकृतवृष्णवे नमः।।२५७।। ॐअत्रये नमः।।२५८।। ॐमेधातिथये नमः।।२५९।। ॐअरिष्टनेमये नमः।।२६०।। ॐअङ्गिरसाय नमः।।२६१।। ॐइन्द्रप्रमादाय नमः।।२६२।। ॐइध्मबाहवे नमः।।२६३।। ॐपिप्पलादाय नमः।।२६४।। ॐनारदाय नमः।।२६५।।

पश्चिमे (कृष्ण कोष्ठे)—

ॐअरिष्टसेनाय नमः।।२६६।। ॐअरुणाय नमः।।२६७।। ॐसनकाय नमः।।२६८।। ॐसनन्दनाय नमः।।२६९।। ॐसनातनाय नमः।।२७०।। ॐसनत्कुमाराय नमः।।२७१।। ॐकपिलाय नमः।।२७२।। ॐकर्दमाय नमः।।२७३।। ॐमरीचये नमः।।२७४।। ॐक्रतवे नमः।।२७५।। ॐप्रचेतसे नमः।।२७६।।

उत्तरे (कृष्ण कोष्ठे)—

ॐउत्तमाय नमः।।२७७।। ॐदधीचये नमः।।२७८।। ॐश्राद्धदेवाय नमः।।२७९।। ॐगणेभ्यो नमः।।२८०।। ॐविद्याधरेभ्यो नमः।।२८१।। ॐअप्सरेभ्यो नमः।।२८२।। ॐसप्तयक्षेभ्यो नमः।।२८३।। ॐरक्षेभ्यो नमः।।२८४।। ॐगन्धर्वेभ्यो नमः।।२८५।।

ॐपिशाचेभ्यो नमः॥२८६॥ ॐगुह्यकेभ्यो नमः॥२८७॥

मण्डल मध्य ईशानात् वायव्ये पर्यन्त (कृष्णकोष्ठे)—

ॐसिद्धदेवेभ्यो नमः॥२८८॥ ॐऔषधीभ्यो नमः॥२८९॥

ॐभूतग्रामाय नमः॥२९०॥ ॐचतुर्विधभूतग्रामाय नमः॥२९१॥

ॐमनोजूतीति मन्त्रस्य प्रतिष्ठा पूर्वकं षोडशोपचारैः पूजनं कुर्यात्।

(षोडशोपचार से या उपलब्ध सामग्री से पूजा करें)

प्रार्थना—

त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन, त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा।
नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्तमस्माकमुन्मदसुरारि भवं नमस्ते।।

अनेन कृतेन पूजनेन गौरीतिलक मण्डलस्थ देवाः प्रीयन्ताम् न मम।

॥ इति हेमाद्रिगौरीतिलकमण्डलपूजनम् ॥

अथ श्रीदुर्गापूजनम्

देवि सम्मुखे शुद्धासने स्थिरचित्ते उपविश्य पूर्वोक्त प्रकारेण आचमनं प्राणायाम्य पवित्रकरणं शिखाबन्धनमासन शुद्ध्यादिकं यथा शक्ति विधाय स्वस्तिवाचनं मङ्गलश्लोकाश्च पठित्वा गणपत्यादि स्मरेत् सङ्कल्पं कुर्यात्।

सङ्कल्पम्-(यजमान पत्नी सहित दाहिने हाथ में रोली, चावल, पुष्प, दूर्वा, जल व द्रव्य लेकर संकल्प करें)-

यजमानसपत्नीक स्वदक्षिणहस्ते गन्धाक्षतपुष्पदूर्वाजलद्रव्यञ्चादाय—

ॐदेशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं करिष्यमाण अमुक कर्मणि एतत् मृणमयि वा पाषाण वा स्वर्णमयिदुर्गामूर्तौ अग्न्युतारणप्राण-प्रतिष्ठापूर्वक आवाहनं पूजनञ्च करिष्ये।

भैरवपूजनम्

पुष्पाणि गृहीत्वा ध्यानं कुर्यात्(यजमान हाथ में पुष्प लेकर निर्धारित आसन पर छोड़े)-

ध्यानम्—

ॐबाहु मे बलमिन्द्रिय ꣳ हस्तौ मेकर्म्मवीर्यम् आत्क्मा क्षत्रमुरोमम्।। ॐक्षां क्षीं क्षौं क्षं क्षः क्षेत्रपालाय नमः ॐक्षेत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि मात्वाहि ꣳ सीन्मा हि ꣳ सिः।।

ॐकर कलित कपालः कुण्डली दण्डपाणि,
तरुण तिमिर नीलो व्याल यज्ञोपवीतीः।
क्रतु समय सपर्यात् विघ्न विच्छेद हेतुः,
जयति बटुकनाथः सिद्धिद साधकानाम्।।
क्षैत्रपालान् नमस्यामि सर्वाऽरिष्ट निसूदनान्।
अस्य यागस्य सिद्ध्यर्थं पूजयाराधितन्मया।।

भैरवाय नमः।

ॐमनोजूतीति मन्त्रस्य प्रतिष्ठा पूर्वकं षोडशोपचारैः पूजनं कुर्यात्।
(षोडशोपचार से या उपलब्ध सामग्री से पूजा करें)

बलिदानम्—दधिमाषभक्तबलिं दधात्।

प्रार्थना—

यं यं यं रक्षरूपं दशदिशि वदनं भूमि कम्पायमानम्,
सं सं संहार मूर्ति शिर मुकुट जटा शेखरं चन्द्र विलम्बम्।
दं दं दं दीर्घकेशं विकृत नख मुखं चोर्ध्व रेखा कपालम्,
पं पं पं पापनाशं प्रणत पशुपतिं भैरवं क्षैत्रपालम्।।
अजारे पिशङ्गिला स्वा वित्कुरु पिशङ्गिलास।
आसकन्द मारेश सत्याहि पंथां विसर्पति।।
दुर्गाऽग्र बटुकाय विधा बुद्धि विलक्षण।
मण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तु आयुर्बल करासदा।।

अनेन पूजनेन बलिदानेन भैरव प्रीयताम् न मम।

सिंहपूजनम्

ध्यानम्—

हिमालयान् दत्त सिंह विपुल बलशोभितम्।
आवाम्यहं मृगराजः दुर्गा वाहनं पूजया।।

लब्धोपचारैः पूजनं कुर्यात्। अनेन पूजनेन सिंह प्रीयताम्, न मम।

अग्न्युतारणम् —

मूर्तिपात्रेनिधाय घृतेनाभ्यज्य उपरिदुग्धजलधारां कुर्यात्।(मूर्ति को पात्र में लेकर घृत लगाकर उपर दुग्धजल धारा करें)

तत्र मन्त्रा—

ॐसमुद्रस्य त्वाव कयाग्ने परिव्ययामसि। पावकोऽअस्मभ्य ঌ शिवोभव।।

नोट :—सम्पूर्ण अग्न्युतारण मन्त्रों के लिए पृष्ठ स० ३० देखें।

प्राणप्रतिष्ठा—

ॐमनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमम्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ঌ समिमं दधातु विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामों- ३ प्रतिष्ठ।। ॐएषवै प्रतिष्ठानाम यज्ञोयत्रै तेन यज्ञेन यज्ञन्तेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति।।

नोट :- सम्पूर्ण प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रों के लिए पृष्ठ सं० ३० देखें।

(प्रतिमा के हृदय पर अंगुठा रखते हुये उच्चारण करें)

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाश्चरन्तु च।
अस्यै देवस्त्वमर्चायै मामहेति च कश्चन्।।

(इसके बाद पन्द्रह बार प्रणव '**ॐ**' का उच्चारण करे)

ध्यानम्—

ॐविद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां,
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

ॐभूभुर्वः स्वः त्रिगुणात्मकशक्त्यै दुर्गा देव्यै नमः।

आवाहनम्—(आवाहन के लिए अक्षत छोड़े)

ॐहिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्त्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।
आगच्छ वरदे देवि सर्व कामार्थ साधिनि।
इमं घटं समारुह्य तिष्ठ त्वं जगदम्बिके।।
आगच्छ वरदे देवि दैत्य दर्प निषूदिनि।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शङ्कर प्रिये।।

कल्याण जननीं सत्या कामदां करुणाकराम्।
अनन्त शक्ति संपन्नां दुर्गामावाहयाम्यहम्।।

साङ्गाय, सपरिवाराय, सावरणाय, सायुधाय, सवाहनाय श्रीमहाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती त्रिगुणात्मिका शक्ति दुर्गा देव्यै नमः, आवाहयामि पूजयामि।

आसनम् —(आसन के लिए पुष्प छोड़े)

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।
तप्तकांचन वर्णाभां मुक्तामणि विराजिताम्।
अमलं कमलं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।।

पाद्यम् —(पाद्यार्थ जल अर्पण करें)

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्ति नाद प्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मादेवीर्जुषताम्।।
गङ्गादितीर्थ सम्भूतं गन्ध पुष्पादिभिर्युतम्।
पाद्यं ददाम्यहं देवी गृहाणाशु नमोऽस्तु ते।।

अर्घ्यम् —(गन्ध पुष्प मिले जल से अर्घ्य देवें)

कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलतीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।
सर्व गन्धसमायुक्तं पात्रे सम्पादितं मया।
अर्घ्यं गृहाण मद्दत्तं दुर्गादेवि नमोऽस्तु ते।।

आचमनीयम् —(आचमन के लिए जल अर्पण करें)

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं, श्रियं लोके देव जुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमीं शरणमहं प्रपद्ये, अलक्ष्मी में नश्यतां त्वां वृणे।।
सर्व लोकस्य या शक्तिर्ब्रह्मविष्णावादिभिः स्तुता।
ददाम्याचमनं दिव्यं दुर्गादेवि नमोऽस्तु ते।।

मधुपर्कम् —(दुर्गा देवी को मधुपर्क अर्पण करें तथा आचमन करावें)

ॐयन्मधुनो मधव्यं परम ४ रूपमन्नद्यम्। तेनाऽहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्यो ऽन्नादोऽसानि।।

स्नानम् —(जल से स्नान करावें)

आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो, वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु, या अन्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।

ॐगङ्गा सरस्वती रेवा पयोष्णी नर्मदा जलैः।
स्नानार्थं च मया देवी भक्त्यर्थं प्रतिगृह्यताम्।।

(क) पयस्नानम्—

ॐपयः पृथिव्यां पयऽओषधीषुपयो दिव्यंतरिक्षे पयोधाः। पयस्वती प्रदिशः सन्तुमह्यम्।। पयस्नानं समर्पयामि।

(ख) दधिस्नानम्—

ॐदधिक्राब्णो अकारिषंजिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखाकरत्प्रणआयू ౖ षितारिषत्।। दधिस्नानं समर्पयामि।

(ग) घृतस्नानम्—

ॐघृतं घृतपावानः पिबत व्वसां व्वसा पावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।।
घृतस्नानं समर्पयामि।

(घ) मधुस्नानम्—

ॐमधुवाताऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ౕ रजः मधु द्यौरस्तुनः पिता मधु मानोवनस्पति मधुमाँऽअस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः। मधु स्नानं समर्पयामि।

(ङ) शर्करास्नानम्—

ॐअपा ౖ रसमुद्वयस ౕ सूर्ये सन्त ౕ समाहितं। अपा ౖ रसस्ययो रसस्तंवो गृह्णाम्युत्तमुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्। शर्करा स्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—

ॐपञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः सरस्वती तु पञ्चधा सो देशे भवत्सरित।। मल्लापहारे पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि।

गन्धोदकस्नानम् —

ॐअ ౕ शुना ते अ ౕ शुः पृच्यतां परुषा परुः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः।। गन्धोदक स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम् —

ॐशुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽ

रुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्ण्णा यामाऽअवलिप्ता रौद्रानभोरूपाः पार्ज्जन्याः।।

शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

अभिषेकस्नानम् (देव्यथर्वशीर्ष)—

ॐसर्वे वै देवीमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवीति।।१।। साब्रवीत्-अहं ब्रह्मस्वरूपिणी। मत्तः प्रकृति पुरुषात्मकं जगत्। शून्यं चाशून्यं च।।२।।

अहमानन्दानानन्दौ। अहं विज्ञानाविज्ञाने। अहं ब्रह्माब्रह्मणी वेदितव्ये। अहं पञ्च भूतान्य पञ्च भूतानि। अहमखिलं जगत्।।३।। वेदोऽहमवेदोऽहम्। विद्याहमविद्याहम्। अजाहनजाहम्। अधश्चोर्ध्वं तिर्यक्चाहम्।।४।।

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि। अहमादित्यैरुतविश्वदेवैः। अहं मित्रावरुणा-वुभौविभर्मि। अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ।।५।। अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि। अहं विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि।।६।।

अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते। अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसुनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे। य एवं वेद। स दैवीं सम्पदमाप्नोति।।७।।

ते देवा अब्रुवन्—

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्।।८।।
तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्।
दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्यामहे ऽसुरान्नाशयित्र्यै ते नमः।।९।।
देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति।
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सष्टुतैतु।।१०।।
कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णावीं स्कन्द मातरम्।
सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम्।।११।।
महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।।१२।।
अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव।
तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृत बन्धवः।।१३।।
कामो योनिः कमला वज्रपाणिर्गुहा हसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः।
पुनर्गुहा सकला मायया च पुरूच्यैषा विश्वमातादिविद्योम्।।१४।।
एषाऽऽत्मशक्तिः। एषा विश्वमोहिनी। पाशाङ्कुशधनुर्बाणधरा। एषा

श्रीमहाविद्या। य एवं वेद स शोकं तरति।।१५।। नमस्ते अस्तु भगवति मातरस्मान् पाहि सर्वतः।।१६।।

सैषाष्टौ वसवः। सैषैकादश रुद्राः। सैषा द्वादशादित्याः। सैषाविश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च। सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाचा यक्षाः सिद्धाः। सैषा सत्त्वरजस्तमांसि। सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतींषि। कलाकाष्ठादिकाल रूपिणी। तामहं प्रणौमि नित्यम्।।

पापापहारिणीं देवीं भुक्तिमुक्ति प्रदायिनीम्।
अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शिवाम्।।१७।।
वियदीकार संयुक्तं वीतिहोत्र समन्तिम्।
अर्धेन्दु लसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम्।।१८।।
एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः शुद्ध चेतसः।
ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः।।१९।।
वाङ्माया ब्रह्मसूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम्।
सूर्योऽवामश्रोत्र बिन्दु संयुक्तष्टा तृतीयकः।
नारायणेन सम्मिश्रो वायुश्चाधरयुक् ततः।
विच्चे नवार्णकोऽर्णः स्यान्महदानन्ददायकः।।२०।।
हृत्पुण्डरीक मध्यस्थां प्रातः सूर्यसमप्रभाम्।
पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम्।
त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्त कामदुघां भजे।।२१।।
नमामि त्वां महादेवीं महाभय विनाशिनीम्।
महादुर्ग प्रशमनीं महाकारुण्य रूपिणीम्।।२२।।

यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया। यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता। यस्या लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्या। यस्या जननं नोपलभ्यते तस्मादुच्यते अजा। एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका। एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यते नैका। अत एवोच्यते अज्ञेयानन्ता लक्ष्याजैकानैकेति।।२३।।

मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी।
ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी।
यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता।।२४।।
तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम्।

नमामि भव भीतोऽहं संसारार्णव तारिणीम्।।२५।।

इदमथर्वशीर्षं योऽधीते स पञ्चाथर्वशीर्षजपफलमाप्नोति। इदमथर्वशीर्ष-मज्ञात्वा योऽर्चां स्थापयतिशतलक्षं प्रजप्त्वापि सोऽर्चा सिद्धिं न विन्दति। शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः।

दशवारं पठेद् यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते।
महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः।।२६।।

सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति। निशीथे तुरीयसन्ध्यायां जप्त्वा वाक्सिद्धिर्भवति। नूतनायां प्रतिमायां जप्त्वा देवतासांनिध्यं भवति। प्राणप्रतिष्ठायां जप्त्वा प्राणानां प्रतिष्ठा भवति। भौमाश्विन्यां महादेवीसंन्निधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति। स महामृत्युं तरति य एवं वेद। इत्युपनिषत्।।

शुद्धोदकस्नानम् —(शुद्ध जल से स्नान करावें)

ॐशुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्ण्णा यामाऽअवलिप्ता रौद्रानभोरूपाः पार्ज्जन्याः।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्व पापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं तुभ्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

वस्त्रम् — (वस्त्र अर्पण करें)

दिव्याम्बरं नूतनं हि क्षौमं त्वतिमनोहरम्।
दीयमानं मया देवि गृहाण परमेश्वरि।।
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिनां सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मिन् राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।

उपवस्त्रम् —(उपवस्त्र अर्पण करें)

ॐयुवा सुवासाः परिवीतऽआगात् स उश्रेयान् भवति जायमानः। तं धीरासः कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्यो३ मनसा देवयन्तः।।

कञ्चुकीमुपवस्त्रं च नाना रत्नैः समन्वितम्।
गृहाण मया दत्तं मङ्गले जगदीश्वरी।।

आभूषणम् —(आभूषण अर्पण करें)

रक्त कङ्कण वैदूर्य मुक्ताहार युतानि च।
सुप्रसन्नेन मनसा दत्तानि स्वीकुरुष्व मे।।

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वा न्निर्णुद मे गृहात्।।

रक्तचन्दनम् (गन्धं)— (कुमकुम व लालचन्दन का तिलक करें)

रक्त चन्दनसंमिश्रं परिजात समुद्भवम्।
मया दत्तं गृहाणाशु चन्दनं गन्ध संयुतम्।।
गन्ध द्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।

अक्षतम्— (अक्षत अर्पण करें)

ॐअक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रानविष्ठया मती योजान्विद्र ते हरी।।

ॐअक्षताश्च सुरश्रेष्ठे कुंकुमाक्ता सुशोभिता।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वरि।।

पुष्पाणि— (पुष्प अर्पण करें)

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूना रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।
नाना सुगन्ध संयुक्तं नाना पुष्प समन्वितम्।
पूजायां कुरु मे देवि पुष्पोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

बिल्वपत्रम् — (बिल्वपत्र अर्पण करें)

त्रिदलानि अखण्डानि बिल्वपत्राणि सुन्दरि।
गृहाण परया भक्त्या दुर्गा देवी नमोस्तु ते।।

सिन्दूरम् — (सिन्दूर अर्पण करें)

ॐसिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वात प्रमियः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्य धाराऽअरुषो न व्वाजी काष्ट्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।।

सिन्दूरं रक्तवर्णं च सिन्दूर तिलक प्रिये।
भक्त्या दत्तं मया देवि सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

अबीरगुलालम्— (अबीरगुलाल अर्पण करें)

ॐअहिरिव भोगैः पर्येति बाहु याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान पुमान्न पुमा ꣳ संपरिपातु विश्वतः।।

ॐअबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च।
अबीरेणार्चितो देव ततः शान्ति प्रयच्छमे।।

नानापरिमलद्रव्याणि(सौभाग्य द्रव्याणि)—(सौभाग्य द्रव्य अर्पण करें)

ॐश्वेत चूर्णं रक्त चूर्णं हरिद्रा कुंकुमान्वितैः।
नानापरिमल द्रव्यैः प्रीयतां परमेश्वरिः।।

सुगन्धिद्रव्यम्—(सुगन्धि द्रव्य अर्पण करें)

ॐत्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनं उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यो-र्मुक्षीयमामृतात्।।

ॐचम्पकाशोक वकुल मालती मोगरादिभिः।
वासितं स्निग्धता हेतु तेलं चारु गृह्यताम्।।

अङ्गपूजनम्

(दुर्गा जी के सभी अंगो पर रोली, चावल व पुष्प छोड़े)

ॐदुर्गायै नमः, पादौ पूजयामि।।१।। **ॐमहाकाल्यै नमः**, गुल्फौ पूजयामि।।२।।
ॐमङ्गलायै नमः, जानुनी पूजयामि।।३।। **ॐकात्यायन्यै नमः**, उरुं पूजयामि।।४।।
ॐभद्रकाल्यैनमः कटिं पूजयामि।।५।। **ॐकमलायै नमः**, नाभिं पूजयामि।।६।।
ॐशिवायै नमः, उदरं पूजयामि।।७।। **ॐक्षमायै नमः**, हृदयं पूजयामि।।८।।
ॐस्कन्दायैनमः, कण्ठं पूजयामि।।९।। **ॐमहिषासुरमर्दिन्यै नमः**, नेत्रे पूजयामि।।१०।।
ॐउमायै नमः, शिरः पूजयामि।।११।। **ॐविन्ध्यवासिन्यै नमः**, सर्वाङ्गं पूजयामि।।१२।।
ॐदैव्या दक्षिणे सिंहं पूजयामि।।१३।। **ॐदैव्या वामे** महिषं पूजयामि।।११।।

।। इति अङ्गपूजनम् ।।

धूपम्—(धूप करें)

ॐवनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्योगन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयम् प्रतिगृह्यताम्।।
कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।

दीपम्—(प्रत्यक्ष दीप दिखावें)

ॐआंज्यञ्च वर्ति संयुक्तं वह्निनायोजितं मया।
दीपं गृहाण देवेशि त्रैलोक्य तिमिरापहम्।।
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।

नैवेद्यम्—(प्रसाद अर्पण करें)

ॐशर्करा खण्ड खाद्यादि दधि क्षीर घृतादिभिः।
आहारैर्भक्ष्य भौज्यैश्च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टि पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जात वेदो मऽआवह।।

आचमनीयम्—(आचमन करावें)

ॐअति तृप्ति करं तोयं सुगन्धिं च पिबेच्छया।
त्वयि तृप्ति जगततृप्ति नित्य तृप्ते च महात्मनि।।

करोद्वर्तनकम्—(हस्त प्रक्षालन करावें)

ॐअ ६ शुना ते अ ६ शुः पृच्यतां परुषा परुः। गंधस्ते सोममवतु मदाय रसोऽअच्युतः।।

अखण्डऋतुफलम्—(सामयिक फल अर्पण करें)

ॐयाः फलिनीर्य्याऽअफला ऽअपुष्पा या च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूता-स्तानो मुञ्चन्त्व ६ हसः।।

ॐइदं फलं मया देवी स्थापितं पुरस्तास्तव।
तेन मे सफला वाप्तिर्भवे ज्जन्मनि जन्मनि।।

ताम्बुलम्—(पान सुपारी अर्पण करें)

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्।
ऐलादि चूर्ण संयुक्तं ताम्बुलं प्रतिगृह्यताम्।।
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जात वेदो म आवह।।

द्रव्यदक्षिणाम्—

ॐहिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्त पुण्य फलदमतः शान्ति प्रयच्छमे।।
तां मऽआवह जात वेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम्।।

श्रीफलार्पणम्—(सिन्दूरादि सौभाग्य द्रव्य सहित नारियल अर्पण करें)

यजमानपत्नी हस्तौ अखण्डश्रीफलं सौभाग्य द्रव्यञ्चादाय-

ॐरूपं देहि जयं देहि भाग्यं भगवती देहि मे।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामान् प्रयच्छ मे।।

अथ अष्टशक्तिपूजनम्

(दुर्गा जी के चारों ओर पूर्वादि क्रम से अष्टशक्तियों की पूजा करें)

ॐब्रह्माण्यै नमः।।१।। ॐमाहेश्वर्यै नमः।।२।। ॐकौमार्यै नमः।।३।। ॐवैष्णव्यै नमः।।४।। ॐवाराह्यै नमः।।५।। ॐनारसिंह्यै नमः।।६।। ॐऐन्द्र्यै नमः।।७।। ॐचामुण्डायै नमः।।८।।

अथ खड़्गादिशस्त्रपूजनम्

(दुर्गा जी के द्वारा धारण किये शस्त्रों की पूजा करें)

ॐवज्राय नमः॥१॥ ॐशक्तये नमः॥२॥ ॐदण्डाय नमः॥३॥ ॐखड़्गाय नमः॥४॥ ॐपाशाय नमः॥५॥ ॐअङ्कुशाय नमः॥६॥ ॐगदायै नमः॥७॥ ॐत्रिशूलाय नमः॥८॥ ॐपद्माय नमः॥९॥ ॐचक्राय नमः॥१०॥

प्रार्थना—

त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन,
त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा।
नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्त-
मस्माकमुन्मदसुरारि भवं नमस्ते।।

सिंहादुत्थाय खड़्गं ध धड़ धड़ धड़ः धावमाना भवानि,
दैत्यानां त्र्योटयन्ति त तड़ तड़ तड़ः त्र्योटयन्ति सिरांसि।
तेषां रक्तं बिपन्ति घ घुट घुट घुटः घोटयन्ति पिशाचान्,
पीत्वा पीत्वा हसन्ति ख खल खल खलः शाम्भवी मां पुनातु।।

राजोपचारान् (छत्रपूजनम्)—

ॐध्रुवाऽसि ध्रुवोऽयं यजमानोऽस्मिन्नायतने प्रजया पशुभिभूयात्। घृतेन द्यावापृथिवी पूर्येथामिन्द्रस्य छदिरसि विश्व जनस्य छाया।।

छत्रं देवि! जगद्धात्रि! धर्म वात प्रणाशनम्।
गृहाण हे महामाये ! सौभाग्यं सर्वदा कुरु।।

ॐछत्र देवाय नमः।

चामरपूजनम्—

ॐअहाव्यग्ने हविरास्येते स्रुचीव घृतं चम्बीव सोमः। वाजसनि रयिमस्मे सुवीरं प्रशस्तं धेहि यशसं वृहन्तम्।।

चामरं हे महादेवि ! चमरी पुच्छ निर्मितम्।
गृहीत्वा पापराशीनां खण्डनं सर्वदा कुरु।।

ॐचामर देवाय नमः।

यवाङ्कुरान् पूजनम्—

ॐहरित श्वेत द्वे वर्णे सर्व कामार्थ सिद्धये।
देहि मे सकलान् कामान् यवाङ्कुरान् नमोस्तु ते।।

ॐयवाङ्कुर देवाय नमः।

अनेन कृतेन पूजनेन त्रिगुणात्मिकाशक्त्येदुर्गादिव्यै प्रीयताम् न मम।

बटुकपूजनम्

ॐबाहु मे बलमिन्द्रिय ꣳ हस्तौ मेकर्म्मवीर्यम् आत्क्मा क्षत्रमुरोमम्।।

दुर्गाऽग्र बटुकाय विधा बुद्धि विलक्षण।
मण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तु आयुर्बल करासदा।।

पादप्रक्षालन पूर्वकं सफलदक्षिणां दत्वा तिलकाऽर्चनं कुर्यात्।

कुमारीपुजनम्

कुमारिका द्विवर्षा च त्रिवर्षा च त्रिमूर्तिका।
चतुर्वर्षा तु कल्याणी पञ्चवर्षा तु रोहिणी।
षट् वर्षा तु भवेत्काली सप्तवर्षा तु चण्डिका।।
अष्टवर्षा शांभवी तु दुर्गा च नवभिः स्मृता।
दशवर्षा सुभद्रेति नाम्ना तु परिरकीर्तिता।।
ॐमंत्राक्षरमयी लक्ष्मीं मातृणां रूपं धारिणीम्।
नवदुर्गाभि मां साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम्।।

इत्यावाह्य पाद्यगन्धाक्षतपुष्पवस्त्राभूषणादिभिर्वक्ष्यमाणेन कुमारीः संपूजयेत्।

प्रार्थना— नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्।।

कर्पूरार्तिक्यम्—ॐइद ꣳ हविः प्रजननम्मेऽअस्तु दशवीर ꣳ सर्व्वगण ꣳ स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्न्य भयसनि अग्निः प्रजाम्बहुलम्मे करोत्वन्नम्पयोरेतो ऽअस्मासुधत्त।।

पुष्पाञ्जलिम्—

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्ता गृहाण परमेश्वरि।।

श्री दुर्गाजी की आरती

जय अम्बे गौरी मैया, जय श्यामा गौरी।
तुमको निशदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी।।१।।जय अम्बे०
माँग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमदको।
उज्ज्वल से दो नैना, चन्द्रवदन नीको।।२।।जय अम्बे०
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै।
रक्त-पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै।।३।।जय अम्बे०
केहरि वाहन राजत, खड्ग खपर धारी।
सुर नर मुनिजन सेवत, तिनके दुःखहारी।।४।।जय अम्बे०
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे माती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योती।।५।।जय अम्बे०
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिसुर-घाती।
धुम्रविलोचन नैना, निशिदिन मदमाती।।६।।जय अम्बे०
चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे।।७।।जय अम्बे०
ब्रह्माणी, रुद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी।।८।।जय अम्बे०
चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूँ।
बाजत ताल मृदङ्गा, और बाजत डमरु।।९।।जय अम्बे०
तुम ही जगकी माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन के दुख हरता, सुख सम्पति करता।।१०।।जय अम्बे०
भुजा चार अति शोभित, वर मुद्रा धारी।
मनवाञ्छित फल पावत, सेवत नर-नारी।।११।।जय अम्बे०
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती।
(श्री) मालकेतु राजत, कोटिरतन ज्योती।।१२।।जय अम्बे०
(श्री)अम्बेजीकी आरति, जो कोई नर गावै।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावै।।१३।।जय अम्बे०

श्रीकाली जी आरती

मंगल की सेवा, सुन मेरी देवा, हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े।
पान सुपारी ध्वजा नारियल, ले ज्वाला तेरी भेंट धरे।।
सुन जगदम्बे, कर न विलम्बे, संतन के भण्डार भरे।
संतन प्रतिपाली, सदा खुशाली, जय काली कल्याण करे।।टेक।।
बुद्धि विधाता, तु जग माता, मेरा कारज सिद्ध करे।
चरण कमल का लिया आसरा, शरण तुम्हारी आन पड़े।।
जब जब भीड़ पड़े भक्तन पर, तब तब आय सहाय करे।
संतन प्रतिपाली०।।१।।

बार बार ते सब जग मोह्यो, तरुणी रूप अनूप धरे।
माता होकर पुत्र खिलावे, कहीं भार्या भोग करे।।
संतन सुखदायी, सदा सहायी, संत खड़े जयकार करे।
संतन प्रतिपाली०।।२।।

ब्रह्मा विष्णु महेश फल लिये, भेंट देन तेरे द्वार खड़े।
अटल सिंहासन बैठी माता, सिर सोने का छत्र फिरे।।
बार शनिश्चर, कुंकुम वरणी, जब लुंकड़ पर हुकुम करे।
संतन प्रतिपाली०।।३।।

खड्ग खपर त्रिशूल हाथ लिये, रक्तबीज का भस्म करे।
शुम्भ-निशुम्भ क्षण ही में मारे, महिषासुर को पकड़ दले।।
आदित वारी, आदि भवानी, जन अपने का कष्ट हरे।
संतन प्रतिपाली०।।४।।

कुपित होय कर दानव मारे, चण्ड-मुण्ड सब चूर करे।
जब तुम देखो दया रूप हो, पल में संकट दूर टरे।।
सौम्य स्वभाव धर्‍यो मेरी माता, जन की अर्ज कबूल करे।
संतन प्रतिपाली०।।५।।

सात वार की महिमा वरणी, सब गुण कौन बखान करे।
सिंह पीठ पर चढी भवानी, अटल भवन में राज करे।।
दर्शन पावें, मंगल गावें, सिद्ध साधक तेरी भेंट धरे।
संतन प्रतिपाली०।।६।।

ब्रह्मा वेद पढे तेरे द्वारे, शिवशंकर हरि ध्यान धरे।
इन्द्र कृष्ण तेरी करे आरती, चवँर कुबेर ढुलाय रहे।।
जय जननी जय मातु भवानी, अचल भवन में राज करे।
संतन प्रतिपाली०।।७।।

आरती श्री देवीजी की

अम्बे तु है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली।
तेरे ही गुण गावें भारती, ओ मैया हम सब उतारैं तेरी आरती।।टेक।।
तेरे भक्त जनों पर माता, भीड़ पड़ी है भारी माँ।
दानव दल पर टूट पड़ो माँ, करके सिंह सवारी।।
सौ सौ सिंहों से बलशाली, अष्टभूजाओं वाली,
दुष्टों का तुहीं ललकारती, ओ मैया०
माँ-बेटे का है इस जग में बड़ा ही निर्मल नाता।
पूत कपूत सुने है पर ना, माता सुनी कुमाता।।
सब पे करुणा दर्शाने वाली, अमृत बरसाने वाली,
दुखियों के दुखड़े निवारती, ओ मैया०
नहीं माँगते धन और दौलत, ना चाँदी ना सोना।
हम तो माँगे माँ चरणों में, एक छोटा सा कोना।।
सब के दुखड़े मिटाने वाली, लाज बचाने वाली,
सतियों के सत को संवारती, ओ मैया०
चरण शरण में खड़े तुम्हारी, ले पूजा की थाली।
वरद हस्त सर पर रखदो माँ, संकट हरने वाली।।
माँ भरदो भक्ति रस प्याली, अष्ट भुजाओं वाली,
भक्तो के कारज तु ही सारती, ओ मैया०

॥ इति दुर्गापूजनम् ॥

https://upayogibooks.com

अथ मण्डपपूजनप्रकरणम्

सङ्कल्पम्—(यजमान पत्नी सहित दाहिने हाथ में रोली, चावल, पुष्प, दूर्वा, जल व द्रव्य लेकर संकल्प करें)

यजमानसपत्नीकः . स्वदक्षिणहस्ते गन्धाक्षतपुष्पदूर्वाजलद्रव्यञ्चादाय— ॐ देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं करिष्यमाण अमुक-कर्माङ्गतया गणेशपूजापूर्वकमण्डपदेवतास्थापनादि च करिष्ये।

अथ षोडशस्तम्भपूजनम्

पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा स्तम्भपूजनं कुर्यात्(यजमान पुष्प व चावल लेकर ईशानादि प्रदक्षिणा क्रम में ब्रह्मादिदेवताओं का आवाहन व षोडशोपचार से पूजा करें)

(आचार्यकुण्ड व मध्यवेदी के समीप)

१. ब्रह्मणे(ईशानस्तम्भे मध्यवेदी समीपे) आचार्यकुण्ड के पास ईशानस्तम्भ व वल्ली—**ॐब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।।** ॐभूर्भुवः स्वः ब्रह्मा इहागच्छ इहतिष्ठ ॐब्रह्मणे नमः। नागमात्रे नमः।**(काष्ठवल्लीं सम्पूज्य)**

२. विष्णवे(आग्नेयस्तम्भे मध्यवेदी समीपे)आचार्यकुण्ड के पास आग्नेय-स्तम्भ व वल्ली— **ॐइदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ँ सुरेस्वाहा।।** ॐभूर्भुवः स्वः विष्णो इहागच्छ इहतिष्ठ ॐविष्णवे नमः। नागमात्रे नमः। **(काष्ठवल्लीं सम्पूज्य)**

३. रुद्राय(नैऋत्यस्तम्भे मध्यवेदी समीपे)आचार्यकुण्ड के पास नैऋत्य-स्तम्भ व वल्ली— **ॐनमस्ते रुद्रमन्यव ऽउतोत ऽइषवे नमः। बाहुभ्यां मुतते नमः।।** ॐभूर्भुवः स्वः रुद्र! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐरुद्राय नमः। नागमात्रे नमः। **(काष्ठवल्ली सम्पूज्य)**

४. इन्द्राय(वायव्यस्तम्भे मध्यवेदी समीपे)आचार्यकुण्ड के पास वायव्य-स्तम्भ व वल्ली— **ॐत्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣳ हवे हवे सुहव ꣳ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ꣳ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः।।** ॐभूर्भुवः स्वः इन्द्र! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ इन्द्राय नमः। नागमात्रे नमः।**(काष्ठवल्लीं सम्पूज्य)**

ततो बाह्यस्तम्भेषु ईशानकोणादारभ्य द्वादशस्तम्भपूजनम्—

(यजमान पुष्प व चावल लेकर ईशानादि प्रदक्षिणा क्रम में मण्डप के बाहर द्वादश

स्तम्भों व काष्ठवल्लियों का षोडशोपचार से पूजन करें)

१. सूर्याय(ईशानबाह्यस्तम्भे)मण्डप के बाहर ईशानस्तम्भ व वल्ली पूजन— **ॐआकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।** ॐभूर्भुवः स्वः सूर्य! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐसूर्याय नमः। नागमात्रे नमः। **(काष्ठवल्लीं सम्पूज्य)**

२. गणेशाय (ईशानपूर्वयोरन्तरालस्तम्भे) मण्डप के बाहर ईशान व पूर्व के मध्य स्तम्भ— **ॐगणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्।।** ॐ भूर्भुवः स्वः गणपति! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐगणपतये नमः। नागमात्रे नमः। **(काष्ठवल्लीं सम्पूज्य)**

३. यमाय (पूर्वाग्न्योरन्तरालस्तम्भे) मण्डप के बाहर पूर्व व आग्नेय के मध्य स्तम्भ— **ॐयमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे।।** ॐ भूर्भुवः स्वः यम! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ यमाय नमः। नागमात्रे नमः। **(काष्ठवल्ली सम्पूज्य)**

४. शेषाय (आग्नेयकोणस्तम्भे) मण्डप के बाहर आग्नेयकोणस्तम्भ व वल्ली पूजन— **ॐनमोऽस्तु सर्पेभ्यो येके च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।** ॐभूर्भुवः स्वः शेष! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ शेषाय नमः। नागमात्रे नमः। **(काष्ठवल्लीं सम्पूज्य)**

५. स्कन्दाय (आग्नेयदक्षिणयोरन्तरालस्तम्भे)मण्डप के बाहर आग्नेय-दक्षिण के मध्य स्तम्भ— **ॐयदक्रन्दः प्रथमञ्जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्।।** ॐभूर्भुवः स्वः स्कन्द! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐस्कन्दाय नमः। नागमात्रे नमः। **(काष्ठवल्लीं सम्पूज्य)**

६. वायवे (दक्षिणनैर्ऋत्योरन्तरालस्तम्भे) मण्डप के बाहर दक्षिणनैर्ऋत्य के मध्य स्तम्भ— **ॐव्वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि नियुत्वान्त्सोमपीतये।।** ॐभूर्भुवः स्वः वायु! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐवायव्ये नमः। नागमात्रे नमः। **(काष्ठवल्लीं सम्पूज्य)**

७. सोमाय (नैर्ऋतिस्तम्भे) मण्डप के बाहर नैर्ऋत्य स्तम्भ पूजनम्— **ॐआ प्यायस्व समेतु ते व्विश्वतः सोमव्वृष्ण्यं। भवाव्वाजस्य सङ्गथे।।** ॐभूर्भुवः

स्वः सोम! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐसोमाय नमः। नागमात्रे नमः।**(काष्ठवल्लीं सम्पूज्य)**

८. वरुणाय (नैर्ऋत्यपश्चिमयोरन्तरालस्तम्भे) मण्डप के बाहर नैर्ऋत्यपश्चिम मध्य स्तम्भ— **ॐतत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो व्वरुणेह बोद्ध्युरुश ६ समानऽआयुः प्रमोषीः।।** ॐभूर्भुवः स्वः वरुण! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐवरुणाय नमः। नागमात्रे नमः।**(काष्ठवल्लीं सम्पूज्य)**

९. अष्टवसुभ्यो (पश्चिमवायव्ययोरन्तरालस्तम्भे)मण्डप के बाहर पश्चिम-वायव्य मध्यस्तम्भ— **ॐव्वसोः पवित्रमसि शतधारं व्वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शत धारेण सुप्वा कामधुक्षः।।** ॐभूर्भुवः स्वः वसव! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐअष्टवसुभ्यो नमः। नागमात्रे नमः।**(काष्ठवल्लीं सम्पूज्य)**

१०. धनदाय (वायव्यस्तम्भे) मण्डप के बाहर वायव्यस्तम्भ पूजनम्—

ॐव्वय ६ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः धनद! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐधनदाय नमः।

११. बृहस्पतये (वायव्योत्तरयोरन्तरालस्तम्भे)मण्डप के बाहर वायव्य उत्तर मध्यस्तम्भ— **ॐबृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छ वस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रं।।** ॐभूर्भुवः स्वः बृहस्पति! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐबृहस्पतये नमः। नागमात्रे नमः।**(काष्ठवल्लीं सम्पूज्य)**

१२. विश्वकर्मणे (उत्तरेशानयोरन्तरालस्तम्भे)मण्डप के बाहर उत्तर ईशान मध्यस्तम्भ— **ॐविश्वकर्मन्हविषा व्वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्यम्। तस्मै व्विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथा सत्।।** ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मा! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐविश्वकर्मणे नमः। नागमात्रे नमः।**(काष्ठवल्लीं सम्पूज्य)**

॥ इति षोडशस्तम्भपूजनम् ॥

अथ तोरणपूजनम्

पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा पूर्वादिद्वारतोरणपूजनं कुर्यात्—(यजमान पुष्प व चावल लेकर पूर्वादि प्रदक्षिणा क्रम में सुदृढादितोरणों व वेदाधिष्ठाताओं का आवाहन तथा षोडशोपचार से पूजा करें)

१. पूर्वे सुदृढतोरणाय(ऋग्वेदाय)**आश्वत्थं सुदृढनामकं सिन्दूरसदृशं महेन्द्रपर्वतयुतं शङ्खाङ्कितं तोरण न्यस्त**(पूर्व में अश्वत्थ से बना सुदृढ नामक, सिन्दूर के समान वर्ण, महेन्द्रपर्वत व शंख के निशान से युक्त तोरण की पूजा करें)—

ॐअग्निमीळेपुरोहितं यज्ञस्यदेवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।। ॐ ऋग्वेदाधिष्ठिताय सुदृढतोरणाय नमः। ॐकृतयुगाय नमः। ॐराहवे नमः। ॐबृहस्पते नमः। अत्रैकः कलशः स्थाप्यः। (एक कलश की स्थापना करके कलश पर नारियल रखकर उसपर ध्रुव का आवाहन व पूजा करें) **ॐध्रुवाय नमः।**

२. दक्षिणे विकटतोरणाय (यजुर्वेदाय)**औदुम्बरं विकटनामकं धुम्रवर्णं विन्ध्यगिरियुतं चक्राङ्कितं तोरणं न्यस्त**(पश्चिम में औदुम्बर से बना विकट नामक, धूएँ के समान वर्ण, विन्ध्यगिरि व चक्र के निशान से युक्त तोरण की पूजा करें)—

ॐइषे त्वोर्जे त्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्व मघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा व स्तेन ईशत माघश सो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात् बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि।। ॐयजुर्वेदाधिष्ठिताय विकटतोरणाय नमः। ॐत्रेतायुगाय नमः। ॐसूर्याय नमः। ॐअङ्गारकाय नमः। अत्रैकः कलशः स्थाप्यः। (एक कलश की स्थापना करके कलश पर नारियल रखकर उसपर धरा का आवाहन व पूजा करें)**ॐधरायै नमः।**

३. पश्चिमे सुभीमतोरणाय (सामवेदाय)**प्लाक्षं सुभीमनामाख्यं स्वर्णसदृशं गन्धमादनपर्वतयुतं गदाङ्कितं तोरण न्यस्त**(पश्चिम में प्लास से बना सुभीम नामक, सोने के समान, गन्धमादनपर्वत व गदा के निशान से युक्त तोरण की पूजा करें)—

ॐअग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सु बर्हिषि।। ॐसामवेदाधिष्ठिताय सुभीमतोरणाय नमः। ॐद्वापरयुगाय नमः। ॐशुक्राय नमः। ॐबुधाय नमः। अत्रैकः कलशः स्थाप्यः।(एक कलश की स्थापना करके कलश पर नारियल रखकर उसपर वाक्पति का आवाहन व पूजा करें) **ॐवाक्पतये नमः।**

४. उत्तरे सुप्रभतोरणाय(अथर्ववेदाय)**वाटं सुप्रभनामकं स्फटिकसदृशं हिमपर्वतयुतं पद्मांकितं तोरणं न्यस्त**(उत्तर में वटवृक्ष से बना सुप्रभ नामक, स्फटिक के समान, हिमपर्वत व पद्म के निशान से युक्त तोरण की पूजा करें)—

ॐशन्नो देवीरभीष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः।। ॐअथवेदाधिष्ठिताय सुप्रभतोरणाय नमः। ॐकलियुगाय नमः। ॐसोमाय नमः। ॐकेतवे नमः। ॐशनैश्चराय नमः। अत्रैकः कलशः स्थाप्यः। (एक कलश की स्थापना करके कलश पर नारियल रखकर उसपर विघ्नेश का आवाहन व पूजा करें) **ॐविघ्नेशाय नमः।**

॥ इति तोरणपूजनम् ॥

अथ दिक्पालद्वारशाखाश्च पूजनम्

पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा दशदिक्पालद्वारशाखाश्च पूजनं कुर्यात्—(यजमान पुष्प व चावल लेकर पूर्वादि प्रदक्षिणा क्रम में कलश स्थापित करके इन्द्रादि दिक्पालों व द्वारशाखाओं का आवाहन व सदीप बलि प्रदान करके षोडशोपचार से पूजाकरें) प्रत्येक द्वार पर दो-दो कलश अन्य स्थानों एक- एक कलश स्थापित करके द्वार शांखाओं का पूजन करें

१. इन्द्राय(पूर्वे)- पूर्व में दो कलश स्थापित करके इन्द्र, ऐरावतदिग्गज व ऋग्वेदीया का वरण करें—

ॐत्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣳ हवे हवे सुहव ꣳ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ꣳ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः।। ॐभूर्भुवः स्वः इन्द्र! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ इन्द्राय नमः। इन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकायैतं सदीपमाषभक्तबलिं समर्पयामि। **ॐऐरावतदिग्गजाय नमः।**

ऋग्वेंदीयावरणम्—

ऋग्वेदः पद्मपत्राक्षो गायत्रः सोमदैवतः।
अत्रिगोत्रस्तु विप्रेन्द्र ऋत्विक् त्वं मे मखे भव।।इति प्रार्थ्य।

ॐअग्निमीळेपुरोहितं यज्ञस्यदेवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।। गन्धादिना पूजयेत्।

पीतपताकाध्वजापूजनम्—

ॐआशुः शिशानो वृषभोनभीमोघनाघनः क्षोभणश्चरषणीनाम्। सङ्क्रन्दनो निमिषऽएकवीरः शत ꣳ सेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः।।

द्वारशाखा—

दक्षिणे-**ॐधात्रे नमः।** उत्तरे-**ॐविधात्रे नमः।** उर्ध्वं-**ॐद्वाराश्रियै नमः। ॐगणपतये नमः।** तदुपरि-**ॐवास्तुपुरुषाय नमः।** अधो-**ॐदेहल्यै नमः।** वामस्तम्भे-**ॐगणेशाय नमः।** दक्षिणस्तम्भे-**ॐस्कन्दाय नमः।** कलशद्वये-**ॐगंगाय नमः। ॐयमुनाय नमः।** इति गन्धादिना सम्पूज्य।

२. अग्नये(आग्नेयां)- आग्नेयकोण में कलश स्थापित करके अग्नि, पुण्डरीक व छागरक्तध्वजा पताका की पूजा करें—

ॐअग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२ आ सादयादिह।। ॐभूर्भुवः स्वः अग्नि! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐअग्नये नमः। अग्नये साङ्गाय सपरिवाराय सायधाय सशक्तिकायैतं सदीपमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

कलशोपरि-ॐपुण्डरीकाय नमः।ॐअमृताय नमः। गन्धादिना पूजयेत्।

३. यमाय(दक्षिणे)- दक्षिण में दो कलश स्थापित करके यम, वामनाख्य-दिग्गज, कृष्णाध्वजापताका व यजुर्वेदीयद्वारपालों का वरण करें—

ॐयमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे।। ॐभूर्भुव: स्व: यम! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ यमाय नम:। यमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकायैतं सदीपमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

ॐवामनाख्यदिग्गजाय नमः।

यजुर्वेदीयावरणम्—

कातराक्षो यजुर्वेदस्त्रैष्टुभोविष्णुदैवतः।
काश्यपेयस्तु विप्रेन्द्र ऋत्विक् त्वं मे मखे भव।।इति प्रार्थ्य।

ॐइषे त्वोर्जे त्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्व मघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा व स्तेन ईशत माघश ८ सो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि।। गन्धादिना पूजयेत्।

द्वारशाखा—

वामे-**बलाय नमः।** दक्षिणे-**सबलाय नमः।** उर्ध्वे-**श्रियै नमः। गणपतये नमः।** अधो-**देहल्यै नमः। वास्तुपुरुषाय नमः।** वामस्तम्भे- **पुष्पदन्ताय नमः।** दक्षिणस्तम्भे-**कपर्दिने नमः।** कलशद्वये-**गोदावर्यै नमः। कृष्णायै नमः।** इति गन्धादिना सम्पूज्य।

४. निर्ऋतये(नैर्ऋत्यां)—नेर्ऋत्यकोण में कलश स्थापित करके निर्ऋति, कुमुद, दुर्ज्जय व नीलवर्णध्वजा पताका की पूजा करें—

ॐअसुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्म-दिच्छसात इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।।

ॐ भूर्भुव: स्व: निर्ऋति! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐनिर्ऋतये नम:। निर्ऋतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकायैतं सदीपमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

कलशोपरि-ॐकुमुदाय नमः। दुर्ज्जनाय नमः। गन्धादिना पूजयेत्।

५. वरुणाय(पश्चिमे)- पश्चिम में दो कलश स्थापित करके मकरस्थ हाथ में पाश लिए शुक्लवर्ण किरीट धारण किये हुये वरुण, अञ्जनाख्यदिग्गज, श्वेतध्वजा-पताका व सामवेदीयद्वारपालों का वरण करें—

ॐतत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेड-मानो व्वरुणेह बोदध्युरुश ८ समानऽआयुः प्रमोषीः।। ॐभूर्भुव: स्व: वरुण!

इहागच्छ इह तिष्ठ ॐवरुणाय नमः। वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकायैतं सदीपमाषभक्तबलिं समर्पयामि। **ॐअञ्जनाख्यदिग्गजाय नमः।**

सामवेदीयावरणम्—

सामवेदस्तु पिङ्गाक्षो जागतः शक्रादैवतः।
शरद्वाजस्तु विप्रेन्द्र ऋत्विक् त्वं मे मखे भव।।इति प्रार्थ्य।

ॐअग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सु बर्हिषि।। गन्धादिना पूजयेत्।

द्वारशाखा—

वामे-**जयाय नमः।** दक्षिणे-**विजयाय नमः।** उर्ध्वं-**श्रियै नमः। गणपतये नमः।** अधो-**देहल्यै नमः। वास्तुपुरुषाय नमः।** वामस्तम्भे-**नन्दिने नमः।** दक्षिणस्तम्भे-**चन्द्राय नमः।** कलशद्वये-**रेवायै नमः। नर्मदायै नमः।** इति गन्धादिना सम्पूज्य।

६. वायवे(वायव्यां)-वायव्यकोण में नारियल सहित कलश स्थापित करके मृग पर आरूढ धुम्रवर्ण चित्रवस्त्र धारण किये हुये युवा वायु व धुम्रवर्णध्वजा पताका की पूजा करें—

ॐतत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेड-मानो व्वरुणेह बोद्ध्युरुश ॆ समानऽआयुः प्रमोषीः।।

ॐभूर्भुवः स्वः वरुण! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐवरुणाय नमः। वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकायैतं सदीपमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

कलशोपरि-ॐवरुणाय नमः। अपाम्पतये नमः। गन्धादिना पूजयेत्।

७. कुबेराय(उत्तरे) उत्तर में दो कलश स्थापित करके नरयुतविमान पर आरूढ हाथ में वरगदा लिए हरितवर्ण मुकुट धारण किये हुये महाकाय व महाकाय वरुण, सार्वभौमदिग्गज, श्वेत या हरितध्वजापताका व अथर्ववेदीयद्वारपालों का वरण करें—

ॐव्वय ॆ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।।

ॐभूर्भुवः स्वः कुबेर! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐकुबेराय नमः। कुबेराय (सोमाय)साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकायैतं सदीपमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

ॐसार्वभौमदिग्गजाय नमः।

अथर्ववेदीयावरणम्—

बृहन्नेत्रोऽथर्ववेदो ह्यनुष्टुब्रुद्रदैवतः।
वैशम्पायन विप्रेन्द्र ऋत्विक् त्वं मे मखे भव।।इति प्रार्थ्य।

ॐशन्नो देवीरभीष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्त्रवन्तु नः।।

गन्धादिना पूजयेत्।

द्वारशाखा—

वामे-**चण्डाय नमः।** दक्षिणे-**प्रचण्डाय नमः।** उर्ध्वं-**द्वारश्रियै नमः। गणपतये नमः।** अधो-**देहल्यै नमः। वास्तुपुरुषाय नमः।** वामस्तम्भे-**महाकालाय नमः।** दक्षिणस्तम्भे-**भृङ्गिणे नमः।** कलशद्वये- **वारुण्यै नमः। वेण्यै नमः।**

इति गन्धादिना सम्पूज्य।

८. ईशानाय(ऐशान्यां)—ईशानकोण में नारियल सहित कलश स्थापित करके बैल पर आरूढ शुक्लवर्ण हाथों में श्रेष्ठत्रिशूल धारण किये हुये ईशान, सफेद व पंचवर्णध्वजा पताका की पूजा करें—

ॐतमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्व मवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्ध्यः स्वस्तये।।

ॐभूर्भुव: स्व: ईशान! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐईशानाय नम:। ईशानाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकायैतं सदीपमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

कलशोपरि-ॐसुप्रतीकाय नमः। मङ्गलाय नमः। गन्धादिना पूजयेत्।

९. ब्रह्मणे(ईशानपूर्वमध्ये) ईशानकोण में कलश स्थापित करके रक्तवर्ण दाहिने हाथ में अक्षसूत्र व मुठ्ठी में कुश तथा बाँये हाथ में स्रुवकमण्डलु धारण किये हुये चतुर्मुख ब्रह्मा, रक्तवर्णध्वजा पताका की पूजा करें—

ॐअस्म्मे रुद्रा मेहना पर्व्वतासो वृत्रहत्यें भरहूतौ सजोषाः। यः श ६ सते स्तुवते धायिपज्ज्र ऽइन्द्र ज्येष्ठा ऽअस्म्माँ२ ऽअवन्तु देवाः।। ॐभूर्भुव: स्व: ब्रह्मा! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ ब्रह्मणे नम:। ब्रह्मणे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकायैतं सदीपमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

कलशोपरि-ॐब्रह्मणे नमः। वरुणाय नमः। गन्धादिना पूजयेत्।

१०. अनन्ताय (नैर्ऋत्यपश्चिममध्ये) नैर्ऋत्यपश्चिम मध्य में कलश स्थापित करके नीलवर्ण, दाहिने हाथों में पद्म व शंख धारण किये हुये अनन्त, धुम्र या श्वेतवर्णध्वजा पताका की पूजा करें—

ॐस्योना पृथिवी नो भवा नृक्षरानिवेशनी। यच्छा नः शर्म्म सप्प्रथाः।। ॐ भूर्भुव: स्व: अनन्त! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ अनन्ताय नम:। ब्रह्मणे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकायैतं सदीपमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

कलशोपरि-ॐअनन्ताय नमः। वरुणाय नमः। गन्धादिना पूजयेत्।

११. महाध्वजाय (ऐशान्यां) ईशानकोण में दश या सोलह हाथ लम्बाई का दण्ड लेकर उसमें ऊँचाई एक हाथ व चौड़ाई तीन हाथ विस्तार का पांच रंगो के महाध्वज को ईशानकोण में स्थापित करके पूजा करें—

ॐइन्द्रस्यवृष्णो वरुणस्यराज्ञ आदित्यानांमरुता ꣳ शर्द्धउग्रम्। महा-मनसाम्भुवन च्यवानाघोषोदेवानां जयतामुदस्थात्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ इन्द्राय नमः।

ॐब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मा! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ ब्रह्मणे नमः।

ॐवास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणां सन्नं सौम्यानां द्रप्सोभत्ता पुरां शाश्वती ना मिक्षे मुनीनां सखा।।

ॐभूर्भुवः स्वः स्थम्भ! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐस्थम्भाय नमः। गन्धादिभिः सम्पूज्य।

ततः पूर्वस्यां दिशि मण्डपाद्बहिः किञ्चिद्भूमिमुपलिप्य तत्र उपविश्य—

(तत्पश्चात् मण्डप के बाहर पूर्व में कुछ भूमि लीपकर वहाँ हाथ में पुष्प व चावल लेकर आवाहन करें)—

ॐमण्डपषोडशस्तम्भेषु सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।। ॐवंशेषु किन्नरेभ्यो नमः।। ॐपृष्ठे पन्नगेभ्यो नमः।। ॐत्रैलोक्यस्थस्थावरभूतेभ्यो नमः।। त्रैलोक्यस्थेभ्य चरेभ्यो भूतेभ्यो नमः।। ब्रह्मणे नमः।। विष्णवे नमः।। देवेभ्यो नमः।। दानवेभ्यो नमः।। गन्धर्वेभ्यो नमः।। यक्षेभ्यो नमः।। राक्षसेभ्यो नमः।। पन्नगेभ्यो नमः।। गोभ्यो नमः।। ऋषिभ्यो नमः।। मनुष्यभ्यो नमः।। देवमातृभ्यो नमः।।

गन्धादिभिः सम्पूज्य। सदीपमाषभक्तबलीं दद्यात्।

प्रार्थना—

त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि च।
ब्रह्मविष्णुशिवैः सार्द्ध रक्षां कुर्वन्तु ते सदा।।
देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः।
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च।।
सर्वेममाध्वरे रक्षां प्रकुर्वन्तु मुदान्विताः।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च क्षेत्रपालो गणैः सह।।
रक्षन्तु मण्डपं सर्वे घ्नन्तु रक्षांसि सर्वतः।

तत्पश्चात् आचमन करके हाथ व पैर धोकरके मण्डप में प्रवेश करें तथा सभी ब्राह्मणों का वरण व पूजा करें।

॥ इति मण्डपपूजनम् ॥

यज्ञ प्रकरणम्

अथ कुण्डपूजन प्रयोग

यजमानो ऽग्न्यायतनाद्दक्षिणत उपविश्य, आचार्य कुण्ड पश्चिम उपविश्य आचम्य प्राणायाम्य गौरसर्षपान् विकीर्य कुण्डं प्रोक्ष्य सङ्कल्पं कुर्यात्।

सङ्कल्पम्—(यजमान हस्ते गन्धाक्षतपुष्पजलादीनि गृहीत्वा)

अद्येत्यादिदेशकालौ संकीर्त्य० अमुकदेवताया अमुककर्मण्याग्नि प्रतिष्ठां करिष्ये, तदङ्गतया समार्जनमेखलायोनि कुण्डदेवता स्थापनं पूजनञ्च करिष्ये।

कुशौदकेन कुण्डं प्रोक्ष्य।

कुण्डपूजनम्-(हाथ में पुष्पाक्षत लेकर आवाहन करें)

ॐआवाहयामि तत्कुण्डं विश्वकर्म विनिर्मितम्।
शरीरं यच्च ते दिव्यमग्न्याधिष्ठानमद्भुतम्।।

ॐकुण्डाय नमः। गन्धादिभिः सम्पूज्य।

प्रार्थना—

ये च कुण्डे स्थिता देवाः कुण्डाङ्गे या च देवताः।
ऋद्धिं यच्छन्तु ते सर्वे यज्ञसिद्धिं मुदान्विताः।।
हे कुण्ड तव निर्माणं रचितं विश्वकर्मणा।
अस्माकं वाञ्छितां सिद्धिं यज्ञसिद्धिं ददातु भो।।

विश्वकर्मापूजनम्(कुण्डमध्ये)—

विनियोग—ॐविश्वकर्मन्निति मन्त्रस्य भौवन ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो विश्वकर्मादेवता विश्वकर्मा पूजने विनियोगः।

ॐविश्वकर्मन्हविषा व्वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्यम्। तस्मै व्विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथा सत्।। उपयामगृहीतो सीन्द्रायत्वा विश्वकर्मण एषते योनिरिंद्रायत्वा व्विश्वकर्मणे।।

ॐविश्वकर्मणे नमः। चन्दनादिभिः सम्पूज्य।

प्रार्थना—

अज्ञानाज्ज्ञानतो वापि दोषाः स्युः खननोद्भवाः।
नाशाय त्वं हि तान्सर्वान्विश्वकर्मन्नमोस्तु ते।।

मेखला पूजनम्(कुण्डोपरि)—

विष्णु पूजनम् (उपरिश्वेत मेखलायां)—

विनियोग—ॐइदं विष्णुरितिमन्त्रस्य मेधातिथि ऋषिः गायत्री छन्दः विष्णुर्देवता विष्णु पूजने विनियोगः।

ॐइदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम्। समूढमस्य पा ँ सुरेस्वाहा।। ॐविष्णवे नमः। चन्दनादिभिः सम्पूज्य।

प्रार्थना—

विष्णो यज्ञपते देव दुष्ट दैत्य निषुदन।
विभो यज्ञस्य रक्षार्थं कुण्डे सन्निहितोभव।।

ब्रह्मा पूजनम् (मध्य रक्तवर्ण मेखलायां)—

विनियोग— ॐब्रह्मयज्ञानमिति मन्त्रस्य विवस्वानृषिस्त्रिटुप् छन्दः ब्रह्मादेवता ब्रह्म पूजने विनियोगः।

ॐब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचोवेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।। ॐब्रह्मणे नमः। चन्दनादिभिः सम्पूज्य।

प्रार्थना—

ॐहंस पृष्ठ समारूढ देव देव गणावृत।
रक्षार्थं मम यज्ञस्य कुण्डेऽस्मिन्सन्निधौ भव।।

रुद्र पूजनम् (अधोकृष्ण मेखलायां)—

विनियोग—ॐइदं नमस्ते रुद्र मन्यव इतिमन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः गायत्री छन्दः रुद्रो देवता रुद्रपूजने विनियोगः।

ॐनमस्ते रुद्रमन्यव ऽउतोत ऽइषवे नमः। बाहुभ्यां मुतते नमः।। ॐरुद्राय नमः। चन्दनादिभिः सम्पूज्य।

प्रार्थना—

ॐ गंगाधर महादेव वृषारूढ महेश्वर।
आगच्छ भगवन्रुद्र कुण्डेऽस्मिन्सन्निधौ भव।।

योनि पूजनम्—

विनियोग— ॐइदं क्षत्रस्योनिरितिमन्त्रस्य विवस्वानृषिः द्विपदागायत्री छन्दः योनिर्देवता योनिपूजने विनियोगः।

ॐक्षेत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि मात्वाहि ६ सीन्मा हि ६ सिः।। ॐयोन्ये नमः। गन्धादिभिः सम्पूज्य।

प्रार्थना—

ॐपशवः पक्षिण सर्वे संसरन्ति यतो भुवि।
योनिरित्येव विख्याता जगदुत्पतिहेतुका।।
मनोभव युता देवी रति सौख्य प्रदायिनि।
मोयन्ती सुरान्सर्वाञ्जगद्धात्रि नमोस्तु ते।।

कण्ठ पूजनम्—

विनियोग—ॐनीलग्रीवा इति मन्त्रस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः रुद्रोदेवता कण्ठपूजने विनियोगः।

ॐनीलग्रीवाः शितिकण्ठादिव ६ रुद्राऽउपश्रिताः। तेषा ६ं सहस्त्र योजनेव धन्वानितन्मसि।। ॐकण्ठाय नमः। चन्दनपुष्पादिभिः सम्पूज्य।

प्रार्थना—

ॐकण्ठ मंङ्गल रूपेण सर्व कण्ठे प्रतिष्ठितः।
परितो मेखलास्त्वत्तो रचिता विश्वकर्मणा।।

नाभि पूजनम् (कुण्ड मध्ये)—

विनियोग— ॐनाभिर्मेति मन्त्रस्य प्रजापति ऋषिः महापंक्ति छन्दो रुद्रो देवता नाभिपूजने विनियोगः।

ॐनाभिर्मेचितं विज्ञानं पायुर्मे पचितिर्भसत्। आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभग्यं पसः। जंघाभ्यां पदभ्यां धर्मोस्मिविशिराजा प्रतिष्ठितः।।

ॐनाभ्यै नमः। चन्दनपुष्पादिभिः सम्पूज्य।

प्रार्थना—

ॐनाभे त्वं कुण्ड मध्ये तु देवैः सह प्रतिष्ठिता।
अतस्त्वं पूजिता देवीं शुभदा ऋद्धिदा भव।।

वास्तु पूजनम् (नैऋत्य कोणे कुण्ड मध्ये)—

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, J

विनियोग— ॐवास्तोष्पतेतिमन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः वास्तु-देवता वास्तुपूजने विनियोगः।

ॐवास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वा वेशोऽअनमीवो भवानः। यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्वशन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।। वास्तु पुरुषाय नमः।

चन्दनपुष्पादिभिः सम्पूज्य। वास्तु पुरुषाय इमं बलिं समर्पयामीति बलिं दत्वा प्रार्थयेत्।

प्रार्थना -

ॐअस्य देहे स्थिता क्षोणी ब्रह्माण्डं विश्वमण्डलम्।
व्यापिनं भीमरूपं च सुरूपं विश्वरूपिणम्।
पितामह सुतो मुख्यस्तुभ्यं वास्तुपते नमः।।

सप्तजिह्वा पूजनम्—

ॐहिरण्यायै नमः।।१।। ॐगगनायै नमः।।२।। ॐरक्तायै नमः।।३।। ॐकृष्णायै नमः।।४।। ॐसुप्रभायै नमः।।५।। ॐबहुरूपायै नमः।।६।। ॐअतिरिक्तायै नमः।।७।। ॐसप्तजिह्वायै नमः। गन्धपुष्पादिभिः सम्पूज्य।

अन्य—(कई आचार्यों के मतानुसार कुण्ड के मध्ये इन देवताओं का भी आवाहन व पूजन करे)

ॐब्रह्मणे नमः।।१।। ॐविष्णवे नमः।।२।। ॐरुद्राय नमः।।३।। ॐऋग्वेदाय नमः।।४।। ॐयजुर्वेदाय नमः।।५।। ॐसामवेदाय नमः।।६।। ॐअथर्ववेदाय नमः।।७।। ॐकूर्माय नमः।।८।। ॐअनन्ताय नमः।।९।। ॐहिरण्यगर्भय नमः।।१०।। ॐश्रीकण्ठाय नमः।।११।। ॐधर्माय नमः।।१२।। ॐशिवाय नमः।।१३।। ॐसूर्याय नमः।।१४।। गन्धपुष्पादिभिः सम्पूज्य।

अथ अग्निस्थापनम्

पञ्चभूसंस्कारं— यथा परिमिते तुषकेश शर्करादि रहिते कुण्ड स्थण्डिले वा चतुरस्त्रां भूमिं कुशैः परिसमुह्य। तान्कुशानीशान्यां परित्यज्य। गोमयोद-केनोपलिप्य। स्त्रुव मूलेन प्रागग्रं प्रादेशमात्रं उत्तरोत्तर क्रमेण षडङ्गुलान्तरेण एव अनामिकांगुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य ऐशान्यां स्थापयेत् जलेनाभ्युक्ष्य। (एते पञ्चभूसंस्कारा यत्र यज्ञाग्नि स्थापनं तत्र-तत्र क्रियते।)पहले वेदी को कुशाओं से बुहार कर साफ करें। उन कुशाओं को ईशान में त्याग दें। फिर जल मिले गोबर से लीपकर स्त्रुवा के अग्र भाग से छः- छः अंगुलो के अन्तराल से पश्चिम से पूर्व की ओर उत्तरोत्तर

क्रम से तीन रेखाएँ खींचकर उसी क्रम से उन रेखाओं की कुछ मिट्टी उठाकर ईशान कोण मे छोड़कर वेदी पर जल छिड़कें। ये पंच भू-संस्कार जहाँ-जहाँ अग्नि स्थापन (हवन के लिए) हो वहाँ करना चाहिये

अग्निस्थापनम्—

ततः कांस्यपात्रस्थं वह्निं द्वितीय कांस्यपात्रेण पिहितं कुण्डाद्बहिः आग्नेयां दिशि निधाय ''ॐहुँ फट् स्वाहा'' इति क्रव्यादांशं नैऋत्यां दिशि परित्यज्य। गायत्र्या संपूज्य योनि मार्गेण अग्निं कुण्डे स्वाभिमुखं स्थाप्येत्।(एक नवीन कांस्यपात्र में अग्नि रखकर दुसरे पात्र से ढककर अग्नि लावें व कुण्ड के बाहर आग्नेय कोण में रखवाकर '' **हुँ फट्** '' इस मन्त्र से क्रव्याद के अंश को नैऋत्य कोण में परित्याग करें। तत्पश्चात् गायत्री पूजन के बाद योनि मार्ग से कुण्ड में अग्नि स्थापन करें यदि हवन, वेदी पर कर रहें हैं तो अग्नि को आग्नेय दिशा से स्थापित करें।)

क्रव्यादांशम्—(निम्न मन्त्र से क्रव्यादांश छोड़े)

विनियोग— ॐक्रव्यादमग्निमितिमन्त्रस्य प्रजापतिऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दोऽग्निर्देवता अग्निसंस्कारे विनियोगः।

तत्र मन्त्र— ॐक्रव्यादमग्निं प्रहिणोमि दूरं यमराज्यं गच्छतु रिप्रबाह। इहैवायमिरो जातवेदाः देवेभ्यो हव्यं बहतु प्रजानन्।।

स्थापनम्-(निम्न मन्त्र से अग्नि स्थापन करें)

विनियोग— ॐअयन्ते योनिरित्यस्य प्रजापति ऋषिरनुष्टुप् छन्दो अग्निर्देवता अग्नि स्थापने विनियोगः।

ॐअयन्ते योनिर्ऋत्विजो यतो जातो अरोचथाः। तज्ञानन्नग्न आरोहा ता नो वर्धया रयिम्।। ॐअग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ २ आ सादयादिह।।

शास्त्रोक्तञ्च—

अग्नेः स्थापन वेलायां पूर्णाहुत्यामथाऽपि वा।
आहुतिर्वह्निवास च विलोक्यौ शान्तिकर्मणि।। ***(शान्तिसारे)***
दक्षिणे दानवाः प्रोक्ताः पिशाचोरगराक्षसाः।
तेशां संरक्षणार्थाय ब्रह्मा तिष्ठति दक्षिणे।। ***(कारिका)***
पुरा इन्द्रेण वज्रेण हतो वृत्रो महासुरः।
व्यापिता मेदसा पृथ्वी तदर्थमुपलेपनम्।। ***(कु कं श)***

ततोऽग्न्यानीत पात्रयोः जलादि प्रक्षेपणं कुर्यात्। अग्नेरुपरि तद्रक्षार्थं किञ्चित्काष्ठं नियुज्य उपधमेत्। (तत्पश्चात् अग्नि लाने के पात्र में गन्धाक्षत जल छोड़े तथा अग्नि के उपर रक्षार्थ कुछ काष्ठ रखें।)

ततोऽग्नेर्ध्यानम्—

चत्वारि श्रृंगा त्रयोऽस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासोऽस्य।
त्रिधाबद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्या२ ऽआविवेश।।

स्वाहा स्वधा वषट्कारैरङ्कितं मेषवाहनम्।
रक्त माल्याम्बरधरं रक्त पद्मसनस्थितम्।।

अग्ने वैश्वानर शाण्डिल्य गौत्र शाण्डिल्यासित देवलेति त्रिप्रवरान्वित भूमिमातः वरुणपितः मेषध्वज प्राङ्मुख मम सम्मुखो भव।।

ॐअग्नये नमः। गन्धादिभि: संपूजयेत्।

प्रार्थना— अग्नि प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्।
हिरण्य वर्णमनलं समृद्धं विश्वतोमुखम्।।

(तत्पश्चात सूर्यादि नवग्रहों की प्रतिष्ठा करें तथा पूजन करें। अधिदेवता, प्रत्याधिदेवता, पञ्चलोकपाल व दशदिक्पालों का भी पूजन करें)

अथ कुशकण्डिका विधानम्

ब्रह्मापूजनम्- ब्रह्मणे आसनं दत्वा (पञ्चाशतकुश निर्मितं) **ब्रह्माणमग्नि प्रदक्षिणा क्रमेणानीय कल्पित कुशासने उपवेश्यत्।**

ॐब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।।

इति मन्त्रेण ब्रह्माणावाहनं कुर्यात्। ॐब्रह्मणे नमः। गन्धादिभि: संपूज्य।

(पच्चास कुशाओं के ब्रह्मा बनाकर अग्नि की प्रदक्षिणा कराकर हवन कुण्ड के दक्षिण में ब्रह्माजी को एक आसन पर उत्तराभिमुख विराजमान करके गन्धपुष्पादि से पूजा करें।)

शास्त्रोक्तञ्च— पञ्चाशत्कुशको ब्रह्मा तदर्धेन तु विष्टर:।
दक्षिणावर्तकोब्रह्मा वामावर्तस्तु विष्टर:।।
ऊर्ध्वकेशो भवेद् ब्रह्मा लम्बकेशस्तु विष्टर:।
केशा अग्राणि निर्माणकाले ऊर्ध्वानि यस्य।
लम्बमानान्यधो मुखानि अग्रणि निर्माणकाले यस्य।। (विधानपारिजातके)

परिस्तरणम्—

ततः पूर्वादि दिक्षु अग्निः पञ्चाङ्गुलसम्मितां भूमिं परित्यज्य षोडश कुशामादाय (तद् चतुर्थभागमादाय) **चतुर्भि-चतुर्भि दर्भैरुत्तराग्रैः आग्नेयात् ईशानान्तरम्, प्रागग्रैः नैऋत्यादग्नि पर्यन्तम्, उदगग्रैः नैऋत्यात् वायव्य पर्यन्तम्, प्रागग्रैः वायव्यादीशान पर्यन्तं परिस्तरणं कुर्यात्।**

(पूर्वादि दिशाओं में पाँच अंगुल भूमि छोड़कर सोलह कुशाएँ लेकर उनमें से चार-चार कुशाएँ प्रथम अग्नि से ईशान कोण पर्यन्त उत्तराग्र रखें, द्वितीय ब्रह्मा से अग्नि कोण पर्यन्त पूर्वाग्र रखें, तृतीय ब्रह्मा से नैऋत्य से वायव्य कोण पर्यन्त उतराग्र रखें तथा चतुर्थ वायव्य से लेकर ईशान कोण तक पूर्वाग्र परिस्तरण करें।)

परिस्तरणं (पूर्वे)—

ॐअग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।।

दक्षिणे—

ॐइषे त्वोर्जे त्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण ऽआप्यायध्व मध्न्वा इन्द्राय भागं प्रजावतीरमीवा अयक्ष्मा मा वः स्तेन ईशत माघश ६ सो ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात् बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि।।

पश्चिमे-

ॐअग्न ऽआया हि वीतये गृणानो हव्य वातये निहोता सत्सि बर्हिषि।।

उत्तरे-

ॐशन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः।।

पात्रासादनम्—

ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिम दिशि पात्रासादनार्थ कुशान् आस्तीर्य, तत्र—

१.पवित्रच्छेदनार्थं कुश त्रयं। २.पवित्रार्थं साग्रं अनन्तर्गर्भ कुशपत्र द्वयं। ३.प्रणीता प्रोक्षणी पात्रं च। ४.आज्यस्थाली। ५.चरुस्थाली। ६.सम्मार्जन पञ्चकुशा। ७.उपयमन सप्तकुशा। ८.समिधस्तिस्र। ९.स्रुवः खदिरो हस्तमात्रः। १०.आज्यं गव्यम्। ११ पूर्णपात्र द्वयं। १२. शट्पञ्चाशदधिक शतद्वयमुष्टि परिमितं तण्डुलाद्यन्नं पूर्णपात्रार्थम्। १३.ब्रीहितण्डुला। १४. हिरण्यादि द्रव्यं। इति।।

शास्त्रोक्तञ्च— वेदिका दर्भहीना तु विनग्ना प्रोच्यते बुधैः।
परिधानं ततः कुर्याद्दर्भेण विशेषतः।। ***(कारिकायां)***

(अग्नि के उत्तर पश्चिम दिशा में पात्र रखनें के लिए कुशा बिछायें तथा उन पर- १.पवित्र च्छेदन के लिए तीन कुशा। २.पवित्री बनाने के लिए अग्रभाग सहित अनन्तगर्भ दो कुशा। ३.प्रणीता व प्रोक्षणी पात्र। ४.घृत पात्र। ५.चरु (साकल्य) के पात्र (स्थाली) । ६.समार्जन के लिए पाँच कुशाएँ। ७.उपयमन के लिए सात कुशायें। ८.तीन समीधा (पलाशादि की लकड़ियाँ)। ९. स्रुवा (हाथमात्र खैर का)। १०.गाय का घी। ११.दो पूर्णपात्र। १२.'२५६'मुठ्ठीभर चावल, पूर्णपात्र के लिए १३.चावल। १४.रुपयादि देशी मुद्रा।)

पवित्रच्छेदनम्—कुशद्वयं वामहस्ते, कुशत्रयं च दक्षिणहस्ते गृहीत्वा प्रादेशमात्रं सम्माण्य। कुशत्रयेन कुशद्वयं छित्वा द्वै ग्राह्ये त्रीणि त्याज्यानि। अवशिष्ठ कुश द्वयाग्रभागं गृहीत्वा तं प्रणीतापात्रे निधाय। कुशैराच्छादित प्रणीता पात्रेण ब्रह्मणो मुखमवलोक्य पुनः अग्निरुत्तरतः पश्चिमे स्व स्थाने निधाय।

(दो कुशाओं को बाँयें हाथ में लें और तीन कुशाओं को दाहिने हाथ में लेकर प्रादेश मात्र (तर्जनी व अंगुठें के फैलाव जितना) कुश तीन से बाँयी ओर घुमाते हुये (तीन आवृती देकर) काटकर फेंक दें, दो ग्रहण करें व तीन त्याग दें, दो को मोली बाँध कर पवित्रि बना लें तथा उसे प्रणिता पर रखें। कुशा से आच्छादित प्रणिता पात्र में ब्रह्मा अपना मुख देखकर स्व स्थान रख दें।)

पवित्र हस्तेन प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निक्षिप्य। प्रोक्षणीपात्रे वामहस्ते धृत्वा दक्षिणे हस्तेनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां पवित्रं गृहीत्वा त्रिरुत्पवनम्। ततः प्रोक्षणी पात्रं आकाशस्थ प्रणीतोदकेन पूरयेत्, भूमौ पतित चेत्तदा प्रायश्चित् गोदानं कुर्यात्।

(पवित्र को बाँये हाथ में रखकर दाहिने हाथ से प्रणीता जल तीन बार प्रोक्षणी में डालें। बाद में प्रोक्षणी पात्र को बाँये हाथ में लेकर दाहिने हाथ के अनामिका व अंगुष्ठ से पवित्रे को पकड़कर प्रोक्षणी के जल को तीन बार ऊपर उछालें । (पवित्रे का अग्र भाग उत्तर की ओर रखें) प्रणीता का जल प्रोक्षणी में ऊपर से तथा ध्यान से भर दें, अगर जल भूमि पर गिर जाये तो गोदान करायें।)

पुनःप्रोक्षणी जलेन सर्व वस्तु प्रोक्षणं च प्रोक्षणी पात्र स्व स्थाने सपवित्रं स्थापयेत्।(प्रोक्षणी के जल से सशी सामग्री को छींटे देकर स्व स्थान पर (अग्नि व प्रणीता के मध्य) रख दें।)

शास्त्रोक्तञ्च—

आज्य स्थाली कांस्यमयी यद्वा ताम्रमयी तथा।
मृन्मय्यौदुम्बरी वापि चरुस्थाली प्रशस्यते।। *(छन्दोगपरिष्टे)*

समिद्वृक्षानाह–

पलाशः खदीरोऽ वत्थः शमी वट उदुम्बरः।
होम काले यजमानग्न्यादिमध्ये न गन्तव्यम्।। *(मरीचिः)*

स्रुवप्रतपनम्—

ततो दक्षिणहस्तेन स्रुवमादाय पाञ्चमधोमुखं त्रिः तापयित्वा वामहस्ते स्रुवमुर्ध्वमुखं कृत्वा दक्षिणहस्तेन सम्मार्जन कुशानामग्रैर्मूलतोऽग्र पर्यन्तं प्राञ्चं सम्मृज्य सम्मार्जन कुश मूलैरग्रमारभ्य अधस्तान्मूल पर्यन्तं प्रत्यञ्चं सम्मृज्य तान् कुशान् वह्नौ प्रक्षिप्य, प्रणीतोदकेनाभिषिञ्च्य पुनः कुशोपरि निदध्यात्।

(दाहिने हाथ में स्रुवा लेकर अधोमुख तीन बार तपायें व बाँयें हाथ में लेकर ऊर्ध्वमुख करके दाहिने हाथ में सम्मार्जन कुशायें लेकर अग्रभाग से अग्रभाग, मध्य से मध्य व मूल से मूल का सम्मार्जन करें तथा कुशा अग्नि में छोड़ दें, प्रणीता जल से सिंचन करें तथा पूर्ववत् कुशा के ऊपर रख दें।)

चरुसंस्कारम्—

चरुस्थाल्यां तण्डुलनिर्वापः। तण्डुलानि त्रिवारं प्रक्षाल्य। प्रणीतोदकमासिंच्य। (चरुपात्र में चावल डालकर तीन बार धोयें तथा प्रणीता जल से शुद्ध करें।)

आज्य संस्कारम्—

आज्यस्थाल्यामाज्य निर्वापः। आज्यऽबिश्रयणम्। ततो ज्वलनतृणमादाय आज्यस्योपरि प्रदक्षिणा क्रमेण भ्रामयित्वा वह्नौ तत्प्रक्षेपः। ततः आज्योतारणं तद्वेक्षणं अपद्रव्य निरसनञ्च। ततः उपयमन कुशानादाय वामहस्ते धृत्वा अग्नि पर्युक्षणं कृत्वा उत्तिष्ठं मनसा प्रजापतिं ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ धृताक्ता समिफस्तित्रः क्षिपेत् उत्प्लवनं कुर्यात्।

(आज्य स्थाली में घी भरकर तपावें। एक तृण जलाकर घी पर प्रदक्षिणा क्रम से घुमाकर अग्नि में डाल दें। घी अग्नि से उतार कर देखें तथा कोई अशुद्धि हो तो निकाल दें। उपयमन की सात कुशाओं को बाँये हाथ में लें तथा दाहिने हाथ में तीन समीधा लेकर घी में भिगोकर ब्रह्माजी का ध्यान करते हुये खड़े होकर मौन रहते हुये अग्नि में छोड़ दें व घी को स्रुवा से तीन बार ऊपर उछालें।)

ब्रह्मादी वरणम् (वरणसामग्रीमादाय)—(ब्रह्मादी के लिए वस्त्र द्रव्यादि वरण सामग्री लेकर संकल्प करें।)-

देशकालौ संकीर्त्य० अमुकगोत्रोत्पन्नोहमऽमुकशर्माहमऽमुकगोत्रोत्पन्नं अमुकशर्म्माणं ब्राह्मणं मम गृहे अमुककर्मणः कृताऽकृता वेक्षणरूप ब्रह्मकर्म (आचार्य ऋत्विज कर्म) **कर्तुम् एभिः वरणद्रव्यैः त्वामहं वृणे।**

ब्रह्माः–वृतोऽस्मि ।

यजमान—यथा विहितं कर्म कुरु (कुरुत)

शास्त्रोक्तञ्च—उत्तमं गोघृतं प्रोक्तं मध्यमं महिषीद्भवम्। (*पिंगलामते*)

विप्रा:-यथा ज्ञानं करवाणि (करवाम)

अन्वारब्धम्—

ततः उपविश्य सपवित्र प्रोक्षण्युदकेन दक्षिण चुलुक गृहीतेन ईशानाद्युत्तर पर्यन्तं प्रदक्षिणा क्रमेणाऽग्निं पर्यक्ष्य इतरथावृतिं च कृत्वा पवित्रे प्रणीता पात्रे निदध्यात्। ततो दक्षिण जान्वाच्य ब्रह्मणान्वारब्धः यजमानेनान्वारब्ध च मौनी मूलमध्य भागयोर्मध्येन स्रुवं गृहीत्वा समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणाज्याहुतीर्जुहुयात्। तत्र तत्तदाहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थित हुतशेष घृतस्य प्रोक्षणी प्रक्षेपः।

(इसके बाद आसन पर बैठकर पवित्री सहित प्रोक्षणी के जल को दाहिनी चुल्लु में लेकर ईशान से उत्तर दिशा प्रर्यन्त प्रदक्षिणा क्रम में पर्युक्षण करके पवित्री को प्रणीता पात्र में रख दें। बाद में दाहिनी जंघा को गिराकर ब्रह्मा का अन्वारब्ध यजमान से करें व चुपचाप स्रुवा को शंख के समान मुद्रा से पकड़कर प्रज्वलित अग्नि में आहुती दें तथा आहुती में से शेष आज्य को प्रोक्षणी में छोड़ते जायें।

॥ इति कुशकण्डिका ॥

अथ होमः

संकल्पम्—

अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य० अमुकगोत्रौत्पन्नोऽहमऽमुकशर्माऽहम् (वर्मा, गुप्तो, दासोऽहम् वा) **अमुकमन्त्रस्य पाठस्य वा कृतस्य पूजनस्य प्रतिष्ठापनस्य** (दशाँश) **हवनकर्मणि समिच्चरुतिलाज्यादिहविर्द्रव्यं विहित संख्याहुति पर्याप्तं या या वक्ष्यमाण देवतास्तयैतस्यै देवतायै आहुति प्रदानं करिष्ये।**

हवनारम्भ(व्याहृति होमः)—

१.अग्नेरुत्तर भागे — ॐप्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापजये न मम।

उक्तञ्च —तिलार्द्धान्तु यवा: प्रोक्ता यवार्धास्तडुला स्मृता।
तण्डुलस्त्रिगुणश्चाज्यं यथेष्टा शर्करामथा॥
आयु: क्षयो यवाधिक्ये यवांसाम्ये धनक्षय:।
सर्वकाम समृद्ध्यर्थं तिलाधिक्यं सदैव हि॥*(त्रिकारिकायाम्)*
गणाधिपतये देया प्रथमा तु वराहुति:।
अन्यथा विफलं विप्र भवतीह न सूरय:॥*(भविष्य पुराण)*
ऋत्विजां जुह्वतां वह्नौ बहि: पतति यद्धवि:।
स ज्ञेयो वारुणो भाग: प्रक्षेप्यो विमले जले॥ *(रङ्गनाथकृतरूद्धपतौ)*

(इत्याधारौ मनसा)

२.अग्नेर्दक्षिण भागे — ॐइन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय न मम।
३.मध्येसमिद्धते — ॐअग्नये स्वाहा। इदमग्नये न मम।(इत्याज्य भागौ)
४.मध्येसमिद्धते — ॐसोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम।
५.अग्नेर्दक्षिण भागे — ॐभूः स्वाहा। इदमग्नये न मम।
६. — ॐभुवः स्वाहा। इदं वायवे न मम।
७. — ॐस्वः स्वाहा। इदं सूर्याय न मम।

एता महाव्याहृतयः।

यथा बाण प्रहाराणां, कवचं भवति वारणम्।
तद्वद्दैवोपघातानां, शान्तिर्भवति वारिकाम्।।

ॐशान्तिरस्तु, ॐपुष्टिरस्तु, ॐवृद्धिरस्तु। यजमानस्य मस्तकाभिषेकं कुर्यात्।

अथ पञ्चवारुणी होमः

ॐत्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासि सीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्यत् स्वाहा।।१।। इदमग्निवरुणाभ्यां न मम। ॐसत्वन्नो अग्ने ऽव्वमो भवोती नेदिष्ठो ऽअस्या उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्वनौ वरुण ꣳ रराणो वीहि मृडीक ꣳ सुहवो न ऐधि स्वाहा ।।२।। इदमग्निवरुणाभ्यां न मम। ॐअयाश्चाग्नेऽस्य नभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमयाऽअसि। अयानो यज्ञं वहास्य यानो धेहि भेषज ꣳ स्वाहा ।।३।। इदमग्नये न मम। ॐये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा विततामहान्तः। तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्का स्वाहा।।४।। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विष्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्येः स्वर्केभ्यश्च न मम। ॐउदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम ꣳ श्रथाय। अथावय-मादित्य व्रते तवानागसो ऽदितये स्याम स्वाहा।।५।। इदं वरुणादित्यायादितये न मम।। अत्रोदक स्पर्श।

।। इति पञ्चवारुणी (प्रायश्चित्तसंज्ञक) होमः ।।

ततश्चन्दन पुष्पाक्षतैः वायव्य कोणे ''रं'' लिखित्वा बहिरग्निं सम्पूज्य।

अथ गणेशाम्बिका होमः

अन्वारब्धं विना— (बिना अन्वारब्ध के १ या ११ आहुति साकल्य या गुड़ से दें।)

ॐगणानां त्वा गणपति ᳬ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ᳬ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ᳬ हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम् स्वाहा।। ॐअम्बेअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् स्वाहा।। अनेन कृतेन होमेन गणेशाम्बिके प्रीयेताम् न मम।

अथ नवग्रहाणां होमः

नवग्रह-अधिदेवता-प्रत्याधिदेवता-पञ्चलोकपाल-दशदिक्पालानां पूजन पूर्वक होमं कुर्यात्।(यहाँ नवग्रहों की काष्ठ से या साकल्य से पाँच अथवा आठ-२ आहुतियाँ प्रदान करें तथा अधिदेवता, प्रत्याधिदेवता, पंचलोकपाल, दशदिक्पालादि देवताओं के लिए भी आहुतियाँ प्रदान करें)

१.सूर्याय(अर्क)— **ॐआकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् स्वाहा।।** इदं सूर्याय न मम।

२.चंद्रमसे(पलाश)— **ॐइमं देवा असपत्न ᳬ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ᳬ राजा स्वाहा।।** इदं चंद्रमसे न मम।

३.भौमाय(खदिर)— **ॐअग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा ᳬ रेता ᳬ सि जिन्वति स्वाहा।।** इदं भौमाय न मम।

४.बुधाय (अपामार्ग)— **ॐउद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ᳬ सृजेथामयञ्च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत स्वाहा।।** इदं बुधाय न मम।

५.बृहस्पतये(पीपल)— **ॐबृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतु-मज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रं स्वाहा।।** इदं बृहस्पतये न मम।

६.शुक्राय(उदुम्बर)— **ॐअन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ᳬ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु स्वाहा।।** इदं शुक्राय न मम।

७.शनेश्चराय(शमी)— **ॐशन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः स्वाहा।।** इदं शनेश्चराय न मम।

८.राहवे(दुर्वा)— **ॐकया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया**

0: Nanaji Deshm

शचिष्ठया वृता स्वाहा।। इदं राहवे न मम।

९.केतवे(कुशा)- **ॐकेतुं कण्वन्न केतवे पेशोमर्य्याऽअपेशसे। समुषद्भि रजायथाः स्वाहा।।** इदं केतवे न मम।

ॐग्रहाऽऊर्ज्जाहुतयो व्यन्तो विप्प्रायमतिम्। तेषां विशिप्प्रियाणां व्वोहमिषमूर्ज्ज ६ समग्ग्रभमुपयाम ग्रहीतो सीन्द्राय त्त्वाजुष्टं गृह्णाम्म्येषते योनिरिन्द्राय त्त्वा जुष्टतमम्।। नवग्रहेभ्याः स्वाहा। इदं नवग्रहाः न मम।

अनेन कृतेन होमेन आदित्यादि नवग्रहाः प्रीयन्ताम् न मम।

अथाधिदेवता होम

ततः ईश्वरादिभ्यः पालाश्य समिधस्तैरेव द्रव्यैः सह चतु-चतुः संख्य-काभिराहुतिभिः जुहुयात्। (पलाशादि समिधा, हवनसामग्री के साथ चार- चार आहुतियाँ प्रदान करें।)

१.ईश्वर— ॐत्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।। ॐईश्वराय स्वाहा।।इदं ईश्वराय न मम।

२.उमा— श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणिरूँपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाण मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण।। ॐउमायै स्वाहा।। इदं उमायै न मम।

३.स्कन्द- ॐयदक्रन्दः प्रथमञ्जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महिजातं ते अर्वन्।। ॐस्कदाय स्वाहा।। इदं स्कदाय न मम।

४.विष्णु— ॐविष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थोविष्णोः स्यूरसि विष्णो-र्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।। ॐविष्णवे स्वाहा।।इदं विष्णवे न मम।

नवग्रहसमीधा—

अर्कः पलाशः खदिरोह्यपामार्गो ऽथ पिप्पलः।
उदुम्बरः शमी दूर्वाः कुशा च समिध क्रमात्।।
अत्र तिसृभिर्दूर्वाहुतिभिरेकाहुतिः।
त्रिशाखकुशस्यैकाहुतिभिरेकाहुतिः ।।
होमकाले यजमानाग्न्यादि मध्ये न गन्तव्यम्। ***(याज्ञवल्क्य)***

शास्त्रोक्तञ्च— होमाद्रिग्रह पूजायां शतमष्टोत्तरं भवेत्।
अष्टाविंशतिमष्टौ वा यथाशक्ति विधीयते।।***(संस्कारभाष्करे)***

५.ब्रह्मा— ॐआब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर ऽइषव्यो ऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषाजिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।। ॐब्रह्मणे स्वाहा।। इदं ब्रह्मणे न मम।

६.इन्द्र— ॐत्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ᳪ हवे हवे सुहव ᳪ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ᳪ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः।।ॐइन्द्राय स्वाहा।। इदं इन्द्राय न मम।

७.यम— ॐयमाय त्वा ऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्म्मः पित्रे।। ॐयमाय स्वाहा।। इदं यमाय न मम।

८.काल— ॐकार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि। समापो ऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः।। ॐकालाय स्वाहा।। इदं कालाय न मम।

९.चित्रगुप्त— ॐचित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय।। ॐचित्रगुप्ताय स्वाहा।। इदं चित्रगुप्ताय न मम।

अनेन कृतेन होमेन ईश्वरादिऽधिदेवताः प्रीयन्ताम् न मम।

अथ प्रत्याधिदेवता होमः

१.अग्नि— ॐअग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२ आ सादयादिह स्वाहा।। इदं अग्नये न मम।

२.अद्भ्यः— ॐआपोहिष्ठा मयो भुवस्तान ऽऊर्जेदधातन। महेरणाय चक्षसे स्वाहा।। इदं अद्भ्यो न मम।

३.पृथ्वी— ॐस्योना पृथिवी नो भवा नृक्षरा निवेशनी यच्छा नः शर्म सप्रथाः स्वाहा।। इदं पृथिव्यै न मम।

४.विष्णु— ॐइदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम्। समूढमस्य पा ᳪ सुरे स्वाहा।। इदं विष्णवे न मम।

५.इन्द्र— ॐइन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् स्वाहा।। इदं इन्द्राय न मम।

६.इन्द्राणि— ॐआदित्यै रास्ना ऽसीन्द्राण्या उष्णीषः। पूषाऽसि घर्माय दीष्व स्वाहा।। इदं इन्द्राण्यै न मम।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library

७.प्रजापति- ॐप्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय ꣬ स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा।। इदं प्रजापतये न मम।

८.सर्प— ॐनमोऽस्तु सर्पेभ्यो येके च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो स्वाहा।। इदं सर्पेभ्यो न मम।

९.ब्रह्मा— ॐब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा।। इदं ब्रह्मण्ये न मम।

अनेन कृतेन होमेन अग्न्यादिप्रत्याधिदेवता: प्रीयन्ताम् न मम।

अथ पञ्चलोकपाल होम

ततो पञ्चलोकपालेभ्यः दशदिक्पालेभ्यश्च प्रत्येकं पूर्वोक्त द्रव्येण द्वे-द्वे आहुती जुहुयात्—

१.गणपति- ॐगणानां त्वा गणपति ꣬ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣬ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ꣬ हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम् स्वाहा।। इदं गणपतये न मम।

२.दुर्गा— ॐअम्बेअम्बिके ऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्य श्श्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् स्वाहा।। इदं दुर्गायै न मम।

३.वायु— ॐव्वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि नियुत्वान्त्सोम-पीतये स्वाहा।। इदं वायव्ये न मम।

४.आकाश— ॐघृतं घृत पावानः पिबतव्वसाम्व्वसापावानः पिबता-न्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽआदिशो विदिशऽउद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा।। इदं आकाशाय न मम।

५.अश्विभ्यां— ॐयावां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षताम् स्वाहा।। इदं अश्विभ्यां न मम।

अनेन कृतेन होमेन पञ्चलोकपालदेवता: प्रीयन्ताम् न मम।

अथ दशदिक्पाल होमः

१.इन्द्राय-–ॐत्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣬ हवे हवे सुहव ꣬ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ꣬ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः स्वाहा।। इदं इन्द्राय न मम।

२.अग्नये—ॐअग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँ२ आ सादयादिह स्वाहा।। इदं अग्नये न मम।

३.यमाय—ॐयमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा धर्म्मः पित्रे स्वाहा।। इदं यमाय न मम।

४. निर्ऋतये—ॐअसुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छसात इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु स्वाहा।। इदं निर्ऋतये न मम।

५. वरुणाय—ॐतत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो व्वरुणेह बोद्ध्युरुश ꣳ समानऽआयुः प्रमोषी स्वाहा।।इदं वरुणाय न मम।

६. वायव्ये—ॐआ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर सहस्त्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा।। इदं वायव्ये न मम।

७. कुबेराय—ॐव्वय ꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि स्वाहा।। इदं कुबेराय न मम।

८. ईशानाय—ॐतमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्व मवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्भ्धः स्वस्तये स्वाहा।। इदं ईशानाय न मम।

९. ब्रह्मणे—ॐअस्मे रुद्रा मेहना पर्व्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः श ꣳ सते स्तुवते धायिपज्र्ऽइन्द्र ज्येष्ठाऽअस्माँ२ ऽअवन्तु देवाः स्वाहा।। इदं ब्रह्मणे न मम।

१०.अनन्ताय—ॐस्योना पृथिवी नो भवा नृक्षरानिवेशनी । यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः स्वाहा।। इदं अनन्ताय न मम।

अनेन कृतेन होमेन दशदिक्पालदेवताः प्रीयन्ताम् न मम।

तत्र शास्त्रोक्तञ्च—

होमद्रव्याणि— पुत्रार्थे शालिबीजेन धनार्थे बिल्वपणकैः।
दूर्वाभिरायुष्कामस्तु पुष्टिकामस्तु वुतसैः।।
कन्याकामस्तु लाजाभिः पशुकामो घृतेन तु।
विद्याकामस्तु पालाशैर्दशांशेन तु होमयेत्।।
धान्यकामो यवै चैव गुग्गुलेन रिपुक्षये।
तिलैरारोग्यकामस्तु व्रीहिभिः सुखमश्नुते।।

अथ पितामहादीनां होमः

ततः पितामहादिदेवानां एकैक आहुति जुहुयात्—

१.ब्रह्मा— ॐब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा।। इदं ब्रह्मणे न मम।

२.विष्णु— ॐइदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ꣳ सुरे स्वाहा।। इदं विष्णवे न मम।

३.रुद्र— ॐनमस्ते रुद्रमन्यव ऽउतोत ऽइषवे नमः। बाहुभ्यां मुतते नमः।। इदं रुद्राय न मम।

४.गणपति- ॐगणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम् स्वाहा।। इदं गणपतये न मम।

५.महाकालि— ॐऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै स्वाहा।इदं महाकाल्यै न मम।

६.महालक्ष्मी— श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणिरूपम-श्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाण मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण स्वाहा।। इदं महालक्ष्म्यै न मम।

७.महासरस्वती— ॐ पावका नः सरस्वती व्वाजेभिर्व्वाजिनीवती। यज्ञं व्वष्टुधियावसुः।। इदं महासरस्वत्यै न मम।

८.दुर्गा— ॐअम्बेअम्बिके ऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्य श्श्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् स्वाहा।। इदं दुर्गायै न मम।

मन्त्र विशेषा— जपकाले नमः शब्दं मन्त्रस्यान्ते नियोजयेत्।
होमकाले पुनः स्वाहा मन्त्रस्यायं सदा क्रमः।। *(तन्त्र शास्त्र)*

प्रणवाद्या नाममन्त्राः स्वाहान्ता होमे नमोन्ता न्यासकर्मणि भवन्तीति सर्वत्र ज्ञातव्यम्।

गायत्रीहोमेतु— सप्रणवा व्याहृतिरहिता स्वाहान्ता गायत्री।
अग्नेः स्थापन वेलायां पूर्णाहुत्यामथापिवा।
आहुतिर्वह्विवासश्च विलोक्यौ शान्तिकर्मणि।।

अस्यापवादः— संस्कारेषु विचार्योऽस्य न कार्यो नापि वैष्णवे।
नित्ये नैमित्तिके कार्यो न चाब्दे मुनिभिः स्मृतः।। ***(शान्तिसारेः)***

जपाद्यङ्गहोमेऽपि न दिनं शोध्यं तस्यस्वतन्त्रकालत्वाभावात्।
मुखेनोपधमेदग्निं मुखादग्निरजायतेति वचनात्।।

९.क्षेत्राधिपति-ॐन हि स्पशमविदन्नन्यमस्माद् वैश्वानरातुर ऽएतारमग्नेः एमेनम वृधन्नमृता ऽअमृर्त्त्यं वैश्वानरं क्षैत्र जित्याय देवाः स्वाहा।। इदं क्षेत्राधिपतये न मम।

१०.भूताय—ॐभूतायत्वा नारातयेस्वरभि विक्ख्येषन्दृ ᳬ हन्तादुर्य्याः पृथिव्या मुर्व्वन्तरिक्षमन्वेमि पृथिव्यास्त्वा नाभौ सादयाम्यदित्या उपस्थे-ग्ग्नेहव्य ᳬ रक्ष स्वाहा।। इदं भूतेभ्यो न मम।

११.वास्तोषपति—ॐवास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वा वेशोऽअनमीवो भवानः। यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्वशन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।

इदं वास्तोष्पतये न मम।

१२.विश्वकर्मा— ॐविश्वकर्मन्हविषा व्वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्यम्। तस्मै व्विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथा सत् स्वाहा।। इदं विश्वकमणे न मम।

अनेन कृतेन होमेन पितामहादय: प्रीयन्ताम् न मम।

अथ मोदादीषड्विनायक होमः

१.ॐमोदाय स्वाहा। इदं० **२.ॐप्रमोदाय स्वाहा।** इदं०
३.ॐसुमुखाय स्वाहा। इदं० **४.ॐदुर्मुखाय स्वाहा।** इदं०
५.ॐअविघ्नाय स्वाहा। इदं० **६.ॐविघ्नकर्त्रे स्वाहा।** इदं०

अनेन कृतेन होमेन मोदादीषड्विनायका: प्रीयन्ताम् न मम।

अथ षोडशमातृका होमः

नोट :—वैदिक मन्त्र, पूजा प्रकरण में पृष्ट संख्या ५६ पर देखें।

ॐगौर्यै स्वाहा। इदं गौर्यै न मम।।१।। **ॐपद्मायै स्वाहा।** इदं०।।२।। **ॐशच्यै स्वाहा।** इदं०।।३।। **ॐमेधायै स्वाहा।** इदं०।।४।। **ॐसावित्र्यै स्वाहा।** इदं०।।५।। **ॐविजयायै स्वाहा।** इदं०।।६।। **ॐजयायै स्वाहा।** इदं०।।७।। **ॐदेवसेनायै स्वाहा।** इदं०।।८।। **ॐस्वाहायै स्वाहा।** इदं०।।९।। **ॐस्वधायै स्वाहा।** इदं०।।१०।। **ॐमातृभ्यः स्वाहा।** इदं०।।११।। **ॐलोकमातृभ्यः स्वाहा।** इदं०।।१२।। **ॐधृत्यै स्वाहा।** इदं०।।१३।। **ॐपुष्ट्यै स्वाहा।** इदं०।।१४।। **ॐतुष्ट्यै स्वाहा।** इदं०।।१५।। **ॐआत्मनः कुलदेवतायै स्वाहा।** इदं० ।।१६।।

अनेन कृतेन होमेन गौर्यादिषोडशमातर: प्रीयन्ताम् न मम।

अथ सप्तघृतमातृका होमः

नोट - वैदिक मन्त्र, पूजा प्रकरण में पृष्ट संख्या ५९ पर देखें।

१.ॐश्रियै स्वाहा। इदं० **२.ॐलक्ष्म्यै स्वाहा।** इदं०

३.ॐधृत्यै स्वाहा। इदं० **४.ॐमेधायै स्वाहा।** इदं०

५.ॐस्वाहायै स्वाहा। इदं० **६.ॐप्रज्ञायै स्वाहा।** इदं०

७.ॐसरस्वत्यै स्वाहा। इदं०

अनेन कृतेन होमेन सप्तघृतमातरः प्रीयन्ताम् न मम।

अथ जलमातृका होमः

१.ॐमत्स्यै स्वाहा। इदं० **२.ॐकूर्म्यै स्वाहा।** इदं०

३.ॐवाराह्यै स्वाहा। इदं० **४.ॐदर्दुर्यै स्वाहा।** इदं०

५.ॐमकर्यै स्वाहा। इदं० **६.ॐजलुक्यै स्वाहा।** इदं०

७.ॐतन्तुक्यै स्वाहा। इदं०

अनेन कृतेन होमेन जलमातरः प्रीयन्ताम् न मम।

अथ स्थलमातृका होमः

१.ॐब्राम्ह्यै स्वाहा। इदं० **२.ॐमाहेश्वर्य्यै स्वाहा।** इदं०

३.ॐकौमार्यै स्वाहा। इदं० **४. ॐवैष्णव्यै स्वाहा।** इदं०

५.ॐवाराह्यै स्वाहा। इदं० **६.ॐतपेन्द्राण्यै स्वाहा।** इदं०

७.ॐचामुण्डायै स्वाहा। इदं०

अनेन कृतेन होमेन स्थलमातरः प्रीयन्ताम् न मम।

अथ जीवमातृका होमः

१.ॐकौमार्यै स्वाहा। इदं० **२.ॐधनदायै स्वाहा।** इदं०

३.ॐनन्दायै स्वाहा। इदं० **४.ॐविमलायै स्वाहा।** इदं०

५.ॐमङ्गलायै स्वाहा। इदं० **६.ॐअचलायै स्वाहा।** इदं०

७.ॐपद्मायै स्वाहा। इदं०

अनेन कृतेन होमेन जीवमातरः प्रीयन्ताम् न मम।

वास्तोमण्डल होमः

१. ॐशिखिने स्वाहा। इदं० २. ॐपर्जन्याय स्वाहा। इदं०
३. ॐजयन्ताय स्वाहा। इदं० ४. ॐकुलिशायुधाय स्वाहा। इदं०
५. ॐसूर्याय स्वाहा। इदं० ६. ॐसत्याय स्वाहा। इदं०
७. ॐभृशाय स्वाहा। इदं० ८. ॐआकाशाय स्वाहा। इदं०
९. ॐवायवे स्वाहा। इदं० १०. ॐपूष्णे स्वाहा। इदं०
११. ॐवितथाय स्वाहा। इदं० १२. ॐगृहक्षताय स्वाहा। इदं०
१३. ॐयमाय स्वाहा। इदं० १४. ॐगन्धर्वाय स्वाहा। इदं०
१५. ॐभृङ्गराजाय स्वाहा। इदं० १६. ॐमृगाय स्वाहा। इदं०
१७. ॐपितृभ्यः स्वाहा। इदं० १८. ॐदौवारिकाय स्वाहा। इदं०
१९. ॐसुग्रीवाय स्वाहा। इदं० २०. ॐपुष्पदन्ताय स्वाहा। इदं०
२१. ॐवरुणाय स्वाहा। इदं० २२. ॐअसुराय स्वाहा। इदं०
२३. ॐशेषाय स्वाहा। इदं० २४. ॐपापाय स्वाहा। इदं०
२५. ॐरोगाय स्वाहा। इदं० २६. ॐअहये स्वाहा। इदं०
२७. ॐमुख्याय स्वाहा। इदं० २८. ॐभल्लाटाय स्वाहा। इदं०
२९. ॐसोमाय स्वाहा। इदं० ३०. ॐसर्पाय स्वाहा। इदं०
३१. ॐअदितये स्वाहा। इदं० ३२. ॐदितये स्वाहा। इदं०
३३. ॐअद्भ्यो स्वाहा। इदं० ३४. ॐसावित्राय स्वाहा। इदं०
३५. ॐजयाय स्वाहा। इदं० ३६. ॐरुद्राय स्वाहा। इदं०
३७. ॐअर्यम्णे स्वाहा। इदं० ३८. ॐसवित्रे स्वाहा। इदं०
३९. ॐविवस्वते स्वाहा। इदं० ४०. ॐविबुधाधिपाय स्वाहा। इदं०
४१. ॐमित्राय स्वाहा। इदं० ४२. ॐराजयक्ष्मणे स्वाहा। इदं०
४३. ॐपृथ्वीधराय स्वाहा। इदं० ४४. ॐआपवत्साय स्वाहा। इदं०
४५. ॐब्रह्मणे स्वाहा। इदं० ४६. ॐचरक्यै स्वाहा। इदं०
४७. ॐविदार्यै स्वाहा। इदं० ४८. ॐपूतनायै स्वाहा। इदं०
४९. ॐपापराक्षस्यै स्वाहा। इदं० ५०. ॐस्कंदाय स्वाहा। इदं०
५१. ॐअर्यम्णे स्वाहा। इदं० ५२. ॐजृम्भकाय स्वाहा। इदं०
५३. ॐपिलिपिच्छाय स्वाहा। इदं० ५४. ॐगणेशाय स्वाहा। इदं०

५५. ॐदुर्गायै स्वाहा। इदं० ५६. ॐवायवे स्वाहा। इदं०
५७. ॐविभत्साय स्वाहा। इदं० ५८. ॐउग्रसेनाय स्वाहा। इदं०
५९. ॐडामराय स्वाहा। इदं० ६०. ॐमहाकालाय स्वाहा। इदं०
६१. ॐअश्विभ्यां स्वाहा। इदं० ६२. ॐइन्द्राय स्वाहा। इदं०
६३. ॐआग्नये स्वाहा। इदं० ६४. ॐयमाय स्वाहा। इदं०
६५. ॐनैऋत्याय स्वाहा। इदं० ६६. ॐवरुणाय स्वाहा। इदं०
६७. ॐवायवे स्वाहा। इदं० ६८. ॐकुबेराय स्वाहा। इदं०
६९. ॐईशानाय स्वाहा। इदं० ७०. ॐरुद्रेभ्यो स्वाहा। इदं०
७१. ॐभूम्यै स्वाहा। इदं०

ॐवास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वा वेशोऽअनमीवो भवानः। यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्वशन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।। वास्तोष्पतये स्वाहा। इदं वास्तोष्पतये न मम।

अनेन कृतेन होमेन वास्तोमण्डलदेवता: प्रीयन्ताम् न मम।

अथ चतुःषष्ठियोगिनीमण्डल होमः

१. ॐगजाननायै स्वाहा। इदं० २. ॐसिंहमुख्यै स्वाहा। इदं०
३. ॐगृध्रास्यायै स्वाहा। इदं० ४. ॐकाकतुण्डिकायैस्वाहा। इदं०
५. ॐउष्ट्रग्रीवायै स्वाहा।इदं० ६. ॐहयग्रीवायै स्वाहा। इदं०
७. ॐवाराह्यै स्वाहा। इदं० ८. ॐशरभाननायैस्वाहा। इदं०
९. ॐउलूकिकायै स्वाहा। इदं० १०. ॐशिवारावायै स्वाहा। इदं०
११. ॐमयूर्यै स्वाहा। इदं० १२. ॐविकटाननायै स्वाहा। इदं०
१३. ॐअष्टवक्त्रायै स्वाहा। इदं० १४. ॐकोटराक्ष्यै स्वाहा। इदं०
१५. ॐकुब्जायै स्वाहा। इदं० १६. ॐविकटलोचनायै स्वाहा। इदं०
१७. ॐशुष्कोदर्यै स्वाहा। इदं० १८. ॐललजिह्वायै स्वाहा। इदं०
१९. ॐअश्वदंष्ट्रायै स्वाहा। इदं० २०. ॐवानराननायै स्वाहा। इदं०
२१. ॐऋक्षाक्ष्यै स्वाहा। इदं० २२. ॐकेकराक्ष्यै स्वाहा। इदं०
२३. ॐबृहत्तुण्डायै स्वाहा। इदं० २४. ॐसुराप्रियायै स्वाहा। इदं०
२५. ॐकपालहस्तायै स्वाहा।इदं० २६. ॐरक्ताक्ष्यै स्वाहा। इदं०

२७. ॐशुक्त्यै स्वाहा। इदं० २८. ॐश्येन्यै स्वाहा। इदं०
२९. ॐकपोतिकायै स्वाहा। इदं० ३०. ॐपाशहस्तायै स्वाहा। इदं०
३१. ॐदण्डहस्तायै स्वाहा। इदं० ३२. ॐप्रचण्डायै स्वाहा। इदं०
३३. ॐचण्डविक्रमायै स्वाहा। इदं० ३४. ॐशिशुघ्न्यै स्वाहा। इदं०
३५. ॐपापहन्त्र्यै स्वाहा। इदं० ३६. ॐकाल्यै स्वाहा। इदं०
३७. ॐरुधिरपायिन्यै स्वाहा। इदं० ३८. ॐवशाधयायै स्वाहा। इदं०
३९. ॐगर्भभक्षायै स्वाहा। इदं० ४०. ॐशवहस्तायै स्वाहा। इदं०
४१. ॐआन्त्रमालिन्यै स्वाहा। इदं० ४२. ॐस्थूलकेश्यै स्वाहा। इदं०
४३. ॐबृहत्कुक्ष्यै स्वाहा। इदं० ४४. ॐसर्पास्यायै स्वाहा। इदं०
४५. ॐप्रेतवाहिन्यै स्वाहा। इदं० ४६. ॐदन्तशूककरायै स्वाहा। इदं०
४७. ॐक्रौंच्यै स्वाहा। इदं० ४८. ॐमृगशीर्षायै स्वाहा। इदं०
४९. ॐवृषाननायै स्वाहा। इदं० ५०. ॐव्याप्तास्यायै स्वाहा। इदं०
५१. ॐधूमनिष्वासायै स्वाहा। इदं० ५२. ॐव्यौमैकचरणोर्ध्वदृशे स्वाहा। इदं०
५३. ॐतापिन्यै स्वाहा। इदं० ५४. ॐशोषणीदृष्ट्यै स्वाहा। इदं०
५५. ॐकोटर्यै स्वाहा। इदं० ५६. ॐस्थूलनासिकायै स्वाहा। इदं०
५७. ॐविद्युत्प्रभायै स्वाहा। इदं० ५८. ॐबलाकास्यायै स्वाहा। इदं०
५९. ॐमार्जार्यै स्वाहा। इदं० ६०. ॐकटपूतनायै स्वाहा। इदं०
६१. ॐअट्टाटहासायै स्वाहा। इदं० ६२. ॐकामाक्ष्यै स्वाहा। इदं०
६३. ॐमृगाक्ष्यै स्वाहा। इदं० ६४. ॐमृगलाचनायै स्वाहा। इदं०

ॐजातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेद:। स न्न: पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्नि:।। ॐ दुर्गायै स्वाहा। इदं०

अनेन कृतेन होमेन चतु:षष्टियोगिन्य: प्रीयन्ताम् न मम।

अथ एकोनपञ्चाशत क्षेत्रपाल होम:

१. ॐअजराय स्वाहा। इदं० २. ॐव्यापकाय स्वाहा। इदं०
३. ॐइन्द्रचौराय स्वाहा। इदं० ४. ॐइन्द्रमूर्तये स्वाहा। इदं०
५. ॐउक्षाय स्वाहा। इदं० ६. ॐकूष्माण्डाय स्वाहा। इदं०

७. ॐवरुणाय स्वाहा। इदं० ८. ॐ बटुकाय स्वाहा। इदं०
९. ॐविमुक्तकाय स्वाहा। इदं० १०. ॐलिप्तकाय स्वाहा। इदं०
११. ॐनीललोकाय स्वाहा।इदं० १२. ॐएकदंष्ट्राय स्वाहा। इदं०
१३. ॐऐरावताय स्वाहा। इदं० १४. ॐओषधिघ्नाय स्वाहा। इदं०
१५. ॐबन्धनाय स्वाहा। इदं० १६. ॐदिव्यकराय स्वाहा। इदं०
१७. ॐकम्बलाय स्वाहा। इदं० १८. ॐभीषणाय स्वाहा। इदं०
१९. ॐगवयाय स्वाहा। इदं० २०. ॐघण्टाय स्वाहा। इदं०
२१. ॐव्यालाय स्वाहा। इदं० २२. ॐअंशवे स्वाहा। इदं०
२३. ॐचंद्रवारुणाय स्वाहा। इदं० २४. ॐघटाटोपाय स्वाहा। इदं०
२५. ॐजटिलाय स्वाहा। इदं० २६. ॐक्रतवे स्वाहा। इदं०
२७. ॐघण्टेश्वराय स्वाहा। इदं० २८. ॐविकटाय स्वाहा। इदं०
२९. ॐमणिमानाय स्वाहा। इदं० ३०. ॐगणबंधनाय स्वाहा। इदं०
३१. ॐमुण्डाय स्वाहा। इदं० ३२. ॐढुण्ढिकरणाय स्वाहा। इदं०
३३. ॐस्थविराय स्वाहा। इदं० ३४. ॐवैनाय स्वाहा। इदं०
३५. ॐधनदाय स्वाहा। इदं० ३६. ॐनागकर्णाय स्वाहा। इदं०
३७. ॐमहाबलाय स्वाहा। इदं० ३८. ॐफेत्काराय स्वाहा। इदं०
३९. ॐचित्काराय स्वाहा। इदं० ४०. ॐसिंहाय स्वाहा। इदं०
४१. ॐमृगाय स्वाहा। इदं० ४२. ॐयक्षाय स्वाहा। इदं०
४३. ॐमेघवाहनाय स्वाहा। इदं० ४४. ॐतिक्ष्णाय स्वाहा। इदं०
४५. ॐअनलाय स्वाहा। इदं० ४६. ॐशुक्लतुण्डाय स्वाहा। इदं०
४७. ॐसुधापाय स्वाहा। इदं० ४८.ॐबर्बूकराय स्वाहा। इदं०
४९. ॐपवनाय स्वाहा। इदं०

ॐ क्षां क्षीं क्षौं क्षं क्षः क्षेत्रपालाय नमः. ॐक्षेत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि मात्वाहि ऽ सीन्मा हि ऽ सिः।।ॐक्षेत्रपालाय स्वाहा।

इदं क्षेत्रपालाय न मम। अनेन कृतेन होमेन एकोनपञ्चाशत्क्षेत्रपाला: प्रीयन्ताम् न मम।

https://upayogibooks.com

अथ सर्वतोभद्रमण्डल होमः

१. ॐब्रह्मणे स्वाहा। इदं० २. ॐसोमाय स्वाहा। इदं०
३. ॐईशानाय स्वाहा। इदं० ४. ॐइन्द्राय स्वाहा। इदं०
५. ॐअग्नये स्वाहा। इदं० ६. ॐयमाय स्वाहा। इदं०
७. ॐनिर्ऋतये स्वाहा। इदं० ८. ॐवरुणाय स्वाहा। इदं०
९. ॐवायवे स्वाहा। इदं० १०. ॐअष्टवसुभ्योः स्वाहा। इदं०
११. ॐएकादशरुद्रेभ्योः स्वाहा।इदं० १२.ॐद्वादशादित्येभ्योः स्वाहा। इदं०
१३. ॐअश्विभ्यां स्वाहा। इदं० १४. ॐविश्वेभ्योदेवेभ्योः स्वाहा। इदं०
१५. ॐपितृभ्योः स्वाहा। इदं० १६. ॐसप्तयक्षेभ्योः स्वाहा। इदं०
१७. ॐभूतेभ्योः स्वाहा। इदं० १८. ॐसर्पेभ्योः स्वाहा। इदं०
१९. ॐगन्धर्वाऽप्सरेभ्योः स्वाहा।इदं० २०. ॐस्कन्दाय स्वाहा। इदं०
२१. ॐनन्दीश्वराय स्वाहा। इदं० २२. ॐशूलमहाकालाय स्वाहा। इदं०
२३. ॐप्रजापतिभ्योः स्वाहा। इदं० २४. ॐदुर्गायै स्वाहा। इदं०
२५. ॐविष्णवे स्वाहा। इदं० २६. ॐपितृभ्यः स्वाहा। इदं०
२७. ॐमृत्युरोगेभ्यो स्वाहा। इदं० २८.ॐगणपतये स्वाहा। इदं०
२९. ॐअद्भ्यः स्वाहा। इदं० ३०. ॐमरुद्भ्यः स्वाहा। इदं०
३१. ॐपृथिव्यै स्वाहा। इदं० ३२. ॐगंगादिनदीभ्यः स्वाहा। इदं०
३३. ॐसप्तसागरेभ्योः स्वाहा। इदं० ३४. ॐमेरवे स्वाहा। इदं०
३५. ॐगदायै स्वाहा। इदं० ३६. ॐत्रिशूलाय स्वाहा। इदं०
३७. ॐवज्राय स्वाहा। इदं० ३८. ॐशक्तये स्वाहा। इदं०
३९. ॐदण्डाय स्वाहा। इदं० ४०. ॐखड्गाय स्वाहा। इदं०
४१. ॐपाशाय स्वाहा। इदं० ४२. ॐअंकुशाय स्वाहा। इदं०
४३. ॐगौतमाय स्वाहा। इदं० ४४. ॐभरद्वाजाय स्वाहा। इदं०
४५. ॐविश्वामित्राय स्वाहा। इदं० ४६. ॐकश्यपाय स्वाहा। इदं०
४७. ॐजमदग्नये स्वाहा। इदं० ४८. ॐवशिष्ठाय स्वाहा। इदं०
४९. ॐअत्रये स्वाहा। इदं० ५०. ॐअरुन्धत्यै स्वाहा। इदं०
५१. ॐऐन्द्र्यै स्वाहा। इदं० ५२. ॐकौमार्यै स्वाहा। इदं०
५३. ॐब्राह्मयै स्वाहा। इदं० ५४. ॐवाराह्यै स्वाहा। इदं०
५५. ॐचामुण्डायै स्वाहा। इदं० ५६. ॐवैष्णव्यै स्वाहा। इदं०

CC-0. Nanaji De...

५७. ॐमाहेश्वर्यै स्वाहा। इदं० ५८. ॐवैनायक्यै स्वाहा। इदं०

ॐविष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।। ॐमहाविष्णवे स्वाहा।। इदं विष्णवे न मम।

अनेन कृतेन होमेन सर्वतोभद्रमण्डलदेवताः प्रीयन्ताम् न मम।

अष्टवसु होमः

१. ॐध्रुवाय स्वाहा। इदं० २. ॐधराय स्वाहा। इदं०

३. ॐसोमाय स्वाहा। इदं० ४. ॐअद्भ्यः स्वाहा। इदं०

५. ॐअनिलाय स्वाहा। इदं० ६. ॐनलाय स्वाहा। इदं०

७. ॐप्रत्यूषाय स्वाहा। इदं० ८. ॐप्रभासाय स्वाहा। इदं०

अनेन कृतेन होमेन अष्टवसवः प्रीयन्ताम् न मम।

द्वादशादित्याः होमः

१. ॐधात्रे स्वाहा। इदं० २. ॐअर्यम्णे स्वाहा। इदं०

३. ॐमित्राय स्वाहा। इदं० ४. ॐरुद्राय स्वाहा। इदं०

५. ॐवरुणाय स्वाहा। इदं० ६. ॐसूर्याय स्वाहा। इदं०

७. ॐभगाय स्वाहा। इदं० ८. ॐविवस्वते स्वाहा। इदं०

९. ॐपूष्णे स्वाहा। इदं० १०. ॐसवित्रे स्वाहा। इदं०

११. ॐत्वष्ट्रे स्वाहा। इदं० १२. ॐविष्णवे स्वाहा। इदं०

अनेन कृतेन होमेन द्वादशादित्याः प्रीयन्ताम् न मम।

एकादशरुद्राः होमः

१. ॐवीरभद्राय स्वाहा। इदं० २. ॐशम्भवे स्वाहा। इदं०

३. ॐगिरिशाय स्वाहा। इदं० ४. ॐअजैकपदे स्वाहा। इदं०

५. ॐअहिर्बुध्न्याय स्वाहा। इदं० ६. ॐपिनाकिने स्वाहा। इदं०

७. ॐअपराजिताय स्वाहा। इदं० ८. ॐभुवनाधीश्वराय स्वाहा। इदं०

९. ॐकपालिने स्वाहा। इदं० १०.ॐस्थाणवे स्वाहा। इदं०

११.ॐभगाय स्वाहा। इदं०

अनेन कृतेन होमेन एकादश रुद्राः प्रीयन्ताम् न मम।

ततः प्रधान देवता होमं कुर्यात् (तत्पश्चात् प्रधान देवता के लिए आहुतियाँ प्रदान करें।)

ततो जपस्य दशांश गायत्र्या होमः कार्यः।

गुग्गुल होमः

देशकालौ संकीर्त्य० मम गृहे भूतप्रेतपिशाचादिदोष परिहारार्थे त्र्यम्बकं इति मन्त्रेण गुग्गुल होममहं करिष्ये।।

ॐत्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यो-र्मुक्षीय मामृतात् स्वाहा।।

जातिफल (जायफल) होमः

देशकालौ संकीर्त्य० मम गृहे भूतप्रेतपिशाचादिदोष परिहारार्थे जातवेदसे० इति मन्त्रेण जातिफलेन होममहं करिष्ये।।

ॐजातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स न्नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरित्याग्निः स्वाहा।।

सर्षप होमः

देशकालौ संकीर्त्य० मम गृहे सर्वाऽरिष्टपरिहारार्थं सर्वशत्रुबलक्षयार्थं सजोषा० इति मन्त्रेण सर्षपहोममहं करिष्ये।।

ॐसजोषाऽ इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमम्पिब व्वृत्रहा शूरव्विद्वान्। जहि शत्रूँऽरप मृधो नुदस्वाथा भयंकृणुहि व्विश्वतोनः स्वाहा।।

मरीचि (कालिमिर्च) होमः

देशकालौ संकीर्त्य० मम गृहे पथ्यापथ्यप्रारब्धकृतरोगभूतप्रेत पिशाचादिदोष परिहारार्थे जातवेदसे० इति मन्त्रेण मरीचि होममहं करिष्ये।।

शास्त्रोक्तं च—अत्र गुग्गुलहोमः सर्षपहोमः लक्ष्मीहोमश्च कृताकृतः।।

ॐजातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरित्याग्निः स्वाहा।।

लक्ष्मीः होमः

ततः समिदाचरुयवतिलैः दुग्धशर्करादि संमिश्रैः श्रीसूक्तादिना लक्ष्मी होमः कार्यः। (तत्पश्चात् समिदा साकल्य, सीताफल, अनार, क्षीर, दुर्वादल, बिल्वपत्रादि का श्रीसूक्त से हवन करें)

देशकालौ संकीर्त्य० मम गृहे मनोकामनापूर्तिलाभार्थे श्रीसूक्तादिना लक्ष्मी होममहं करिष्ये।। (श्रीसूक्त से होम करें)

नोटः- श्रीसूक्त.पृ.स. १३६ पर देखें।

प्रायश्चितसंज्ञक व्याहृति होमः

देशकालौ संकीर्त्य० मम गृहे अमुककर्मणि देशतः कालत स्वतन्त्रतो मन्त्रतो वा ज्ञानतोऽज्ञानतोवा अयथाकरण न्यूनकरण चतुर्विध कर्मातिरिक्त-करण भेषजात प्रत्यवाय परिहार द्वारा कर्मसाद्गुण्य सिद्ध्ये तथा प्रधान देवताग्न्योश्च मध्ये गमने तथा समिदाज्यचरुतिलादिहविषां मध्ये अन्यत-मस्याभावे होम स्वाहाकारयोः पूर्वापराभावे अग्निमध्ये हविर्गत कीटा-द्युपघाते प्रणीताग्न्योर्मध्ये गमने प्रणीता स्कन्दे इध्म परिस्तरणादिदाहे कुण्डाद्बहिरग्नि पतने समिच्चरुतिलाज्य मध्ये कृमिकीटकादि संयोगे होममन्त्र पठन समये स्वर वर्णादि विस्मृतौ देवतावदान मन्त्र तन्त्र कर्मवपर्या समक्षिका कीट केशादिभिर्हविदुष्टदग्ध पाकहित स्थाने होमाकरणादि ज्ञाताज्ञातदोष परिहारार्थं घृताक्तकृष्णातिल द्रवेण व्यस्त समस्त व्याहृत्या अष्टोत्तर सहस्रैरष्टोत्तरशतैरष्टाविंशतिभिराहुतिभिर्वा होमं करिष्ये।

विनियोगः—ॐभूर्भुवः स्वरिति तिसृणां महाव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिः गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छन्दांसि क्रमेण अग्निवायुसूर्यदेवताः सर्वेषां वा प्रजापतिर्देवता प्रायश्चित्त होमे विनियोगः।

सप्तवारं सप्तविंशतिवारं द्विपञ्चाशदधिकशतद्वय वा आहुति होमं कुर्यात्।

(७ व २७ या फिर २५२ आहूतियाँ प्रदान करें)

१.ॐभूः स्वाहा। इदं अग्नये न मम। **२. ॐभुवः स्वाहा।** इदं वायवे न मम। **३.ॐस्वः स्वाहा।** इदं सूर्याय न मम। **४.ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा।** इदमग्निवायुसूर्याय न मम।

अथ स्थापितदेवानामुत्तर पूजनम्

देशकालौ संकीर्त्यं० मम गृहे कृतस्य अमुककर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं स्थापित देवतानां मृडाग्नेश्चोत्तर पूजनमहम् करिष्ये।

स्थापित देवतानां गंधादिलबध्वोपचारैः पूजनं कुर्यात्। (तत्पश्चात् अग्न्यादि स्थापित देवताओं की गंधादि से पूजा करें)

गणपतिर्ध्यानं— ॐगणानां त्वा गणपति ঌ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ঌ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ঌ हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्।।

ॐभूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धि सहिताय महा गणाधिपतये नमः।

शास्त्रोक्तञ्च—

पूजा स्विष्टं नवाहुत्यो बलिः पूर्णाहुतिस्थता।
श्रेयः सम्पाद्य दानं च ह्यभिषेको विसर्जनम्।।
अवकाशे सति षोडशोपचारैर्वा पूजयेत्।।
हूयमाने हविर्यज्ञे बहिः पतति यद्धविः।
द्रप्सश्च स्कन्दमन्त्रेण तदग्नौ निक्षिपेत्पुनः।।
तद्धयजमानचर्वाद्याहुतेः हस्ताद् भूमौ पाते ज्ञेयम्।। ***(बृहच्छौनकः)***
अग्नये गन्धादिकं बहिरेव देयमिति।। ***(कल्पद्रुमः)***
अन्ये तु मध्ये पूजनमिच्छन्ति।
मध्येऽपि गन्धपुष्पादीन्दद्यादग्नेर्न संशयः।
बहिर्नैवेद्यमात्रन्तु दातव्यमिति निश्चितम्।। ***(विष्णुधर्मोत्तरे)***

उत्तरपूजां अत्रावसरे केचिन्मन्यन्ते अन्ये तु नवाहुति होमान्ते अपरे तु यजमानाभिषेकान्ते। अनेकदिनसाध्य होम चेत्तदा पर्युषितदोषपरिहार्थे हविः शेषं स्विष्टकृदर्थे घृतमध्ये स्थापयेत्।।
नष्टे दुष्टे वा हविषि आज्येनैव स्विष्टकृद्धोमः।। ***(कल्पद्रुमः)***

मातृकाध्र्यानम्—ॐसमक्ख्ये देव्व्या धियासन्दक्षिणयोरुक्षसा। मामऽआयुः प्प्रमोषीर्म्मो ऽअहन्तवव्वीरं व्विदेय तव देवि सन्दृशि।।ॐवसोः पवित्रमसि शतधारं व्वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।।

ॐभूर्भुवः स्वः वसोर्द्धारा सहित सगणेशगौर्याद्यावाहित मातृभ्यो नमः।

ग्रहमण्डलदेवताध्यानम्— ॐग्रहाऽऊर्ज्जाहुतयो व्व्यन्तो व्विप्प्रायमतिम्। तेषां व्विशिप्प्रियाणां व्वोहमिषमूर्ज्ज ४ समग्ग्रभमुपयाम ग्रहीतो सीन्द्राय त्त्वा-जुष्टं गृह्णाम्म्येषते योनिरिन्द्राय त्त्वा जुष्टतमम्।।

ॐभूर्भुवः स्वः आदित्याद्यावाहितग्रहमण्डल देवताभ्यो नमः।

अग्निर्ध्यानम्—ॐअग्नेनय सुपथारायेऽअस्म्मान्व्विश्वानिदेव व्वयुनानि व्विद्वान्। युयोद्ध्यस्म्मज्जुहुराणमे नो भूयिष्ठान्ते नमऽउक्तिं व्विधेम।।

ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधायुताय मृडाग्नये नमः।

अनेन पूजनेन मृडाग्निः स्थापितदेवता च प्रीयन्ताम् न मम।

अग्निं स्विष्टकृते—ततो हुतशेष हविर्द्रव्यं गृहीत्वा ब्रह्मणान्वारब्धः स्विष्टकृद्धोमं कुर्यात्। (तत्पश्चात् हवन से बचे हवन द्रव्य (साकल्य) को एकत्रित करके ब्रह्मा से अन्वारब्ध के साथ यजमान स्विष्टकृत होम करें)

ॐयदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वान्युनमिहाकरमग्निष्टत् स्विष्ट कृद्वि-द्यात सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। ॐअग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्व प्रायश्चित्ता हुतिनां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान् समर्द्धय।।

ॐअग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्ने स्विष्टकृत, न मम।

प्रायश्चितसंज्ञक नवाहुती होमः—ॐभूः स्वाहा। इदमग्नये न मम। **ॐभुवः स्वाहा।** इदं वायवे न मम। **ॐस्वः स्वाहा।** इदं सूर्याय न मम। *एता महाव्याहृतयः।*

तत्रशास्त्रोक्तञ्च—

पूर्व प्रज्वलितोह्यग्निर्हविर्द्रव्य बुभुंजितः।
तृप्तो निर्धूमनिर्ज्वालो मृडाग्निः परिकीर्तितः।।
आज्यभिन्नं यदा होमद्रव्यं स्याद्विधिबोधितम्।
महाव्याहृति होमात्प्राक्तदा स्विष्टकृदाचरेत्।।
ततो व्याहृति होमादि सर्वं होमं समापयेत्।

अथ पञ्चवारुणी होमः

ॐत्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासि सीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ꣳ सि प्रमुमुग्ध्यस्यत् स्वाहा।।१।। इदमग्निवरुणाभ्यां न मम। ॐसत्वन्नो अग्ने ऽव्वमो भवोती नेदिष्ठो ऽअस्या उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्वनौ वरुण ꣳ रराणो वीहि मृडीक ꣳ सुहवो न ऐधि स्वाहा।।२।। इदमग्निवरुणाभ्यां न मम। ॐअयाश्चाग्ने ऽस्य नभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया ऽअसि। अयानो यज्ञं वहास्या यानो धेहि भेषज ꣳ स्वाहा ।।३।। इदमग्नये न मम। ॐये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा विततामहान्तः। तेभिर्नो ऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्का स्वाहा।।४।। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विष्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्येः स्वर्केभ्यश्च न मम। ॐउदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम ꣳ श्रथाय। अथावयमादित्य व्रते तवानागसोऽदितये स्याम स्वाहा।।५।। इदं वरुणादित्यायादितये न मम।।

ॐप्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापजये न मम।(मनसा)

।। इति नवाहुति होमः ।।

अथ बलिदानम्

इन्द्रादिदशदिक्पाल बलिदानम् (जलाक्षतान्यादाय)—ततो यजमानो देशकालौ संकीर्त्य० अमुकगौत्रः अमुकशर्माहं अद्य पूर्वकृतस्य अमुक-कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं इन्द्रादिदश दिक्पालेभ्यो बलिदानं करिष्ये।

ततः अग्न्यायतनस्य समन्ताद्दिक्षु विदिक्षुश्च दशदिक्पालानां पूजापूर्वक सदीप माषभक्त बलयो देयाः। (इसके बाद हवन कुण्ड के चारों ओर दशदिक्पालों के लिए सदीप बलि प्रदान करें।)

पुष्पाक्षताञ्चादाय—

१.पूर्वे—(ॐत्रातारमिन्द्रं०) इन्द्रं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं

उक्त च—

आज्यमेव यदा होम द्रव्यं स्याद्विधिबोधितम्।
तदा सकल होमान्ते स्विष्टकृद्धोममाचरेत्।। *(ग्रहरत्नावल्याम्)*

एभिर्गंधाक्षत पुष्पाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि।

इन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाषभक्त बलिं समर्पयामि। भो इन्द्र दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयताम्।

२.आग्नेयाम्—(ॐअग्निदूतं०) अग्निं सांङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं एभिर्गंधाक्षतपुष्पाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि।

अग्नये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाषभक्त बलिं समर्पयामि। भो अग्नेदिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अग्निः प्रीयताम्।

३.दक्षिणे—(ॐयमायत्त्वा०) यमं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं एभिर्गंधाक्षतपुष्पाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि।

यमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाषभक्त बलिं समर्पयामि। भो यम दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन यमः प्रीयताम्।

४.नैर्ऋत्याम्—(ॐअसुन्नव०) निर्ऋतिं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं एभिर्गंधाक्षतपुष्पाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि।

निर्ऋतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाषभक्त बलिं समर्पयामि। भो निर्ऋते दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन निर्ऋतिः प्रीयताम्।

५.पश्चिमे—(ॐतत्त्वाया०) वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं एभिर्गंधाक्षतपुष्पाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि।

वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाष-भक्त बलिं समर्पयामि। भो वरुण दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन वरुणः प्रीयताम्।

६.वायव्याम्—(ॐआनोनियु०) वायुं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं

एभिर्गंधाक्षतपुष्पाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि।

वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाषभक्त-बलिं समर्पयामि। भो वायो दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन वायुः प्रीयताम्।

७. उत्तरे—(ॐव्वय सोमम०) कुबेरं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं एभिर्गंधाक्षतपुष्पाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि।

कुबेराय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाष-भक्त बलिं समर्पयामि। भो कुबेर दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन कुबेरः प्रीयताम्।

८. ऐशान्याम्—(ॐतमीशान०) ईशानं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं एभिर्गंधाक्षतपुष्पाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि।

ईश्वराय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाष-भक्त बलिं समर्पयामि। भो ईश्वरदिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन ईश्वरः प्रीयताम्।

९. ईशानपूर्वयो मध्ये-(ॐब्रह्मजज्ञान०) ब्रह्माणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं एभिर्गंधाक्षतपुष्पाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि।

ब्रह्मणे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाषभक्त बलिं समर्पयामि। भो ब्रह्मन् दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन ब्रह्माः प्रीयताम्।

१०.निर्ऋतिपश्चिमयो मध्ये—(ॐस्योना पृथि०) अनन्तं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं एभिर्गंधाक्षतपुष्पाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि।

अनन्ताय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाष-भक्त बलिं समर्पयामि। भो अनन्तदिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अनन्तः प्रीयताम्।

दिक्पालेभ्यः एकनतन्त्रेण बलिदानपक्षे(पुष्पाक्षताञ्चादाय)—

ॐप्राच्च्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्च्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहा-र्व्वाच्च्यै दिशे स्वाहा प्रतीच्च्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्च्यै दिशे स्वाहोदीच्च्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्च्यै दिशे स्वाहोर्द्ध्वायै दिशे स्वाहार्व्वाच्च्यै दिशे स्वाहाव्वाच्च्यै दिशं स्वाहार्व्वाच्च्यै दिशे स्वाहा।।

इन्द्रादिदशदिक्पालान् साङ्गान् सपरिवारान् सायुधान् सशक्तिकान् एभि-र्गंधाक्षतपुष्पाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि।

इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमं सदीपमाषभक्त बलिं समर्पयामि। भो भो इन्द्रादिदशदिक्पाला: दिशो रक्षत बलिं भक्षत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयु: कर्तार: क्षेमकर्तार: शान्तिकर्तार: पुष्टिकर्तार: तुष्टिकर्तार: निर्विघ्नकर्तार: वरदा: भवत।

अनेन बलिदानेन इन्द्रादिदशदिक्पाला: प्रीयन्ताम्।

गणपत्यादिमण्डलस्थापितदेवताभ्यो बलिदानम् (हस्ते जलमादाय)—
यजमान दहिने हाथ में जल लेकर के संकल्प करे

देशकालौ संकीर्त्य० अमुकगोत्र अमुकशर्माहं पूर्वकृतस्य कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं गणपत्यादिमण्डलस्थापित देवताभ्यो बलिदानं करिष्ये।

ततो मण्डलान् समीपे सदीपदधिमाषभक्त बलिं देयाः। (तत्पश्चात् गणपत्यादि देवताओं के लिये मण्डलो के पास सदीप बलिदान व पूजा करें)

पुष्पाक्षताञ्चादाय—

१.गणेशबलि- (ॐगणानान्त्वा०)गणपतिं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं एभिर्गंधाक्षतपुष्पाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि।

गणपतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपभक्त बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्याभ्युदयं कुरु। भो गणपते मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयु: कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन गणपति: प्रीयताम्।

२.मातृकाबलि—(ॐसमक्ख्ये देव्व्याधियासन् दक्षिणरुचक्षसा। माम-ऽआयुः प्रमोषीर्म्मोऽअहन्त व्वीरं व्विदेयतव देवि सन्दृशि।।) वसोर्द्धारा सहित गौर्याद्यावाहितमातृः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः एभि-र्गंधाक्षतपुष्पाद्युपचारै स्त्वामहं पुजयामि।

वसोर्द्धारासहितगौर्याद्यावाहितमातृभ्यः साङ्गाभ्यः सपरिवाराभ्यः सायुधाभ्यः सशक्तिकाभ्यः इमं सदीपहरिद्राकुंकुमसिन्दूरभक्त बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्याभ्युदयं कुरुत। भो भो वसोर्द्धारा सहितगौर्याद्यावाहितमातरः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्यः निर्विघ्नकर्त्र्यः वरदाः भवत।

अनेन बलिदानेन वसोर्द्धारा सहितगौर्याद्यावाहितमातरः प्रीयन्ताम्।

३.वास्तोःबलि—(ॐवास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वा वेशोऽअनमीवो भवानः। यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्वशन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।)वास्तुं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं एभिर्गंधाक्षतपुष्पाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि।

वास्तोस्पतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाष भक्त बलिं समर्पयामि। भो वास्तो दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन वास्तोदेवताः प्रीयताम्।

४.ग्रहबलि— (ॐग्रहाऽऊर्ज्जाहुतयो व्यन्तो व्विप्रायमतिम्। तेषां व्विशिप्रियाणां व्वोहमिषमूर्ज्ज ᳪ समग्रभमुपयाम ग्रहीतो सीन्द्राय त्त्वाजुष्टं गृह्णाम्म्येषते योनिरिन्द्राय त्त्वा जुष्टतमम्।।) आदित्याद्यावाहितदेवताः साङ्गान् सपरिवारान् सायुधान् सशक्तिकान् एभिर्गंधाक्षतपुष्पाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। आदित्याद्यावाहितदेवताभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमं सदीपमाषभक्त बलिं समर्पयामि। भो भो आदित्याद्यावाहितदेवताः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः निर्विघ्नकर्तारः वरदाः भवत।

अनेन बलिदानेन आदित्याद्यावाहितदेवताः प्रीयन्ताम्।

सर्वतोभद्र मण्डलाद्यावाहित देवताभ्यः पायस बलिं दद्यात्।

प्रधानदेवता बलि— ततः मूलमन्त्रान्ते कूष्माण्डरसेनाप्यायतामिति प्रधान-देवताभ्यो सुपूजित कूष्माण्ड बलिं दद्यात्।

शास्त्रोक्तञ्च—

ब्राह्मणेन सदा देयं कूष्माण्डं बलि कर्मणि।
वस्त्रसंवेष्टितं कृत्वा छेदं नैव तु कारयेत्।।
क्षत्रिय वैश्यादौ तु छेदयेत्छुरिकादिना। ***(कालिपुराण)***

पादौ प्रक्षाल्याचम्य शान्ति३रिति पठेत्ततः क्षेत्रपालाय महाबलिं दद्यात्।

क्षेत्रपाल बलि— एकस्मिन् वंसपात्रे कुशानास्तीर्य आहारचतुर्गुणं द्विगुणं **वा माषभक्तदध्योदनं जलपात्रं च निधाय हरिद्रा कुंकुमसिन्दूरद्रव्यचतुर्मुख दीपयुतं कृत्वा सङ्कल्पं कुर्यात्।** (एक बांस या मिट्टी के पात्र में कुशापत्रादि बिछाकर उसमें उड़द, दही, भात, जलपात्र, हल्दी, सिन्दूर, द्रव्य, पताका, चतुर्मुखादीपक आदि रखकर यजमान दहिने हाथ में जल लेकर के संकल्प करे)

देशकालौ संकीर्त्य० अमुकगोत्र अमुकशर्माहं पूर्वकृतस्य कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं क्षेत्रपाल पूजनं बलिदानं च करिष्ये।

पुष्पाक्षताञ्चादाय-ॐन हिस्पशमविदन्नन्यमस्माद् वैश्वानरात्पुर ऽएतार-मग्नेः एमेनम वृधन्नमृता ऽअमृर्त्त्यं वैश्वानरं क्षैत्र जित्याय देवाः।।

क्षेत्रपालं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं एभिर्गंधाक्षतपुष्पाद्यु-पचारैस्त्वामहं पूजयामि।

प्रार्थना— **नमो क्षेत्रपालस्त्वं भूतप्रेतगणैः सह।**
पूजां बलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा।।

पुनः हस्ते जलाक्षताञ्चादाय—

क्षेत्रपाल महाबाहो महाबल पराक्रम।
क्षेत्राणां रक्षणार्थाय बलिं नय नमोऽस्तु ते।।

क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाष-भक्त बलिं समर्पयामि। भो क्षेत्रपाल सर्वतो दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयताम्, न मम।

तत्पश्चात् नापित या दुर्ब्राह्मण के द्वारा बलि को चौराहे पर रखवा दें तथा बलि ले जाने के बाद दरवाजे तक जल के छिटें दें।

भूतेभ्यः बलिदानम्—ततो शुद्धशूर्पमध्ये पिष्टमय दीप माषान्नदध्योदन हरिद्रासिन्दूरकज्जलगन्ध रक्तपुष्पाणि संस्थाप्य गीतवादित्रकुटुम्बजन सहित चत्वरे गत्वा तत्र गन्धपुष्पाद्यर्चितं शूर्पं स्थापयेत् सङ्कल्पं कुर्यात्।

शास्त्रोक्तञ्च—

यस्य वेदश्च वेदी च विच्छिद्यंते त्रिपुरुषम्।
स वै दुब्राह्मणो नाम सर्वकर्मसु गर्हितः।। *(कारिकाया)*

देशकालौ संकीर्त्य० अमुक गोत्र अमुक शर्माहं पूर्वकृतस्य कर्मणः साङ्गतासिद्धर्थं भूतेभ्यः बलिदानं च करिष्ये।

पुष्पाक्षताञ्चादाय—

ॐबलिं गृह्णन्त्विमे देवा आदित्या वसवस्तथा।
मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगाः गहाः।।१।।
असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरग राक्षसाः।
शाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतना शिवाः।।२।।
जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वा नानाविद्याधरा नगाः।
जगतां शान्ति कर्तारः क्रमाद्याश्चैव मातरः।।३।।
मा विघ्नं मा च मे रोगो मा सन्तु परिपन्थिनः।
सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूताः प्रेताः सुखावहाः।।४।।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु रक्षां कुर्वन्तु मे ऽध्वरे।
देवताभ्यः पितृभ्य च भूतेभ्यः सह जन्तुभिः।।५।।
त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि च।
एतत्स्थानाधिवासिभ्यः प्रयच्छामि बलिं नमः।।६।।

एतेभ्यो भूतेभ्यो गन्धादिकं वः स्वाहा इति बलिं दत्वा होमस्थाने आगत्य पाणिपादं प्रक्षाल्याचमनं कुर्यात्। (किसी के द्वारा बलि रखवाकर वापस आकर के हाथ व पैर धोकर आचमन करें)।।

।।इति बलिदानम्।।

अथ पूर्णाहुति

सङ्कल्पम्—ॐअद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य मम मनोऽभिलषित धर्मार्थकामादि यथेप्सितायुरारोग्यैश्वर्य पुत्रपशुसुहृत्सम्बन्धिबान्धवादि प्राप्तये ब्राह्मण द्वारा मत्कारिते अमुककर्मणि श्रीगणपतिगौर्याद्यावाहित इष्टदेवता प्रीतये च स्वर्मन्त्रैः यवतिलतण्डुलाज्याहुतिभिः परिपूर्णतासिद्धये वसोर्धारा समन्वितं पूर्णाहुतिहोममहं करिष्ये।

साकल्य, ताम्बूल पूगीफलाक्षतादि सहितं नारिकेलमन्तर्धृत पूरितं कौशेय पट्टवस्त्र कौसुम्भसूत्र पुष्पमालादिभिर्वेष्टितं कुंकुमादिभिः सिक्त्वा ''पूर्णाहुत्यै नमः'' इति पंचोपचारैः सम्पूज्य, श्रुवपात्रे संस्थाप्य सपत्नीको यजमानः अन्वा-

रब्धस्तिष्ठन् श्रीजगदीश्वरं मनसा ध्यायन् शङ्खतूर्यादिघोषैः पूर्णाहुतिं जुहुयात्—
(संकल्प के बाद नारियल गोले में घी भरकर लालवस्त्र लपेटकर ताम्बुलसुपारी, गन्धादि से "**ॐपूर्णाहुत्यै नमः**" मन्त्र के द्वारा पूजा करके यजमान सपत्नीक अन्वारबध के साथ भगवान का ध्यान करते हुये पूर्णाहुति का हवन करें।)

तत्र मन्त्रा—ॐसमुद्रादूर्म्मिर्मधुँ२ऽउदारदुपा ७ं शुना सममृतत्वमातट्। घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतनाभिः।।

व्वयन्नामप्प्रब्रवामा घृतस्यास्मिन्यज्ञे घारयामानमोभिः। उपब्रह्मा शृण वच्छस्यमानं चतुः शृंगोव्वमींगौरऽ एतत्।।

चत्वारि शृंगा त्रयोऽअस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासोऽअस्य। त्रिधाबद्धो वृषभो रोरवीति महो देवोमर्त्या२ऽआविवेश।।

त्रिधाहितं पणिभिर्गुह्यमानं गविदेवासो घृतमन्वविन्दन्। इन्द्र ऽएक ६ सूर्य्य ऽएकं जजानव्वेनादेक ६ पिष्ठतक्षुः।।

एताऽअर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छत व्रजारिपुणानाव चक्षे। घृतस्य धारा ऽभिचाकशीमिहिरण्ययो व्वेत सोमध्यऽआसाम्।।

सम्यक्स्रवन्ति सरितो नघेनाऽअन्तर्हृदामनसा पूयमानाः। एते ऽअर्षन्त्यूर्म्मयो घृतस्य मृगा ऽइवक्षिपणोरिषमाणाः।।

सिन्धोरिव प्प्राध्वने शूघनासो वात प्प्रमियः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्यधारा ऽ अरुषो न व्वाजी काष्ट्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।।

अभिप्प्रवन्त समने व्वयोषाः कल्याण्यः स्मयमानासो ऽअग्निम्। घृतस्य धाराः समिधोनसन्तता जुषाणो हर्य्यतिजातवेदाः।।

कन्याऽइवव्वहतुमेतवा ऽउऽअञ्ज्यञ्जाना ऽअभिचाकशीमि। यत्रसोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा ऽअभिमतत्पवन्ते।।

अभ्यर्षत सुष्ठुतिङ्गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविण निधत्त। इमं यज्ञन्नयत देवता नो धृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते।।

धामन्ते व्विश्वं भुवनमधिश्रित मन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि। अपामनीके-समिथेय ऽआभृतस्तम याममधुमन्तंत ऽऊर्म्मिम्।।

पुनस्त्वादित्यारुद्रा व्वसवः समिंधताम्पुनर्ब्रह्माणो व्वसुनीथ यज्ञैः। घृतेन त्वं तन्वँ व्वर्धयस्वसत्याः यजमानस्य कामाः।।

सप्तते'ऽअग्ने समिधः सप्तजिह्वाः सप्तऋृषयः सप्तधामप्रियाणि। सप्तहोत्राः

सप्तधात्वायजन्ति सप्तयोनीरापृणस्वाघृतेन स्वाहा।।

ॐमूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्। कवि ꣳ सम्राजमतिथिञ्जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः।। ॐपूर्णादर्व्वि परापत सुपूर्ण्णा पुनरापत। व्वस्नेव व्विक्क्रीणा वहाऽ इषमूर्ज्ज ꣳ शतक्क्रतो।।

इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्य: शतक्रतवे सप्तवते अग्नये अद्भ्य: पुरुषाय श्रियै च न मम।

घृतधारा—ततः यजमान स्रुचिं गृहीत्वात्थाप्य हुत्वोपरि घृतधारां अविच्छिन्नां दद्यात्। (इसके बाद यजमान हाथ में स्रुचि लेकर अविच्छिन्न घृतधारा अग्नि में देवें।)

ॐव्वसोः पवित्रमसि शतधारं व्वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा।।

इदं वाजादिभ्योऽग्नये विष्णवे रुद्राय सोमाय वैश्वानराय च न मम।

अग्नि प्रार्थना—

ॐश्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम्।
तेजः आयुष्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन।।
भो भो अग्ने! महाशक्ते सर्व कर्मप्रसाधन।
कर्मान्तिरेऽपि सम्प्राप्ते सान्निध्यं कुरु सर्वदा।।

भस्मवन्दनं (त्र्यायुषकरणं)— **ततः कुण्डात्स्थण्डिलाद्वा स्रुवविलपृष्ठेन विभूतिं गृहीत्वा दक्षिणाऽनामिकया तिलक धारणमित्याचार्यः पूर्वमात्मनः पश्चात् यजमानस्य भस्माङ्क्ये** (तत्पश्चात् कुण्ड या स्थण्डिल की भस्म स्रुवा पर लेकर दहिने हाथ की अनामिका से आचार्य धारण करे तथा इसके बाद यजमान ललाट, ग्रीवा, दक्षिणभुजा, हृदय व वामभुजा पर धारण करें।)

ॐत्र्यायुषं जमदग्नेः — इति ललाटे।

शास्त्रोक्तञ्च—

विवाहादिक्रियायाञ्च शालायां वास्तुपूजने।
नित्यहोमे वृषोत्सर्गे न पूर्णाहुतिमाचरेत्।। ***(प्रयोगरत्ने)***
विवाहे व्रतबन्धे च शालायां चौल कर्मणि।
गर्भाधानादि संस्कारे पूर्णाहूति न कारयेत्।। ***(यज्ञमीमांसा)***
लाजाहोमं समिद्धोमं मूर्द्धिहोमं तथैव च।
पूर्णाहुति वसोर्द्धारां तिष्ठन्नेव हि कारयेत्।। ***(कारिका)***

ॐकश्यपस्य त्र्यायुषं — इति ग्रीवायाम्।

ॐयद्देवेषु त्र्यायुषं — इति दक्षिणस्कधे।

ॐतन्नोऽस्तु त्र्यायुषं — इति हृदि।

ततः आरर्तिक्यं पुष्पाञ्जलिं च कुर्यात् (यज्ञपुरुष की आरती तथा पुष्पाञ्जलि करें)

ततोऽग्ने प्रदक्षिणां कुर्यात् (तत्पश्चात् यजमान अग्नि की प्रदक्षिणा करके स्व स्थान पर बैठ जायें)

ततः प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षिप्तस्य आज्यस्य यजमानेन अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां प्राशनं कार्यम्। (बाद में प्रोक्षणीपात्र में गिरे आज्य को यजमान अनामिका और अंगुठे से प्राशन करें।)

तत्रमन्त्र— ॐयस्माद्यज्ञ पुरोडाशाद्यज्वानो ब्रह्मरूपिणः।
तं संस्रव पुरोडाशं प्राश्नामि सुखपुण्यदम्।।

ततः आचम्य प्रणीता पात्रे निहिते पवित्रे आदाय ग्रन्थिं मुक्त्वा ताभ्यां शिरः सम्मृज्य ते पवित्रे अग्नौ प्रक्षिपेत्। (तत्पश्चात् यजमान आचमन करके प्रणीतापात्र में रखी पवित्री की गाँठ खोलकर प्रणीता के जल से सिर पर छिंटे देकर उपयमन कुशाओं के साथ अग्नि में छोड़ दें तथा प्रणीता को ईशान कोण में उल्टा कर दें।)

तत्रमन्त्र—ॐसुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु, आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।

इति मन्त्रेण प्रणीतोदकं सपवित्रोपयमन कुशादिनाऽऽदाय यजमान शिरस्यभिषिञ्च्य।

ॐदुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु याऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः। इत्यैशान्यां प्रणीतां न्युब्जी कुर्यात्। उपयमन कुशानग्नौ प्रहरेत्।

पूर्णपात्रदानम्—

ततो यजमान देशकालौ संकीर्त्य -ॐअद्य कृतस्यामुक होम कर्मणः साङ्गता सिद्ध्यर्थमिदं सदक्षिणां पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे। (यजमान दक्षिणा सहित आचार्य व ब्रह्मा को पूर्णपात्र प्रदान करे।)

ततो ब्रह्मग्रन्थि विमोकः। (ब्रह्माजी की गाँठ खोल दें।)

शास्त्रोक्तञ्च— होमान्ते संस्रवं प्राश्चाचम्य सम्मार्जयेत्तनुम्।
यथाचारं पवित्राभ्यां वह्नौ ते प्रक्षिपेत्ततः।।
अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः उपयमनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः।।*(गादाधरीयशाष्य)*

अथ बर्हिहोम—ततः आस्तरण क्रमेण बर्हिरुत्थाप्य आज्येनाभिघार्य (इसके बाद आस्तरण क्रम से बर्हि लेकर घी में डुबोकर निम्न मन्त्र से अग्नि में छोड़ दें।)

तत्र मन्त्र—ॐदेवा गातु विदो गातु वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञ स्वाहा वातेधाः स्वाहा। इति हस्तेनैव जुहुयात्।

तर्पण मार्जन—

एवं होमं समाप्य पात्रस्थजले जपदेवतां रक्तचंदन, गंधपुष्पादिना सम्पूज्य होम दशांशेन सतीर्थाम्बुदुग्धमिश्रजलेन मूलमन्त्रान्ते अमुकदेवतां तर्पयामि इत्युक्त्वा तर्पणं कुर्यात्। (तत्पश्चात् यजमान अपने सम्मुख जलपात्र रखकर उसमें तीर्थजल दूध मिलाकर जपदेवता की गंधपुष्पादि से पुजा करके दशांश होम के बाद दशांश तर्पण व तर्पण का दशांश मार्जन करें)

सङ्कल्पम् (जलाक्षतान्यादाय)—**ततो यजमानो देशकालौ संकीर्त्य० अमुकगौत्रः अमुकशर्माहं अद्य पूर्व कृतस्य अमुक कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दशांशतर्पण मार्जनमहं करिष्ये।**

तर्पणं—मूलमन्त्रान्ते, अमुक देवतां तर्पयामि।

मार्जन—मूलमन्त्रान्ते, आत्मानमभिषिञ्चामि नमः।

इति तर्पणसञ्चितातिरिक्त शुद्धजलेन यजमान मूर्धनि पृथिव्यां वा मार्जनं कुर्यात्। (यजमान देवतीर्थ से तर्पण के बाद शुद्धजल से अपने मस्तक या पृथ्वि पर छिंटे दें। तथा मार्जन का दशांश, ब्राह्मण भोजन करायें।)

अथ ब्राह्मण भोजनम्—

सङ्कल्पम्—

देशकालौ संकीर्त्य० अमुकगोत्रोत्पन्नोहं मम गृहे कृतस्यामुककर्मणः सम्पूर्णतासिद्धये यथोपन्नेनान्नेन यथाकालं यथासंख्यकान् नानागोत्रान् नानाभिधान् ब्राह्मणान् (वा कन्याबटुकादीन्) **भोजयिष्ये दक्षिणां च दास्ये।** इति संकल्प्य यथाकालं ब्राह्मणान् भोजयेत्।

श्रेयोदानम्—

ब्रह्मादय ऋत्विजादय च आचार्येन श्रेयोदानं कुर्युः। उदङ्मुख आचार्यः

तत्रशास्त्रोक्तञ्च— सदाचाररता विप्रा भोज्याभोज्यैर्मनोहरैः।
पूज्यास्ते देवताबुद्ध्या नमस्कार्याः पुनः पुनः।।
विप्र भोजन मात्रेण व्यङ्गं साङ्गं भवेद् ध्रुवम्।
यत्र भुंक्ते द्विजस्तस्मात्तत्र भुंक्ते हरिः स्वयम्।। ***(वशिष्ठः)***

प्राङ्गमुखस्थित यजमान हस्ते श्रेयोदानं कुर्यात्। (आचार्य उत्तराभिमुख विराजमान होकर पूर्वाभिमुख स्थित यजमान के हाथ में श्रेयदान करें)

शिवा आपः सन्तु। इति जलम्।(जल देवें)

सौमनस्यमस्तु। इति पुष्पम्।(पुष्प देवें)

अक्षतं चारिष्टं चास्तु। इति अक्षतम्।(चावल देकर बोले)

ततो दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टि चास्तु। इति पुनरुदकं दद्यात्।

(फिर जल देवें तथा आचार्य पुनः चावल, जल, सुपारी लेकर बोले)

ततः आचार्य साक्षतसोदकपूगीफलं गृहीत्वा—

भवन्नियोगेन मया अस्मिन् अमुककर्मणि यत्कृतं आचार्यत्वं तथा च एभिर्ब्राह्मणैः सह यत्कृतं ब्रह्मत्वं गाणपत्यं सादस्यं च यः कृतो होमस्तस्मात् आचार्यत्वात् ब्रह्मत्वात् गाणपत्यात् सादस्यात् होमात् यदुत्पन्नः श्रेयः तत्तुभ्यमहं सम्प्रददे।

मन्त्रार्था सफलासन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयोऽस्तु नः।।
अक्षतान् विप्र हस्तात्तु नित्यं गृह्णन्ति ये नराः।
चत्वारि तेषां वर्धन्ते आयुः कीर्तियशोबलम्।।

तेन श्रेयसा त्वं श्रेयस्वी भव।।

प्रतिगृह "भवामि"। **इति यजमानो वदेत्।**

।। इति श्रेयोदानम् ।।

दक्षिणादानम्—

सपत्नीको यजमानः अग्नेः पश्चिमे उपविश्य उदङ्गमुखानाचार्यादीन् वरण क्रमेण पूजा पूर्विकां दक्षिणां दद्यात्।

शास्त्रोक्तं च—वित्तशाठ्यं न कुर्वीत सति द्रव्यं फलप्रदम्। ***(यो. या. व.)***

वेदोपनिषदि चैव सर्वकर्मसु दक्षिणा।
सर्वत्रैव तु चोद्दिष्टा भूमिर्गावोऽथकांचनम्।।

कर्मान्ते दक्षिणा विलम्बाद्ददाति तस्य फलमाहमुहूर्ते समतीते तु भवेच्छतगुणा च सा।

त्रिरात्रे तद्दशगुणा सप्ताहेद्विगुणा मता।।

मासेलक्षगुणा प्रोक्ता ब्राह्मणानां च वर्द्धते।

सांवत्सरव्यतीते तु सा त्रिकोटिगुणा भवेत्।। ***(ब्रह्मवैवर्ते)***

सपत्नीको यजमानः अग्नेः पश्चिमे उपविश्य उदङ्गमुखानाचार्यादीन् वरण क्रमेण पूजा पूर्विकां दक्षिणां दद्यात्। (यजमान पत्नी सहित अग्नि के पश्चिम की ओर पूर्वाभिमुख बैठकर उत्तराभिमुख बैठे आचार्य सहित ब्राह्मणों का पूजन करके दक्षिणा दान करें)

सङ्कल्पम् (यजमान हस्ते जलमादाय)— **देशकालौ स्मृत्वा मया आचरितस्य अमुककर्मणः साङ्गतासिद्धये आचार्यादि वृतेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः पूजनपूर्वकं दक्षिणा प्रदानमहं करिष्ये।**

आचार्य पूजनम्—

एतत्ते पाद्यं। शिष्टाचारात्पादौ प्रक्षाल्य।(यजमान आचार्य के शिष्टाचार से पैर धायें)

इदमर्घ्यम्। (अर्घ्य देवें)

इमे तुभ्यं बार्हस्पत्ये वाससी। (सुन्दर वस्त्राभुषण प्रदान करें)

एषते गन्धः। (कुमकुम या केसरचन्दन से तिलक करें)

इमानि पुष्पाणि। (सुन्दर पुष्पमाला पहनायें)

एषते धूपः दीपः नैवेद्यफलताम्बूलादक्षिणादीनि तुभ्यमहं सम्प्रददे। (धूप दीप करके दक्षिणा सहित फल, ताम्बूल व मिठाई प्रदान करें)

गोदानम्—

सङ्कल्पम् (यजमान हस्ते जलमादाय)—**देशकालौ स्मृत्वा मया आचरितस्य अमुककर्मणः साङ्गतासिद्धये अमुकशर्मणे आचार्याय गोनिष्क्रयभूतमिदं हिरण्यं अग्निदैवतं तुभ्यमहं सम्प्रददे। ततो यजमान स्वर्णभूमिदानं च कुर्यात्।** (यजमान हाथ में जल लेकर गाय, स्वर्ण, भूमि तथा अन्न का दान करें)

अथाऽभिषेकम्—

ततो ग्रहवेदीकलशैः प्रधानदेवतानां उदकमेकस्मिन् पात्रे एकीकृत्य दूर्वा पञ्चपल्लवैरुदङ्गमुख आचार्यस्तिष्ठन् जापका च पत्नींपरिवारञ्च वामतः कृत्वा यजमानं प्राङ्गमुखमुपविष्टं अभिषिञ्चेयुरेभिर्मन्त्रैः (तत्पश्चात् ग्रहवेदी कलश तथा प्रधानदेवता कलश से जल लेकर दूर्वा व पंचल्लवों से सपरिवार यजमान का मस्तकाभिषेक करें)

अभिषेक मन्त्राः—

ॐआपोहिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे।। योवः

दानानि—स्वर्णगोभूतिलान्दद्यात् सर्वदोषापनुत्तये।।

शिवतमो रसस्तस्य भाजयते हनः। उषतीरिव मातरः।। तस्माअरङ्गमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जन यथाचनः।।

ॐवरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्त्थो वरुणस्यऽ ऋतसदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद।।

ॐपुनन्तु मादेवजनाः पुनन्तु मनसाधियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।

ॐपयः पृथिव्यां पयऽओषधीषुपयो दिव्यंतरिक्षे पयोधाः। पयस्वती प्रदिशः सन्तुमह्यम्।।

ॐदेवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ।।

ॐदेवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि।।

ॐद्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व ꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि। यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।।

ॐसरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु सर्व कामार्थ सिद्धये।।

ॐशान्तिः पुष्टिस्तुष्टि चास्तु। ॐसुशान्तिर्भवतु। ॐअमृताऽभिषेकोऽस्तु।।

भूयसीदक्षिणादानम्—

सङ्कल्पम् (यजमान हस्ते जलमादाय)—**देशकालौ स्मृत्वा मया आचरितस्य अमुककर्मणः साङ्गतासिद्धये नानावेदान्तर्गत नानाशाखाध्यायिभ्यो नानागोत्रेभ्यो नानाब्राह्मणेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च यथाशक्ति भूयसीं दक्षिणां दातुमुत्सृजे।**
(संकल्प करके दक्षिणा को ब्राह्मणो व गरीबों में बाँट दें)

छायापात्र दानम्—

छायापात्रं स्वपुरस्तिलराश्युपरि संस्थाप्य तत्र धारित शुद्धगोघृतं पूरयेत्, ततः सपत्नीको यजमानः स्वमुखमवलोकयेत्। (एक कांसे की कटोरी में शुद्ध घी भरकर अपने आगे तिलराशि पर रखकर सपत्नीक यजमान अपना मुख नीचे लिखे मन्त्र के द्वारा देखें)

तत्र शास्त्रोक्तञ्च— सर्वेषु शुभकार्येषु पत्नी दक्षिणतः शुभा।
अभिषेके विप्रपादप्रक्षालने चैव वामतः।। *(संस्कारगणपति)*

तत्र मन्त्रो—

आज्यं सुराणामाहारमाज्यं पापहरं परम्।
आज्यमध्येमुखं दृष्ट्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते।।
घृतं नाशयते व्याधिं घृतञ्च हरते रुजम्।
घृतं तेजोधिकरणं घृतमायुः प्रवर्धते।।

इति मुखं दृष्ट्वा हिरण्यं पञ्चरत्नानि वा प्रक्षिपेत्। (तत्पश्चात् घी के पात्र में सुवर्ण या पंचरत्न छोड़े तथा जल, अक्षत, पुष्प तथा द्रव्य लेकर संकल्प करें)

सङ्कल्पम् (यजमान हस्ते जलमादाय)—देशकालौ स्मृत्वा अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुक शर्माऽहं सपत्नीकस्य मया आचरितस्य अमुककर्मणः साङ्गतासिद्ध्ये सकला ऽरिष्टशान्त्यर्थं घृतपूरितमिदं छायापात्रं सस्वर्णं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

सुवासिनीभिर्नीराजनं (आरता)—

ततः पुत्रवतीर्वृद्ध सुवासिनीभिर्नीराजनं कार्यम्।(तत्पश्चात् पुत्रवती सुवासिनी स्त्री यजमान की आरती (आरता) करें)

तत्र मन्त्र—ॐअनाधृष्ट्टा पुरस्तादग्नेराधिपत्त्य ऽ आयुर्म्मेदा ꣳ पुत्रवती दक्षिणत ऽइन्द्रस्याधिपत्ये प्प्रजाम्मेदाः। सुषदा पश्चाद्देवस्य सवितुसवितुराधिपत्ये चक्षुर्म्मेदा ऽआ श्रुतिरुत्तरतो धातुराधिपत्ये रायष्पोषम्मेदाः। व्विधृतिरुपरिष्ट्टाद् बृहस्पतेराधिपत्य ऽओजोमेदा व्विश्वाब्भ्यो मानाष्ट्राब्भ्य स्प्याहिरश्वासि।।

आशिर्वचनम्—

ॐभद्रङ्कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं य्यदायुः।। देवानां भद्रासुमतिर्ऋजूयतान्देवाना ꣳ रातिरभिनो निवर्तताम्। देवाना ꣳ सख्यमुपसेदिमा व्वयं देवानऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे।। उच्चादिविदक्षिणावन्तोऽ अस्थुर्येऽ अश्वदाः सहते सूर्येण हिरण्यदाऽअमृतत्वं भजन्ते वासोदाः सोम प्रतिरन्तु आयुः।। ॐस्वस्ति नऽइन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्ट नेमिः स्वस्ति नो बृस्पतिर्दधातु।।

श्रीवर्चस्वमायुष्यमारोग्यं आविधात्पवमानम्महीयते।
धान्यं धनं पशुं बहुपुत्र लाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः।।
विघ्ना विनाशमायान्तु नाशमायान्तु शत्रवः।

प्रयत्ना सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।।
मन्त्रार्था सफलासन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयोऽस्तु नः।।
अक्षतान् विप्रहस्तात्तु नित्यं गृह्णन्ति ये नराः।
चत्वारि तेषां वर्धन्ते आयुः कीर्तिर्यशोबलम्।।

इत्याक्षतफलनारिकेलफल सहिताभिराशीर्वादः यजमानो विप्रहस्ताल्लब्धानि आशीर्वादात्मक नारिकेलादीनि फलानि स्वपत्न्या अञ्चले निदध्यात्। (यजमान चावल, फल, पुष्प व नारियल ब्राह्मणों से आशीर्वादरूप में ग्रहण करके अपनी पत्नी के पल्लु में दे देवें)

क्षमाप्रार्थना—करौ बध्वा प्रार्थयेत्। (हाथ जोड़कर क्षमाप्रार्थना करें)

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर।।
अपराध सहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरः।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।।
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात् कारुण्य भावेन रक्षमां परमेश्वर।।

अथ देवताग्नि विसर्जनम्—यजमान हस्ते पुष्पाक्षताञ्चादाय। (यजमान हाथ में पुष्प और चावल लेकर अग्नि व देवताओं से प्रार्थना करें)

तत्र मन्त्र—ॐयज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा। एषते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्वं वीरस्तञ्जुषस्वस्वाहा।। ॐसमुद्रं गच्छ स्वाहाऽंतरिक्ष गच्छ स्वाहा देव ꣳ सवितारं गच्छ स्वाहामित्रावरुणौ गच्छ स्वाहाऽहोरात्रे गच्छ स्वाहा छन्दा ꣳ सिगच्छ स्वाहा। द्यावापृथिवी गच्छ स्वाहा यज्ञं गच्छ स्वाहा सोमं गच्छ स्वाहा। दिव्यं नभो गच्छ स्वाहाऽग्निं वैश्वानरंगच्छ स्वाहा।। मनो मेहार्दियच्छ दिवंते धूमोगच्छतु स्वर्ज्योतिः पृथिवीं भस्मनापृण स्वाहा।। उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयंतस्त्वे महे। उपप्रयन्तु मरुतः सुदानवऽइन्द्र प्राशुर्भवाशचा।।

ॐयान्तु देवगणाः सर्वे स्वशक्त्या पूजिता मया।
इष्टकाम प्रसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।।

शिरसि करौ कृत्वा भूमौ जानुभ्यां पतित्वा (घुटनों के बल सिर झुकाकर हाथ जोड़कर देवताओं से प्रार्थना करें)

ॐये च ब्रह्मादयो देवा अस्मिन् यज्ञे समागताः।
स्व-स्व स्थानं व्रजन्त्वेते शान्तिं कुर्वन्तु मे सदा।।
भक्तिहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यत्कृतम्।
देवक्षमध्वं तत्सर्वं सर्वं दैवं कृपाकराः।।
आवाहित देवताः स्व-स्वस्थानानि गच्छत।
गच्छत्वं भगवन्नग्ने स्थाने कुण्डमध्यतः।।
हुतमादाय देवेभ्यः शीघ्रं देहि प्रसीद मे।
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर।।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन।।

श्रीगणपतिलक्ष्म्यौ! यजमानगृहे तिष्ठतम्, इति सम्प्रार्थ्य गणपतिपीठस्थ पूगीफलं गृहे स्थापयेत्। इति पुष्पाक्षत प्रक्षेपेण स्थापित सर्वकलशदेवताग्निश्च विसृज्य सर्व देवपीठनि आचार्याय दद्यात्। (पुष्प व चावल सभी पीठों पर देवविसर्जन के लिए छोड़ दें तथा श्रीगणपतिजी को घर के देवस्थान में विराजमान करके देवपीठों को आचार्य को दे देवें।)

सम्पूर्णतावाचनम्(यजमान करौबद्ध्वा)—**मयायत्कृतं अमुकयज्ञकर्म तत् कलाहीनं भक्तिहीनं श्रद्धाहीनं शक्तिहीनं द्रव्यहीनञ्च भवतां ब्राह्मणानां वचनात् श्रीगणपत्याद्यावाहितदेवता प्रसादाच्च सर्वविधैः परिपूर्णमस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु।**

विप्राः —**अस्तु परिपूर्णम्।।**

॥ इति देवताग्निविसर्जनम् ॥

श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम्

ॐनमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्तासि। त्वमेव केवलं धर्तासि। त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यम्। ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि। अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानमव शिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अव चोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्। त्वं वाङ्मयस्त्वं

चिन्मयः। त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि। सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि। त्वं गुणत्रयातीतः। त्वमवस्थात्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं मूलाधार-स्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्। गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्।। तारेण रुद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्। बिन्दुरुत्तररूपम्। नादः सन्धानम्। संहिता सन्धिः। सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः निचृद्गायत्री छन्दः। श्रीमहागणपतिर्देवता। ॐगं गणपतये नमः। एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।। एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम्। अभयं वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम्। रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवास-सम्। रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्।। भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारण-मच्युतम्। आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्।। एवं ध्यायति यो नित्यं सयोगी योगिनां वरः। नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नविनाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमो नमः।।

एतदथर्वशीर्षं योऽधीते स ब्रह्मभूयाय कल्पते। स सर्वविघ्नैर्नबाध्यते। स सर्वतः सुखमेधते। स पञ्चमहापातकोपपातकात् प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानोऽपापो भवति। सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नो भवति धर्मार्थकाममोक्षं च विन्दति। इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान् भवति। सहस्त्रावर्तनाद्यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत्। अनेन गणपति-मभिषिञ्चति स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नञ्जपति स विद्यावान भवति। इत्यथर्वणवाक्यम्। ब्रह्माद्याचरणं विद्यात्। न बिभेति कदाचनेति। यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति। स मेधावान् भवति। यो मोदक सहस्त्रेण यजति स वाञ्छितफलमवाप्नोति। यः साज्य समिद्भिर्यजति स सर्वं लभते सर्वं लभते। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमा संन्निधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति। महाविघ्नात् प्रमुच्यते। महापापात् प्रमुच्यते।

महादोषात् प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवति। स सर्वविद्भवति। य एवं वेद।। भद्रङ्कर्णेभिरिति।।

॥ इति गणपत्यथर्वशीर्षम् ॥

अथ संक्षिप्तदेवताध्यानम्

शिव ध्यानम्—

ॐनमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिव तराय च।।

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजत गिरिनिभं चारु चन्द्रावतंसं,
रत्ना कल्पोज्ज्वलाङ्गं परशु मृग वरा भीति हस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्र कृतिं वसानं,
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिल भय हरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

प्रार्थना—

वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणम्,
वन्दे पन्नग भूषणं मृगधरं वन्दे पशूनाम्पतिम्।
वन्दे सूर्य शशाङ्क वह्नि नयनं वन्दे मुकुन्दप्रियम्,
वन्दे भक्त जनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्।।

श्रीराम ध्यानम्—

नीलाम्बुज श्यामलकोमलाङ्गं सीतासमारोपित वामभागं।
पाणौ महासायक चारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम्।।

हनुमत् ध्यानम्—

मनोजवं मारुत तुल्य वेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठं।
वातात्मजं वानरयूथ मुख्यं, श्रीराम दूतं शरणं प्रपद्ये।।

श्रीकृष्ण ध्यानम्—

गोपाल बंशीधर रूपसिन्धो लोकेश नारायण दीनबन्धो।
उच्चस्वरैस्त्वं वद सर्वदैव गोविन्द दामोदर माधवेति।।
गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे गोविन्द गोविन्द मुकुन्द कृष्ण।
गोविन्द गोविन्द रथाङ्गपाणे गोविन्द दामोदर माधवेति।।

राधाध्यानम्—

नमस्ते परमेशानि रासमण्डलवासिनी।
रासेश्वरि नमस्तेऽस्तु कृष्णप्राणाधिकप्रिये।।
नीलाम्बरा धरा राधा पीताम्बरो धरो हरिः।
जीवनेन धने नित्यं राधाकृष्णगतिर्मम।।

गोर्ध्यानम्—

ॐइरावती धेनुमती हि भूत ६ सूयवसिनी मनवे दशस्या। व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णवेते दाधर्त्थ पृथिवीमभितो मयूखैः।।

ॐआवाहयाम्यहं देवीं गां त्वां त्रैलोक्येमातरम्।
यस्याः स्मरणमात्रेण सर्व पापप्रणाशनम्।।

प्रार्थना—

गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः।
गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्।।
नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः।।
नमो स्वर्गस्य सोपानं गावोधन्याः सवाहनाः।
सर्वे देवस्तनौ यस्याः सा धेनुर्वरदाऽस्तु मे।।

गायत्री ध्यानम्—

मुक्ता विद्रुमहेमनील धवलच्छायै मुखैः त्रिक्षणै,
युक्तामिन्दु निबद्ध रत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम्।
गायत्री वरदाभयांकुशकशा शुभ्रं कपालं गुणम्,
शङ्खं चक्रमथारविन्द युगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे।।

लोकदेवता व महापुरुष ध्यानम्—

ध्येयं सदा परिभवग्नमभीष्टदोहम्,
तीर्थास्पदं शिव विरञ्चिनुतं शरण्यम्।
भृत्यार्थिहं प्रणतपाल भवाब्दिपोतम्,
वन्दे महापुरुषते चरणारविन्दम्।।

पितृध्यानम्—

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्यः एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमोनमः।।

प्रार्थना—

हे मातृवंशः प्रभुतावतारं हे पितृवंश मम पावनाश्च।
पुष्पाञ्जलिं मे सुमनोदद्यातुं गृह्णन्तु दिव्यं पितरः पुनीतः।।

व्यासपीठ ध्यानम्—

व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे।
नमो वै ब्रह्मनिधये वासिष्ठाय नमो नमः।।
नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जय मुदीरयेत।।

नमोऽस्तु ते व्यास विशालबुद्धे
फुल्लारविन्दायतपत्रनेत्र ।
येन त्वया भारततैलपूर्णः
प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः।।

।। इति संक्षिप्तदेवताध्यानम् ।।

https://upayogibooks.com

आरती

श्रीगणेशजी की आरती

जय गणेश जय गणेश देवा, माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।।टेक।।
एकदन्त दयावन्त चारभुजाधारी, माथे सिन्दूर सोहे मूसे की सवारी।।
पान चढे फूल चढे और चढे मेवा, लड्डुवन का भोग लगे सन्त करे सेवा।।
अन्धे को आँख देत कोढियन को काया, बाँझन को पुत्र देत निर्धन को माया।।
दीनन की लाज राखो शम्भुसुत वारी, कामना को पूरी करो जगबलिहारी।
सूर श्याम शरण आये सफल किजे सेवा।। जय गणेश जय गणेश. . . .

गणेश जी की आरती

गणपति की सेवा मंगल मेवा सेवा से सब विघ्न टरे।
तीन लोक के सकल देवता, द्वार खड़े सब अर्ज करे।।
ऋद्धि-सिद्धि दक्षिण वाम विराजे, अरु आनन्द सो चमर करै।
धूप दीप अरु लिए आरति, भक्त खड़े जयकार करै।।
गुड़ के मोदक भोग लगत है, मुषक वाहन चढ्या करै।
सौम्य रूप देख गणपति को, विघ्न भाग जा दूर परै।।
भादो मास शुक्ल चतुर्थी, दिन दोपारा दूर परै।
लियो जन्म गणपति प्रभुजी, दुर्गा मन आनन्द भरै।।
अद्भुत बाजा बाज्या इन्द्र का, देव बन्धु सब गान करै।
श्री शंकर के आनन्द उपज्यो, नाम सुन्यो सब विघ्न टरै।।
आदि विधाता बैठे आसन, इन्द्र अप्सरा नृत्य करै।
देख वेद ब्रह्मा जी जांको, विघ्न विनाशक नाम धरै।।
एक दन्त गजवदन विनायक, त्रिनयन रूप अनूप धरै।
पग थम्बा सा उदर पुष्ट है, देख चन्द्रमा हास्य करै।।
देके श्राप श्री चन्द्रदेव को, कलाहीन तत्काल करै।
चौदह लोक में फिरै गणपति, तीन भवन में राज करै।।

उठ प्रभात जब करे हमेशा, ताके कारज सभी सरै।
पूजा काल आरति गावे, तांके सिर यशछत्र फिरै।।
गणपति की पूजा पहले करनी, काम सभी निर्विघ्न सरै।
सभी भक्त गणपति जी के आगे, हाथ जोड़ स्तुति करै।।

गायत्री जी की आरती

जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता।।टेक।।
आदि शक्ति तुम अलख निरंजन जगपालन कर्तृ।
दुःख शोक भय क्लेश कलह दारिद्र्य दैन्य हर्तृ।।१।।जयति जय०
ब्रह्मरूपिणी प्रणतपालिनी, जगत धातृ अम्बे।
भव भय हारी जन हितकारी, सुखदा जगदम्बे।।२।।जयति जय०
भय हारिणी भव तारिणी अनघे अज आनन्द राशि।
अविकारी अघहरौ अविचलित अमले अविनाशी।।३।।जयति जय०
कामधेनु सतचित्त आनन्दा जय गंगा गीता।
सविता की शाश्वती शक्ति तुम सावित्री सीता।।४।।जयति जय०
ऋग् यजु साम अथर्वप्रणयनी प्रणव महामहिमे।
कुण्डलिनी सहस्रार सुषुम्णा शोभा गुण गरिमे।।५।।जयति जय०
स्वाहा स्वधा शची ब्रह्माणी राधा रुद्राणी।
जय सतरूपा वाणी विद्या कमला कल्याणी।।६।।जयति जय०
जननी हम हैं दीन हीन दुःख दारिद्रय के घेरे।
यदपि कुटिल कपटी कपूत तउ बालक हैं तेरे।।७।।जयति जय०
स्नेहमयी करुणामय माता चरण शरण दीजे।
बिलख रहे हम शिशु सुत तेरे दया दृष्टि कीजे।।८।।जयति जय०
काम क्रोध मद लोभ दम्भ दुर्भाव द्वेष हरिये।
शुद्ध बुद्धि निष्पाप हृदय मन को पवित्र करिये।।९।।जयति जय०
तुम समर्थ सब भाँति तारिणी तुष्टि पुष्टि त्राता।
सत्मार्ग पर हमें चलाओ जो है सुखदाता।।१०।।जयति जय०
जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता।

आरती राजा रामजी की

हे राजा राम थारी आरती उतारुं।
आरती उतारुं लाला तन मन वारुं।।टेक।।

कनक सिंहासन राजत जोरी, दशरथ नन्दन जनक किशोरी।
जुगल छवि को सदा निहारुं।।१।। हे राजा राम . . .

वाम भाग शोभित जग जननी, चरण विराजत हे सुत अंजनी।
इन चरणों में तन मन वारुं।।२।। हे राजा राम . . .

चरणों से निकली गंगा प्यारी, वन्दन करती दुनियां सारी।
इन चरणों को सदा पखारुं।।३।। हे राजा राम . . .

आरती हनुमत के मन भाये, राम कथा निज शिवजी गाये।
योगी गिरी नित राह बुहारुं।।४।। हे राजा राम . . .

॥ इति यज्ञदीपिका ॥

https://upayogibooks.com

।।श्रीगणेशाय नमः।।

यज्ञसामग्री

नारियल- २१
रोली(कुमकुम)- ५० ग्राम.
मोली (कलावा)- १० बडी लच्छी
जनेऊ- १ मुठ्ठा
सुपारी- १०० ग्राम
ईलायची- १०० ग्राम
लौंग- १०० ग्राम
सिन्दूर- ५० ग्राम
अबीर- ५० ग्राम
गुलाल- १०० ग्राम
इत्र - ५ सीसी
धूपबत्ति-१० पैकेट
रूई- २५० ग्राम
माचिस- ५ पैकेट
पीलीसरसों- १०० ग्राम
सर्वोषधी- ५० ग्राम
पंचरत्न- ११ पु.
शहद- ५०० ग्राम
बादाम- १ किलो
काजु- १ किलो
किसमिस- १ किलो
अंजीर- १ किलो
छुहारा- १ किलो
गुड - १ किलो
डोना- १० पै.
कपूर- ५०० ग्राम
केसरचन्दन-२ पैकेट

केसर- ५ ग्राम(बेबीब्राण्ड)
घी - ११ किलो
तिल- ११ किलो
जौ- ५ ग्राम
चावल- ११ किलो
चीनी देशी-७ किलो
हवनपुडा - २ किलो ,
नवग्रहसमीधा- १ पैकेट
गुगल- ५०० ग्राम
छडछडिलो -५०० ग्राम
नागरमोथ- ५०० ग्राम
कपूरकाचरी- ५०० ग्राम
इन्द्रजौ- ५०० ग्राम
चिरोंजी- ५०० ग्राम
बीलगिरि- १ किलो
सतावरी- ५०० ग्राम
जटामांसी- ५०० ग्राम
भोजपत्र - ५० ग्राम
अगरतगर- ५०० ग्राम
चन्दनचूरा- ५० ग्राम
खोपरा- १ किलो
खोपरा चूरा - २ किलो
नारियलगट्ट- ११
उडद -५०० ग्राम
पापड - १ किलो
गुलाल पंचरंगी - १ पै.
टोपिया पितल का- २

लालवस्त्र - ७ मी.
सफेदवस्त्र - ५ मी.
पीलावस्त्र - २ मी.
ब्राह्मण वरण वस्त्र -
तोलिया-
माताजी का वस्त्र -
सुहाग पिटारी-
भगवान के पांचो वस्त्र-
आसन-
ताम्बे के कलश- ११
पांचो बरतन-
शंख -
घंटी-
पुष्पमाला- ११
पुष्प- २ किलो
नागरपान-
ऋतुफल-
लड्डू-
पेडा(मावा मिठाई)-
दूब(दूर्वा) -
दर्भा-
केले के खम्भे-
दही-
गोबर गाय का -
गोमुत्र -
गंगाजल
बड(बरगद) के पत्ते-
पिपल के पत्ते-
अशोक के पत्ते-
आम के पत्ते-
तुलसीपत्र-
गेहूँ- ५ किलो
गेंहू का आटा- ५०० ग्रा
हल्दी पाउडर- २५० ग्रा
हवन काष्ठ (मोटी लकडी) ५० किलो
ध्वजा-
ध्वजा के लिए डण्डा-
ईटें-

मिट्टी के बर्तन

कलश-
ढक्कन-
बडे दीपक-
दीपक-
कुण्डा -

घर का सामान

चोकी-
पाटा-
थाली-
परात-
कांसे का कटोरा- १
कटोरी-
चम्मच-
दरी व चट्टाई-
बाल्टी-
लोटा-
चोपडा

दूर्गा पूजन सामग्री

नारियल- २१
रोली(कुमकुम)- ५०

मोली (कलावा)- २० रु.
जनेऊ- ११
सुपारी- २१
लौंग- १० ग्राम
ईलायची- १० ग्राम
सिन्दूर- २० रु.
अबीर- १० रु.
गुलाल- १० रु.
इत्र - १ सीसी
धूपबत्ति(अगरबत्ति)- १ पैकेट
रूई- २० रु.
माचिस- १ पैकेट
पीलीसरसों- १० रु.
सर्वोषधी- ५ रु.
पंचरत्न- १ पुड़िया
शहद- १०० ग्राम
चावल- १ किलो
गेहूँ- ५०० ग्राम
पंचमेवा- २५० ग्राम
गुड़ - १ किलो
डोना- २ पैकेट
केसरचन्दन- १ पैकेट
केसर- १ ग्राम
कपूर- ५० ग्रा
मूंग- १०० ग्राम
गोबर गाय का-
गोमुत्र -
गंगाजल
अशोक का पत्ता-११
बड़ का पत्ता- ११
पिपल का पत्ता-११
आम का पत्ता- ११
शमीपत्र - १०० ग्राम

मिट्टी के बर्तन

कलश- १
ढोबला- २
सराई(कोराया)- १५
कुण्डा- १
घड़ा - १

हवन की सामग्री

घी- २ किलो
तिल- १ किलो
जौ-आधा किलो
चावल- १ किलो
चीनी - १ किलो
हवनपुड़ा - १०० ग्राम
नवग्रह समीधा- १ पैकेट
गुगल- १०० ग्राम
छड़छड़िलो- ५० ग्राम
नागरमोथ- ५० ग्राम
कपूरकाचरी- ५० ग्राम
इन्द्रजौ- ५० ग्राम
चिरोंजी- ५० ग्राम
बीलगिरि- २०० ग्राम
सतावर- ५० ग्राम
जटामांसी- ५० ग्राम
पलास पातल- ५
भोजपत्र - १० रु.
अगर तगर- ५० ग्राम
चन्दन चूरा- ५० ग्राम

खोपरा- ४
खोपरा चूरा- ५०० ग्राम
नारियलगट्ट- १
उड़द - १०० ग्राम
पापड़ - ५
गुलाल पंचरंगी- १ पैकेट
छायापात्र (कांशी की कटोरी) - २
टोपिया पितल का- २
सोने की धांस- १
तेल- १०० ग्राम
हवन काष्ठ (मोटी लकड़ी) १० किलो
पीलीमिट्टी- १ परात
गेंहूकाआटा- १०० ग्रा
हल्दीपाउडर- १०० ग्रा
पंचपात्र - १
आचमनी- १

दुर्गापूजा सामग्री

वास्तु की मूर्ति- १
विष्णु की मूर्ति सोने की- १
चान्दी का सिक्का- ३
ताम्बा की लोटी- ७
ताम्बड़ी - ७
गुलाब जल- १०० ग्राम
अजन्ता रंग-लाल, पीला, हरा- १-१ डब्बी
गुलाबजल- १०० ग्राम
गट्ट- ८
लालवस्त्र - ३ मी
सफेदवस्त्र - ३ मी
पीला रेशमी वस्त्र - १मी.
धोती- ५
तोलिया- ६
बनियान- ५
साड़ी - ३
ब्लाउजपीस- ३
चुन्दड़ी - १
मर्दाना पांचो वस्त्र -१
जनाना पांचो वस्त्र -१
सुहाग पिटारी- १
ध्वजा लाल-
ध्वजाओं के लिए डण्डिया-
गोटा- १० रू.
सेप्टी पिन- १ पैकेट
प्लास्टिक पन्नी- १०
सेलो टेप- २
सुतली- २०० ग्राम
ब्राह्मण वरण-
माला-
आसण-
पुस्तक-

प्रतिदिन का सामान

पुष्प- १ किलो
पुष्पमाला- ७
नागरपान- १५ ऋतुफल- २१
लाडू- १ किलो
पेड़ा - १ किलो
दूब
दूध- १०० ग्राम
दही- १०० ग्राम

बीलपत्र - ११
तुलसीपत्र - ११

दुर्गा हवन विशेष सामग्री

इलायची-
शर्करा-
कर्पूर-
कमलगट्टा-
मधु-
केला-
गुगल-
सुपारी-
सरसों-
राई-
बिल्व पत्र -
निम्बू कागजी-
गुड़ -
दुग्ध-
लोकी-
पान-
गिलोय -
लौग-
बिल्वफल-
श्वेतचन्दन-
लालचन्दन-
सीताफल-
धूप-
खीर-
हलुवा-
आँवला-

भोजपत्र -
कज्जल-
हिंगुल-
इक्षु-
निम्बू बिजौरा-
केसर-
लोबान-
जटामांसी-
कनेर पुष्प-
कस्तूरी-
चिरौंजी-
आम्रफल-
कुष्मांडा-
जायफल-
इन्द्र जौ-
कपीठ-
बेलगिरि-
मेनफल-
उड़द -
कालीमिर्च-
अनार-
नारंगी-
मजीठ-
सोवापालक-
अगरतगर-
सर्वोषधी-
अनार छिलका-
शमीपत्र -
श्वेत पुष्प-
बटपत्र -

लक्ष्मी पूजन सामग्री

नारियल- ३
रोली(कुमकुम)- १० रु.
मोली(कलावा) - २० रु.
जनेऊ- ७
सुपारी- ११
लौंग- १० ग्राम
ईलायची- १० ग्राम
सिन्दूर- ५ रु.
अबीर- ५ रु.
गुलाल- ५ रु.
इत्र - १ सीसी
धूपबत्ति(अगरबत्ति)-१ पैकेट
रूई- १०रु.
घी- १०० ग्राम
माचिस-२ पैकेट
पीली सरसों- ५ रु.
सर्वोषधी- ५ रु.
पंचरत्न- १ पुड़िया
शहद- १०० ग्राम
चावल- ५०० ग्राम
गेहुँ- ५०० ग्राम
पंचमेवा- २५० ग्राम
गुड़ - ५०० ग्राम
डोना- १ पैकेट
केसरचन्दन- १ पैकेट
केसर(बेबी)-आधाग्राम
कपूर- ५० ग्राम
लाल वस्त्र - १ मी.

सफेद वस्त्र - १मी.
तोलिया- १
लक्ष्मी जी के वस्त्र
सुहाग पिटारी- १
पुष्प- ५००ग्राम
पुष्प माला- ३
नागरपान- ११
सेव- १किलो
अनार
केला-१किलो
गन्ना-
लड्डू- १ किलो
पेड़ा - १ किलो
चीनी - १०० ग्राम
दूब
दुध- १०० ग्राम
दही- १०० ग्राम
गंगाजल
अषोककापत्ता-७
तुलसीपत्र - ११
मूंग- १०० ग्राम
लक्ष्मी गणेष जी की फोटो १
बही (रजिस्टर) -१
कलम- १
कमलगट्टा-५
मजीठ
धनीया साबुत- २५ ग्राम
हल्दी- ५ गाँठ

mu. Digit.

मिट्टी के बर्तन

कलश- १

ढोबला- २

सराई- २१

घरकासामान

पाटा- २

थाली- ३

दरी या चट्टाई- २

लोटा- २

कटोरी- ५

चम्मच- २

ताम्बा की लोटी- १

रुद्राभिषेक की सामग्री

नारियल- २

रोली(कुमकुम) -१०रु.

मोली (कलावा) -२०रु.

जनेऊ- ११

सुपारी- ११ ग्राम

लौंग- ५ ग्राम

ईलायची- ५ ग्राम

सिन्दूर- ५ रु.

अबीर- १० रु.

गुलाल- १० रु.

इत्र - १ सीसी

धूपबत्ति (अगरबत्ति) - १ पैकेट

रूई- १० रु.

घी - २०० ग्राम

माचिस- १ पैकेट

पीली सरसों- ५ रु.

सर्वोषधी- ५ रु.

पंचरत्न- १ पुड़िया

शहद-५० ग्राम

चावल- २५० ग्राम

गेहुँ- ५०० ग्राम

पंचमेवा- २५० ग्राम

गुड़ - २५० ग्राम

डोना - २ पैकेट

केसर चन्दन- १ पैकेट

केसर- १ ग्राम

कपूर- ५० ग्राम

चीनी - २५० ग्राम

गंगाजल

गुलाबजल १०० ग्राम

लाल वस्त्र - १ मी.

सफेद वस्त्र - १ मी.

तोलिया - १

मर्दाना पांचो वस्त्र -१

जनाना पांचो वस्त्र -१

सुहाग पिटारी - १

ब्राह्मण वरण-

पुस्तक-

माला-

पुष्प-आधा किलो

पुष्पमाला - ५

नागरपान- ११

ऋतु फल-

दुध-

दही-
गंगाजल
बीलपत्र
गन्नेकारस- १ लिटर
पेडा (प्रसाद)- १ किलो
आक व धथुरा
मिट्टी के बर्तन
कलश- १
ढोबला- २
सराई- ११

घर का सामान
थाली-४
कटोरी-७
चम्मच-२
परात-१
दरी चट्टाई
बाल्टी-२
चोकी- १
पाटा- १

गृहप्रवेश सामग्री

नारियल- ११
रोली (कुमकुम) - २० रु.
मोली (कलावा) - २० रु.
जनेऊ- ११
सुपारी- ११
लौंग- १० ग्राम
ईलायची- १० ग्राम
सिन्दूर- १० रु.
अबीर- ५ रु.
गुलाल- ५ रु.
इत्र - १ सीसी
धूपबत्ति (अगरबत्ति) - १ पैकेट
रूई- १० रु.
माचिस- २ पीस
पीली सरसों- ५ रु.
सर्वोषधी- ५ रु.
पंचरत्न- १ पु.
शहद- १०० ग्राम
चावल- ५ किलो

गेहूँ- ५०० ग्राम
पंचमेवा- २५० ग्राम
गुड - ५०० ग्राम
डोना- १ पैकेट
केसर चन्दन- १ पैकेट
केसर- १ ग्राम
कपूर- ५० ग्राम
मुंग- १०० ग्राम
पुष्प- १ किलो
पुष्प माला- ७
नागर पान- १५
ऋतु फल- २१
लाडू- १ किलो
पेडा - १ किलो
दूब
दूध- १०० ग्राम
दही- १०० ग्राम
गंगाजल
अशोक का पत्ता-११

बड़ का पत्ता- ११
पिपल का पत्ता-११
आम का पत्ता- ११
षमी पत्र - १०० ग्राम
बील पत्र - ११
तुलसी पत्र - ११
घी- २ किलो
तिल- २ किलो
जौ-आधा किलो
चीनी - २ किलो
हवन पुड़ा - २०० ग्राम
नवग्रह समीधा- १ पैकेट
गुगल- १०० ग्राम
छड़छड़िलो - १०० ग्राम
नागरमोथ- १०० ग्राम
कपूरकाचरी- १०० ग्राम
इन्द्रजौ- ५० ग्राम
चिरोंजी- ५० ग्राम
बीलगिरि- १०० ग्राम
सतावर- ५० ग्राम
जटामांसी- ५० ग्राम
पलासपातल- ५
भोजपत्र - १० रु.
अगरतगर- १०० ग्राम
चन्दनचूरा- ५० ग्राम
खोपरा- ४
खोपराचूरा- ५०० ग्राम
नारियलगट्ट- १
उड़द - १०० ग्राम
पापड़ - ५ पीस
गुलाल पंचरंगी- १ पैकेट
छायापात्र (कांशी की कटोरी) - २
टोपिया पितल का- २
सोने की धांस- १
तेल- १०० ग्राम
हवन काष्ठ (मोटी लकड़ी) १० किलो
बालुरेत- २ परात
गेंहू का आटा- १०० ग्राम
हल्दी पाउडर- १०० ग्राम
पंचपात्र - १
आचमनी- १
लाल वस्त्र - ३ मी.
सफेद वस्त्र - ३ मी.
आसन-
ब्राह्मण वरण-
पीला रेशमी वस्त्र - १ मी.
धोती- ५
तोलिया- ६
बनियान- ५
साड़ी लाल- ३
ब्लाउज पीस- ३
सुहागपिटारी- १
चुन्दड़ी - १
चुन्दड़ी चन्दवा की - १
गोटा- १० रु.
त्रिसूत्री (लाल, पीला, हरा) - १
ध्वजा-पंचरंगी बड़ी - १
ध्वजा-लाल- ४
ध्वजा-सफेद- २

ध्वजा-काली- २
ध्वजा-नीली- १
ध्वजा-पीली- १
ध्वजाओं के लिए डण्डिया- ११
लकड़ी की पेटी- १
मिट्टी का कच्चा कलश- १
लोहे की कील- ४
चावल की खील- १० ग्राम
गणेशतोरण- १
बंदरवाल
वास्तु की मूर्ति- १
विष्णु की मूर्ति सोने की - १
चान्दी का सिक्का- ३
ताम्बा की लोटी- ७
ताम्बड़ी - ७
गट्ट- ७
सेप्टीपिन- १ पैकेट
प्लास्टिक पन्नी- १०
सेलोटेप- २
स्टिकर-
(सातिया, श्री, शुभ लाभ, ऋद्धि सिद्धि)
सुतली- २०० ग्राम
अजन्ता रंग-लाल, पीला,
हरा- १-१ डब्बी

गुलाब जल- १०० ग्राम
गाय का गोबर
गोमुत्र

मिट्टी के बर्तन

कलश- १
ढोबला- २
सराई- १५
कुण्डा- १
घड़ा - १

घर का सामान-

चौकी - १
पाटा - २
थाली - ५
परात - १
बाटको - १
कटोरी - ५
चम्मच - २
दरी व चट्टाई -
बाल्टी - १
लोटा - २
चोपड़ा
हवन काष्ठ - १० किलो
बालु मिट्टी -२ परात
ईंटें- २२

1. नवकुण्डीय यज्ञशाला चित्र

पूर्व

उत्तर

दक्षिण

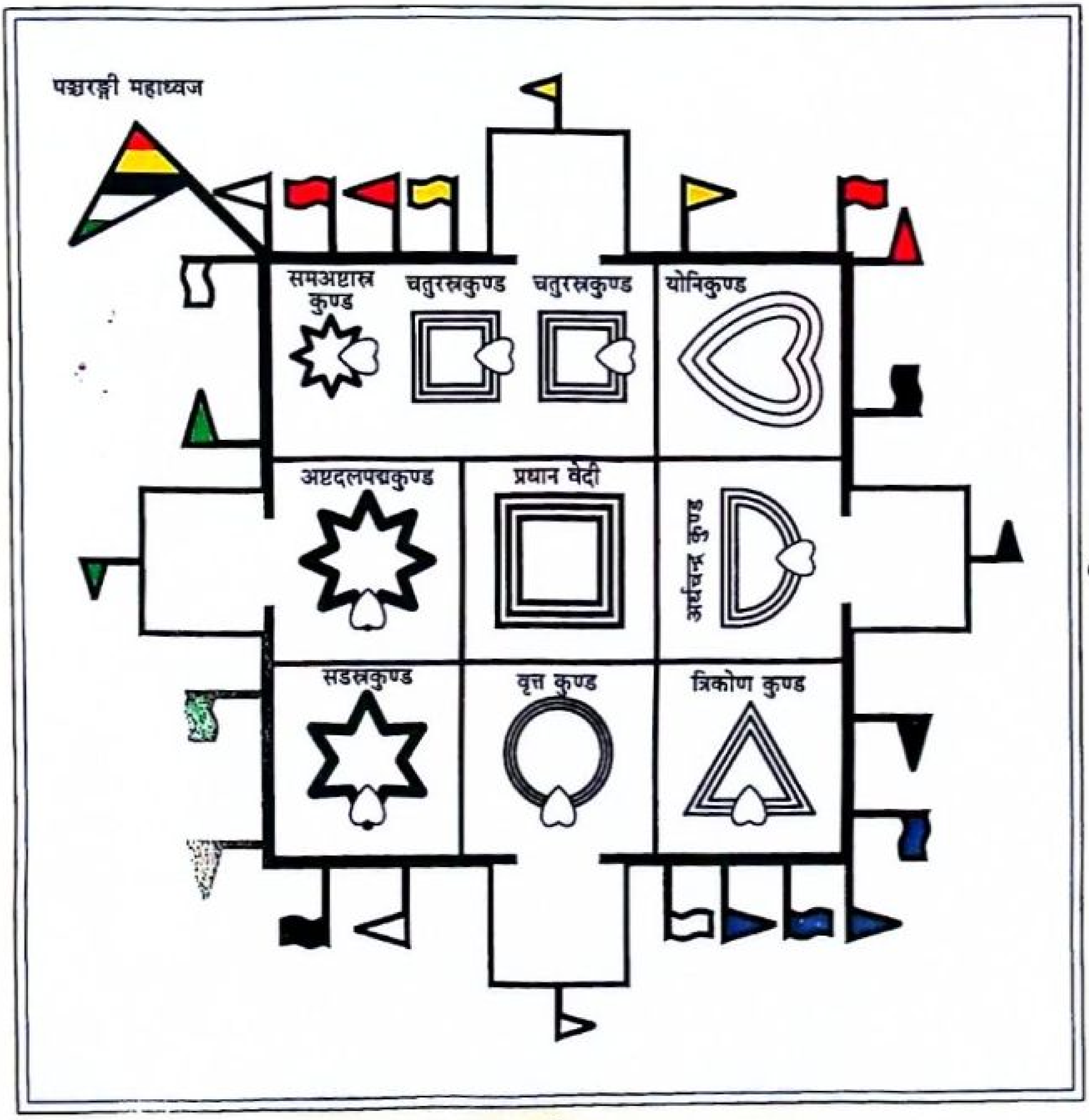

पश्चिम

महाध्वज के पाँच रंग

2. नवग्रह वेदी

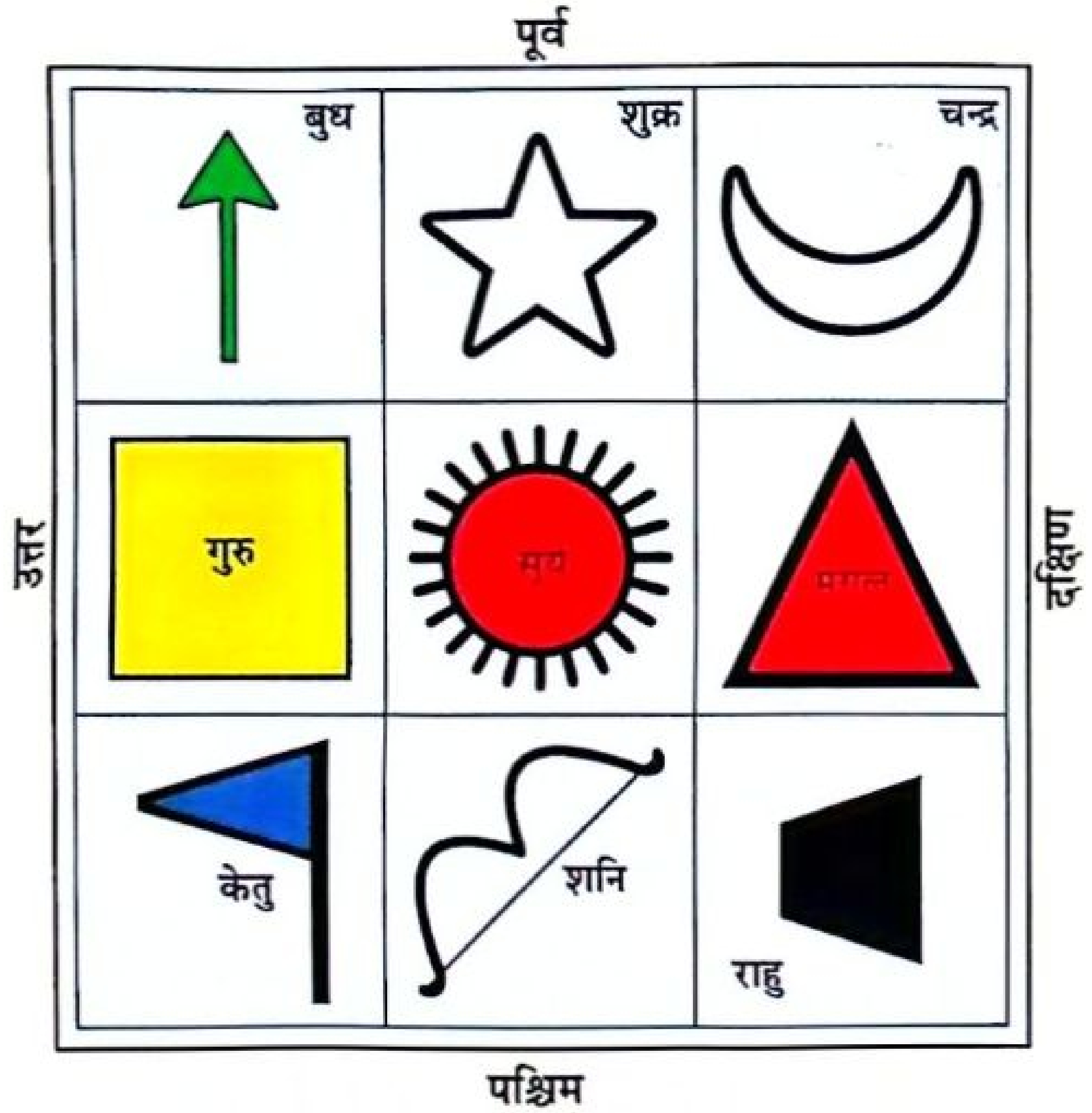

3. कमलाकार नवग्रह वेदी

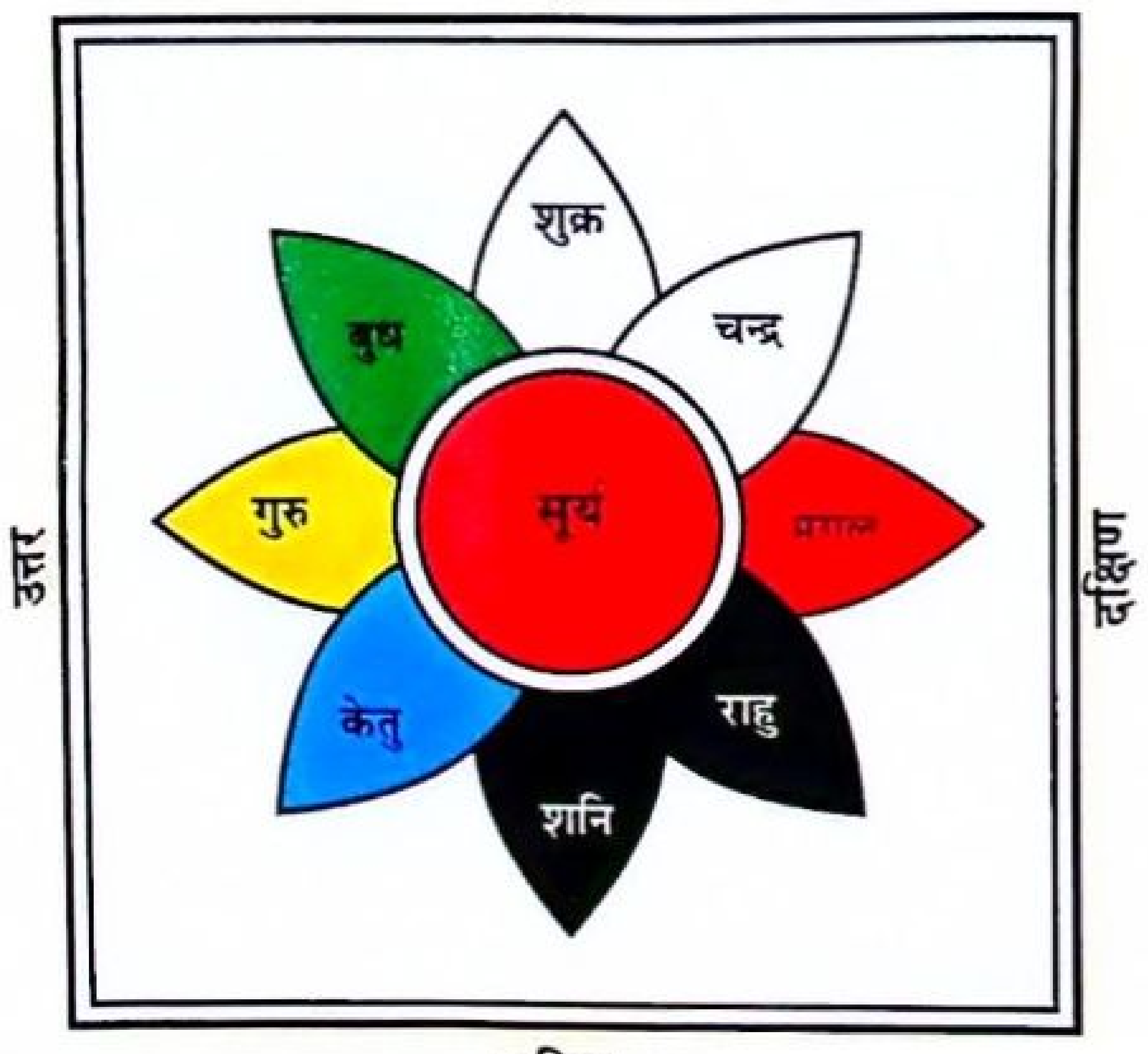

4. वास्तुमण्डल वेदी

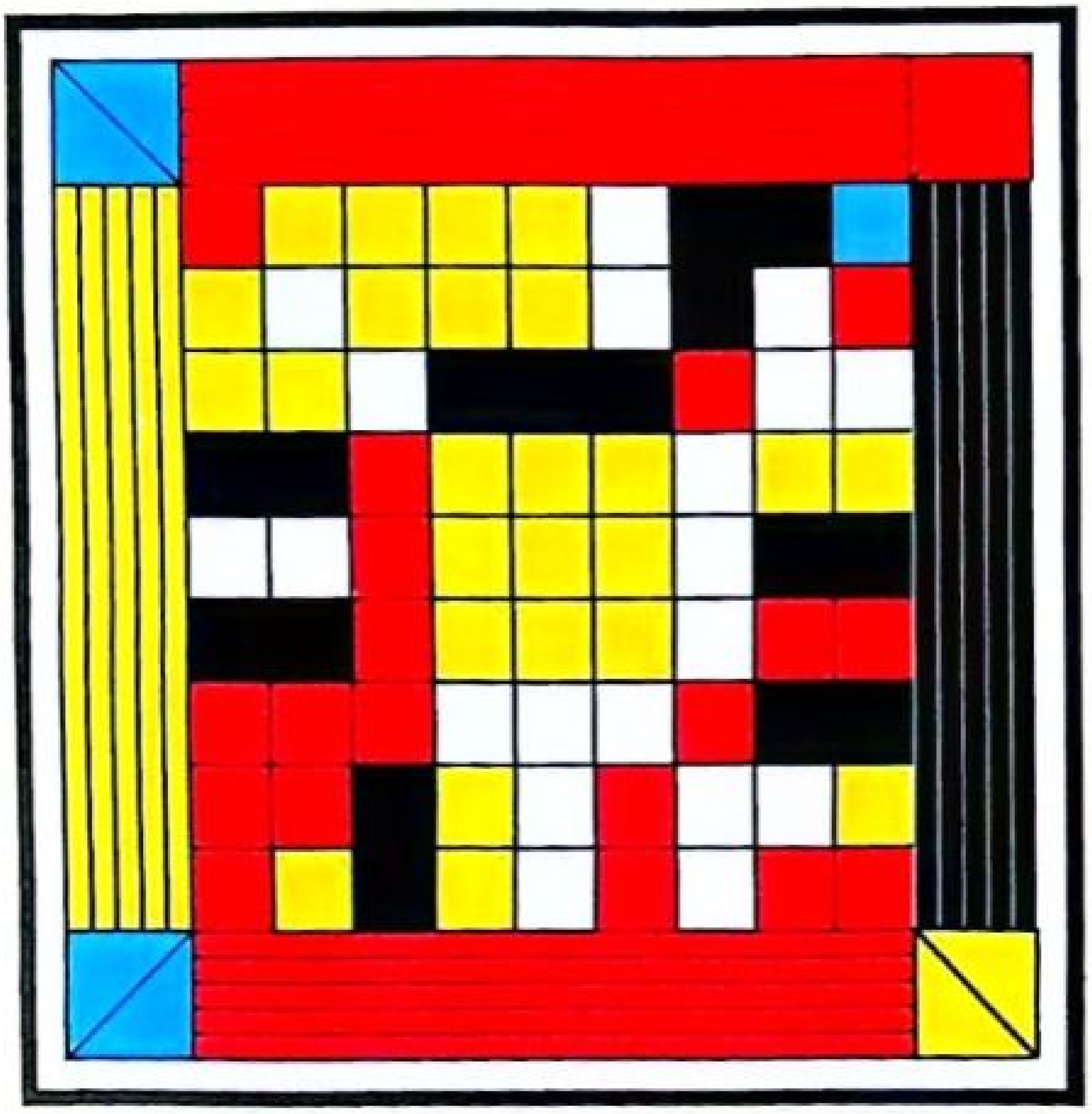

5. क्षेत्रपाल वेदिका

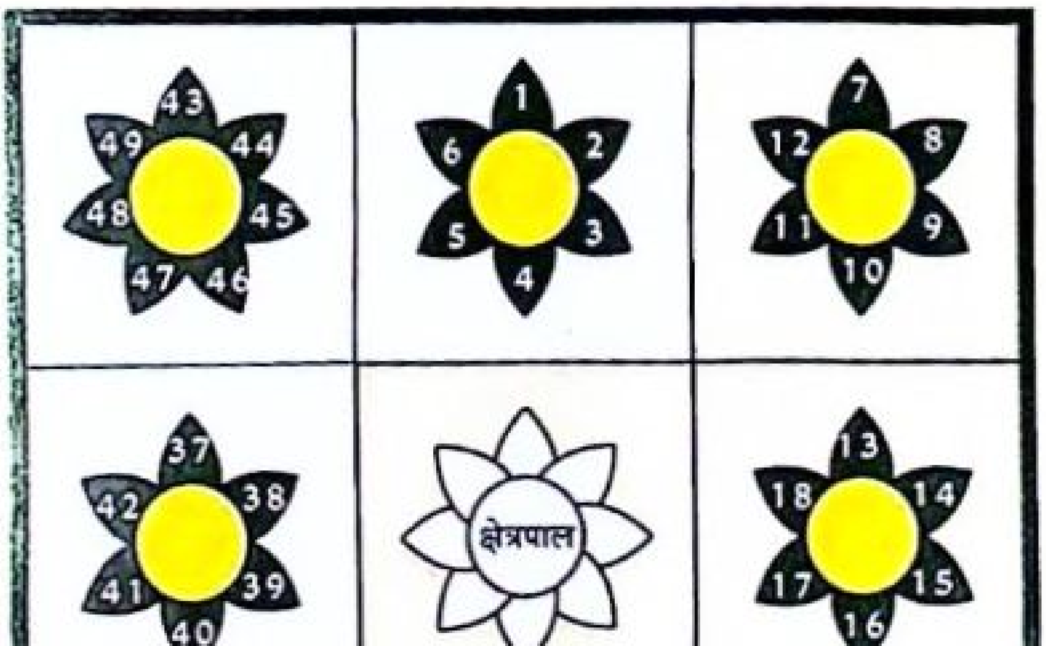

6. कमलयुक्त सर्वतोभद्रमण्डल

7. कमलरहित सर्वतोभद्रमण्डल

8. एकलिङ्गतोभद्रमण्डल

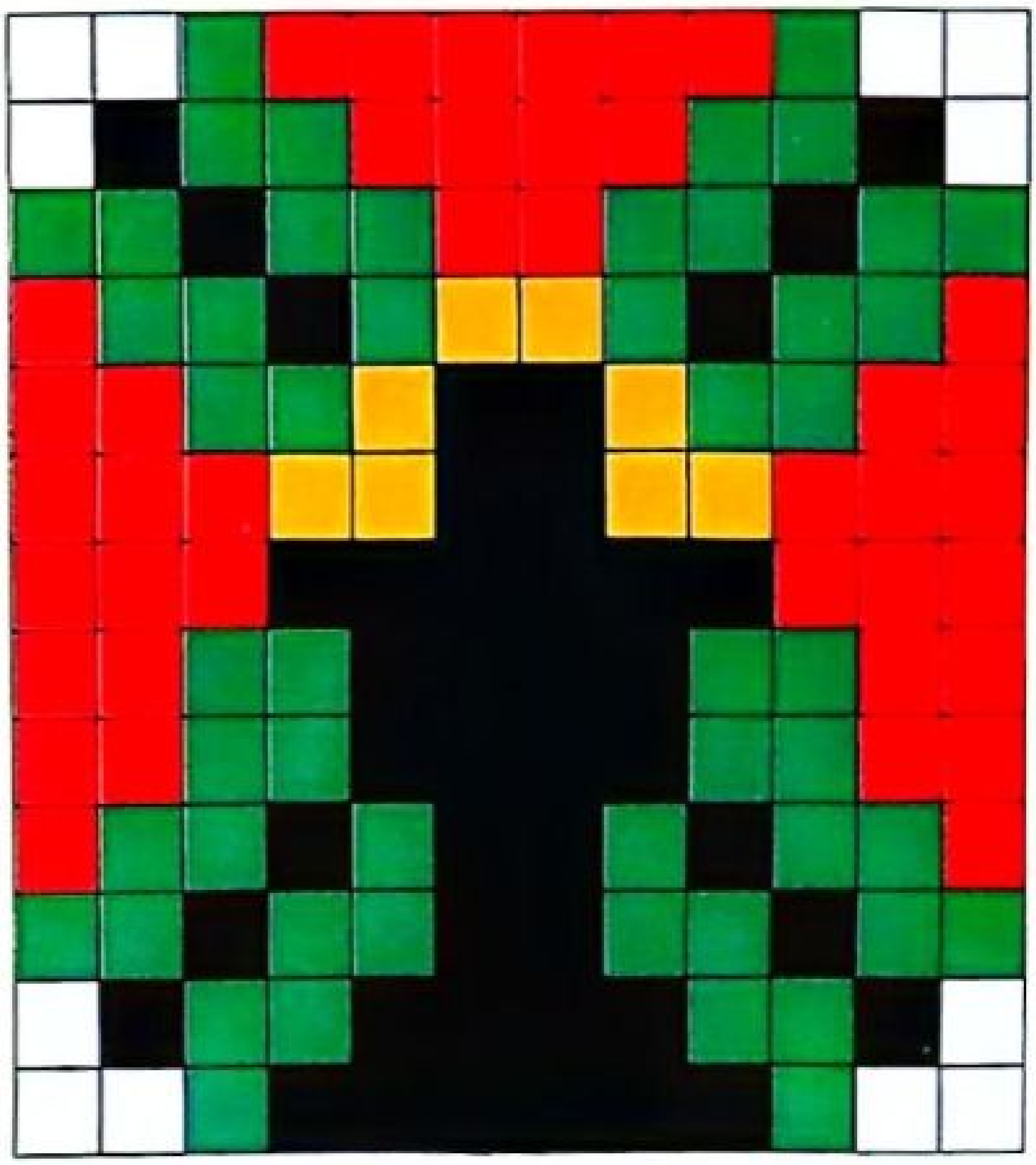

9. चतुर्लिङ्गतोभद्रमण्डल

10. अष्टलिङ्गतोभद्रमण्डल

11. द्वादशलिङ्गतोभद्रमण्डल

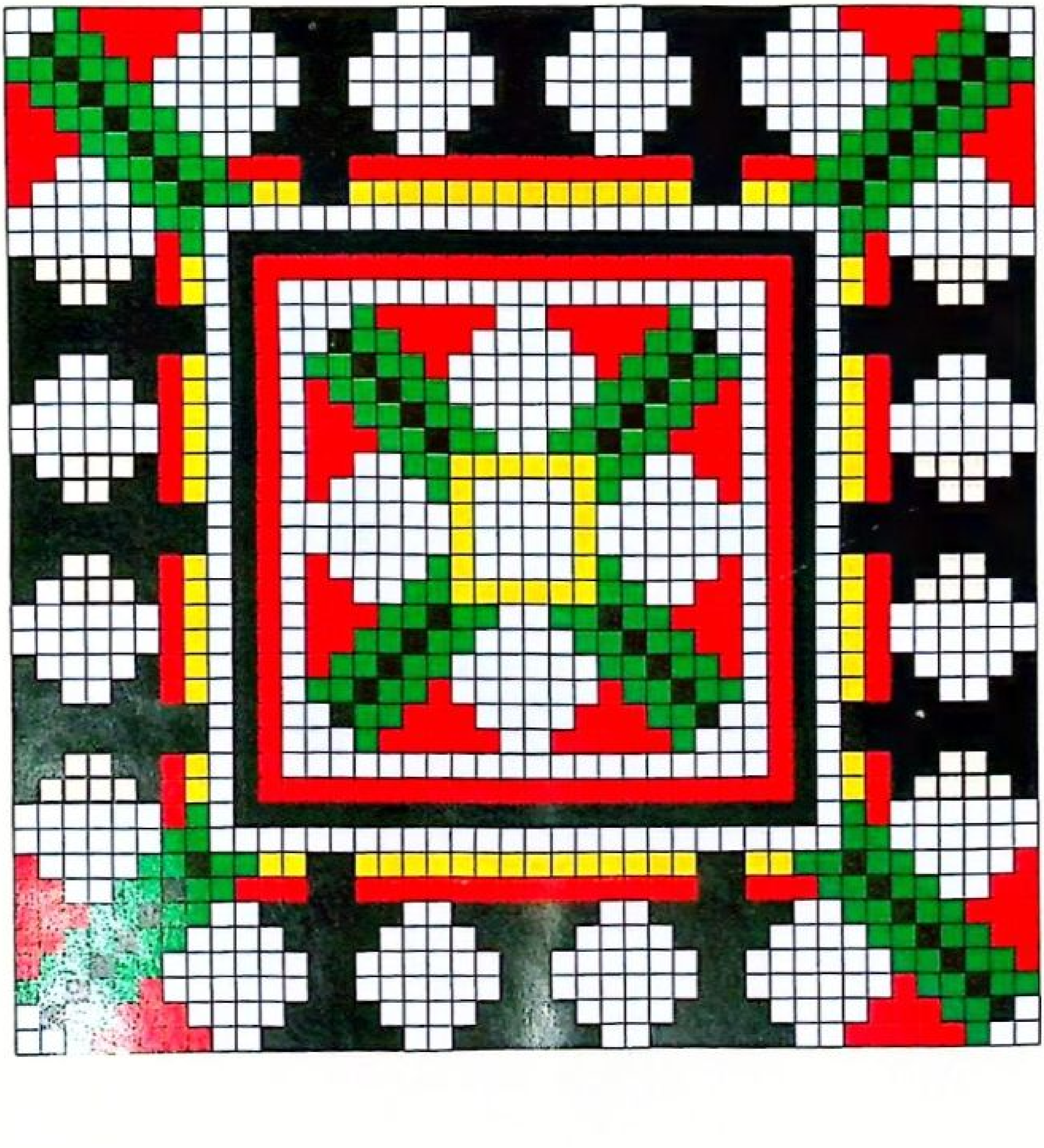

12. चतुष्षष्टियोगिनीवेदिका

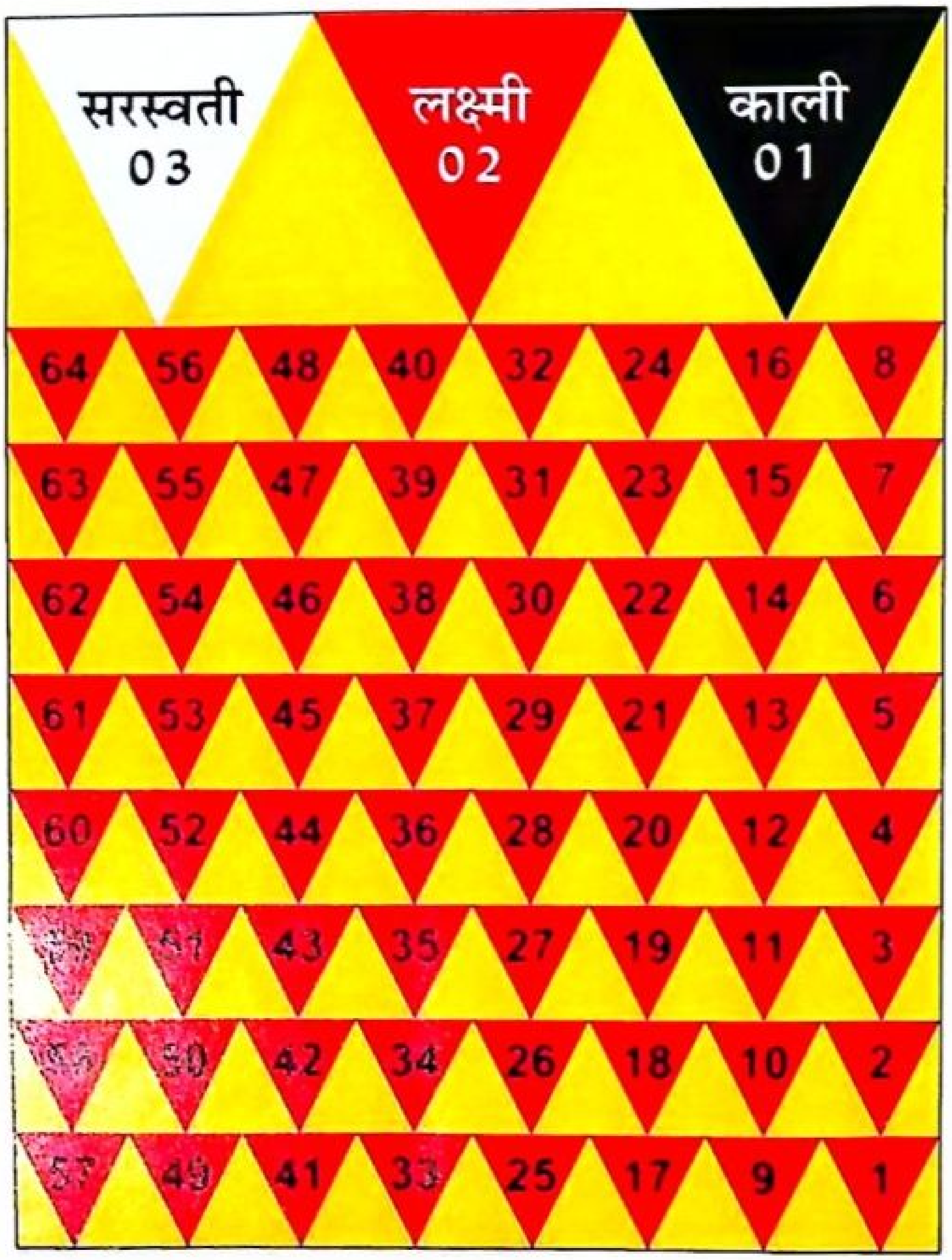

ग्रन्थ परिचय

'यज्ञदीपिका' के इस संस्करण के अन्तर्गत गणपत्यादि देवताओं की वैदिक मन्त्रों के द्वारा सविधि पूजन तथा यज्ञमण्डप सहित सम्पूर्ण यज्ञविधान सामान्य पुरोहित भी सुगमता से सुसम्पन्न करवा सके इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए लेखन व संकलन किया है। आज **'यज्ञदीपिका'** के माध्यम से दशविधस्नान व जलयात्राविधान से प्रारम्भ करके विस्तृत रूप से सम्पूर्ण पूजाविधि शास्त्रीय प्रमाणों सहित गणपत्यादिमण्डलों का पूजन, श्रीलक्ष्मीनारायणपूजन, शिवशक्तिपूजन तथा सविस्तार यज्ञमण्डप व यज्ञ विधान का सम्पादन किया गया है। इस पुस्तक में अत्यन्त ही उपयोगी रंगीन यज्ञवेदिका चक्र भी दिया गया है। सभी विद्वानों एवं कर्मकाण्डियों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त ही उपयोगी एवं उत्साहवर्द्धक सिद्ध होगी।

हमारे यहाँ से प्रकाशित कर्मकाण्ड की अन्य पुस्तकें

कर्मकाण्डप्रदीप

दशकर्मादिपद्धतिः 'श्रुति' हिन्दीव्याख्याविभूषित

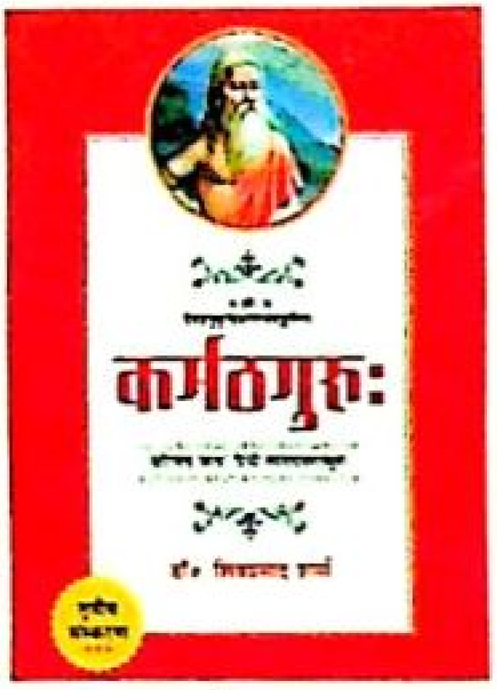

कर्मठगुरुः

सटिप्पण 'कला' हिन्दी व्याख्यासमलंकृत:

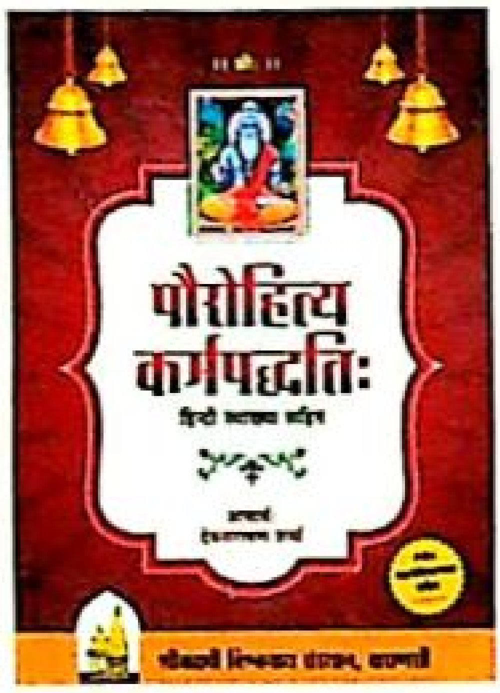

पौरोहित्यकर्मपद्धतिः

हिन्दी व्याख्या सहित

श्रीकाशी विश्वनाथ संस्थान, वाराणसी

CK 13/28, Satti Chowtra Chowk, Varanasi - 221001

Mob. No. 7054123488, 9935520290

www.bharatiyavidya.com

ISBN - 978-93-92989-01-8

₹ 351.00, $ 10.00

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri